खादी

क्यों और कैसे?

गांधीजी

सम्पादक

भारतन् कुमारप्पा



नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

पहली आवृत्ति ३,००० १९५७
पुनर्मुद्रण ७,०००

रु० २.००

मार्च १९५९

संपादकका निवेदन

गांधीजीके राष्ट्रीय पुनर्रचनाके कार्यक्रमका सबसे महत्वपूर्ण नहीं तो बहुत महत्वपूर्ण अंग अुनका हाथ-कताई और हाथ-बुनाईका आंदोलन था। अिसमें अुन्हें गांवोंके — जिनसे कि हमारा देश बना है — आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनके पुनरुद्धारके दर्शन होते थे।

अिसके विपरीत बहुतोंकी आज भी यही गलत कल्पना है कि हाथ-कताईके पुनरुद्धारके गांधीजीके आन्दोलनका राजनीतिकके सिवा और कोअी हेतु नहीं था। अुनकी रायमें यह ब्रिटिश साम्राज्यकी जड़ काटनेका अुनका अहिंसात्मक तरीका था। ब्रिटेनने भारत पर कब्जा कर लिया था, अुसकी प्राचीन दस्तकारियों और ग्राम-अुद्योगोंका गला घोंट दिया था, ताकि अुसके अपने कारखाने फलें-फूलें। अतः ये लोग समझते हैं कि गांधीजीने अपना खादीका कार्यक्रम अिसलिअे शुरू किया कि कमसे कम कुछ हद तक तो ब्रिटेनके लिअे भारत पर अधिकार रखकर अुससे आर्थिक लाभ अुठाना असंभव हो जाय। अिसलिअे वे यह दलील देते हैं कि अब तो ब्रिटेनसे हमने अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता ले ली है, अब खादीकी जरूरत नहीं रही।

अगर गांधीजीके खादी आन्दोलनका यही अर्थ होता तो कोअी कारण नहीं था कि वे केवल खादी पर ही जोर देते और मिलके कपड़े पर न देते। कारण मिलोंकी सहायतासे भी कपड़ा तैयार करके हम अपनी जरूरतका तमाम कपड़ा यहां जल्दी तैयार कर सकते थे और राजनीतिक आजादी जल्दी प्राप्त कर लेते। अिसके सिवा गांधीजी सिर्फ ब्रिटिश कपड़ेके बहिष्कारकी ही नहीं, तमाम विदेशी कपड़ेके बहिष्कारकी हिमायत करते थे। अिस बातसे यह जाहिर होता है कि वे खादी आन्दोलनका ध्येय ब्रिटिश राज्यका नाश नहीं समझते थे परन्तु हमारी जनताको आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बी बनाना मानते थे।

अवश्य ही वे अनुभव करते थे कि हमें आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बी बनाकर खादी राजनीतिक स्वतंत्रताकी शीघ्र प्राप्तिमें मदद देगी। परन्तु अुनके मनमें अुसका अर्थ केवल राजनीतिक नहीं था। वे असमें कहीं अधिक गहरा और स्थायी अर्थ देखते थे।

अुदाहरणके लिअे वे चाहते थे कि हाथ-कताअीके द्वारा हमारे लोगोंकी जड़ता और लाचारीकी भावना दूर हो जाय और वे अपने आप पर निर्भर रहना सीखें। यह काम मिलोंमें कपड़ा तैयार करनेसे नहीं हो सकता क्योंकि प्रथम तो मिलें बहुत थोड़े लोगोंको काम दे सकती हैं, दूसरे मिलके अुत्पादनमें काम करनेवाला आत्म-निर्भर नहीं हो सकता क्योंकि वह मजदूरी, कच्चे माल और मशीनोंके लिअे मालिक पर निर्भर रहता है। खादीमें ही यह खूबी है कि वह हमारी ग्रामीण आबादीको अपनी दशा सुधारनेके लिअे और अिस प्रकार सच्ची स्वाधीनताका पहला पाठ सीखनेके लिअे अपनी ही कोशिश पर आधार रखना सिखा सकती है। अिसलिअे खादीका महत्त्व गांधीजीके लिअे सिर्फ आर्थिक ही नहीं था, असका सांस्कृतिक या मनोवैज्ञानिक मूल्य भी बहुत था। अुसका हेतु व्यक्तिमें नवजीवनका संचार करना और असे सूझ-बूझवाला और स्वावलम्बी बनाना था। अिस प्रकार अुसमें सच्चे अर्थमें स्वराज्य या लोकतंत्रके बीज मौजूद थे।

दूसरे हमारे जैसे देशमें जहां लोग हाथकी मेहनतसे कतराते और असे नीचा समझते हैं, गांधीजीने महसूस किया कि जब हाथ-कताअी सार्वत्रिक हो जायगी तो वह हमारे छोटे-बड़े सभी लोगोंको शरीर-श्रमका गौरव सिखा देगी।

तीसरे जात-पांतके पतित रूप और अंग्रेजोंकी शिक्षा-प्रणालीने हम लोगोंमें अूंच-नीच भावकी जो परम्पराअें पैदा कर दीं, अुनसे अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षितके बीच अेक बड़ी खाअी खड़ी हो गअी। अगर सभी हाथसे कातने लगें तो यह खाअी पट जायगी और अुसकी जगह विशिष्ट वर्गों और जन-साधारणमें, सभी जातियों और धर्मोंमें अेकताका संबंध स्थापित हो जायगा। गांधीजीको हाथ-कताअीमें जो बड़ा सामाजिक मूल्य दिखाअी देता था वह यही था।

चौथे, गांधीजी अच्छी तरह समझते थे कि अुद्योगवादमें कच्चे माल और मंडियोंकी जरूरत होती है और अिससे साम्राज्यवाद, आन्तरराष्ट्रीय झगड़ों और युद्धोंका जन्म होता है। अिसके विपरीत खादी प्राचीन आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थाका पुनरुद्धार करनेका अेक प्रयत्न है, जिसमें अुत्पादन मुख्यतः गांवकी आवश्यकताओं तक ही सीमित रहेगा। अिस सूरतमें कच्चे माल और मंडियोंके लिअे दूसरे देशोंको हड़प करनेकी कोअी प्रेरणा नहीं होगी। अिस प्रकार आर्थिक क्षेत्रमें आन्तरराष्ट्रीय संघर्षके कारणकी जड़ काटे बिना विश्वशांति अुन्हें अेक थोथा सपना मालूम होती थी।

अिन्हीं महत्त्वपूर्ण आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारणोंसे, न कि सिर्फ राजनीतिक कारणोंसे, गांधीजीने अपना खादी-आन्दोलन कायम किया था। अिसमें अुनका केवल ब्रिटेनसे सत्ता छीन लेनेका तात्कालिक हेतु ही नहीं था, बल्कि अुन्हें आशा थी कि अिसके द्वारा अेक असी अहिंसक आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाकी नींव डाली जा सकेगी, जो हमारे लिअे और सारी मानव-जातिके लिअे शांति और सुखका प्रादुर्भाव करेगी। खादीके पुनरुद्धारके अुनके प्रयत्नोंकी तहमें यही दूरगामी और स्थायी लक्ष्य था।

गांधीजीने अपना खादी-आन्दोलन १९१८ में शुरू किया। प्रारम्भमें खादी पर अुनका जोर अिस विचारसे था कि अुससे गरीबीसे पीड़ित जन-साधारणको राहत मिलती है। परन्तु १९३४ से और खास तौर पर १९३५ से अुनके अिस जोरमें परिवर्तन पाया जाता है। अुस समयसे वे यह आग्रह करने लगे कि खादी केवल दूसरोंको बेचनेके लिअे ही न हो, बल्कि गांववाले अुसे खुद अपने अिस्तेमालके लिअे बनायें। १९४२ और १९४३ के कारावासमें अुन्हें अपने खादी-आन्दोलन पर और मनन करनेका समय मिला और जब वे जेलसे निकले तब वे खादी-आन्दोलनको अेक नयी दिशा देनेका निश्चय करके निकले। अब वे खादीको सारी ग्रामीणोंकी आवश्यकताओंकी पूर्तिमें प्रथम और प्रमुख स्थान देना चाहते थे। १९४४ में अुन्होंने अपने खादी कार्यकर्ताओंके आगे अपना निश्चय जोरदार रख दिया और अुसे यह परिवर्तन अमलमें

ग्रानका अनुरोध किया। अस समय स्वामी आनन्दने अिस विषय पर अनकी बातचीतके जो नोट लिये थे अुसके लिअे हम अनके आभारी है। हमने अनका संपादन करके विभाग १३ के रूपमें अिस पुस्तकमें शामिल कर लिया है। यह और असके बादका विभाग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि अनसे यह प्रगट होता है कि भविष्यमें गांधीजी खादीका विकास किस ढंग पर करना चाहते थे।

लगभग तीस वर्षके अर्सेमें गांधीजीने खादी पर बहुत लिखा। हम तो अिस पुस्तकमें अिस विषय पर अनके लेखों भाषणों और वार्तालापोंमें से कुछ भाग ही सम्मिलित कर सकते थे। परन्तु हमने यह कोशिश की है कि कोअी महत्त्वपूर्ण चीज रह न जाय और पाठकोंके सामने खादी पर गांधीजीके विचारोंको अुन्हीके शब्दोंमें अधिकसे अधिक विशद रूपमें रख दिया जाय। प्रकरणोंकी व्यवस्था हमारी अपनी है और अनके लगभग शीर्षक हमारे दिये हुअे हैं।

अिससे पहले १९४१ में नवजीवन ट्रस्टने खादी पर गांधीजीके लेखोंको कालक्रमके अनुसार 'अिकॉनॉमिक्स ऑफ खादी' (खादीका अर्थशास्त्र) के नामसे पुस्तकाकार छापा था। प्रस्तुत ग्रंथमें वह सामग्री अधिकांश शामिल तो की गअी है मगर अुसका क्रम विषयानुसार बदल दिया गया है और असमें खादी पर गांधीजीके बादके लेख और भाषण सम्मिलित करके अुसे संपूर्ण बना लिया गया है।

यह ग्रंथ तैयार करनेमें ग्रामसेवाकी योग्यता प्राप्त करनेवाले खादी-कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियोंकी आवश्यकताओंका खास तौर पर ध्यान रखा गया है। लेकिन यह पुस्तक अन सब लोगोंके लिअे भी अुपयोगी होगी जिनको अिस बातमें दिलचस्पी है कि राष्ट्रीय पुनर्रचनाके बारेमें गांधीजीके क्या विचार थे और हमारी जनताकी हालत सुधारनेकी योजनाओंमें हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीका क्या स्थान होना चाहिये।

अिस पुस्तकका अंग्रेजीसे हिन्दी अनुवाद श्री रामनारायण चौधरीने किया है।

भारतन् कुमारप्पा

अनुक्रमणिका

विभाग ११

मजदूरी पर कताअी

क — कताअीकी मजदूरी

ख — अप्रमाणित खादी

ग — खादी भंडार

विभाग १२

स्वावलंबी कताअी

विभाग १३

चरखा-संघका नवसंस्करण

विभाग १४

नअी नीति सम्बन्धी प्रश्न और चर्चा

विभाग १५

कांग्रेस और खादी

विभाग १६

सरकार और खादी

विभाग १७

हाथ-करघा

प्रास्ताविक

मैंने चरखेकी शोध कैसे की

१९०८ की बात है। मैं लन्दनमें था। चरखेका खयाल मुझे पहली बार वहां आया। मैं वहां दक्षिण अफ्रीकासे अेक शिष्ट मंडल लेकर गया हुआ था। वहां मेरा अनेक अुत्साही विद्यार्थियों और दूसरे हिन्दुस्तानियोंसे गहरा सम्पर्क हुआ। भारतकी दशाके बारेमें हमारी कअी बार लम्बी बातचीत हुअी और मैंने पलभरमें समझ लिया कि चरखेके बिना स्वराज्य नहीं होगा। मैंने तुरंत जान लिया कि सबको कातना पड़ेगा। परन्तु अुस समय मुझे करघे और चरखेका फर्क मालूम नहीं था और 'हिंद स्वराज्य' में मैंने चरखेके अर्थमें करघा शब्दका प्रयोग किया है।

यद्यपि बुद्धिमें चरखेका आविष्कार १९०८ में ही हो गया था फिर भी अुससे काम लेना शुरू हुआ तीन सालके धैर्यपूर्ण और कठोर प्रयत्नके बाद १९१८ में। खादीकी पहली प्रतिज्ञा १९१९ में ली गअी। (अुसे बम्बअीकी फैशनप्रिय बहनोंकी सुविधाके लिअे बहुत नरम कर दिया गया था।) कांग्रेसके कार्यक्रममें चरखेको १९२१ में स्थान मिला। तबसे आन्दोलनका अितिहास अेक खुली किताब है जो दो हजारके लगभग कार्यकर्ताओं और करीब सत्तर हजार कत्तिनोंके जीवनके रूपमें अभी तक लिखी जा रही है। कत्तिनोंकी जिन्दगीमें तो चरखेने आशाकी अेक किरण पैदा कर दी है।

यंग अिंडिया २-९-२८

मैं पहले-पहल १९१५ में बुनकर बना। मैं पहले बुनकर बना और फिर कातनेवाला। मैंने अिन्हीं हाथोंसे विलायती और हमारी मिलोंका सूत दोनों बुने हैं। अपने करघे पर बैठा मैं कपड़ा बुन रहा था, बुनते-बुनते अपने मनमें सोचने लगा कि जब अिस प्रकारका कपड़ा स्वयं बुननेके लिअे मिलें काफी संगठित हो जायगी तब मेरा क्या

हाल होगा और हजारों गांवों बुनकरोंका क्या होगा? और जब मैं यह सोच रहा था तब मुझे देहातकी अपनी लाखों भूखों मरनेवाली बहनोंकी याद आयी और मैं अुनके दुर्भाग्यका विचार करने लगा। मैं अुदास और बेचैन हो गया और अपने साथियों सहित मैं अैसी किसी कातनेवालीकी खोजमें लग गया जो हमें हाथ-कताओ सिखा दे। मैं यह भी पता लगाने लगा कि कोओ अेक गांव भी अैसा है या नहीं जहां मुझे अब भी हाथ-कताओ होती देखनेको मिल सके। मुझे अुस वक्त अिस बातका कुछ भी ज्ञान नहीं था कि पंजाबमें कुछ बहनें अब भी कातती हैं। लेकिन जब मुझ पर घोर घोर निराशा छा रही थी तब मैंने गुजरातकी अेक वीर विधवाका आश्रय लिया। वे अछूतोंकी सेवाका काम करती थीं। मैंने अपने अिस गहरे दुःखमें अुन महिलाको शरीक किया और अुनके सुपुर्द यह काम किया कि वे गुजरातमें स्थान स्थान पर घूमें और तब तक चैन न लें जब तक अुन बहनोंका पता न लगा लें जिनके हाथोंमें अभी तक हाथ-कताओकी कला जीवित है। अुन्होंने यह पता लगाया कि गुजरातके बीजापुरमें कुछ मुसलमान बहनें हैं जो कातनेको तैयार हैं अगर अुनका सूत अुनके घर जाकर ले लिया जाय। अुसी क्षणसे वह महान पुनरुद्धार आरंभ हो गया जो अिस समय भारतके पंद्रह हजारसे अधिक गांवोंमें फैल गया है। अिस खोजके बाद ही मैंने निश्चय किया कि जिस आश्रमका मैं संचालक हूं अुसमें विदेशी या मिलके सूतका अेक धागा भी नहीं बुना जायगा।

यंग अिंडिया १३-१-२७

१

कताअी गरीबी कम करती है

मेरा पक्का विश्वास है कि हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीके पुनरुज्जीवनसे भारतके आर्थिक और नैतिक पुनरुद्धारमें सबसे बड़ी मदद मिलेगी। करोड़ों आदमियोंकी खेतीकी आयमें वृद्धि करनेके लिअे कोअी सादा अुद्योग चाहिये। बरसों पहले वह गृह-अुद्योग कताअीका था, और करोड़ोंको भूखों मरनेसे बचाना है तो अुन्हें अिस योग्य बनाना पड़ेगा कि वे अपने घरोंमें फिरसे कताअी जारी कर सकें और हर गांवको अपना ही बुनकर फिरसे मिल जाय।

यंग अिंडिया २१-७-२०

अगर बड़ी बड़ी मशीनोंसे भारतकी दरिद्रता और अुससे पैदा होनेवाली बेकारी दूर हो सकती हो तो मैं अुनके अुपयोगकी हिमायत करूंगा। मैंने सुझाया है कि हाथ-कताअी ही अेकमात्र असा साधन हमारे हाथमें है जिससे गरीबीको भगाया जा सकता है और काम तथा धनका अकाल असंभव बनाया जा सकता है। चरखा स्वयं भी अेक अुपयोगी मशीन है और अपने नम्र तरीके पर मैंने भारतकी विशेष परिस्थितिके अनुसार अुसमें सुधार करानेकी कोशिश की है। अिसलिअे अेकमात्र प्रश्न जिसमें भारत और मानवताके प्रेमियोंको जूझना है यह है कि भारतके दारिद्र्यसे अुत्पन्न दुःखका निवारण कैसे किया जाय।

अगर हम भारतीय नरकंकालोंका चित्र अपने ध्यानमें रखें तो हमें अपने अुन ८० फी सदी लोगोंका खयाल करना होगा जो अपने ही खेतोंमें काम करते हैं और जिनके पास सालमें कमसे कम चार महीने लगभग कोअी धंधा नहीं होता और जो अिसीलिअे भुखमरीके

किनारे पर रहते ह। यह साधारण स्थिति है। आये दिनके अकालोंसे अिस अनिवार्य बेकारीमें और भी वृद्धि होती रहती है। ये नर-नारी अपने ही घरोंमें आसानीसे असा कौनसा काम कर सकते ह जिससे अनकी अत्यंत अल्प आयमें वृद्धि हो? क्या अब भी किसीको सन्देह है कि यह काम केवल हाथ-कताअी है — काअी दूसरा नहीं?

यंग अिंडिया ३-११-२१

जैसे घर पर भोजन बनाना महंगा नहीं होता और अुसका स्थान होटलका खाना नहीं ले सकता, वैसे ही घर पर सूत कात लेना और कपड़ा बुन लेना भी महंगा नहीं पड़ सकता। हमारी आबादीके २५ करोड़से अधिक लोग अपने ही हाथोंसे कातेंगे और अिस तरह तैयार हुअे सूतका आसपासके स्थानोंमें कपड़ा बुनवा लेंगे। यह आबादी जमीनके साथ बंधी हुअी है और असे सालभरमें कमसे कम चार माह बेकार रहना पड़ता है।

अगर ये लोग अिस समयमें कातें और अस सूतका कपड़ा बुनवा कर पहनें तो अुनकी खादीके साथ कोअी मिलका कपड़ा स्पर्धा नहीं कर सकता। अिस तरह तैयार किया हुआ कपड़ा अुनके लिअे सस्तेसे सस्ता होगा।

यंग अिंडिया ८-१२-२१

कताअीके पक्षमें जो दावे किये जाते हैं वे ये हैं:

१ जिन लोगोंको फुरसत है और जिन्हें थोड़ेसे पैसोंकी भी जरूरत है अुन्हें अिससे आसानीसे रोजगार मिल जाता है;

२ अिसका हजारोंको ज्ञान है;

३ यह आसानीसे सीखी जाती है;

४ अिसमें लगभग कुछ भी पूंजी लगानेकी जरूरत नहीं होती;

५ चरखा आसानीसे और सस्ते दामोंमें तैयार किया जा सकता है। हममें से अधिकांशको अभी तक यह मालूम नहीं है कि कताअी अेक ठीकरी और बांसकी खपचीसे (यानी तकली पर) भी की जा सकती है;

६ लोगोंको अिसमें अरुचि नहीं है

७ अिससे अकालके समय तात्कालिक राहत मिल जाती है

८ विलायती कपड़ा खरीदनेमें भारतका जो धन बाहर चला जा रहा है असे यही रोक सकती है

९ अिससे करोड़ों रुपयोंकी जो बचत होती है वह अपने आप सुपात्र गरीबोंमें बंट जाता है

१० अिसकी छोटीसे छोटी सफलतासे भी लोगोंको बहुत कुछ तात्कालिक लाभ होता है

११ लोगोंमें सहयोग पैदा करानेका यह अत्यंत प्रबल साधन है।

अुसकी सफलताके रास्तेकी कठिनाअी यह है कि आवश्यक संख्यामें कार्यकर्ता तो मध्यम वर्गमें से ही मिल सकते हैं और अुनमें श्रद्धाका अभाव है। अिससे भी बड़ी मुश्किल यह है कि बढ़िया दिखाअी देने वाले मिलके कपड़ेकी जगह खादीको अपनानेकी लोगोंमें रुचि नहीं है। बीचके कालमें खादीकी महंगाअी भी अेक कठिनाअी है। अगर कताअीके प्रस्तावको लोग काफी संख्यामें अनुकूल अुत्तर दें तो खादीको मिलके कपड़ेकी स्पर्धा करने योग्य बनाया जा सकता है। अिसमें शक नहीं कि अिस आन्दोलनकी सफलताके लिअे लोगोंको कुछ त्याग करनेकी जरूरत है। यह थोड़ा त्याग भी जरूरी न होता अगर हमारी अपनी सरकार होती जिसे किसानोंकी जरूरतोंका ध्यान होता और जो अुन्हें विलायती स्पर्धासे बचानेके लिअे कटिबद्ध होती। थोड़े समयके लिअे मध्यम वर्ग खुशीसे कुरबानी करे तो वही काम हो सकता है जो सरकारके राष्ट्रीय होने पर हो सकता है।

शक्तिके अपव्ययका कोअी सवाल नहीं है। जिन हजारों बहनोंको डॉ० राय पहले दानका अन्न दे रहे थे और अब अिज्जतके साथ रोजगार देकर थोड़ा या पूरा स्वावलम्बी बना रहे हैं क्या अुनकी शक्तिका अपव्यय हुआ है? अुनके पास भीख मांगने या भूखों मरनेके सिवा और कोअी काम नहीं है। अुनकी आवश्यकताओंका अध्ययन करने, अुनके दुःखोंको महसूस करने और अुन्हें आगे बढ़नेमें मदद देनेके लिअे जो नौजवान गांवोंमें जा रहे हैं, क्या वे अपनी शक्ति नष्ट कर रहे

है? हजारों सम्पन्न युवक-युवतियां करोड़ों नंगा-भूखोंकी खयाल करें और अनके खातिर आध घंटा रोज धर्मभावसे कातनेको अलग निकालें तो क्या यह शक्तिको नष्ट करना कहा जायगा? किसी पुरुष या स्त्रीके पास और कोओ धंधा न हो और वह कुछ कमानेके लिओ काते तो असे अुतना लाभ तो है ही। अगर कोओ पुरुष या स्त्री यज्ञके रूपमें काते तो वह भी लाभ ही है। अिस प्रकार अगर कोओ काम असा हो जिसमें लाभ ही लाभ है और हानि कुछ भी नहीं है तो वह काम हाथ-कताओ ही है।

यंग अिंडिया २१-८-२४

जन-साधारणकी बीमारी रुपयेकी कमी अितना नहीं है जितनी कामकी कमी है। श्रम ही धन है। यदि कोओ करोड़ोंके लिओ अुनके घरोंमें काम जुटा दे तो कहना चाहिये कि वह अुनके लिओ रोटी कपड़ा या यों कहिये कि रुपया ही जुटा देता है। चरखा अुनके लिओ असा ही श्रम सुलभ कर देता है। अिसलिओ जब तक चरखेसे अच्छी चीज नहीं मिल जाती तब तक चरखा कायम रहेगा।

यंग अिंडिया १८-६-२५

सारी बुराअीका कारण — अुसकी जड़ — बेकारी है। और अगर यह जड़ नष्ट की जा सकती हो तो दूसरी किसी कोशिशके बिना ही अधिकांश बुराअियोंका सुधार किया जा सकता है। भूखों मरनेवाले राष्ट्रमें आशा या प्रारंभशक्ति नहीं रह जाती। वह गन्दगी और बीमारीके प्रति अुदासीन हो जाता है। सभी सुधारोंके लिओ वह कहने लगता है कि अिनसे क्या लाभ? जीवनदायी चरखेके द्वारा ही बेकारी भगानेके लिओ निराशाको यह तुषार आशाके अुजालेमें बदला जा सकता है।

यंग अिंडिया २७-८-२५

आपको मालूम है कि हमारे देशकी औसत रोजाना आमदनी क्या है? हमारे अर्थशास्त्री कहते हैं कि डेढ़ आना है यद्यपि यह कथन भी भ्रामक है। किसी नदीका पानी कहीं ६ फुट गहरा हो और

कहीं दो फुट और अिसा तालाब हो जो अुसकी औसत गहराई ८ फुट मानकर अुसे पार करने लगे तो क्या वह डूब नहीं जायगा? आंकड़े अिसी तरह गुमराह करते हैं। औसत आमदनीका हिसाब गरीबों और वाअिसराय तथा करोड़पतियोंकी आयके आंकड़ोंसे लगाया जाता है। जिसलिअे वास्तविक आय मुश्किलसे तीन पैसे प्रति व्यक्ति होगी। अब अगर मैं चरखेकी सहायतासे अुस आमदनीमें तीन पैसे भी बढ़ा देता हूं तो क्या मैं चरखेको कामधेनु कहनेमें भूल करता हूं? अगर कोअी मुझे यह समझा दे कि भारतमें गरीबी नहीं है और पैसेके अभावमें भूखों मरनेवाले कुछ ही लोग हैं तो मैं अपनी भूल मान लूंगा और चरखेको नष्ट कर दूंगा।

यंग अिंडिया १७-९-२७

हमें कुछ बुनियादी तथ्य समझ लेने चाहिये। पहला बड़ा तथ्य यह है कि मेहनतकी जिन्दगी जीनेवाले हमारे करोड़ों देशवासियोंमें पहलेसे ही भयंकर बेकारी है। वर्षमें कमसे कम चार महीने अुनके पास कोअी काम नहीं होता। अेक बार यह बात अच्छी तरह समझमें आ जाने पर यह निश्चित निष्कर्ष निकलता है कि अिन करोड़ों आदमियोंको बेकारीके समयका अुपयोग करनेके लिअे अुन्हें काममें लगानेमें जरा भी देर नहीं करना चाहिये। दूसरी बात समझ लेनेकी यह है कि अगर अिस देशके निवासियोंकी औसत आमदनी सात पैसे रोज यानी अेक अंग्रेजी पेनीसे कम है तो करोड़ों श्रमजीवियोंकी औसत आय अपने आप अुससे भी कम होगी। यदि कोअी अुनकी आमदनीमें दो पैसे रोजकी वृद्धि कर देता है और वह भी कोअी बड़ी पूंजी लगाये बिना कर देता है तो कहना चाहिये कि वह अुनकी आमदनी बहुत बढ़ा देता है और साथ ही अिन करोड़ों लोगोंके दिलमें बुझती हुअी आशाको फिरसे सजीव कर देता है।

यंग अिंडिया १-११-२८

चरखेके आलोचकोंका अेकमात्र आक्षेप — जिस पर वे बहुत जोर देते हैं — यह है कि अुससे जैसी चाहिये वैसी आमदनी नहीं होती। लेकिन

अगर अुससे अेक पैसा रोज भी मिल जाता है तो वह भी कम नहीं है। क्योंकि हमें याद रखना चाहिये कि हमारी औसत आय छह पैसे रोज है जब कि अेक अमेरिकनकी १४ रुपये रोज और अेक अंग्रेजकी ६ रुपये रोज। चरखा तो नहीं कुछ नहीं है वहां कुछ न कुछ अुत्पन्न करनेका प्रयत्न है। अगर अुस चरखेके द्वारा राष्ट्रके साठ करोड रुपये हम बचा लेते हैं और यह हम जरूर कर सकते हैं तो हम राष्ट्रीय आयमें अुतनी विशाल वृद्धि कर देते हैं। अिस प्रक्रियामें हमारे देहातका संगठन अपने आप हो जाता है। और चूंकि यह सारी रकम गांवके गरीबसे गरीब लोगोंमें ही बांटना होता है अिसलिअे यह योजना अितनी बड़ी दौलतके न्यायपूर्ण और लगभग समान बंटवारेकी अेक योजना बन जाती है। असे वितरणके नैतिक महत्त्वको और समझ लिया जाय तो चरखेका पक्ष अकाट्य बन जाता है।

यंग अिंडिया १७–२–२७

२

हरिजनोंकी मददका साधन

अपने भ्रमणमें मैंने देखा है कि कताअी और बुनाअी अुन धंधोंमेंसे हैं जिनसे हजारों हरिजनोंका गुजारा होता है और अगर अुन्हें अच्छी तरह संगठित किया जाय तो और भी अधिक लोगोंको सहारा मिल सकता है। कुछ स्थानों पर असे जुलाहे पाये जाते हैं जिनकी गिनती अनके धंधेके कारण अछूतोंमें की जाती है। वे ज्यादातर बिलकुल सादी मोटीसे मोटी खादी बुननेवाले हैं। वे तेजीसे नष्ट हो रहे थे। लेकिन खादीने आकर अन्हें बचा लिया और अुनके मालके लिअे मांग पैदा हो गअी। अुस समय पता चला कि बहुतसे हरिजन परिवार असे भी हैं जिनका गुजर कताअीसे होता है। अिस प्रकार खादी गरीबोंके जीवनमें दो तरहसे बैसाखीका काम देती है। वह सबसे गरीब लोगोंकी मददगार है और अुनमें हरिजन शामिल हैं। ये लोग

गरीबोंमें भी सबसे ज्यादा नि सहाय ह। जिसका कारण यह है कि बहुतसे धधे जो दूसरे लोगोको सुपलब्ध ह हरिजनोको अुपलब्ध नही ह।

हरिजन २७-४-३४

३

कताओका स्वास्थ्य-सबधी महत्त्व

अब तक जमा की गओ सारी गवाही बताती है कि कताओ अेक सुन्दर कला है और जिसकी प्रक्रिया अत्यत सुखद है। भिन्न भिन्न अकारका सूत निकालनेके लिअ काओ यात्रिक क्रिया काफी नही है। जो बराबर तौर पर कताओ करते ह अुन्हें मालूम है कि जब वाछित अकका सूत निकालनेके लिअ अगुलिया और आखें अचूक ढगसे काम करती ह तब कसा आनन्द मिलता है। कला अगर सच्ची कला है तो अुससे शाति मिलनी चाहिये। साल भर पहले मन सर प्रभाशकर पट्टणीका सबूत पेश किया था कि दिनभरकी थकानके बाद चरखा चलानेसे अुनके ज्ञानतंतुओको कितनी शान्ति मिलती है और अुन्हें कसा गहरी नीद आती है। अेक बहनने बुरी तरह अशात ज्ञानतंतुओको कातनेसे कितनी राहत मिली जिस बारेमें अुनके पत्रसे कुछ अश नीचे दिये जाते ह

> जब म भागकर अपने कमरेमें गओ और अधेरेमें शरीरको सिरसे पाव तक बचैन बना रही अपनी भयकर पीडासे जलती रही मन कुछ समय तक तो प्रार्थना की और शात होनेका प्रयत्न किया और फिर म चरखेकी तरफ मुडी। मुझे अुसमें जादूकी तरह आराम मिला। अुसकी शात और नियमित मुरीली गतिने मुझे तुरत स्वस्थ और स्थिर कर दिया और अुसकी सवाक विचारोने मुझ अीश्वरके अधिक निकट पहुचा दिया।'

यह महज अेक-दो व्यक्तियोका अनुभव नही है परतु कओ कातनेवालोका अनुभव है। लेकिन यह कहनेमें कोओ लाभ नही कि

अनेक लोगोंको कातनेमें आनन्द मिलता है, जिसलिअे सभीको मिलेगा। चित्रकारी बढ़िया कला मानी जाती है, मगर सभी अुसे नहीं अपनाते।

यंग अिंडिया २७-५-२६

ये बातें पूछनेके बाद मि० फीमनने पूछा — क्या आपने यह सोचा है कि चरखा रोगीके दिमागको भी आराम देता है?

गांधीजीने अुत्तर दिया — हां, मैंने अिस विषय पर डॉक्टरोंके अेक अध्यापकका भेजा हुआ कुछ साहित्य पढ़ा है। बंगालके अेक अवसरप्राप्त जेल सुपरिन्टेन्डेन्टने भी मुझे लिखा था कि चरखा अिस तरह पागलोंके अिलाजमें अुपयोगी सिद्ध हुआ है, खास तौर पर असकी व्यवस्थित गतिके शान्तिदायक असरके कारण।

मि० फीमन बोले — मैं अमरीकियोंको यह समझाना चाहता हूं कि चरखा अेक विचार करानेवाला यंत्र है। अपने कताअी वर्गमें मैंने देखा कि अगर मैं चरखा लेकर अकेला बैठता हूं तो वह मुझे विचारकी प्रेरणा देता है। अगर अमरीकावाले आज कातने लगें तो वे कुछ विचार कर सकते हैं। क्योंकि अन्यथा अुन्हें सोचनेका बिलकुल समय नहीं मिलता।

हरिजन १७-११-४६

४

कताअी और ब्रह्मचर्य

जो ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहते हैं, अुनके लिअे भी मैं चरखा पेश करता हूं। यह तर्क करनेकी चीज नहीं है, क्योंकि यह अनुभवकी बात है। जो आदमी अपने विकारोंको वशमें रखना चाहता है अुसे शान्त रहनेकी जरूरत है। अुसकी सारी भीतरी अशान्ति मिट जानी चाहिये। और चरखेकी गति अितनी शान्त और सौम्य है कि जो अिसे पूरी श्रद्धासे चलाते हैं अुनके सारे विकार शान्त हो जाते हैं। अिसे चलाकर मैं अपना क्रोध शमन कर सका हूं और अिसी प्रकारका

प्रमाणमें कभी दूसरे ब्रह्मचारियोंको दे सकता हूँ। अलबत्ता, अिन व्यक्तियोंको मूर्ख और असाध्य बताकर अुनकी दिल्लगी अुड़ाना आसान है, मगर अन्तमें यह मौज सस्ता नहीं पड़ेगा। कारण इसी अुड़ानेवालेको आवेशमें आकर अेक असे सुन्दर साधनको खो बैठना है, जिससे वह अपने विकारोंको शान्त करके बल और शक्ति प्राप्त कर सकता है। अिसलिअे मैं अिन पंक्तियोंके पढ़नेवाले प्रत्येक युवक और युवतीसे खास तौर पर सिफारिश करता हूँ कि वे चरखेको आजमाअिश करके देखें। अुन्हें मालूम हो जायगा कि कातने बैठनेके थोड़ी देर बाद ही अुनके विकार मिटने लगते हैं। मेरे कहनेका मतलब यह नहीं है कि कताअी बन्द कर देनेके बाद भी दिनभर विकार शान्त रहेंगे, कारण मानव विकार हवासे भी जल्दी चलनेवाले होते हैं और अुन्हें पूरी तरह बसमें रखनेके लिअे अपार धीरजकी जरूरत होती है। मेरा तो अितना ही दावा है कि स्थिरता प्राप्त करनेके लिअे चरखा अुन्हें अेक जबरदस्त साधन प्रतीत होगा।

यंग अिण्डिया २७–५–२६

५

कताअी और सहयोगी प्रयत्न

कताअी करोड़ोंका संगठन करके अुन्हें अैसे सम्मिलित सहयोगी प्रयत्नमें लगा देगा, लाखोंकी शक्तिकी रक्षा और अुपयोग करेगा और करोड़ों जीवनोंको मातृभूमिकी सेवामें समर्पित करेगा। अिसके सिवा अितने बड़े भगीरथ कार्यको करनेसे हमें स्वयं अपनी शक्तिका साक्षात्कार हो जायगा। अिसका यह अर्थ होगा कि कताअी द्वारा सामने आनेवाली असंख्य पेचीदा समस्याओं और तफसीलकी बातों पर हमारा पूरा काबू हो जायगा। अुदाहरणार्थ हम पाअी पाअीका हिसाब रखना सीखेंगे, देहातमें स्वच्छता और स्वास्थ्यपूर्ण स्थितिमें रहना सीखेंगे, अपने रास्तेकी रुकावटोंको दूर करेंगे अित्यादि। कारण अगर हम ये सब बातें नहीं सीखेंगे तो यह काम पूरा नहीं कर सकेंगे।

जिस प्रकार चरखेसे हमें अपने भीतर यह क्षमता पैदा करनेका साधन मिल जाता है।

यंग अिंडिया २७–५–२६

पिछले साल मद्रासमें अक सहकारी समितिमें भाषण देते हुअे मैंने कहा था कि हाथ-कताअी द्वारा मैं संसारकी सबसे बड़ी सहकारी समिति कायम करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। सहयोग तो गुरूसे ही होना चाहिये।

अुदाहरणके लिअे किसी सामान्य केन्द्रकी कार्यपद्धतिका लीजिये। केन्द्रीय कार्यालयमें कत्तिनोंके लिअे कपास अिकट्ठी की जाती है। ग्राम्य बन्द पर हो लोन्नवाला स्त्रियां कपासको लोढ़ती हैं। फिर अुसे पिंजाराको बांट दिया जाता है जो अुसे पूनियाकी शकलमें लौटा देते हैं। पूनियां कत्तिनोंको बांट दी जाती हैं। कत्तिनें अपना अपना सूत हर सप्ताह ला देती हैं और बदलेमें अपनी मजदूरी और नअी पूनियां ले जाती हैं। अिस तरह आया हुआ सूत बुननेके लिअे जुलाहोंको दे दिया जाता है और खादीके रूपमें बिकनेके लिअे वापस ले लिया जाता है। यह खादी पहननेवालों अर्थात् आम लोगोंको बेची जाती है। अिस प्रकार मुख्य कार्यालयको जाति रंग या धर्मका भेद रखे बिना अनेक लोगोंके साथ सदा सजीव संपर्क रखना पड़ता है। कारण, केन्द्रको न कोअी मुनाफा करना होता है और न मालिकोंके सिवा किसीकी चिन्ता करनी पड़ती है। केन्द्रको अुपयोगी बनना हो तो हर प्रकारकी सफाअी रखनी पड़ती है। केन्द्र और अिस विशाल संगठनके अंगोंके बीच शुद्ध आध्यात्मिक या नैतिक संबंध होता है। अिसलिअे कताअी केन्द्र अेक सहकारी संस्था होता है जिसके सदस्य लोढ़नेवाले, पींजनेवाले, कातनेवाले, बुननेवाले और खरीदनेवाले होते हैं और वे सब परस्पर सद्भाव और सेवाके समान बंधनमें बंधे होते हैं।

यंग अिंडिया १०–६–२६

कताओी — अेकमात्र सार्वत्रिक अुद्योग

अुपयोगी मालूम होनेवाले सारे अुद्योगोंका अेक-अेक कर छाटते छाटते हम अिस अनिवार्य परिणाम पर पहुंचते हैं कि लाखों लोगोंके लिअे अेकमात्र सार्वत्रिक अुद्योग कताओी ही है और कोओी नहीं। अिसका यह अर्थ नहीं कि दूसरे अुद्योगोंका कोओी महत्त्व नहीं या वे निकम्मे हैं। सच तो यह है कि व्यक्तिगत दृष्टिकोणसे कोओी भी दूसरा अुद्योग कताओीसे ज्यादा आमदनी देनेवाला होता है। घड़िया बनानेका पेशा अेक अत्यंत आय-प्रद और मोहक अुद्योग होगा। मगर अुसमें कितने आदमी लग सकते हैं? क्या वह लाखों ग्रामीणोंके लिअे किसी कामका है? परन्तु यदि देहाती अपने घरकी पुनर्रचना कर लें, अपने बापदादाकी तरह फिरसे रहना शुरू कर दें, अपने बेकारीके समयका सदुपयोग करने लगें तो और सारे अुद्योग अपने आप पुनर्जीवित हो जायँगे। हम आगे अिसलिअे नहीं बढ़ पाते कि हमारे पास लोगोंके चुनावके लिअे अुद्योगोंकी अेसी सूची है जिसमें कोओी वर्गीकरण नहीं है जब कि हमें मालूम होना चाहिये कि केवल अेक ही अुद्योग अेसा है जो सबके सामने रखा जा सकता है। संभव है सब अिसे न अपना सकें। जो और किसी अुद्योगको अपना सकते हों और अपनाना चाहते हों वे शौकसे अुसे अपना लें। मगर राष्ट्रके साधन अेक हाथ-कताओीके अुद्योग पर ही केन्द्रित होने चाहियें क्योंकि अिसे सब तुरन्त अपना सकते हैं और अधिकांश लोग अन्य किसी अुद्योगको नहीं अपना सकते।

यंग अिंडिया ३०–९–२६

खादी स्वावलंबन आत्म-निर्भरता और स्वतंत्रताका प्रतीक है — न केवल व्यक्तियों अथवा समूहोंके लिअे सम्प्रदायों अथवा जातियोंके लिअे बल्कि सारे राष्ट्रके लिअे। यह अेसा आन्दोलन है जिसमें अमीर

गराब स्त्री-पुरुष लडके लडकियां हिन्दू मुसल्मान आसाआ पारसी और यहूदी अंग्रेज अमराकी और जापानी सभी आगे सकते ह यदि वे भारतका भला चाहते ह और गोषणकी भावनासे मुक्त होना चाहते ह। जिस प्रकार यह अक अनोखा आन्दोलन है। यह कुछ लोगो या बहुतसे लोगोके लिओ ही अच्छा नहा है बल्कि सबके लिओ अच्छा है।

यंग जिन्डिया १०-२-२७

७

श्रमका गौरव सिखानेके लिओ कताओ

म देहातमें जितना गन्दगी देखता ह अुतना ही बडा आघात देहातियोंक मिन्न पर अनकी आत्मामें सूनापन देखकर मुझ लगता है। अपन खेतोके साथ-साथ मजदूरी करनेके सिवा अुनके पास और कोआ काम नहीं होता जिसलिअ वे भी ज्यादातर बेकार बैठ रहते ह। यह बडासे बडा दुखद घटना है कि लोगोंने हाथसे काम लेना छोड दिया है। प्रकृतिने हम मानव प्राणियोंको जो वस्तु प्रदान की है अुसे बदर्दीसे बरबाद करनेका दण्ड वह हमें भयकर रूपमें दे रही है। हम अिस देनका पूरा अुपयोग नहीं कर रहे ह। हाथोंकी अंगुलियां यह अन थोडीसी वस्तुओंमें स है जो हमें जानवरोंसे अलग करती ह। हममें से लाखों अन्हें पैरोंकी तरह अिस्तेमाल करते ह। नतीजा यह होता है कि प्रकृति शरीर और मन दोनोंको भूखा मारता है।

अिस विचारहीन बरबादीका केवल चरखा ही रोक सकता है। यह काम बहुत अभी तुरत और रुपया या बुद्धिकी असाधारण पूजी लगाये बिना ही कर सकता है। अिस बरबादीके कारण हम लगभग अधमरी हालतमें जा रहे ह। अिसका पुनरुद्धार हो सकता है अगर हर घर फिरसे कताओका कारखाना बन जाय और हर गाव बुनाओका कारखाना हो जाय। अिसके साथ साथ प्राचीन देहाती कला और देहाती संगीतको भी तुरंत पुनर्जीवन हो जायगा। आधे पेट रहने

वाले राष्ट्रमें न धर्म ही सकता है न कला हो सकती है और न वह अपना संगठन ही कर सकता है।

यंग अिंडिया १७-२-२७

खादीका अेक खास मिशन है। खादी अुन लाखों लोगोंको गौरवपूर्ण अुद्योग प्रदान करती है जो वर्षमें लगभग चार मास बेकार रहते हैं। अिस कामसे जो आमदनी होती है अुसे छोड़ दें तो भी वह स्वयं अपना पुरस्कार है। क्योंकि अगर लाखों लोगोंको मजबूरन आलसी बनकर रहना पड़े तो अवश्य ही अुनकी आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक मृत्यु हो जायगी। चरखेसे लाखों गरीब स्त्रियोंका दर्जा अपने आप बढ़ जाता है। अिसलिअे चाहे लोगोंको मिलका कपड़ा मुफ्त दिया जाता हो तो भी अुनकी सच्ची भलाअी अिसीमें है कि वे अुसे लेनेसे अिनकार कर दें और अपनी मेहनतकी अुपज खादीको पसंद करें।

हरिजन १०-१२-३८

८

ग्रामोद्धारके लिअे कताअी

चरखा मुझे जनसाधारणकी आशाओंका प्रतीक मालूम होता है। चरखेको खोकर अुन्होंने अपनी आजादी जैसी कुछ भी वह थी खो दी। चरखा देहातोंकी खेतीकी पूर्ति करता था और अुसे गौरव देता था। वह विधवाओंका मित्र और सहारा था। वह देहातियोंको आलस्यसे बचाता था, क्योंकि चरखेमें पहलेके और पीछेके सब अुद्योग — ओटाअी, पिंजाअी, ताना भरना, मांड लगाना, रंगाअी और बुनाअी — आ जाते थे। और अिनसे गांवके बढ़अी और लुहार काममें लगे रहते थे। चरखेसे सात लाख गांव आत्मनिर्भर रहते थे। चरखेके चले जाने पर तेलघानी आदि दूसरे ग्रामोद्योग भी खतम हो गये। अिन धंधोंकी जगह और किसी धंधेने नहीं ली। अिसलिअे देहातसे अुनके विविध

धंधे अनकी अुत्पादक प्रतिभा और अुनसे होनवाली थोडी आमदनी सबका सफाया हो गया।

जिन दूसरे देशोंके भी ग्रामोद्योग नष्ट हो गये अुनके अुदाहरणसे हमारा काम नही चलेगा। क्योंकि वहांके ग्रामीणोंको क्षतिपूर्ति करनेवाली कुछ सुविधाअें प्राप्त थी जब कि भारतके देहातियोंको वसी कोअी सुविधा प्राप्त नही थी। पश्चिमके अुद्योग प्रधान देश दूसरे राष्ट्रोंका शोषण कर रहे थे। हिंदुस्तान तो खुद अक शोषित देश है। अिस लिअ अगर ग्रामीणोंको फिरसे अपनी स्थितिमें वापस आना हो तो सबसे स्वाभाविक बात जो सूझती है वह यह है कि चरखा और अुसके साथ लगी हुअी सब बातोंका पुनरुद्धार हो।

यह पुनरुद्धार तब तक नही हो सकता जब तक बुद्धि और देश भक्तिवाले निःस्वार्थ भारतीयोंकी अक सेना न हो और वह चरखका संदेश देहातोंमें फैलाने और अुनकी निस्तेज आंखोंमें आशा और प्रकाशकी किरण जगानेके लिअ दत्तचित्त होकर काम न करने लगे। यह सही ढंगके सहयोग और प्रौढशिक्षाका जबरदस्त प्रयत्न है। अुससे चरखेकी शांत परंतु प्राणदायक गतिकी तरह ही अक शांत और निश्चित क्रांति आती है।

चरखेके कामके २० वर्षके अनुभवने मुझे अपनी अिस बातकी सही होनेका विश्वास करा दिया है। चरखेने गरीब हिंदुओं और मुसलमानोंकी लगभग अकसी सेवा की है। अुसके द्वारा हमने बगैर शोरगुल मचाये अिन लाखों देहाती कारीगरोंकी जबमें लगभग ५ करोड़ रुपया पहुंचाया है।

अिसलिअ मैं निःसंकोच कहता हूं कि सब धर्मोंके जनसाधारणकी दृष्टिसे चरखा हमें स्वराज्य तक पहुंचा देगा। चरखेसे देहातोंको फिरसे अपना अुचित स्थान प्राप्त हो जाता है और अूंच नीचके भेदभाव मिट जाते हैं।

हरिजन १३–४–४०

९

कताअी — अहिंसाका प्रतीक

१९१९ में भारतके स्वतंत्रता-प्रेमियोंको यह बताया गया था कि स्वराज्यका अेकमात्र और अचूक अुपाय अहिंसा है और अहिंसाका प्रतीक चरखा है। चरखेको राष्ट्रीय झंडे पर अुसका गर्वीला स्थान १९२१ में मिला। मगर अहिंसा भारतके हृदयमें गहरी नहीं पैठी थी, अिसलिअे चरखेको अपना अुचित स्थान कभी नहीं मिला। और वह तब तक हरगिज नहीं मिलेगा जब तक कांग्रेसजनोंके विशाल समूहमें अहिंसाके प्रति सजीव श्रद्धा पैदा न हो जायगी। जब वे यह श्रद्धा पैदा कर लेंगे तब किसी दलीलकी जरूरतके बिना अुन्हें खुद पता लग जायगा कि चरखेके सिवा अहिंसाका और कोअी प्रतीक नहीं है और अुसके सार्वत्रिक प्रचारके बिना अहिंसाके प्रत्यक्ष स्थान नहीं होगा।

हरिजन, १३-४-४०

चरखा व्यापारिक युद्धकी नहीं, व्यापारिक शांतिकी निशानी है। अुसका संदेश संसारके राष्ट्रोंके लिअे दुर्भावका नहीं परंतु सद्भाव और स्वावलम्बनका है। अुसे संसारकी शांतिके लिअे खतरा बनने या अुसके साधनोंका शोषण करनेवाली किसी जलसेनाके संरक्षणकी जरूरत नहीं होगी, परंतु अुसे जरूरत होगी अैसे लाखों लोगोंके धार्मिक निश्चयकी जो अपने अपने घरोंमें अुसी तरह सूत कात लें जैसे आज वे अपने अपने घरोंमें अपना भोजन बना लेते हैं। मैंने करनेके काम न करके और न करनेके काम करके अैसी अनेक भूलें की हैं, जिनके लिअे मैं भावी संतानोंके शापका भाजन बन सकता हूं। मगर मुझे विश्वास है कि चरखेका पुनरुद्धार सुझाकर तो मैं अुनके आशीर्वादका ही हकदार बना हूं। मैंने अुस पर सारी बाजी लगा दी है, क्योंकि चरखेके हरअेक चक्करमें शांति, सद्भाव और प्रेम भरे हैं।

यंग अिंडिया, ८-१२-२१

मेरा यह दावा है कि (खादी और दूसरे ग्राम-अुद्योगोंका पुनरुद्धार करके)* हम अितना विकास कर लेंगे कि आज लोगोंके दिलोंमें खादी और घरेलूपनका जो आदर्श बसा हुआ है असके अनुरूप हम राष्ट्रीय जीवनका पुनर्निर्माण कर सकेंगे। फिर हम असे साम्राज्यवादमें नहीं घसीटे जायेंगे जिसकी बुनियाद संसारकी कमजोर जातियोंके शोषण पर है और न हमें असी घबरानेवाली और भौतिकतावाली संस्कृतिको स्वीकार करना होगा जिसकी रक्षा शांतिपूर्ण जीवनको लगभग असंभव बना देनेवाली जलसेना और हवाअी सेना करती है। अिसके विपरीत फिर हम अुस साम्राज्यवादको परिष्कृत करके राष्ट्रोंका असा संघ बना लेंगे जिसमें वे मिलेंगे तो संसारको अपनी अुत्तम वस्तु देनेके लिअ और जगतके कमजोर राष्ट्रों या जातियोंका पशुबलके बजाय स्वयं कष्ट अुठाकर रक्षा करनेके लिअ। यह कायापलट चरखेकी पूर्ण सफलताके बाद ही हो सकता है। भारत असा सन्देश देनेके योग्य तभी हो सकता है जब वह अन्न और वस्त्रकी अपनी दो मुख्य आवश्यकताओंके बारेमें आत्म निर्भर होकर प्रलोभनसे अछूता और अिसलिअ बाहरी आक्रमणोंसे सुरक्षित हो जाय।

यंग अिंडिया २९-६-२१

'न्यू यार्क पोस्ट' वाले मि० अण्डू फामसनने पूछा : क्या अमरीकाके लिअ चरखेका कोअी सन्देश है? क्या वह अणुबमके जवाबी हथियारका काम दे सकता है?

गांधीजीने अुत्तर दिया : मुझे जरूर लगता है कि अमरीका और सारी दुनियाके लिअ असके पास सन्देश है। मगर वह तब तक नहीं दिया जा सकता जब तक भारत संसारको यह दिखा न दे कि अुसने चरखेको पूरी तरहसे अपना लिया है। आज तो यह बात नहीं है। कसूर चरखेका नहीं है। मुझे जरा भी सन्देह नहीं कि भारत और संसारकी रक्षा चरखेमें ही निहित है। अगर भारत यन्त्रोंका गुलाम बन जाता है तो मैं कहूंगा कि भगवान जगतको भारतसे बचाये।

* कोष्ठकके भीतरके शब्द हमारे हैं — सम्पादक।

अुन्होंने अपनी बात जारी रखते हुअे कहा, भारतके पास अेक अत्यन्त अुदात्त अुद्देश्य है। अुसे दुनियामें दोस्ती और अमन कायम करना है। अमन निरे सम्मेलनोंसे स्थापित नहीं हो सकता। हम सब देखते हैं कि सम्मेलनोंके होते हुअे भी शांतिका भंग किया जा रहा है।

मि० फ्रीमन बोले, 'अेक आम समझदार मनुष्य और अेक अमरीकनकी हैसियतसे मैं जितना ही कह सकता हूँ कि भले ही बहुतसे अमरीकन कातनेवालोंका मखौल करें, पर अैसे भी लोग कम नहीं हैं जो गंभीरतापूर्वक अिस पर विचार कर रहे हैं। कोओ न कोओ चीज अैसी खोजनी पड़ेगी जो संस्कृतिको विनाशसे बचाये। जीवनमें सादगी लानी होगी।

गांधीजीने अुत्तर दिया, मानव व्यक्तित्वको बरकरार रखनेका और कोओ अुपाय है ही नहीं। Unto This Last — सर्वोदय — अिस शब्द प्रयोगमें जो अर्थ समाया हुआ है मैं अुस सबका हामी हूँ। अुस पुस्तक* ने मेरे जीवनमें परिवर्तन ला दिया। हमें छोटेसे छोटे आदमीके साथ वैसा ही बरताव करना होगा जैसा हम चाहते हैं कि दुनिया हमारे साथ करे। सबको समान अवसर मिलना ही चाहिये। अवसर मिलनेसे हरअेक मनुष्यके आध्यात्मिक विकासकी समान संभावना है।

अुन्होंने फिर पूछा, क्या आप चाहते हैं कि अमरीकन लोग चरखेको अपनायें?

गांधीजीने जवाब दिया, हां। मगर मुझे मालूम नहीं कि जब तक चरखा यहां अच्छी तरह स्थापित न हो जाय तब तक वहां अिस कोओी अपनायेगा या नहीं। अिसके विपरीत यदि भारत अपने कपड़ेके लिअे अिसे अंगीकार कर लेता है तो मुझे दुनियाको कहनेकी जरूरत नहीं होगी। वह अिसे अपने आप स्वीकार कर लेगी। आजकल तो पश्चिमी यन्त्रोंका भारत पर अैसा असर हो रहा है कि भारतके लिअे

* जॉन रस्किन कृत 'अन्टु दिस लास्ट'।

अुसका सफलतापूर्वक सामना करना चमत्कारसे कम नहीं होगा। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि आज तो सब बातें अिससे अुलटी हो रही हैं।

मगर आपने आशा तो नहीं छोडी है?'

मैं आशा छोड नहीं सकता जब तक मुझे अुस चेतन शक्तिमें श्रद्धा है जो हमारे न जानते हुअे भी हमारे साथ है।

हरिजन १७-११-४६

विभाग २   अुद्योगवाद क्यों नहीं?

१०

क्या अुद्योगवादसे बचा जा सकता है?

खद्दरके अेक अुत्कट प्रेमीके पत्रका यह अंश दिलचस्पीके साथ पढ़ा जायगा

> मेरा खद्दरमें विश्वास है। मुझे खद्दरका मिशन दामेकी तरह साफ नजर आता है। वह जीवनको सादा बनाकर शुद्ध करता है। वह हमें गरीबोंके साथ सेवाके बंधनमें बांधता है। जो दरिद्रता आज राष्ट्रके शरीर और आत्माका हनन कर रही है अुससे बचनेका वह अेकमात्र अुपाय है। क्योंकि कमसे कम जहां तक लाखों निरक्षरोंका सवाल है शरीरके बिना आत्माका कोअी प्रश्न ही नहीं है। सिद्ध योगी और पागल हिमायती आत्माकी बातें कर सकते हैं मगर लाखों नंगोंके लिअे शरीरके बगैर आत्मा अेक मजाक ही है। अंतमें, चरखा ही अुन हिंसापूर्ण सामाजिक अुत्पातोंसे हमारी रक्षा कर सकता है जिनके कारण यूरोपमें आजकल रक्तपात और आपसी हिंसा-द्वेषकी बाढ़-सी आ गयी है। चरखेसे अूपरी वर्ग और जनसाधारण अेक-दूसरेके निकट आते हैं और जब तक भारत अुसे अपनाये रहेगा, तब तक यहां बाल्शेविज्म और किसी तरहके दूसरे हिंसापूर्ण अुत्पात असंभव होंगे। अिन बातोंसे मुझे चरखेकी अत्यंत आवश्यकताका यकीन होता है। परंतु कठिनाअी अेक ही है। क्या चरखा चल सकता है? क्या वह सफल हो सकता है? क्या हम चरखेको हर घरमें अुसका पुराना पवित्र स्थान फिरसे दिला सकते हैं? क्या अिसमें बहुत देर नहीं हो गअी है? और फिर बर्ट्रेण्ड रसल

जसे लोग कहते हैं कि अुद्योगवाद प्रकृतिकी शक्ति जैसा अेक बल है जो हमारे चाहने या न चाहने पर भी भारत पर छा जायगा। ये लोग कहते हैं कि अुद्योगवादके लिअे हमें अपना हल निकालना चाहिये। वे जो कुछ कहते हैं अुसमें सचाओ है। अुद्योगवादकी बाढ़ सारी दुनियामें आ रही है। भारत चाहे तो भी क्या वह अलग रह सकता है और अुद्योगवादके पंजेसे बच सकता है?

शहरके ये प्रेमी जिस तर्कमें अनिच्छापूर्वक और अपरिहार्य रूपमें बह गये हैं, वह शैतानकी पुरानी चाल है। वह हमेशा हमारे साथ आधा दूर चलकर फिर अचानक संकेत करता है कि अब आगे चलनेसे कोओ फायदा नहीं और बताता है कि आगे प्रगति संभव नहीं है। वह धर्मकी स्तुति करता है, मगर तुरंत कह देता है कि असकी प्राप्ति मनुष्यके बूतेकी बात नहीं।

बात यह है कि जिन भाअियोंको जो कठिनाओ प्रतीत हुआी है वह वैसी ही है जो सुधारकके सामने हर कदम पर आती है। क्या असत्य और दंभ समाजमें व्याप्त नहीं हो गये हैं? फिर भी जो लोग सत्यकी अंतिम विजयमें विश्वास रखते हैं वे सफलताकी पूरी आशा रखकर अुस पर डटे रहते हैं। सुधारक समयसे कभी हार नहीं मानता, क्योंकि वह अिस पुराने शत्रुसे जूझता है। बेशक, अुद्योगवाद प्रकृतिके बल जैसा है, मगर मनुष्यमें प्रकृतिको काबूमें रखने और अुसके बलावा जीतनेकी शक्ति है। अुसके स्वाभिमानका तकाजा है कि वह जबरदस्त कठिनाअियोंके होते हुअे भी अपना निश्चय दृढ़ रखे। हमारा दैनिक जीवन अिसी प्रकारकी विजय है। किसान अिस बातको खूब अच्छी तरह जानता है।

अुद्योगवाद अिसके सिवा और क्या है कि अेक अल्पसंख्यक समुदाय बहुमत पर अपनी सत्ता चलाये? अिसमें कोओ आवश्यक बात नहीं है और न अुसमें कुछ अनिवार्य है। अगर बहुसंख्यक लोग सिर्फ नहीं कहनेका निश्चय कर लें और अल्पमतके प्रलोभनोंको ठुकरा दें, तो अल्पमतके हाथमें बुराअीकी कुछ भी ताकत नहीं है।

मानव-स्वभावमें विश्वास रखना अच्छी बात है। मैं तो जिन्दा ही अिसलिअे हूं कि मुझमें यह श्रद्धा है। मगर अिस श्रद्धाके कारण मैं अितिहासके अिस तथ्यकी तरफसे आंखें बन्द नहीं कर लेता कि यद्यपि अन्तमें तो सब भला ही होता है परन्तु अुससे पहले व्यक्ति और राष्ट्र कहलानेवाले समूह नष्ट हो चुके हैं। रोम, यूनान, बेबीलोन, मिस्र और अन्य कअी राष्ट्र अिस बातके शाश्वत प्रमाण हैं कि अपने दुष्कर्मसे राष्ट्रोंका पहले भी नाश हुआ है। हां, यह आशा रखी जा सकती है कि यूरोप अपनी सूक्ष्म और वैज्ञानिक बुद्धिके कारण प्रत्यक्ष सत्यको पहचानकर अपने कदम समय रहते पीछे हटा लेगा और अनाशकारी अुद्योगवादमें से छूटनेका कोअी रास्ता निकाल लेगा। यह जरूरी नहीं कि वह पुराने जमानेकी नितान्त सादगीको ही फिरसे अपनाये। मगर यह पुनर्गठन अैसा जरूर होगा कि जिसमें ग्राम-जीवनका बोलबाला रहेगा और पशुबल तथा भौतिक बल आध्यात्मिक बलके मातहत होंगे।

अन्तमें हमें झूठी तुलनाओंके चक्करमें नहीं आना चाहिये। यूरोपियन लेखकोंके लिअे अनुभव और सही जानकारीके अभावकी बाधा है। अगर वे यूरोपके अुदाहरणों परसे सामान्य परिणाम निकालेंगे तो वे अेक सीमासे आगे हमारा पथप्रदर्शन नहीं कर सकते। क्योंकि अुन अुदाहरणोंका भारतीय परिस्थितिके साथ पूरा साम्य नहीं है। यूरोपमें हिन्दुस्तानके जैसे हालात नहीं हैं। रूसमें भी नहीं हैं। अिसलिअे जो बात यूरोपके लिअे सही हो यह जरूरी नहीं कि वह भारतके लिअे भी सही हो। हम यह भी जानते हैं कि प्रत्येक राष्ट्रकी अपनी विशेषतायें होती हैं और अपना व्यक्तित्व होता है। भारतकी भी अपनी विशेषता और व्यक्तित्व है। और अगर हमें अुसकी अनेक व्याधियोंका सही अिलाज ढूंढ़ना है तो हमें अुसकी प्रकृतिकी तमाम विलक्षणताओंको ध्यानमें रखकर अुसके लिअे नुसखा खोजना होगा। मेरा दावा है कि यूरोपके ही अर्थमें भारतका अुद्योगीकरण करना असंभव बातके लिअे कोशिश करना होगा। भारतने बहुतसे तूफानोंका सामना किया है। यह सच है कि हर तूफान अुस पर अपनी छाप छोड़ गया है परन्तु भारतने अब तक अपने व्यक्तित्वकी डटकर रक्षा की है। भारत संसारके अुन

जसे न्याग कहते ह कि अुद्योगवाद प्रकृतिकी शक्ति जसा अक बड है जो हमारे चाहन या न चाहन पर भी भारत पर छा जायगा। य लोग कहते ह कि अुद्योगवादके लिअ हमें अपना हल निकालना चाहिय। वे जो कुछ कहते ह अुसमें सचाअी है। अुद्योगवादकी बाद सारी दुनियामें आ रही है। भारत चाहे तो भी क्या वह अलग रह सकता है और अुद्योगवादके पजसे बच सकता है?

खद्दरके य प्रेमी जिस तर्कमें अनिच्छापूवक और अपरिहाय रूपमें बह गय ह वह शतानकी पुरानी चाल है। वह हमेशा हमारे साथ आधा दूर चलकर फिर अचानक सकेत करता है कि अब आग चलनसे कोअी फायदा नही और बताता है कि आग प्रगति सभव नही है। वह धमकी स्तुति करता है मगर तुरत कह देता है कि अुसकी प्राप्ति मनुष्यके बूतेकी बात नही।

बात यह है कि जिन भाअीको जो कठिनाअी प्रतीत हुअी है वह असी है जो सुधारकके सामन हर कदम पर आती है। क्या असत्य और दभ समाजमें व्याप्त नही हो गय ह? फिर भी जो लोग सत्यकी अतिम विजयमें विश्वास रखते ह वे सफलताकी पूरी आशा रखकर अुस पर डट रहत ह। सुधारक समयसे कभी हार नही मानता क्योंकि वह अिस पुराने शत्रुसे जूझता है। बशक अुद्योगवाद प्रकृतिके बल जसा है मगर मनुष्यमें प्रकृतिको काबूमें रखन और अुसके बलाका जीतनकी शक्ति है। अुसके स्वाभिमानका तकाजा है कि वह जबरदस्त कठिनाअियोंके होते हुअ भी अपना निश्चय दढ रख। हमारा दनिक जीवन अिसी प्रकारकी विजय है। किसान अिस बातको खूब अच्छी तरह जानता है।

अुद्योगवाद अिसके सिवा और क्या है कि अक अल्पसख्यक समुदाय बहुमत पर अपनी सत्ता चलाय? अुसमें कोअी आकषक बात नही है और न अुसमें कुछ अनिवाय है। अगर बहुसख्यक लोग सिफ 'नही' कहनका निश्चय कर लें और अल्पमतके प्रलोभनोंको ठुकरा दें तो अल्पमतके हाथमें बुराअीकी कुछ भी ताकत नही है।

मानव-स्वभावमें विश्वास रखना अच्छी बात है। मैं तो जिन्दा ही अिसलिअे हूं कि मुझमें यह श्रद्धा है। मगर जिस श्रद्धाके कारण मैं अितिहासके अिस तथ्यकी तरफसे आंखें बन्द नहीं कर देता कि यद्यपि अंतमें तो सब भला ही होता है, परन्तु अबसे पहले व्यक्ति और राष्ट्र कहलानेवाले समूह नष्ट हो चुके हैं। रोम, यूनान, बेबीलोन, मिस्र और अन्य कभी राष्ट्र अिस बातके शाश्वत प्रमाण हैं कि अपने दुष्कर्मसे राष्ट्रोंका पहले भी नाश हुआ है। हां, यह आशा रखी जा सकती है कि यूरोप अपनी सूक्ष्म और वैज्ञानिक बुद्धिके कारण प्रत्यक्ष सत्यको पहचानकर अपने कदम समय रहते पीछे हटा लेगा और अनीतिकारी अुद्योगवादमें से छूटनेका कोअी रास्ता निकाल लेगा। यह जरूरी नहीं कि वह पुराने जमानेकी नितान्त सादगीको ही फिरसे अपनाये। मगर यह पुनर्गठन असा जरूर होगा कि जिसमें ग्राम-जीवनका बोलबाला रहेगा और पशुबल तथा भौतिक बल आध्यात्मिक बलके मातहत होंगे।

अंतमें हमें झूठी तुलनाओंके चक्करमें नहीं आना चाहिये। यूरोपियन लेखकोंके लिअे अनुभव और सही जानकारीके अभावकी बाधा है। अगर वे यूरोपके अुदाहरणों परसे सामान्य परिणाम निकालेंगे तो वे अेक सीमासे आगे हमारा पथप्रदर्शन नहीं कर सकते। क्योंकि अुन अुदाहरणोंका भारतीय परिस्थितिके साथ पूरा साम्य नहीं है। यूरोपमें हिन्दुस्तानके जैसे हालात नहीं हैं। रूसमें भी नहीं हैं। अिसलिअे जो बात यूरोपके लिअे सही हो, यह जरूरी नहीं कि वह भारतके लिअे भी सही हो। हम यह भी जानते हैं कि प्रत्येक राष्ट्रकी अपनी विशेषतायें होती हैं और अपना व्यक्तित्व होता है। भारतकी भी अपनी विशेषता और व्यक्तित्व है। और अगर हमें अुसकी अनेक व्याधियोंका सही अिलाज ढूंढना है तो हमें अुसकी प्रकृतिकी तमाम विलक्षणताओंको ध्यानमें रखकर अुसके लिअे नुसखा खोजना होगा। मेरा दावा है कि यूरोपके ही अर्थमें भारतका अुद्योगीकरण करना असंभव बातके लिअे कोशिश करना होगा। भारतने बहुतसे तूफानोंका सामना किया है। यह सच है कि हर तूफान अुस पर अपनी छाप छोड़ गया है परन्तु भारतने अब तक अपने व्यक्तित्वकी डटकर रक्षा की है। भारत संसारके अुन

थोडसे राष्ट्रोमें से है जिन्होने अनेक सभ्यताओका पतन देखा है मगर जो खद बिलकुल बचे रहे ह। भारत जगतके अन मुट्ठीभर राष्ट्रोमें से है जिन्होने अपनी कुछ प्राचीन सस्थाओको कायम रखा है भले ही अन पर अधविश्वास और भूलकी काओी चढ गओी हो। परन्तु असने आज तक अिस बातका सबूत दिया है कि असमें भूल और अधविश्वासका मल साफ कर लेनेकी जन्मजात क्षमता है। असके करोडो लोगोके सामने जो आर्थिक समस्या है असे हल करनेके असके सामर्थ्यमें मेरी श्रद्धा आज जितनी सजीव है अतनी पहले कभी नही थी।

यग अिंडिया ६–८–२५

११

अद्योगवादसे बचना चाहिये

भारतको अिग्लण्ड और अमरीका जैसा ही बनानेका अर्थ यह है कि शोषणके लिअ ससारकी कुछ और जातिया और देशोकी खोज की जाय। अब तक तो यह दीखता है कि यूरोपके राष्ट्रोने यूरोपके बाहरकी सभी जानी हुअी जातियोको शोषणके लिअ बाट लिया है और अब खोज करनेके लिअ काओी नये देश नही रह गये ह। पश्चिमकी नकल करनेकी कोशिशमें भारतका क्या हाल होगा? सच तो यह है कि पश्चिममें अद्योगवाद और शोषणकी हद हो चुकी है। जो लोग अिस रोगसे पीडित ह वे ही अगर अिन बुराअियोका अिलाज करनेमें असमर्थ ह तो भला हम नौसिखुअ अनसे कैसे बच सकेंगे? असल बात यह है कि यह अद्योगवादी सभ्यता अेक रोग है क्योकि जिसमें बुराओी ही बुराओी है। हमें नारो और शब्दोके चक्करमें नही फसना चाहिये। मेरा आपसे चम्नवाले जहाजो या तार-यन्त्रोसे झगडा नही है। अगर वे अद्योगवाद और असके साथ और जो सारी चीजें आती ह अनके सहारेके बिना रह सकते हो तो भले रहें। वे कोओी साध्य नही ह। हमें जहाजो और तारके यन्त्रोके खातिर

शोषण बर्दाश्त नहीं करना चाहिये। व मानवजातिके स्थायी कल्याणके लिअे हरगिज अनिवार्य नहीं है। भारतवर्ष दूसरी सभ्यताओंका आक्रमण सह सका है क्योंकि वह अपने मूल आधार पर दृढ़ रहा है। यह बात नहीं है कि अुसने परिवर्तन नहीं किये हैं। परन्तु अुसने जो परिवर्तन किये हैं अुनमें अुसके विकासकी वृद्धि हुआ है। लेकिन अुद्योगवादका स्वीकार करना विपत्तिको निमंत्रण देना है। वर्तमान कष्ट बेशक असहनीय है। दारिद्र्यका नाश होना ही चाहिये। परन्तु अुद्योगवाद अुसका अुपाय नहीं है।

भारतके भाग्यकी सिद्धि पश्चिमके खूनी रास्ते पर चलनेमें नहीं है। वह शान्तिके अहिंसक मार्ग पर चलनेसे ही हासिल होगी और असके लिअे हमें सादा और धार्मिक जीवन अपनाना पड़ेगा। पश्चिम स्वयं थकावटके आसार जाहिर कर रहा है। अिसलिअे भारतको आलसीकी तरह निरुपाय होकर यह नहीं कहना चाहिये कि 'मैं पश्चिमकी बाढ़से बच नहीं सकता।' अुसे अपनी और दुनियाकी भलाईके खातिर अिसका मुकाबला करनेकी ताकत हासिल करनी ही चाहिये।

यंग अिंडिया ७-१०-२६

मुझे डर है कि अुद्योगवाद मानवजातिके लिअे अभिशाप सिद्ध होनेवाला है। अेक राष्ट्रका दूसरेके द्वारा शोषण हमेशा जारी नहीं रह सकता। अुद्योगवादका सारा आधार अिस बात पर है कि आपमें शोषण करनेकी शक्ति हो, विदेशी मंडियां आपके लिअे खुली हों और प्रतिस्पर्धियोंका अभाव हो। अिंग्लैण्डके लिअे ये लाभ दिनदिन कम हो रहे हैं, अिसीलिअे असके बेकारोंकी संख्या बढ़ती जा रही है। भारतीय बहिष्कार तो सिर्फ मच्छरके काटनेके बराबर था। और अगर अिंग्लैण्डका यह हाल है तो भारत जैसे विशाल देशको अुद्योगीकरणसे लाभ होनेकी आशा नहीं हो सकती। असल बात यह है कि भारत जब दूसरे राष्ट्रोंका शोषण करने लगेगा — और अुसका अुद्योगीकरण हो जायगा तो वह जरूर शोषण करेगा — तब वह अन्य राष्ट्रोंके लिअे अभिशाप और ममारीके लिअे खतरा बन जायगा। मुझे दूसरे राष्ट्रोंका शोषण

करनेके लिअ भारतके अुद्योगीकरणका विचार क्यों करना चाहिये ? आप अिस दुःखद स्थितिको तो देखिये कि हम अपने ३० करोड़ बेकारोंके लिअ काम जुटा सकते हैं, परन्तु अिंग्लैण्ड अपने ३० लाखके लिअ नहीं जुटा सकता। और अिसने सामने अेक अैसी समस्या खड़ी हो गयी है जिसे अिंग्लैण्डके बड़से बड़े दिमाग भी हल नहीं कर पा रहे हैं। अुद्योगवादका भविष्य अंधकारमय है। अिंग्लैण्डके लिअ अमरीका, जापान, फ्रान्स और जर्मनीके रूपमें सफल प्रतिस्पर्धी मौजूद हैं। भारतका मुट्ठीभर मिलोंके रूपमें भी अुसके प्रतिद्वन्द्वी विद्यमान हैं और जैसे भारतमें जागृति हुअी है वैसे ही दक्षिण अफ्रीकामें भी जागृति होगी, क्योंकि वहां तो प्रकृतिके दिये हुअे खनिज और मानव साधन भी बहुत अधिक विशाल हैं। अफ्रीकाकी जबरदस्त जातियोंके सामने बलवान अंग्रेज बिलकुल पिद्दी-से दिखाअी देते हैं। आप कहेंगे कि आखिर तो वे सरल जंगली ही हैं। वे सरल बालक हैं, मगर जंगली नहीं हैं और चन्द सालोंमें ही अफ्रीका पश्चिमी राष्ट्रोंके लिअे अपना माल खपानेका स्थान नहीं रह जायगा। और अगर पश्चिमके लिअे अुद्योगवादका भविष्य अंधकारमय है तो क्या भारतके लिअे और भी अंधकारमय नहीं होगा ?

यंग अिंडिया १२–११–३१

१२

अुद्योगवादसे बेकारी बढ़ेगी

मेरी रायमें जब किसी कामको लाखों आदमी — जिनके पास और कोओी धंधा नहीं है — आसानीसे कर सकते हैं, तब अुसे यंत्रोंसे करानेका तरीका हानिकारक है। जो करोड़ों आदमी भारतके सात लाख गांवोंमें और अुन्नीस सौ मील लम्बे तथा पंद्रह सौ मील चौड़े क्षेत्रफलमें फैले हुअे हैं, अुनके लिअे सदा ही यह अच्छा और सुरक्षित मार्ग है कि जैसे वे अपना भोजन आप तैयार कर लेते हैं वैसे ही अपने अपने गांवोंमें अपना कपड़ा भी खुद तैयार कर लें। अतीत कालसे अिन देहातोंने जिस स्वतंत्रताका अुपभोग किया है अुसे वे कायम नहीं रख सकते, यदि वे जीवनकी प्राथमिक आवश्यकताओंका अुत्पादन अपने ही हाथोंमें नहीं रखेंगे। पश्चिमकी परिस्थिति परसे पश्चिमी निरीक्षक जल्दीमें यह दलील देते हैं कि जो बात अुनके लिअे सही है वह भारतके लिअे भी सही होनी ही चाहिये, हालांकि कअी महत्त्वपूर्ण बातोंमें यहांके हालात भिन्न हैं। अर्थशास्त्रके नियमोंको भिन्न परिस्थितियोंमें भिन्न प्रकारसे लागू करना चाहिये।

बेशक यांत्रिक पद्धति आसान है। परन्तु अिस कारण यह जरूरी नहीं कि वह कोओी वरदान ही हो। नीचे अुतरना आसान है, मगर खतरनाक भी है। हाथकी पद्धति कमसे कम प्रस्तुत मामलेमें तो वरदान ही है, क्योंकि वह कठिन है। अगर यंत्रोंका पागलपन जारी रहा तो बहुत संभव है कि अेक समय अैसा आ जाय जब हम अितने विकल और दुर्बल बन जायं कि ओीश्वरकी दी हुओी जिन्दा मशीनको काममें लेना भूल जानेके लिअे हम अपने आपको कोसने लगें। लाखों आदमी खेलकूद और व्यायामसे तंदुरुस्त नहीं रह सकते। और अुन्हें अुपयोगी अुत्पादक और श्रम-साध्य धंधोंके बजाय निकम्मे, अनुत्पादक और महंगे खेलकूद और व्यायामको क्यों अपनाना चाहिये? कार्य-परिवर्तन और ताजगी

खानेके लिअ आजकल य चीजें ठीक ह। लेकिन जिस खुराकको पैदा करनेमें हमने कोअी भाग नहीं लिया हो अुसे खानके लिअ भूख पैदा करनेके खातिर य बातें अक जरूरी काम बन जाय तब वे हमें खटकने लगेंगी।

जब भारत स्वावलम्बी आत्म निर्भर और प्रलोभनों तथा शोषणसे परे हो जायगा तब पूर्व या पश्चिमकी किसी भी शक्तिकी हिम्मत न होगी कि अुसकी तरफ लालचकी निगाहसे देखे और तब भारत महंगे शस्त्रास्त्रोंका भार वहन किये बिना ही अपनेको सुरक्षित महसूस करेगा। असकी भीतरी अर्थव्यवस्था बाहरी हमलेके खिलाफ असकी सबसे मजबूत रक्षापंक्ति होगी।

यंग जिन्डिया २-७-३१

भारतका जीना है जिसका मतलब है कि अुसके करोड़ों लोगोंको जीना है। संसारमें और कोअी देश असा नहीं है जहां अितने लाखों लोगोंके पास सिर्फ आंशिक काम धंधा है और जिसकी सभ्यता मुख्यतः ग्रामीण होते हुअ भी जहां प्रति व्यक्ति मुश्किलसे दो अकड़ जमीन है। असकी जरूरतका सारा कपड़ा भाप बिजली या चरखेके पीछे रहने वाली मानव शक्तिके अलावा किसी दूसरी शक्तिसे तैयार कर लेना बेकारीको और भी गहरा बनायगा। अिसलिअ अद्योगीकरणका अर्थ भारतके लिअ लाखों आदमियोंका सर्वनाश ही होगा।

कहा जाता है कि अद्योगीकरणकी अुन क्रियाओंके द्वारा प्रत्येक अमरीकनकी हैसियत छत्तीस गुलाम रखनेवाले आदमी जितनी हो गयी है। अगर हम अमरीकाको अपना नमूना बना लें और प्रत्येक भारतीयके लिअ छत्तीसके बजाय तीस गुलामोंकी ही गुंजाअिश कर दें तो भी २१ करोड मानव प्राणियोंमें से तीस करोडको या तो आत्महत्या करनी पडेगी या अुन्हें मार डालना होगा। मैं जानता हूं कि कुछ लोगोंके देशभक्त न सिर्फ अिस क्रियाकी परवाह ही नहीं करेंगे बल्कि असका स्वागत करेंगे। वे कहेंगे कि असे ३ करोड निकम्मे प्राणियोंके बजाय जो मुश्किलसे चल फिर सकते हों अक करोड सुखी

सन्तुष्ट खुशहाल और नस्त्रसज्जित भारतीयोंका होना बेहतर है। अिस तत्त्वज्ञानका मेरे पास कोअी जवाब नहीं है। क्योंकि मैं तो हरिजन मनोवृत्तिसे परिपूर्ण होनेके कारण लाखों ग्रामीणोंकी दृष्टिसे ही सोच सकता हूं और अुनमें भी सबसे गरीबोंके सुख पर ही अपने सुखका आधार रख सकता हूं और वे जिन्दा रह सकें तो ही जिन्दा रहना चाह सकता हूं। मेरी सीधी-सादी बुद्धि अस छोटेसे चरखेके छोटेसे तकुअेसे आगे नहीं जा सकती जिसे मैं अेक स्थानसे दूसरे स्थान तक अपने साथ लेकर घूम फिर सकता हूं और जिसे मैं आसानीसे तैयार कर सकता हूं। जिस सम्बन्धमें अेक भाअीने मुझे अखबारोंमें हालमें ही प्रकाशित हुअे अेक लेखसे निम्नलिखित पैरेग्राफ लिख भेजा है

> कुछ अुद्योगोंमें बेकारी कम करनेके लिअे नाजियोंने अुन यन्त्रोंका प्रयोग बन्द करनेकी आज्ञा दी है जो मानव-श्रमकी जगह ले रहे हैं। जिस निषेधाज्ञा पर टिप्पणी करते हुअे मैन्चेस्टर गार्डियन कहता है बेकारीका संकट बढ़ानेमें यन्त्रोंके प्रभावके बारेमें चर्चा तो बहुत हुअी है लेकिन अुस कायदेको बदल और यन्त्रोंका अुपयोग बन्द कर देनेका काम नाजियोंने ही किया है। थोड़ा ही समय हुआ जब दुनियाको जर्मनीमें यन्त्रोंके अधिक अुपयोग द्वारा श्रमको बचानेकी चमत्कारी सफलताकी प्रशंसा करनेको कहा गया था। अब सरकार यन्त्रोंके जूझने पर तुली हुअी है। वह या तो अिनके अुपयोगकी मनाही कर रही है या मालिकोंको कामके घंटे कम करके ज्यादा आदमी रखने पर मजबूर कर रही है। गांधीजी कताअी-मशीनके बजाय हाथ चरखेको और मशीनके करघेके स्थान पर हाथ करघेको जारी करनेकी जो कोशिश कर रहे हैं वैसा ही जर्मनीमें सिगार और कांचके अुद्योगोंमें किया जा रहा है।

गार्डियन अन्तमें लिखता है कि अगर जर्मनीका नीतिशास्त्र मध्यकालीन हो जाता है तो कोअी कारण नहीं कि अुसका अर्थशास्त्र भी मध्यकालीन क्यों नहीं हो जायगा। अिस आलोचनाका अुत्तर देते हुअे अेक पत्रलेखक गार्डियन में लिखता है

हिटलर गांधी और दूसरे लोग जो अलग अलग ढंगसे अुत्पादनको अिस हद तक धीमा करनेका प्रयत्न कर रहे हैं कि सब मालकी खपत हो जाय संभव है मध्यकालीन तरीकोंको फिरसे अपना रहे हैं परन्तु हस्त-अुद्योग न तो प्रतिगामी हैं और न जंगली। वे प्रत्येक प्रगतिशील प्रारंभिक और माध्यमिक पाठशालाओंमें सिखाये जाते हैं। यदि अनाज और नये दिखाओ देनेवाले अुपायोंसे भी अुचित अवधिमें बेकारी दूर कर दी जाय तो यंत्रयुग सर्वसंहारक क्रांतियों और युद्धोंमें विलीन हो जायगा। जब तक यंत्र जनसाधारण और वर्गोंके सुख-वैभवकी वृद्धि करते हैं वे अेक परोपकारी साधन हैं। परन्तु जब अुनसे लाखोंकी बेकारी और भुखमरी पैदा होती हो जैसा कि पश्चिमके बहुत ज्यादा अुद्योगवाले देशोंमें हो रहा है तब वे अभिशाप बन जाते हैं। यंत्र मनुष्यके लिअे हैं मनुष्य यंत्रोंके लिअे नहीं। अुन्हें लोगोंकी भलाअीका साधन बनाना चाहिये न कि अुनका मालिक बनने देना चाहिये।

यहां यह अप्रस्तुत है कि जर्मनीमें ग्राम अुद्योगोंका पुनरुद्धार सरकारके जोरसे किया जा रहा है। प्रस्तुत यह है कि अेक अैसा देश जो अुच्चतम वैज्ञानिक कलाका सबूत दे चुका है और अुद्योगीकरणके मामलेमें अत्यन्त अुन्नत देशोंमें अेक है अपनी भयंकर बेकारीकी समस्याका हल करनेके लिअे ग्राम अुद्योगोंको फिरसे अपनानेकी कोशिश कर रहा है।

हरिजन २७-१-३३

मुझे सलाह दी गअी है कि मनुष्यकी अन्वेषण-शक्तिने प्रकृतिकी जिन शक्तियोंको अपने वशमें कर लिया है अुनका अुपयोग करनेकी दिशामें ही मुझे गांवोंकी मुक्तिका हल खोजना चाहिये। आलोचक कहते हैं कि पानी हवा तेल और बिजलीका अुसी तरह पूरा अुपयोग होना चाहिये जैसा प्रगतिशील पश्चिममें किया जा रहा है। वे कहते हैं कि अिन गुप्त प्राकृतिक शक्तियों पर काबू होनेसे प्रत्येक अमरीकन

३३ गुलाम रख सकता है यानी वह अिन शक्तियोंके द्वारा ३३ गुलामोंका काम ले सकता है।

अिस प्रक्रियाको भारतमें दोहराअिये और मैं दावेसे कहता हूं कि जिससे अिस देशके प्रत्येक निवासीको ३३ गुलाम मिलनेके बजाय अुसकी गुलामी ३३ गुनी बढ़ जायगी। जो काम पूरा करना है अुसके लिअ आदमी थोड़े हों तब यन्त्रीकरण अच्छा है। जब भारतवर्षकी भांति आदमी कामकी आवश्यकतासे अधिक हों तब वह बुरा है। यह वगैरज भूमिको जोतनेके लिअे मैं हल काममें नहीं ले सकता। हमारे लिअ समस्या यह नहीं है कि हमारे देहातमें रहनेवाले करोड़ों लोगोंके लिअे अवकाश कैसे निकाला जाय। समस्या यह है कि अुन्हें सालमें जो लगभग छह महीनेका समय बेकारीमें बिताना पड़ता है अुसका अुपयोग कैसे किया जाय। बात विचित्र मालूम होगी मगर यह सच है कि हरअेक मिल आम तौर पर देहातियोंके लिअ अेक खतरा है। मैंने हिसाब लगाकर आंकड़े नहीं निकाले हैं परंतु मैं बेधड़क कह सकता हूं कि हरअेक मिल-मजदूर अपने देहातमें वही काम करनेवाले कमसे कम दस मजदूरोंका काम करता है। दूसरे शब्दोंमें अपने दस देहाती भाअियोंका नुकसान करके ही वह अपने गांवमें जितना कमाता अुससे ज्यादा कमाता है। अिस प्रकार कताअी और बुनाअीकी मिलोंने हमारे ग्रामीणोंकी काफी रोजगार छीन लिया है। जवाबमें यह कह देना — वह सही हो तो भी — काफी नहीं कि वे अधिक सस्ता और अच्छा कपड़ा निकालती हैं। कारण अगर अुन्होंने हजारों मजदूरोंको बेकार बना दिया है तो मिलका सस्तेसे सस्ता कपड़ा भी देहातके बुने हुअे महंगेसे महंगे खद्दरसे ज्यादा महंगा है। कोयलेकी खानके मजदूरके लिअ जो अुसे वहांका वहां अिस्तेमाल कर सकता है महंगा नहीं है न खादी अुस ग्रामीणके लिअ महंगी है जो अपनी ही खादी तैयार कर लेता है।

हरिजन १६–११–३४

अब कारखाना कुछ सौ लोगोंको काम देता है और हजारोंको बेकार बनाता है। मैं तेलके अेक कारखानेसे सैकड़ों मन तेल पैदा कर

सकता हूँ, मगर मैं हजारों तकलियोंको बेकार भी बना देता हूँ। अिसमें विनाशक शक्ति रहती है। मगर लाखों हाथोंकी मेहनतसे होनेवाला अुत्पादन रचनात्मक और सबकी भलाअीका पोषक होता है। बिजलीसे चलनेवाले यंत्रोंके जरिये होनेवाले थोक अुत्पादन पर राज्यका स्वामित्व हो तब भी अससे लाभ नहीं होगा।

मगर यह पूछा जाता है कि शारीरिक परिश्रमकी बचत क्यों न की जाय और अुन्हें बौद्धिक कामोंके लिअ अधिक अवकाश क्यों न दिया जाय? अवकाश अेक हद तक ही अच्छा और जरूरी है। आखिरकार मनुष्यको पसीनेकी कमाअी खानेके लिअ बनाया है। अिसलिअ मुझे तो अिस संभावनासे ही डर लगता है कि कहीं हमारी सारी जरूरतें जिनमें खाद्यपदार्थ भी शामिल हैं, जादूके पिटारेसे पूरी न होने लगें।

हरिजन १६–५–३६

१३

कपड़ेका निर्यात

अेक अमरीकी पत्रकारने पूछा: अैसा क्यों न किया जाय कि हिन्दुस्तानमें तो सब भारतीय हाथ-बना कपड़ा ही काममें लें, लेकिन साथ-साथ अपनी मिलोंको भी काम करने दें? हां, मिलोंका तैयार किया हुआ कपड़ा और सूत बाहर भेज दिया जाय। क्या आप नहीं मानते कि अिससे कपासकी खेती करनेवालोंको सहायता मिलेगी? जाहिर है कि यह भाअी स्वतंत्र भारतको ध्यानमें रखकर ही यह सवाल कर रहे थे।

गांधीजीने कहा: मैं अिस बातका विरोध नहीं करूंगा, मगर यह होना चाहिये हमारे कपड़ेका उत्पादन देशकी अनुमान आवश्यकताकी पूर्तिके लिअ। भारतके लाभके लिअ दूसरे देशोंका शोषण करनेका मेरा कोअी विचार नहीं है। हम स्वयं शोषणकी जहरीली बीमारीसे पीड़ित

हू अिसलिअ म यह नही चाहूगा कि मेरा देश असी किसी चीजका अपराधी बन। अुदाहरणार्थ जापान जैसे आजाद मुल्ककी हैसियतसे भारतको मजे चाहे और कहे कि हम कुछ माल सस्ता बना सकते हैं अत अच्छा होगा कि आप अुस जापानको निर्यात करें तो हम खुशीसे जमा करेंगे। परन्तु मेरी योजनामें अेक देशका दूसरे देशमें अपनी जरूर और स्वदेशनाके ब्रत पर माल भर देना बन्द होना चाहिये।

पडित नहरू अुद्योगीकरण अिसलिअ चाहते है कि अनके खयालसे अगर वह समाजवादी ढगका हो जाय तो वह पूजीवादकी बुराअियासे मुक्त रहेगा। मेरी खासका दृष्टि यह है कि अुद्योगवादमें ये बुराअिया अन्तर्जात है और अुद्योगो पर समाजके स्वामित्वका कितना ही विस्तार क्यो न किया जाय तो भी ये बुराअिया दूर नही हो जा सकती।'

हरिजन २९-९-४०

१४

खादीके खिलाफ आक्षेप

गांधीजीकी वाणी अुस समय और भी ज्यादा निखर अुठती है जब अुन्हें कोअी छेड़ देता है। अेक भाओीने आपत्ति की कि आपकी संस्थामें श्रम विभाजनके सिद्धान्तका लिहाज नहीं रखा गया है। तब गांधीजीने जरा गरम होकर कहा, "क्या मैं आपसे दिनभर कताओी करनेको कहता हूं? क्या मैं आपसे अिसे किसी स्वतन्त्र धंधेके रूपमें अपनानेको कहता हूं? तो फिर श्रम विभाजनके सिद्धान्तका भंग कहां होता है? क्या आपके खान-पानमें श्रम विभाजन होता है? जैसे हम सब खुद ही खाते-पीते और कपड़े पहनते हैं, वैसे ही हम सबको कातना भी स्वयं ही चाहिये।"

यंग अिंडिया, २८-५-'२५

अेक मित्रने मुझसे पूछा कि क्या मेरा विचार रेलोंके बजाय देहाती गाड़ियां जारी करनेका है और अगर नहीं है तो फिर मैं यह आशा कैसे रखता हूं कि मिलोंका स्थान चरखा ले लेगा। मैंने अुनसे कहा कि रेलोंके स्थान पर गाड़ियां चलानेका प्रस्ताव नहीं है, क्योंकि मैं चाहूं तो भी अैसा कर नहीं सकता। तीन करोड़ गाड़ियां भी दूरीका सवाल हल नहीं कर सकतीं, परन्तु मिलोंका स्थान चरखेको दिया जा सकता है। कारण, रेलोंसे गतिका सवाल हल होता है, पर मिलें तो अुत्पादनका काम करती हैं। जिसमें चरखा आसानीसे स्पर्धा कर सकता है, अगर हिन्दुस्तानकी तरह काम करनेके लिअे काफी आदमी हों। मैंने अुनसे कहा कि असल बात यह है कि अेक ग्रामीण

अपनी मेहनतकी कीमत न गिने तो अपने लिअे काफी मात्रामें मिलसे सस्ता कपड़ा तैयार कर सकता है। और कीमत गिननेकी जरूरत अिसलिअे नहीं है कि वह कताओी या बुनाओी भी अपने फुरसतके वक्तमें करेगा। यह ध्यान देने लायक बात है कि झूठी या अधूरा तुलनाओंसे लोगोंको कम धोखा हो जाता है।

दूसरी दलील यह दी गओी थी कि चरखा अेक व्यर्थ प्रयत्न है। यह अेक विचित्र दलील है जिसके पीछे कोओी विचार नहीं है। मैंने सिद्ध किया है कि कोओी भी चीज जो हेतुपूर्वक की जाती है व्यर्थ प्रयत्न नहीं मानी जा सकती। चरखा राष्ट्रके सामने अुन लाखों लोगोंका काम देनेके लिअे पेश किया गया है जिनके पास वर्षमें कमसे कम चार मास कोओी धंधा नहीं होता। आपत्ति करनेवालेने स्वयं कहा कि चूंकि चरखा फी घंटे कमसे कम दो सौ गज सूत पैदा करता है अिसलिअे अुसे व्यर्थ प्रयत्न तो नहीं माना जा सकता। न केवल यह व्यर्थ प्रयत्न नहीं है बल्कि अेक सही आर्थिक कार्यक्रम भी है। कारण लाखोंके लिअे जिस वस्तुकी जरूरत है वह है असा सार्वत्रिक अुत्पादक धंधा जिसे फुरसतके समयमें किया जा सके और जिसे सीखनेमें किसी विशेष प्रतिभाकी या बड़ी तालीमकी जरूरत न हो। असा धंधा सिर्फ कताओी है और कोओी नहीं।

यंग अिण्डिया, २८-१-२५

आलोचक कहते हैं कि चरखेने लोगोंके दिलमें घर नहीं किया, यह काफी रोचक नहीं है, वह सिर्फ औरतोंका धंधा है, असका अर्थ मध्ययुगकी ओर लौट जाना है, यंत्र जिसके प्रतिनिधि हैं अुस विज्ञानकी शानदार प्रगतिके विरुद्ध वह अेक व्यर्थ प्रयत्न है। मेरी नम्र रायमें भारतको अिस समय रोचकताकी नहीं परन्तु ठोस कामकी जरूरत है। लाखोंके लिअे तो ठोस काम खुद रोचक और पौष्टिक दोनों है। बात यह है कि हमने चरखेकी काफी आजमाअिश नहीं की है। मुझे दुःखके साथ कहना पड़ता है कि हममें से बहुतोंने अिस पर गंभीर विचार भी नहीं किया है। कांग्रेस महासमितिके सदस्यों तकने समय समय पर अपने ही पास किये हुअे प्रस्तावों पर अमल नहीं किया है। हममें

अधिकांशको तो अिस पर विश्वास ही नहीं जमा है। असी सूरतमें यह कहना न्याय नहीं कि कताओी असमें रोचकता न होनेके कारण असफल सिद्ध हुओी है। यह कहना कि वह केवल बूढ़ी स्त्रियोंका धंधा है तथ्योंकी अपेक्षा करना है। कताओीके कारखानोंमें कओी गुने चरखे ही तो हैं। अुन्हें पुरुष ही तो चलाते हैं। अब समय आ गया है कि हम अिस अंध विश्वासको छोड़ दें कि कुछ धंधे पुरुषोंकी शानके खिलाफ हैं। मामूली हालतमें बेशक कताओी बहनोंका धंधा होगा। लेकिन भावी राष्ट्रको कुछ आदमियोंको चरखे पर हमेशा लगाये रखना होगा ताकि वे अेक गृह-अुद्योगकी जरूरी मर्यादाओंके भीतर चरखेमें सुधार करते रहें। मैं आपको बता दूं कि चरखेकी बनावटमें जो प्रगति हुओी है वह असंभव होती यदि हम पुरुषोंमें से कुछने असके लिअे मेहनत न की होती और दिन रात अुसके बारेमें सोचा न होता।

यंग अिंडिया, २६-१२-'२४

अेक अध्यापक यों लिखते हैं:

खुद मुझे चरखे और खद्दरमें पूरी श्रद्धा है। परन्तु मेरी राय है कि आपने शुरुआत गलत जगहसे की है। हट्टेकट्टे मर्दोंको औरतोंकी तरह चरखा लेकर बैठनेको कहना ज्यादातर लोगोंकी नजरोंमें अटपटा लगता है।

मेरी नम्र सम्मतिमें आपको पुरुषोंको तो छोड़ देना चाहिये था, अुन्हें तरह तरहके राजनीतिक प्रचारमें लगे रहने देना चाहिये था और चरखेका अपना सन्देश सीधे देशकी स्त्रियोंके पास ले जाना चाहिये था। फिलहाल आप चरखे और खद्दरका महान कार्यक्रम स्त्रियों तक सीमित रहने दीजिये और पुरुषोंको आजादीकी लड़ाओी मर्दाना हथियारोंसे लड़ने दीजिये।

पत्र जरा लम्बा था। मैंने भाषा बदले बिना असके तत्वका निचोड़ दे दिया है। स्पष्ट है कि विद्वान अध्यापकको भारतकी स्त्रियोंकी दशाका पता नहीं है। नहीं तो अुन्हें मालूम होना चाहिये था कि आम तौर पर पुरुषोंका स्त्रियोंके बीचमें भाषण देने और अुन्हें अपनी बात

सुनानेका अधिकार या अवसर नहीं मिलता। बेशक किसी हद तक मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हो सका है। परंतु ये सब सुविधायें मिलने पर भी मैं अुन तक अितना नहीं पहुंच पाया हूं जितना पुरुषों तक। अध्यापकजीको यह भी जानना चाहिये कि स्त्रियां पुरुषोंकी स्वीकृतिके बिना काम नहीं कर सकतीं। मैं असे कभी अुदाहरण दे सकता हूं जिनमें पुरुषोंने स्त्रियोंको चरखा या खद्दर अपनानेसे रोका है। तीसरे, जो आविष्कार और परिवर्तन पुरुष कर सकते हैं वे स्त्रियां नहीं कर सकतीं। अगर कताअीका आन्दोलन स्त्रियों तक ही सीमित रखा जाता तो जो सुधार चरखेमें पिछले चार वर्षमें हुअे हैं या कताअीका जैसा संगठन हुआ है वह असंभव होता। चौथे, यह कहना अनुभवके विपरीत है कि काअी धंधा स्त्री या पुरुषमें से किसी अेकके लिअे ही है। भोजन बनाना मुख्यतः औरतोंका काम है। मगर कोअी सिपाही अगर अपना खाना न पका सके तो वह निकम्मा माना जायगा। छावनियोंमें भोजन बनानेका सारा काम जरूरी और कुदरती तौर पर मर्द ही करते हैं। अिसके सिवा जहां परिवारके लिअे स्वभावतः स्त्रियां भोजन बनाती हैं, वहां बड़े पैमाने पर भोजन बनानेका संगठित काम दुनियाभरमें हर जगह पुरुष ही करते हैं। लड़ना मुख्यतः पुरुषोंका धंधा है, परंतु अिस्लामके प्रारंभिक संग्राममें अरब स्त्रियां अपने पतियोंके साथ साथ बहादुरीसे लड़ी थीं। झांसीकी रानीने सिपाही विद्रोहमें जो जौहर दिखाये वे बहुत कम पुरुषोंने दिखाये। और आज यूरोपमें तो हम देखते हैं कि स्त्रियां वकील, डाक्टर और शासक बनकर चमक रही हैं। क्लर्कोंका पेशा तो लगभग पूरा ही शॉर्टहैंड लिखने और टाअिप करनेवाली स्त्रियोंके हाथमें आ गया है। कताअी पुरुषोचित धंधा क्यों नहीं है? काअी भी चीज जिससे भारतका आर्थिक और आध्यात्मिक अुद्धार हो सकता है (और अध्यापकजीके कथनानुसार कताअीसे यह हो सकता है) पुरुषोंके लिअे पुरुषोचित क्यों नहीं है? क्या अध्यापकजीको पता नहीं है कि कताअीकी मशीनका आविष्कार अेक पुरुषने ही किया था? अगर अुसने यह आविष्कार न किया होता तो मानव जातिका अितिहास दूसरी ही तरह लिखा जाता। सुअीका काम असलमें औरतोंका

काम है। परन्तु संसारके प्रसिद्ध दर्जी पुरुष हैं। और सिलाअीकी मशीन भी अेक पुरुषने ही ईजाद की है। अगर सिर्फ स्त्रियोंका शुल्क समझा होता तो वह मानव जातिके लिअे अपनी विरासत न छोड़ जाता। अगर गुजरे हुअे जमानेमें भारतकी स्त्रियोंके साथ साथ पुरुषोंने भी कताअी पर ध्यान दिया होता तो हमने ईस्ट अिंडिया कम्पनीके दबावमें आकर जिस तरह कताअी छोड़ दी वैसे हम हरगिज न छोड़ते। राजनीतिज्ञ शुद्ध राजनीतिमें चाहे जितना लगे रहें, परन्तु अगर हमें लाखोंके सम्मिलित प्रयत्नसे अपना कपड़ा तैयार करना है तो राजनीतिज्ञ, कवि, राजा, पंडित, गरीब, पुरुष या स्त्री, हिन्दू या मुसलमान, ईसाअी, पारसी या यहूदी — सबको देशके खातिर आधा घंटा धर्मभावसे कताअीके लिअे लगाना ही पड़ेगा। मानवताका धर्म किसी अेक ही लिंग या वर्गका विशेषाधिकार नहीं है। यह सबका विशेषाधिकार नहीं, वह धर्म है। भारतीय मानवताका धर्म अुन सबसे जो अपनेको भारतीय कहते हैं कमसे कम आधे घंटेकी कताअीका तकाजा करता है।

यंग अिंडिया, ११-६-'२५

हाथ-कताअीको सफल बनानेमें जो कठिनाअियां मुझे बताअी गअी थीं वे मुख्यतः दो थीं :

(१) हाथका सूत मिलके सूतकी होड़ हरगिज नहीं कर सकता क्योंकि वह मिलके सूतके बराबर मजबूत कभी नहीं पाया गया।

(२) चरखेसे अितनी कम अुत्पत्ति होती है कि अुससे लाभ नहीं हो सकता।

जिन लोगोंने बरसों तक खद्दर पहना है अुनका अनुभव यह है कि जहां वह अच्छे हाथ-कते सूतका बना होता है वहां अुसी नंबरके मिलके अैसे अच्छे कपड़ेसे भी वह ज्यादा टिकता है। अुदाहरणार्थ मेरे कुछ आश्रमके मित्रोंने मुझे बताया है कि अुनकी खादीकी धोतियां चार साल या अुससे भी ज्यादा चली हैं, लेकिन मिलके सूतकी धोतियां सालभरके भीतर ही फट जाती हैं। परन्तु मेरा मुद्दा यह नहीं है कि खादी ज्यादा टिकाअू है। मेरा मुद्दा तो यह है कि चूंकि हाथ

कताओी भारतके किसानोंके लिअ — जो अुनकी आबादीके ८५ फी सदी ह — अकमात्र सभव सहायक धधा है, अिसलिअ कपडे-सबधी हमारी सारी व्यवस्था यह समझकर होनी चाहिय कि कपडा हाथ-कते सूतसे तयार करके दिया जायगा। अिस प्रकार हमारी शक्ति चाहे जहा और चाहे जिस तरह कात हुअे कन्यिा और सस्त भूतकी तलाशमें नही बल्कि बढिया और सस्त हाथ-कते सूतकी तलाशमें हा लगनी चाहिय। अगर मेरा यह विचार ठीक है तो राज्यके सारे अुद्योग विभागोका काम चरखेको केद्रमें मानकर अुसके चारो ओर चलना चाहिये। अिसलिअे अुद्योग विभाग चरखेमें सुधार करेंगे ताकि अुनसे ज्यादा सूत निकल सके। वे हाथ-कता सूत खरीद लेंगे जिससे हाथ-कताओीको अपने आप प्रोत्साहन मिल जाय। वे जैसा भी हाथ-कता सूत अुपलब्ध होगा अुसका अुपयोग कर लेनेका अुपाय सोच निकालेंगे। वे सबसे बारीक हाथ-कते सूतके लिअे अिनाम जारी करेंगे। अच्छा हाथ-कता सूत जुटानेके लिअे वे सभी क्षेत्रोंमें खोज करेंगे।

मगर यह आपत्ति भी की गयी है कि हाथ-कताओी लाभदायक नहीं है। परन्तु वह अुन लोगोके लिअ तो अवश्य ही लाभदायक है, जिनके पास बहुतसा बेकार वक्त है और जिनकी थोडीसी आम दनीमें अेक पैसेकी वृद्धि भी स्वागतके योग्य है। चरखेका सारा काय क्रम निरथक हो जाता है यदि लाखो किसान सालमें कमसे कम चार महीने लाचारीसे बेकार न रहते हो। जहा जहा खादी-कार्यकर्ता प्रेमपूर्ण सेवा कर रहे है वहा खादी लाभदायक ही नहीं हो गयी है बल्कि वहा तियोके लिअे अनका सूत खरीदनेवाले लोग कीमियाकी देन हो गये है। जिनकी आय पाच छह रुपये माहवारसे ज्यादा नहीं है और जिनके पास समय है वे लोग अैसा काम खुशीसे अपना लेंगे जिससे अुनको दो रुपये मासिक और मिल जाते है।

यग अिडिया ८-१०-२५

पशुपालनका जो सहायक अुद्योग सुझाया गया है, वह काफी अच्छा है और कताओीसे हमेशा ज्यादा आमदनीवाला है। मगर अुसमें

पूंजीकी और पशुपालनकी जानकारीकी जरूरत होती है। यह साधारण किसानके पास होती नहीं। और पहलेसे बहुत तैयारी किये बिना यह हो भी नहीं सकती और होगी भी नहीं। आप किसी भी तरहसे देख लीजिये भारतीय परिस्थितिके लिअे कताओ और सहायक धंधा असा नहीं है जो हाथ-कताओकी होड कर सके।

असका अपार महत्त्व अिस बातमें नहीं है कि वह कुछ व्यक्तियोंको बहुत रुपया दे सकता है बल्कि अिस बातमें है कि वह लाखोंके लिअे आमदनीका अेक तात्कालिक साधन अुपलब्ध करता है। अिसलिअे यही अेक सहायक धंधा है जो सफलतापूर्वक संगठित किया जा सकता है। अिस प्रकार पशुपालन स्वयं कितना ही अच्छा क्यों न हो मगर वह सबसे बढ़िया सहायक धंधा नहीं है। असा धंधा तो हाथ-कताओ ही है।

यंग अिंडिया १५-१०-२५

यंग अिंडिया के पाठक जानते हैं कि मैंने यह कभी नहीं सुझाया कि जो लोग ज्यादा कमाओवाले रोजगारमें लगे हुअे हैं वे अपना धंधा छोड़कर हाथ-कताओमें लग जायं। मैंने बार बार कहा है कि जिनके पास कमाओका और कोओ धंधा न हो अुन्हींसे कातनेकी आशा रखी जाती है और अनको ही अिसकी प्रेरणा की जानी चाहिये — और वह भी बेकारीके समयमें ही। अिसलिअे दो श्रेणीके लोग हैं जिनसे कातनेकी आशा रखी जाती है — वे जो मजदूरी लेकर कातेंगे जिनका जिक्र मैं पहले कर चुका हूं और वे जिन्हें मिसाल पेश करनेके लिअे और खद्दरको सस्ता बनानेके लिअे यज्ञार्थ कातना चाहिये।

यंग अिंडिया २२-१०-२५

कविवर* का खयाल है कि मैं चाहता हूं कि सभी अपना पूरा समय लगाकर कातने लगें और दूसरे सब काम छोड़ दें अर्थात् मैं चाहता हूं कि कवि अपना काव्य किसान अपना हल वकील अपनी वकालत

* रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

और डाक्टर अपना नश्तर छोड़ दें। यह बात सत्यसे कितनी दूर है कि मैंने किसीको भी अपना पेशा छोडनेको नहीं कहा है। अिसके विपरीत मैंने यह कहा है कि सारे राष्ट्रके खातिर यज्ञार्थ कातनेमें सिर्फ तीस मिनट रोजाना लगाकर अपने अपने धंधेकी शोभा बढ़ाओ जाय। जो स्त्री-पुरुष किसी भी कामके अभावमें बेकार और भूखके शिकार हैं अुन्हें मैंने गुजारेके लिअे कातनेको जरूर कहा है और अधभूखे किसानोंको अपने अवकाशके समय अपनी थोडीसी आमदनी बढ़ानेके लिअे कातनेको कहा है। अगर कविवर आध घंटे रोज कातने लगें तो अुनके काव्यकी सम्पन्नता बढ़ जायगी। कारण तब वे गरीबोंके अभाव और कष्टोंका प्रतिनिधित्व आजकी अपेक्षा अधिक जोरदार ढंगसे करेंगे।

कविवर समझते हैं कि चरखा राष्ट्रमें मृत्यु जैसा सादृश्य अुत्पन्न कर डालेगा और यह कल्पना करके वे यदि संभव हो तो अुससे दूर रहना चाहेंगे। सचाओ यह है कि चरखेका हेतु भारतके करोडों लोगोंमें हिताहितकी जो मूलगामी और सजीव अेकता है अुसे प्रकट करना है। प्रकृतिकी शानदार और रंगबिरंगी अनेकतामें भी हमें हेतु, रचना और स्वरूपकी अुतनी ही असंदिग्ध अेकता दिखाओ देती है। कोओ भी दो आदमी — यमज बच्चे भी — बिल्कुल अेक जैसे नहीं होते। फिर भी सारी मानवजातिमें बहुतसी बातें अनिवार्य रूपमें समान हैं। और अिस रूप-सादृश्यके पीछे सबमें व्याप्त अेक ही चेतन्य है।

क्या अधिकांश मानवजातिके लिअे खेती सामान्य नहीं है? अिसी प्रकार कुछ काल पहले कताओ अधिकांश मानवजातिके लिअे सामान्य थी। जैसे राजा और किसान सभीको खाना-पहनना पड़ता है ठीक वैसे ही सबको अपनी प्रारंभिक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे परिश्रम करना ही चाहिये। राजा भले ही अुदाहरण और त्यागके तौर पर श्रम करे परन्तु अुतना अुसके लिअे अनिवार्य है अगर वह अपने प्रति और अपनी प्रजाके प्रति सच्चा है। यूरोप जिस समय चाहे अिस अत्यावश्यक वस्तुको अनुभव न करे क्योंकि अुसने गैर-यूरोपियन जातियोंके

शोषणको अपना धर्म बना लिया है। परन्तु यह झूठा धर्म है और निकट भविष्यमें नष्ट होकर रहेगा।

सुधरा हुआ हल अच्छी चीज है। परन्तु संयोगवश कोओी अेक आदमी अपने किसी यांत्रिक आविष्कारसे भारतकी सारी भूमिको जोत डाले और खेतीकी सारी पदावारको हथिया ले और अगर लाखों लोगोंके पास कोओी और धंधा न हो तो वे भूखों मरने लगेंगे और बेकार होकर मूढ़ बन जायंगे जैसे बहुतसे लोग पहले ही बन चुके हैं। हमारी हालत आज असी है कि जिस अवांछनीय स्थितिमें और भी अधिक लोगोंके पहुंच जानेका हरदम खतरा बना रहता है। घरेलू यंत्रोंमें किये जानेवाले हरअेक सुधारका मैं स्वागत करूंगा लेकिन मुझे मालूम है कि जब तक हम साथ ही साथ लाखों किसानोंको अेक धंधा घर कोओी और धंधा देनेको तैयार न हों तब तक हाथकी मेहनतके बजाय बिजलीसे चलनेवाले तकुओं जारी करना जुर्म है।

भारतके कष्ट निवारणके लिअे सहयोगके प्रत्येक प्रयत्नका संगठन चरखेका केन्द्र बनाकर असके आसपास करना पड़ेगा। चरखेके आसपास अर्थात् जिन लोगोंने आलस्य छोड़ दिया है और सहयोगका मूल्य समझ लिया है अुनके बीचमें अेक राष्ट्रसेवक मलेरिया विरोधी आन्दोलन सफाओीमें सुधार गांवके झगड़े निपटाना पशुओंकी रक्षा और अुनका पालन और सैकड़ों दूसरी हितकर प्रवृत्तियां संगठित कर सकेगा। जहां कहीं चरखेका काम ठीक तरह जम गया है वहां ये सब भलाओिके काम संबंधित ग्रामीणों और कार्यकर्ताओंकी शक्तिके अनुसार चल रहे ही हैं।

यंग अिंडिया ५–११–२५

मैंने हाथ-करघोंके खातिर अेक भी अुपयोगी प्राणदायक औद्योगिक प्रवृत्तिको छोड़नेकी कल्पना तक नहीं की है सलाह देना तो दूर रहा। चरखेकी सारी बुनियाद ही अिस तथ्य पर है कि भारतमें करोड़ों अधबेकार लोग हैं। और मैं स्वीकार करता चाहिये कि अगर असे लोग न हों तो चरखेके लिअे काओी स्थान न रहे। लेकिन हकीकत यह है कि सभी लोग जिन्होंने हमारे देहात देखे हैं जानते हैं कि

अुनके महीना बेकारीमें बटते हैं जो अुनके लिअे विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। मध्यम श्रेणीके लोगोंसे भी मैंने यथाशक्ति कातनेकी जो अपील की है वह अुनके फुरसतके समयके लिअे ही है। चरखा-आन्दोलन किसी भी अुद्योगका विनाशक नहीं है। वह तो अेक प्राणदायी प्रवृत्ति है। और अिसीलिअे मैंने अुसे अन्नपूर्णा या रोटीके लिअे मक्खन देनेवाली या कमी पूरी करनेवाली कहा है।

यंग अिंडिया २७-५-२६

यह कहना सही नहा है कि बहिनें दस घंटे रोज काम करती हैं। वे जो भी कताओ करती हैं वह फुरसतके समयमें की जाती है और अुन्हें जो प्राप्ति होती है वह दिनभरकी मजदूरी नहीं किन्तु अधिकांशके लिअे अुनके मुख्य धंधेकी कमाओमें खासी वृद्धि करनेवाली होती है। कताओकी कमाओ तो बेकार जा रहे समयके अुपयोगसे पैदा की जानेवाली दौलत है। कतवैयोंके लिअे यह कल्पना हरगिज नहीं की गअी है कि यह दिनभरका धंधा है।

यंग अिंडिया १९-१२-२०

अेक बहन लिखती हैं:

साल भर हुआ मैंने आपके भाषणमें यह कहते सुना था कि हममें से हरअेकके खादी पहननेकी सर्वोपरि आवश्यकता है। अुस पर मैंने खादीको अपनानेका निश्चय किया। परन्तु हम गरीब आदमी हैं। मेरे पति कहते हैं कि खादी महंगी है। मैं महाराष्ट्री होनेके कारण ९ गज लंबी साड़ी पहनती हूं। अब अगर मैं अपनी साड़ीकी लंबाओ घटा कर ६ गज कर दूं तो बड़ी बचत हो जाय। परन्तु बुजुर्ग लोग असी कमी करनेकी बात हो नहीं सुनेंगे। मैं अुन्हें समझाती हूं कि खादीका पहनना अधिक महत्वकी बात है और साड़ीके ढंग तथा लंबाओका बिलकुल महत्त्व नहीं है। मगर मेरा कहना बेकार होता है। वे कहते हैं कि ये नये खयाल मेरे दिमागमें मेरी छोटी अुम्रके

कारण ही घुस गये हैं। लेकिन अगर आप मुझे यह लिखनेकी कृपा करें कि कपड़ेके ढंगकी परवाह न करके भी खादी ही काममें लेनी चाहिये, तो मुझे आशा है कि वे अनुकूल हो जायँगे।

मैंने बहनको वांछित अुत्तर भेज दिया है। परन्तु मैं अुनकी अिस कठिनाअीका अुल्लेख यहां भी करता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह मुश्किल और भी बहुतसी बहनोंके सामने आती है।

दक्षिणी साड़ी सुन्दर वस्तु है। परन्तु सुन्दरताको छोड़ना पड़ेगा यदि अुसकी रक्षा राष्ट्रका बलिदान करके ही होती हो। हमें कच्छी ढंगकी छोटी साड़ी या पंजाबी ओढ़नीको सचमुच कलात्मक समझना चाहिये, यदि अुसके द्वारा खादी पहनना सस्ता और सुलभ हो जाता हो। दक्षिणी, गुजराती, कच्छी और बंगाली ढंगकी साड़ियां सभी विविध राष्ट्रीय शैलियां हैं और अेक जितनी राष्ट्रीय है अुतनी ही दूसरी भी है। अैसी सूरतमें अुस ढंगको अधिक अपनाना चाहिये जिसमें सभ्यताकी जरूरतके अनुसार कमसे कम कपड़ा लगता हो। अैसा ढंग कच्छी ढंग है। अुसमें सिर्फ तीन गज कपड़ा लगता है। यानी गुजराती साड़ीसे लगभग आधा लगता है। वजन थोड़ा अुठानेमें कष्ट कम होता है सो अलग। अगर ओढ़नी और लहंगा अेक ही रंगके हों तो कोअी तुरंत नहीं पहचान सकता कि ओढ़नी है या पूरी साड़ी। अैसे राष्ट्रीय ढंगकी आपसमें अदल-बदल और नकल करना खूब वांछनीय है।

मध्यम और गरीब वर्गके देशभक्त लोगोंको अुस विशेष प्रान्तीय ढंगको अपनानेमें गर्व होना चाहिये जिससे खादीका पहनना सस्ता और सुलभ होता हो। और अुसमें भी अुन्हें अपनी दृष्टि अत्यंत गरीब लोगोंके पहनाव पर जमानी चाहिये।

यंग अिंडिया, २-२-'२८

क्या मैं प्रगतिकी घड़ीकी सुअीको अुलटी ओर चलाना चाहता हूँ? क्या मैं मिलोंका स्थान हाथ-कताओ और हाथ-बुनाअीको दिलाना

चाहता हू ? क्या म रेलके बजाय देहाती गाडी चलाना चाहता हू ? क्या म यत्रोको बिलकुल नष्ट कर देना चाहता हू ? ये सवाल कुछ पत्रकारो और लोकसवकोने पूछे ह। मेरा अुत्तर यह है यत्रोके मिट जाने पर न म आसू बहाअूगा और न अुसे विपत्ति समझूगा। परतु यत्रमात्र पर मरी कुदृष्टि नही है। अभी तो म अितना ही चाहता हू कि हमारी मिलोके द्वारा पदा होनेवाले सूत और कपडके अलावा दूसरा सूत और कपडा भी तयार हो भारतसे बाहर जानेवाले करोडो रुपयोकी बचत हो और अुन्हें हमारी झोपडियोमें बाट दिया जाय।

यग अिडिया १९-१-२१

यत्रोके हिमायती अेक समाजवादीने गाधीजीसे पूछा, क्या ग्राम-अुद्योग आदोलनका हेतु यत्रमात्रको निकाल बाहर करना नही है ?'

गाधीजी अुस समय कात ही रहे थे। अुन्होने अुत्तरमें प्रश्न किया क्या यह चरखा यत्र नही है?

मेरा मतलब अिस यत्रसे नही है बडी मशीनोसे है।

क्या आपका आशय सिगरकी सिलाअीकी मशीनसे है ? ग्राम अुद्योग आदोलनमें अुसकी भी जगह है और अिसी तरह हर असे यत्रकी जगह है जिसके कारण जनसाधारण परिश्रम करनेके अवसरसे वचित नही होते बल्कि जो व्यक्तिकी सहायता करता और अुसकी क्षमताको बढाता है और जिससे मनुष्य अुसका गुलाम बन बिना मनचाहा काम ले सकता है।'

मगर अुन महान आविष्कारोका क्या होगा ? आप बिजलीसे तो कोअी सरोकार रखेंगे नही ?

यह किसने कहा ? अगर हम हरअक गावकी झोपडीमें बिजली पहुचा दें तो मुझ कोअी आपत्ति नही होगी कि ग्रामीण अपने औजार बिजलीकी मददसे चलायें। परतु अुस सूरतमें ग्राम-पचायतें या राज्य बिजली घरोके अुसी तरह मालिक होगे जसे व अपनी चरागाहोंके होते ह। लकिन जहा बिजली और मशीनें न हो, वहा बेकार हाथ

क्या करें? आप अुन्हें काम देंगे या कामके अभावमें अनके मालिकोंसे अुन्हें काट डालनेको कहेंगे?

सबके फायदेके लिअे किये गये प्रत्येक आविष्कारकी म कद्र करूंगा। परन्तु आविष्कार आविष्कारमें अन्तर है। म अेक ही समयमें हजारों आदमियोंको दम घोटकर मार सकनेवाली गसोंकी फिक्र नहीं करूंगा। सार्वजनिक अुपयोगका जो काम मानव श्रम द्वारा नहीं कराया जा सकता अुसके लिअे भारी मशीनोंका अनिवार्य स्थान है परन्तु अन सबका मालिक राज्य होगा और अनका अुपयोग सर्वथा जनताके लाभके लिअे किया जायगा। म अुन यंत्रोंका कोअी लिहाज नहीं कर सकता जिनका लक्ष्य कुछ लोगोंको हानि पहुंचाकर थोड़ोंको मालदार बनाना हो या अुपयोगी श्रम करनेवाले अनेकोंको बेकार बनाना हो।

गांधीजीने अपने चरखेकी ओर संकेत करते हुअे कहा परन्तु बेकारीके अिलाजके लिअे अिसके सिवा और कोअी मशीन नहीं है। आपसे बात करते करते भी म अिस पर काम कर सकता हूं और देशकी दौलतमें थोड़ीसी वृद्धि कर सकता हूं। अिस मशीनको कोअी नहीं मिटा सकता।

हरिजन २२-६-’३५

१५

क्या आर्थिक दृष्टिसे खादी लाभप्रद है?

अगर अिस प्रश्नका आशय यह है कि खादी जापानी फैक्टरियोंसे या भारतीय मिलोंके तैयार किये हुअे कपड़ोंसे भी होड़ कर सकती है, तो मेरा अुत्तर जोरके साथ 'नहीं' में होगा। परन्तु यह नकारात्मक अुत्तर लगभग प्रत्येक अुस वस्तुके बारेमें देना पड़ेगा जो श्रमकी बचत करनेवाली यांत्रिक शक्तिके मुकाबलेमें मानव-शक्ति द्वारा तैयार की जाती है। भारतीय कारखानोंमें बने मालके बारेमें भी यही जवाब होगा। कारखानोंमें बने कपड़े, लोहे और शक्करको विदेशी स्पर्धामें टिकनेके लिअे किसी न किसी रूपमें राज्यकी सहायता चाहिये। अिस ढंगसे अिस प्रश्नका रखना ही बिलकुल गलत है। खुले बाजारमें अधिक संगठित अुद्योग हमेशा कम संगठित अुद्योगको बाहर निकाल सकेगा, खास तौर पर जब अुसे राज्यकी सहायता मिलती हो और अुसके पास असीम पूंजी हो और अिस कारण वह थोड़े दिन नुकसान सहकर भी माल बेच सकता हो। अिस देशमें अनेक अुद्योगोंकी यही दुःखद स्थिति हुअी है।

अैसे किसी भी देशको जो अपनेको अमर्यादित विदेशी स्पर्धाका शिकार होने देता है विदेशी लोग चाहें तो भूखा मार सकते हैं और अिसलिअे गुलाम बना सकते हैं। अिसे शांतिपूर्ण ढंगसे प्रवेश करना कहते हैं। हमें अेक ही कदम आगे बढ़ने पर यह समझमें आ जायगा कि हाथके बने माल और बिजलीसे चलनेवाली मशीनोंसे बने मालके बीच स्पर्धा होने दी जाय तो भी यही परिणाम आयेगा। हम यह प्रक्रिया अपनी आंखोंके सामने होती देख रहे हैं। छोटी-छोटी आटेकी मिलें चक्कियोंको, तेलकी मिलें देहाती घानियोंको, चावलकी मिलें ग्रामीण ढेंकियोंको, शक्करकी मिलें देहाती गुड़के कड़ाहोंको मिटाती जा रही हैं। ग्रामीण श्रमके अिस प्रकार मिटनेसे ग्रामवासी दरिद्र हो रहे हैं और अमीरोंकी दौलत बढ़ रही है। अगर यह सिलसिला बहुत दिन तक चला

तो गांव और किसी प्रयत्नके बिना ही नष्ट हो जायंगे। कोअी चगजवा अिन देहातोंको बर्बाद करनेका अिससे अधिक चालाक या फायदेमंद तरीका नहीं निकाल सकता था। और अिन सबमें दुखकी बात यह है कि देहाती लोग अनजाने मगर निश्चित रूपमें अपने ही विनाशमें सहायक हो रहे हैं। अुनके दुखकी गाथाकी पूर्तिके लिअे पाठक जानें कि खेती भी लाभदायक नहीं रह गअी है। कुछ फसलोंमें तो ग्रामीणोंको बीजकी कीमत भी नहीं मिलती।

अिन सब स्वीकारोक्तियोंके बाद मेरे यह कहनेका क्या अर्थ है कि खादी ही अेकमात्र सच्ची आर्थिक योजना है? तो मैं अपना कथन पूरी तरह रख दूं। जब तक सोलह वर्षसे अूपरके प्रत्येक तंदुरुस्त स्त्री-पुरुषके लिअे भारतके प्रत्येक गांवके खेत, झोंपड़ी या कारखानेमें काम और काफी मजदूरी दिलानेका बेहतर तरीका न निकाल लिया जाय तब तक लाखों ग्रामीणोंकी दृष्टिसे खादी ही अेकमात्र सच्ची आर्थिक योजना है। या फिर गांवोंके स्थान पर अितने शहर बन जाने चाहियें कि देहातियोंको वे जरूरी सुख-सुविधायें प्राप्त हो जायं जो अेक सुनियमित जीवनके लिअे जरूरी हैं। मैंने अपनी बात अितनी पूरी तरह यही दिखानेके लिअे पेश की है कि जितने लम्बे समय तककी कल्पना की जा सकती है अुतने समय तक अिस समस्याका हल खादी ही रहेगी।

अिस समय सबसे जरूरी समस्या यह है कि लाखों देहातियोंके लिअे जो दिन दिन दरिद्र होते जा रहे हैं काम और मजदूरी कैसे जुटाअी जाय। अिस बढ़ती हुअी दरिद्रताका प्रमाण जो भी देहातमें जानेका कष्ट अुठायेंगे अुन्हें अपने आप मिल जायगा। समकालीन विशेषज्ञोंके प्रमाणोंसे भी यह बात साबित हो जाती है। लोग आर्थिक मानसिक और नैतिक दृष्टिसे दिन दिन दरिद्र होते जा रहे हैं। काम करने सोचने और जीने तककी अुनकी अिच्छा तेजीसे नष्ट हो रही है। जो जिंदगी वे बसर कर रहे हैं वह जीवित मौत ही है। खादी अुन्हें काम औजार और अुनके मालके लिअे तैयार बाजार देती है। जहां अुन्हें कल तक निरी निराशा नजर आती थी वहां खादी अुन्हें आशा प्रदान करती है। शंकाशील लोग पूछते हैं तो फिर खादीने

अितनी थोडा प्रगति क्या की है यदि वह अितनी आशाजनक योजना है? अुत्तर यह है खादीने लाखो लोगोंकी दृष्टिसे जो प्रगति की है वह अपने आपमें तो थोडी है मगर अन्य किसी भी अेक अुद्योगकी तुलनामें वह सबसे अधिक है। वह हर साल देहातके रोजी कमानेवालोंकी सबसे बडी संख्यामें कमसे कम व्यवस्था-खर्च करके अधिकसे अधिक रकम बांटती है और अुसका लगभग अेक अेक पैसा लोगोंमें घूम जाता है। जो कोअी भी अखिल भारत चरखा संघ द्वारा प्रकाशित आंकडोंका अध्ययन करेगा वह अिस सचाअीका प्रमाण प्राप्त कर सकता है।

खादीकी अुन्नतिमें अनेक बाधायें हैं। खुद गांवोंके लोगोंमें अुसके खिलाफ गहरे पूर्वग्रह हैं। अुसे राजकीय संरक्षणके बिना ही मिलोंकी सिद्धान्तहीन स्पर्धाका मुकाबला करना पडता है अर्थशास्त्रके तथाकथित विशेषज्ञोंकी प्रचलित रायका विरोध सहना पडता है और खादीधारियोंकी खादीको अधिकाधिक सस्ती करनेकी मांगका मुकाबला करना पडता है। अिस प्रकार प्रश्न यह है कि देहातियों और शहरियोंको अिस अभागे देशके सच्चे अर्थशास्त्रकी शिक्षा कैसे दी जाय। यह सब धर्मोंसे परे है। हिन्दू मुसलमान और अीसाअी सभी जो देहातमें रहते हैं दरिद्रता और अभावके अेक ही रोगसे ग्रस्त हैं। अगर कोअी फर्क हो तो केवल मात्राका है।

अिसलिअे मेरी राय है कि भले हा फी गजके हिसाबसे ज्यादा मिलके कपडेसे महंगी हो परन्तु सब बातोंको देखते हुअे और ग्रामीणोंकी दृष्टिसे वह अत्यंत सस्ती और अद्वितीय व्यावहारिक योजना है। अिस सवालकी पूरी जांच करते समय खादीमें दूसरे ग्राम-अुद्योगोंको शामिल समझना चाहिये।

हरिजन २०–६–३६

१६

विदेशी कपडा नहीं चाहिये

हमारे सामने तात्कालिक समस्या यह नहीं है कि देशकी सरकार कैसे चलाओी जाय बल्कि यह है कि हम अपने रोटी-कपडेका प्रबंध कैसे करें। १९१८ में हमने कपडा खरीदनेके लिअे साठ करोड रुपया हिंदुस्तानसे बाहर भेज दिया। अगर हम अिसी हिसाबसे विलायती कपडा खरीदते रहते हैं तो हम भारतीय जुलाहों और कतिनोंको बदलेमें लगभग और कोओी भी काम दिये बिना अुनसे अितनी रकम छीन लेते हैं। तब कोओी आश्चर्य नहीं कि हमारी आबादीका कमसे कम दसवाँ भाग निर्दयताकी हद तक भूखों मरता है और बाकीके अधिकांश लोग अधपेट खाकर जीते हैं।

यंग अिंडिया १९-१-२१

जैसे हम अुन्हीं बच्चोंसे कृतज्ञतापूर्वक संतोष कर लेते हैं जो अीश्वर हमें देता है वैसे ही जो कपडा भारत अुत्पन्न कर सकता है अुसीसे संतोष करनेकी हमारी तैयारी होनी चाहिये। मैंने कोओी माँ अैसी नहीं देखी जो अपनी गोदके बच्चेको फेंक दे भले बाहरवालोंको वह बदसूरत दिखाओी दे। भारतमें बने हुअे मालके बारेमें भी भारतकी देशभक्त स्त्रियोंका यही रवैया होना चाहिये। और आपके लिअे तो केवल हाथ-कता और हाथ-बुना कपडा ही स्वदेशी समझा जा सकता है। परिवर्तन कालमें आपको बहुतायतसे तो मोटी खादी ही मिल सकती है। आप अिसमें अपनी रुचिके अनुसार सारी कलाका योग कर सकती हैं। और अगर कुछ महीनों तक आप मोटी खादीसे संतोष मान लें तो भारतके प्राचीन बारीक बढिया और रंगीन कपडेके पुनरुद्धारके विषयमें निराश नहीं होना पडेगा। यह कपडा किसी जमानेमें दुनियाकी अीर्ष्याकी चीज था। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जिसे आजकल हम कलापूर्ण कहते हैं वह झूठमूठकी ही कला है।

सच्ची कलामें केवल रूपका ही नहीं बल्कि अिस बातका भी ध्यान रखा जाता है कि अुसके पीछे क्या है। अेक कला वह है जो विनाश करती है और अेक वह है जो जीवनदान देती है। पश्चिम या दूर पूर्वसे जो बारीक वस्त्र हमने आयात किये हैं अुन्होंने अक्षरशः हमारे लाखों भाओ-बहनोंको मार डाला है और हमारी हजारों बहनोंको लज्जास्पद जीवन बितानेके लिअ बाध्य किया है। सच्ची कलामें अुसके कर्ताओंके सुख, संतोष और शुद्धताका प्रमाण मिलना चाहिये। और अगर आप चाहती हैं कि हममें असी कला पुनर्जीवित हो, तो आपमें से सबसे अच्छी बहनोंके लिअ खादी काममें लेना अनिवार्य है।

यंग अिंडिया, ११-८-२१

१७
अठारह सौ अट्ठाओसमें

खादी प्रतिष्ठानवाले श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त 'राष्ट्रवाणी' नामक अेक बंगला पत्रका संपादन कर रहे हैं। अुन्होंने हालमें ही 'समाचार दर्पण' के सम्पादकके नाम भेजी गओ अेक चिट्ठी खोज निकाली है। यह समाचारपत्र अुन्नीसवीं सदीके तीसरे दशकमें बंगालमें प्रकाशित होता था। चिट्ठी बड़े महत्त्वकी है, क्योंकि अुससे जाहिर होता है कि चरखेका कैसे धीरे धीरे नाश किया जा रहा था और अुन दिनोंमें स्त्रियां अुसे कितना मूल्यवान मानती थीं। अिसलिअ अुन्होंने अुसे अपने पत्रमें छापा है और मेरे पास अुसका अनुवाद भेजा है। मुझे विश्वास है कि जिनकी खादी-आंदोलनमें दिलचस्पी है वे सब अिसे ध्यानसे पढ़ेंगे। चिट्ठी यह है :

"अेक कातिनका निवेदन

सम्पादकजी, समाचार-दर्पण,

मैं अेक कातिन हूं। बहुत कष्ट अुठानेके बाद यह पत्र लिख रही हूं। कृपया अपने पत्रमें अिसे प्रकाशित कीजिये। मैंने सुना है कि यह छप जायगा तो अुन लोगोंके पास पहुंच जायगा

हमें विदशी रुओी काममें स्नसे परहज करनकी जरूरत नही है — क्योंकि वह कच्चा माल है। हमें तो वर्षमें कमसे कम चार महीन — तक मजबूरन् बकारीमें रहनवाल अधभूख जनसाधारणके खातिर विदशी सूत और कपडका बहिष्कार करना चाहिय क्योंकि जनसाधारण अपन घरो पर कताओी और बनाओी कर सकत ह।

यग अिडिया ५–४–२८

हमार अपन मल्कमें तो विदशी कपड पर हाथ-कती खादीको तरजीह दना हमारा पवित्र कत्तव्य ही है भल अिससे हमें कितनी ही असुविधा क्या न हो। वह अक तुच्छ और छिछली विचारधारा है जो हमें सिखाती है कि अपन निकटके पडोसियोका भल ही कुछ भी हाल हो हमें तो सस्तसे सस्ता ही माल खरीदना चाहिय। आस्ट्रेलिया या अमरीकाके बढिया गहूका मफ्त दान हमार लिअ जहर होगा अगर अुसका नतीजा यह हो कि भारतम बकारी पदा हो और अुसकी भूमि सोनें जसा अन्न पदा न करके घास अुगान लग। अिसी प्रकार मच स्टरसे मुफ्त कपडा मिल तो वह दान भी भारतके लिअ अितना महगा पडगा कि अुसे स्वीकार नही किया जा सकता। अिसलिअ म फिर कहता हू कि खद्दर अस वक्त तक किसी भी भाव सस्ता है जब तक वह राष्ट्रके बकार समयका अुपयोग करनका काम दता है। और जब तक दूसरा कोअी काम असा नही है जिसमें अुस समयका अुतना ही अच्छा अुपयोग हो सके।

यग अिडिया १७–१–२९

१९

स्वदेशी

बाजारमें कओी स्वदेशी वस्तुयें हैं जिनके अपनाये जानेके अभावमें मिट जानेका खतरा है। संभव है वे जमी चाहियें वैसी न हों। हमारा फर्ज है कि हम अुनका अुपयोग करें और जहां कहीं सुधार संभव हो वहां अनके बनानेवालोंसे अुनमें सुधार करनेको कहें। सबसे अच्छी और सस्ती चीज लेनेका नियम हमेशा ठीक नहीं होता। जैसे हम बेहतर आबहवावाले देशके लिअे अपने देशको छोड़ नहीं देते, बल्कि अपने ही जलवायुको सुधारनेकी कोशिश करते हैं, ठीक अिसी तरह बेहतर या अधिक सस्ती विदेशी चीजोंके खातिर हम स्वदेशीको छोड़ नहीं सकते। जैसे कोओी पति अपनी सीधी-सादी दिखाओी देनेवाली पत्नीसे असंतुष्ट होकर यदि किसी खूबसूरत औरतकी तलाश करता है तो वह अपने साथीके प्रति बेवफाओी करता है, अिसी तरह वह मनुष्य अपने देशके प्रति बेवफादार नहीं है जो अपने देशका बनी हुओी चीजोंके मुकाबलेमें विलायती वस्तुओंके अच्छी होने पर अुन्हें तरजीह देता है। अतएव देशकी प्रगतिके नियमोंका तकाजा है कि वहांके रहनेवाले अपने यहांका ही पकवान और मालको ज्यादा अपनायें।

यंग अिंडिया ३०-५-'२९

स्वदेशीका पुजारी अपने निकटके पड़ोसियोंकी सेवामें अपनेको समर्पण करना अपना पहला धर्म समझेगा। अिसमें बाकी लोगोंके हितोंकी अवहेलना या कुर्बानी करनेकी आवश्यकता हो सकती है। मगर यह अवहेलना या कुर्बानी सिर्फ अूपरी होगी, वास्तविक नहीं। अपने पड़ोसियोंकी शुद्ध सेवा तो चीज ही असी है कि अुससे दूर रहनेवालोंकी कुसेवा कभी नहीं हो सकती, बल्कि अुनकी भी सेवा ही होती है। 'यथा पिंडे तथा ब्रह्माण्डे' अेक अचूक सिद्धांत है जिसे हम हृदयंगम

कर लें तो अच्छा है। अिसके विपरीत अगर कोअी आदमी दूरके ढोल सुहावने के प्रलोभनमें फंसकर सेवाके लिअ दुनियाके परले सिरे तक दौडता है तो वह अपनी महत्वाकांक्षामें विफल ही नहीं होता परन्तु अपने पडोसियोंके प्रति अपने कर्तव्यमें भी च्युत होता है। अक ठोस मिसाल लीजिये। जिस स्थान विशेषमें मैं रहता हूं वहां कुछ व्यक्ति मेरे पडोसी हैं और कुछ रिश्तेदार और आश्रित हैं। कुदरती तौर पर वे महसूस करते हैं और महसूस करनेका अुन्हें हक है कि अनका मुझ पर कुछ अधिकार है और वे मुझसे सहायता और सहारेकी आशा रखते हैं। अब मान लीजिये कि मैं अन सबको अचानक छोडकर किसी दूर स्थानके लोगोंकी सेवाके लिअ चला जाता हूं। तो क्या परिणाम होगा? अिधर तो मेरा निजय पडोसियों और आश्रितोंकी मेरी छोटीसी दुनियाको अस्त-व्यस्त कर देगा और अुधर मेरी अयाचित परोपकार-वृत्ति बहुत करके नयी जगहके वातावरणको अशान्त करेगी। अिस प्रकार मेरे स्वदेशीके सिद्धान्तोंको भंग करनेका पहला नतीजा यह होगा कि अपने निकटके पडोसियोंकी दोषपूर्ण अुपेक्षा होगी और जिन लोगोंकी मैं सेवा करना चाहता हूं अनकी न चाहते हुअे भी कुसेवा होगी।

असी और अनेक मिसालें दी जा सकती हैं। अिसीलिअे गीता कहती है 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' — अर्थात् अपना धर्म पालन करते हुअे मरना अच्छा है लेकिन परधर्ममें खतरा है। अपने भौतिक वातावरणकी दृष्टिसे अिसका अर्थ किया जाय तो मालूम होगा कि अिसमें स्वदेशी धर्म समाया हुआ है। गीता जो स्वधर्मके विषयमें कहती है वह स्वदेशी पर भी अतना ही लागू होता है क्योंकि स्वदेशी अपने निकटके वातावरणमें लागू होनेवाला स्वधर्म है।

बुराअी तभी होती है जब स्वदेशीके सिद्धान्तको गलत तौर पर समझा जाता है। अुदाहरणार्थ अगर मैं अपने परिवारको सुख पहुंचानेके खातिर अच्छे-बुरे सब अपायोंसे रुपया बटोरने लगूं तो यह स्वदेशी धर्मका विपर्यास होगा। स्वदेशी धर्मकी मुझसे अितनी ही मांग है कि मैं अपने परिवारके प्रति अपनी अुचित जिम्मेदारियोंका न्यायपूर्ण

अुपायोंसे पालन करूं। असा करते हुअे मुझे अुचित आचरण करनेके सार्वत्रिक नियम मालूम हो जायेंगे। स्वदेशी धर्मके पालनसे कभी किसीकी हानि नहीं हो सकती और यदि होती है तो मानना चाहिये कि मैं स्वधर्मसे नहीं बल्कि अहंकारसे प्रेरित हूं।

असे अवसर आ सकते हैं जब स्वदेशीके पुजारीको विश्वकी सेवाकी बलिवेदी पर अपने परिवारकी कुर्बानी देनेकी जरूरत आ पड़े। अुस समय जिस प्रकारका स्वेच्छापूर्ण आत्मोत्सर्ग परिवारकी सबसे बड़ी सेवा होगी। जो अपनी जान बचाना चाहता है वह अुसे खोयेगा और जो प्रभुके खातिर अपनी जान देगा वह अुसे पायेगा — यह बात जितनी व्यक्ति पर लागू होती है अुतनी ही पारिवारिक समूह पर भी लागू होती है। दूसरा अुदाहरण लीजिये। मान लीजिये कि मेरे गांवमें प्लेगका प्रकोप होता है और अिस महामारीके शिकार बने लोगोंकी सेवा करते हुअे मैं, मेरी पत्नी और बच्चे तथा मेरे घरके और सब आदमी मर जाते हैं, तो मैं यह नहीं मानूंगा कि अपने प्रियजनोंको मेरा साथ देनेकी प्रेरणा देकर मैं अपने परिवारका विनाशक बना, बल्कि अिसके विपरीत यह मानूंगा कि मैं अुसका सच्चा हितैषी बना। स्वदेशीमें स्वार्थको कोअी गुंजाअिश नहीं और अगर अुसमें स्वार्थ है तो वह अितने अुच्च प्रकारका है कि वह अुच्चतम परमार्थसे भिन्न नहीं है। अपने विशुद्ध रूपमें स्वदेशी धर्मका पालन चरम कोटिकी विश्वसेवा है।

अिस प्रकारके तर्क पर चलते हुअे मुझे सूझा कि समाज पर स्वदेशीको लागू करनेमें खादी अिस सिद्धांतका अेक आवश्यक और अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है। मैंने अपनेसे पूछा, अिस समय कौनसी असी सेवा है जिसकी भारतके करोड़ों लोगोंको सबसे ज्यादा जरूरत है जिसे सब आसानीसे समझ सकते हैं और आसानीसे कर सकते हैं और साथ ही जिससे हमारे करोड़ों नंगे भूखे लोग जिन्दा रह सकते हैं? मुझे अुत्तर मिला कि ये शर्तें खादी या चरखेके सार्वत्रिक प्रसारसे ही पूरी हो सकती हैं।

कोअी यह न समझ ले कि खादीके द्वारा स्वदेशीके पालनसे विदेशी मिल-मालिकोंको नुकसान पहुंचेगा। किसी चोरसे अुसकी चुराअी

हिंसा होनेका कोओी खतरा न हो और व्यवस्थक विश्वस्त और अनुभवी हों।

७ अुपरोक्त बातोंका ध्यानमें रखते हुअ सब अिकाअियोंको रोजाना केन्द्रीय कार्यालयके पास कामकी ब्यौरेवार रिपोर्ट भेजनी चाहिये और केन्द्रीय कार्यालयको दैनिक प्रगतिका साप्ताहिक सार अखबारोंमें छपनेके लिअ भेजना चाहिये।

८ अिस आन्दोलनमें सभी राजनीतिक और दूसरी संस्थाओंसे सहायता और सहयोग लेना चाहिये।

९ बहिष्कार आन्दोलनको चलानेके लिअ देशभक्त महिलाओंकी सहायता लेनी चाहिये।

१० अखिल भारत चरखा संघसे कहा जाय कि वह केन्द्रीय कार्यालयको अन स्थानोंकी सूची दे जहां असली खादी मिलती है और वहां भंडार खोले जहां खादीकी मांग है।

११ विदेशी वस्त्र बहिष्कार समितिके नामसे अेक छोटीसी कमेटी बनाओी जाय अुसे अपना काम शुरू करनेके लिअ रुपया दिया जाय और अधिक रुपया जमा करनेकी सत्ता दी जाय। कमेटीका फर्ज होना चाहिये कि वह हर तीसरे महीने आय-व्ययका जांचा हुआ हिसाब प्रकाशित करे।

१२ ग्यारहवें पैरे में प्रस्तावित कमेटीको अैसे परचे खूब बंटवाने चाहिये जिनमें बहिष्कारकी आवश्यकता और संभावना बताओी जाय और ब्यौरेवार यह बताया जाय कि व्यक्ति किस बहिष्कारको कैसे सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

१३ प्रान्तीय और केन्द्रीय दोनों धारासभाओंमें प्रस्ताव रखे जायं जिनमें सम्बन्धित सरकारोंसे यह कहा जाय कि कथित महंगापनकी परवाह किये बिना वे अपने लिअ सारा कपड़ा खादीका खरीदें। यह प्रस्ताव भी रखा जाय कि विदेशी कपड़ेकी आयात पर अितना कर लगाना चाहिये जिससे वह आ ही न सके।

टिप्पणी अुपरोक्त योजनाका आधार यह धारणा है कि कांग्रेस कमेटियोंका देशभरमें तुरन्त पुनर्गठन किया जायगा सदस्यताका

पुवारका बढिया जवाब मिलेगा और खादीके द्वारा विदेशी वस्त्र बहिष्कारकी मुहिमको चलानेमें सभी कांग्रेस कमेटियोंका पूरा सहयोग होगा। कहना यह है कि अगर ये शर्तें पूरी कर दी जाय तो वर्षके भीतर ही यह बहिष्कार सफल हो सकता है कमसे कम अिस हद तक तो सफल हो ही सकता है कि विदेशी वस्त्रके आयात पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडे।

यंग अिंडिया २४–१–२९

मैं मानता हूँ कि जब हमने विदेशी कपडेके मोहमें चरखेको तिलांजलि देकर भारतकी आर्थिक स्वाधीनताको बेच दिया तब हमने भारतीय मानवताके प्रति बडा अपराध किया था। और आज हम जडताके वशीभूत होकर अुस अपराधको दोहरा रहे हैं। अिसलिअे मैंने अनुभव किया कि भारतको नींदसे जगाना मेरा परम धर्म है। हमारे पास लाखों तन्दुरुस्त स्त्री-पुरुषोंके बाजुओं और हाथोंके रूपमें बनी-बनाओ ताकत मौजूद है जो आज भारतकी झोपडियोंमें बेकार पडी है। कोओ कारण नहीं है कि ये लाखों बेकार हाथ भारतके सात लाख गांवोंकी झोंपडियोंमें लाखों तकुओं न चलायें। अिंग्लैण्ड रूओ पैदा नहीं करता फिर भी अुसके लिअे यह संभव है कि भारतमें पैदा हुअी रूओको महासागरों तक ले जाय और फिर अुसे कपडेके रूपमें भारतको लौटा दे। तब हमारे लिअे तो यह और भी आसान होना चाहिये कि हम जो रूओ खुद पैदा करते हैं अुसे भारतमें अेक स्थानसे दूसरे स्थान पर जहां अुसकी जरूरत हो ले जाकर अुसका कपडा बुनवा लें। अुदासीनता तथा निष्क्रिय और सक्रिय विरोधके बावजूद यह काम अिस देशके दो हजार देहातोंमें हो रहा है। और हमारी मोहताज बहनें अपनी नाजुक अंगुलिओंसे कातते हुअे सूतके बण्डलोंमें हर दिन या हर हफ्ते पैसे या रूओ लेनेके लिअे कओी मील पैदल चलकर आनेमें कोओी कष्ट नहीं मानतीं। अिसलिअे यदि हममें अिन मोहताज बहनों और भारतके करोडों नंगा भूखोंके लिअे कुछ भी भावना है—और अिनमें से दसवें भागको खुद अंग्रेज शासकोंके कथनानुसार सारे सालमें अेक जून

भी भरपट खानको मुश्किलसे मिलता है — तो हम अेक अेक अिंच विदेशी कपड़ा अुतार फेंकें और अुसे आगके हवाले कर देंगे। कमसे कम जितनसे प्रायश्चित्तकी आशा तो भारतमाता अपनी सन्तानोंसे जरूर रखती है।

यह मालूम हो जाना चाहिये कि भारतमें लाखों लोग असे हैं जो रोजाना आठ घंटे चरखा चला सकते हैं लेकिन अुस सूतसे बनी हुअी सारी खादी वे काममें नहीं ले सकते। भारतके अच्छे नागरिकोंका यह परम धर्म है कि अपने अिन भाअी-बहनोंके तैयार किये हुअे अतिरिक्त मालको वे ले लें। हम यह भी न भूलें जाय कि पशु-सृष्टि और मनुष्यमें यही भेद है कि मनुष्य समाजका लिहाज रखता है। अगर अुसे स्वाधीन होनेका विशेषाधिकार प्राप्त हुआ है तो परस्परा-धीन होना भी अुसका कर्तव्य है। कोअी अहंकारी मनुष्य ही सबसे स्वाधीन और अपने आपमें समाया हुआ रहनेका दावा कर सकता है। हमारे गांवोंकी अिस प्रकार पुनरचना करना संभव है जिससे अेक अलग ग्रामीण तो नहीं परन्तु देहात मिलकर अपनी कपड़ेकी जरूरतोंके मामलेमें आत्म निर्भर हो जायं। अिसी कारणसे मैंने असंख्य बार कहा है कि जब खादी भारतमें चल निकलेगी तब असे विलायती कपड़े या भारतीय मिलोंके कपड़ेकी स्पर्धाका भी डर नहीं रहेगा। थोड़ेसे विचारसे मालूम हो जायगा कि यह स्वयं सिद्ध बात है।

यंग अिंडिया २५-४-२९

हम जरा अिस कथनकी जांच करें कि खादीके द्वारा बहिष्कार सफल नहीं किया जा सकता। यह कहा जाता है कि खादीका अुत्पादन हमारी आवश्यकताओंके लिअे काफी नहीं है। जो अिस तरहकी बातें करते या लिखते हैं वे खादीका क ख ग भी नहीं जानते। खादीका अनन्त विस्तार किया जा सकता है क्योंकि हम चाहें तो अुसका बनाना अुतना ही आसान है जितना रोटीका। बहिष्कारके काममें लिअे मैं खादीके अर्थशास्त्रकी चर्चा करनेकी जरूरत नहीं।

मान लीजिये कि अिग्लण्ड और जापान हमें कपडा भेजना बन्द कर दें और किसी न किसी कारणसे हमारी मिलें काम न कर सकें तो हम खादीके अर्थशास्त्रका विचार नही करेंगे परन्तु अपने ही घरोंमें आवश्यक मात्रामें कपडा तयार करनेमें जुट जायेंगे। जिन व्यापारियोंका कपडेका व्यवसाय बन्द हो जायगा वे सब खादीके अुत्पादनमें लग जायेंगे। चूंकि हमने अपने आसपास विचारों और पुरुषार्थ-हीनताका बड़ा वातावरण अुत्पन्न कर लिया है, सिर्फ अिसीलिअे हम मामूली सी बातोंके लिअे भी अपनेको असहाय समझते हैं।

अिस आन्दोलनकी सफलताका दारमदार लाखों लोगोंके स्वेच्छापूर्ण और संगठित सहयोग पर है। यह सहयोग मांगने भरसे मिल सकता है यदि विचारशील वर्ग सफलताका दृढ निश्चय करके चरखा चलाने लगें। वे याद रखें कि यह असा आन्दोलन है जिसमें मामूली सी पूंजी लगी है लेकिन जिसके पास बहुत जागरूक और लगातार बढ रहा संगठन है। राष्ट्र यदि पूरी शक्ति लगाकर अिसे अपना ले तो सफलता निश्चित है।

अक बार सच्चे त्यागकी भावना राष्ट्रको अनुप्राणित कर दे तो बाजारमें हाथ-कते सूतकी बाढ लाओ जा सकती है। और यह तो मैं बता ही दिया है कि खादीके अुत्पादनका रहस्य अधिक सूत पैदा करनेमें है। भारतके तमाम स्कूलोंमें ९७ लाख विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। यह सारी आबादीका अक तुच्छसा अनुपात अर्थात् ४ फी सदीसे भी कम है मगर यह संख्या यथार्थ कताओका आसानीसे संगठन करनेके लिअे काफी है। अिस आंकडेमें वकीलों और सरकारी नौकरोंका हिसाब नहीं लगाया गया है जो बहुत प्रयत्नके बिना अिसी तरह संगठित की जा सकती हैं। शर्त यह है कि यह दृढ निश्चय कर लिया जाय कि हमें खादीके द्वारा बहिष्कारको सफल बनाना ही है।

यंग अिंडिया २०–६–२९

बहुत लोगोंको यह डर मालूम होता है कि खादी जल्दी ही बाजारसे गायब हो जायगी और हम फिर पहलेकी तरह देशी मिलोंकी दया पर निर्भर हो जायेंगे। अुसके सिवा यह खतरा रहेगा

कि हमें फिर मुसतावन या तो भारतीय मिलोंके बने कपड़ेकी आड़में विलायती कपड़ा लेना पड़ेगा या कमसे कम बहुत भारी कीमतें चुकानी होंगी। यह खतरा सच्चा है अगर हम अपना समय सभी अुपलब्ध अपायों द्वारा खादीका अुत्पादन करनेमें नहीं लगायें। अिसके अुपाय ये हैं

१ अपने लिअे कातना
२ मजदूरीसे कातना और
३ यज्ञार्थ कातना।

पहला अुपाय सबसे महत्त्वपूर्ण सार्वत्रिक और अचूक है। अेक बार वह संगठित होना चाहिये। फिर तो वह खादीकी अुत्पत्तिका सबसे सस्ता तरीका है क्योंकि अिससे मालकी बिक्रीके लिअे बाजार ढूंढनेकी झंझट मिट जाती है। दूसरा अुपाय है मजदूरी पर कातनेका। अिसके लिअे बड़ी गुंजाअिश है। मगर अिसमें रुअी जमा करके रखने और बिक्रीको संगठित करनेके लिअे पूंजीकी जरूरत है। अलबत्ता अिससे हमारी व्यवसाय-शक्ति पर भी जोर पड़ता है हममें सूझ आती है हममें अेक विशाल संगठन बना लेनेका सामर्थ्य पैदा होता है और मध्यम वर्गके लिअे सम्मानपूर्ण आजीविका मिल जाती है। तीसरा अुपाय अुदात्त है परन्तु अैसे तो कुछ चुने हुअे लोग ही अपना सकते हैं। अगर राष्ट्र त्यागकी आवश्यकताको अनुभव कर ले तो अिस अुपायसे असीम मात्रामें सूत पैदा किया जा सकता है। नगरपालिकाओंकी तमाम पाठशालाओंसे हमें लाखों लोगोंको कपड़ा देनेके लिअे सूत मिल सकता है। नगरनिवासी लोग चरखेको रोज आधा घंटा दें तो वे कमसे कम १ गज अच्छा सूत दे सकते हैं। कोअी बिना विचारे यह न कहे कि हम तो केवल सूत कातनेके बजाय किसी और अच्छे काममें आधा घंटा लगा सकते हैं। कोअी सेठ किसी निर्जल मरुभूमिमें फंस जाय तो ताजा पानी अिकट्ठा करनेसे अधिक अच्छे काममें वह अपना समय नहीं लगा सकता। भारतने यह ठान लिया है कि अिसी सालमें विदेशी वस्त्र-बहिष्कार पूरा कर लेना है, अिसलिअे वह अपने निवासियोंके समयका अिससे अच्छा अुपयोग और क्या कर सकता है कि जब तक बहिष्कार पूरा न हो जाय तब तक वे सब सूत कातें? हमें यह

सीधा-सादा प्रगट सत्य जिसलिजे दिखाजी नहीं देता कि हम जिस बहिष्कारकी जरूरतको महसूस नहीं करते। कुछ भी हो ये तीनों तरीके आजमाये जा रहे हैं। और अगर हम सब अन पर भरसक अमल करें तो खादीके अभावका कोजी खतरा नहीं है।

यंग जिंडिया ३०-५-२९

अगर खादीकी भावना और असे तैयार करनेका संकल्प पैदा किया जा सके तो अेक मासके भीतर किसी भी कठिनाजीके बिना अमर्यादित मात्रामें खादी बनाजी जा सकती है।

कुशल बुनकर भारतभरमें पाये जाते हैं। जिसलिजे समस्या अेकमात्र कताजीकी है।

कताजी और असके पहलेकी प्रक्रियायें अेक सप्ताहके भीतर सीखी जा सकती हैं यदि सीखनेवालोंमें संकल्प और परिश्रमशीलता हो।

भारतमें असकी सारी जरूरतके लिजे काफीसे अधिक रुजी पैदा होती है।

जिसलिजे जो विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके लिजे काम करते हैं अुन्हें कताजीके द्वारा खादीके अुत्पादन पर सारी शक्ति लगानी चाहिये।

यंग जिंडिया २४-४-३०

विदेशी कपड़ेकी दुकानों पर धरना देनेका केवल सीमित अुपयोग ही है। असली चीज तो जनसाधारणको जिन मामलोंमें शिक्षा देना है। शिक्षासे भी अच्छा यह है कि कार्यकर्ता अुदाहरण पेश करें। और अुससे भी बेहतर यह है कि लोगोंको अपने आप सूत कातकर खादी पैदा करना सिखाया जाय। व्यवहारमें तीनों तरीके साथ साथ चलेंगे। जिसलिजे खादी द्वारा बहिष्कारके अर्थशास्त्रकी जानकारी लोगोंको जरूर करानी चाहिये। लोगोंको चुने हुअे अुदाहरणों द्वारा यह बताना चाहिये कि खादी देहातमें कैसे बन सकती है और कैसे सस्ती है। आदतन् खादीधारी सच्चे कार्यकर्ताओंको लोगोंके संपर्कमें आना चाहिये और अुन्हें यह ज्ञान कराना चाहिये कि वे अपने ही गांवोंमें अपनी ही खादी कैसे तैयार करें। जिसलिजे कांग्रेसके कार्यकर्ताओंको बहिष्कार और खादी-साहित्यका अुचित ज्ञान होना चाहिये,

वे खादीके प्रामाणिक पहननेवाले जरूर होने चाहिये और अुन्हें रुआीकी प्रक्रियाओंका अितना ज्ञान होना ही चाहिये जिससे वे अुन लोगोंको शिक्षा दे सकें जो ओटना धुनना कातना या बुनना भी चाहें।

यंग अिंडिया १४–५–३१

जैसे अहिंसा राजनीतिमें नया मार्ग है अुसी तरह खादी भी अर्थशास्त्रमें नया मार्ग है। जैसे अहिंसाने पुराने राजनीतिक अुपायोंको परास्त कर दिया है अुसी प्रकार खादी भी पुराने आर्थिक विचारोंको गड़बड़ीमें डाले बिना नहीं रहेगी। यह नया तरीका पुराने अर्थशास्त्रीय ढंग पर अेक हद तक ही सिद्ध किया जा सकता है। बहिष्कारको जो चमत्कारी सफलता प्राप्त हुआी है वह खादीकी भावनाके ही कारण हुआी है। बहिष्कार स्वयं तो कोअी नया नारा नहीं है। वह बंगभंगसे पहलेका नहीं तो अुतना पुराना तो है ही। परन्तु सफलताकी आशाका जन्म १९१९ में खादीके पुनर्जन्मके साथ हुआ है और यह आशा आंशिक रूपमें पिछले साल फलीभूत हुआी जब कि खादीकी भावना खूब जोरों पर थी।

टाअिम्स आफ अिंडिया के लेखकका कहना है कि बहिष्कारका अदृश्य या परिणाम आम जनताको नुकसान पहुंचाकर थोड़े मिलोंको फायदा पहुंचाना है। यह कथन साधार होता यदि बहिष्कारके पीछे खादी न होती। लेखक और अुनके जैसे आलोचक याद रखें कि कांग्रेसके मुनको तो भाया ही है खादी द्वारा बहिष्कार। दूसरा मिलें तो खादीकी सहायताके लिअे बीचमें आती हैं। परन्तु भारतीय मिलें खादीका विरोध करेंगी तो अुनके बावजूद बहिष्कार कायम रहेगा।

यह काम कांग्रेसका है कि वह सतत प्रचार द्वारा मिलोंको नफाखोरीके प्रलोभनसे दूर रखे और जनसाधारणको सिखाये कि अुनका आर्थिक कल्याण हाथ-कताओी द्वारा अपने ही घरोंमें खादी तैयार कर लेनेमें है। अेक बार विलायती कपड़ा रास्तेसे हट जायगा तो देशी मिलें झटसे अपने भाव और अुत्पादन खादीके अनुकूल बना लेंगी या स्वयं विदेशी मिलोंकी तरह बहिष्कारका सामना करेंगी।

यंग अिंडिया ४–६–३१

विभाग ५   खादी बनाम मिलका कपड़ा

२१

खादी बनाम मिलका कपड़ा

अगर सूती, अूनी या रेशमी हाथ-कता हाथ-बुना कपड़ा ही चलनेवाला है तो फिर राष्ट्रीय अर्थरचनामें मिलके कपड़ेका स्थान है या नहीं, यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है। अगर आज चरखेका सन्देश लाखों-करोड़ों देहातियों तक पहुंच जाय और वे अुसे समझ लें तथा ग्रहण कर लें, तो मैं जानता हूं कि हमारी भावी अर्थरचनामें मिलों या किसी भी मिलके कपड़ेका कोअी स्थान नहीं है और अुसके लिअे शायद ही जानसे राष्ट्रको तंग होना होगा।

अिस कथनका मशीनोंसे या किसी वस्त्र-आविष्कारके प्रचारसे कोअी सम्बन्ध नहीं है। यह केवल भारतीय जनसाधारणकी आर्थिक स्थितिका ही प्रश्न है।

परन्तु यदि भगवान ही दीनकर सहायता कर दे और जनसाधारणको चमत्कारपूर्वक और तत्काल चरखेका आश्रय लेनेको मजबूर कर दे तब तो और बात, अन्यथा कमसे कम कुछ समय तक तो भारतीय मिलें माल-अुत्पत्तिकी कमी पूरी करती ही रहेंगी। काश हमारे बड़े मिल-मालिकोंको यह समझाया जा सके कि वे मिल-अुद्योगको राष्ट्रीय थाती मानने लगें और अुसके अुचित स्थानको समझ लें। मिल-मालिक जनसाधारणको हानि पहुंचाकर रुपया जमा करना तो नहीं चाह सकते। अब भी कलकत्ता और दूसरे स्थानोंसे शिकायतें आती रहती हैं कि यद्यपि भारतीय मिलोंकी धोतियां मैंचेस्टरकी धोतियोंसे घटिया हैं, फिर भी वे दाम अुनसे ज्यादा लेती हैं। अगर यह खबर

सही है तो यह बात देशप्रमके बहुत विरुद्ध है और अतिलोभकी यह नीति काय और देश दोनोके लिअे हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

यग अिडिया २३–२–२२

मिल्के कपडके स्थायी राष्ट्रव्यापी बहिष्कारका कोअी सवाल नही है। परतु जहा अकेली भारतीय मिलें कपडकी मौजदा मागको कभी पूरा नही कर सकती वहा चरखा और हाथ-करघा कर सकते ह। परतु चरखकी पदावार खादीको अभी तो लोकप्रिय और सावत्रिक बनना है। यह तभी हो सकता है जब भारतका विचारशील समदाय काय आरभ कर दे। अिसलिअ असे अपन लिअ कपडका अुपयोग खादी तक ही सीमित कर देना चाहिय। हमारी मिलोको हमारे सरक्षणकी जरूरत नही। अनका माल काफी लोकप्रिय है। साथ ही मिला पर राष्टका कोअी नियत्रण नही है। वे परोपकारी सस्थाअें नही ह। वे साफ तौर पर स्वार्थी ह। वे अपना प्रचार खुब कर तेती ह। अगर वे समयकी गतिको पहचानेंगी तो अपना कपडा सस्ता करके और जहा आजकल खादीसे काम नही चलता अुन अिलाकोमें अपना कपडा पहुचा कर विदेशी वस्त्र-बहिष्कारको सहायता देंगी। वे चाह तो खादीसे स्पर्धा नही करेगी और असकी कमी पूरी करके ही सतोष कर लेंगी।

यग अिडिया २२–५–२४

अक भाअी लिखते ह

यह समझमें नही आता कि आप यह क्यो नही अनुभव करते कि खद्दरको व्यापक रूपमें अपनानका आग्रह करके आप बहुतसे मिल-मालिको और अनसे भी अधिक सख्यामें हिस्सेदाराको भयकर हानि और विपत्तिमें डाल देंग।

म चाहता हू कि पत्रलेखकका भय सच्चा सिद्ध हो। तब अुन्हे पता चलेगा कि मिलो और मिलोंके हिस्सेदाराकी होनवाली बर्बादीका समय ही अनकी अपनी और भारतकी मुक्तिका समय हागा। अुस समय अुन्हे मालूम होगा कि भारत नवजीवनसे अनप्राणित हो रहा

है और मध्यमवर्गको अपनी आजीविका आजकी तरह भूखे किसानोंसे नहीं बल्कि अुन खुशहाल किसानोंसे मिल रही है जो अपनी अुपज अुन चीजोंकी अवजमें जिनकी अुन्हें जरूरत है मगर जिन्हें वे खुद तैयार नहीं कर सकते खुशीसे देंगे। यान्स विचारसे पत्रलेखकको अच्छी तरह समझमें आ जायगा कि अुन्हें और बाकीके हिस्सेदारों तथा मिलोंके सवालको जनतासे सहयोग करना पड़ेगा। तब कहीं चरखा अितनी अच्छी तरह जम पायेगा कि वह मिलोंको निकाल बाहर कर सके। पत्रलेखकको अिस बातसे संताप होना चाहिये कि भारतीय मिलोंके कपड़ेका छूनेसे पहले चरखेको लगभग साठ करोड़ रुपयेका विलायती कपड़ेको हटाना है। परतु अिन पत्रोंमें मैंने जो कारण बताये हैं अुनका विचार करके भारतीय मिलोंके कपड़ोंको भी अलग रखकर हममें से प्रत्येकको केवल खादीका ही विचार करना चाहिये। हमारी मिलोंको मेरे या और किसीके भी सरक्षणकी आवश्यकता नहीं है। अुनके अपने ही दलाल और अपने माल्के विज्ञापनके विशेष तरीके हैं। जो लोग काग्रेसमें हैं वे अगर मिलका कपड़ा काममें लेनेकी छूट देना खादी अुद्योगको मार देना है। खादीको जितना सरक्षण दिया जाय अुतना ही थोड़ा है। तब कहीं वह बाजार पर कोअी असर डाल सकेगी।

मैं चाहता हूं कि पत्रलेखक भाअी जनसाधारणकी दृष्टिसे सोचें और चरखेको अपना कर अपने अभागे देशवासियोंके साथ अेक हो जाय।

अगर यह सच है जैसा कि है, कि विलायती मिलोंने जन साधारणके धंधेको नष्ट कर दिया है, तो मानवताके विचारकी यह माग है कि किसी मिल मालिकोंको कष्ट हो तो भी जनसाधारणको सिखाना चाहिये कि वे फिर चरखेको अपनायें। अिसी प्रकार जरूरत हो तो देशी मिलोंको अुन लोगोंके खातिर जिनकी दरिद्रताके आधार पर अुनकी दौलत बनी है, तकलीफ अुठानी चाहिये।

यंग अिंडिया १७–७–’२४

मैं देशी मिलोंके विरुद्ध हाथ-कती खादीकी रक्षा करूंगा। परतु मेरा दृढ विश्वास है कि खादी मिलोंसे अशोभनीय युद्ध किये बिना

सही है तो यह बात देशप्रेमके बहुत विरुद्ध है और अतिलोभकी यह नीति काम और दाम दोनोंके लिअ हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

यंग अिंडिया २३-२-२२

मिलके कपड़ेके स्थायी राष्ट्रव्यापी बहिष्कारका कोअी सवाल नहीं है। परन्तु जहां अकेली भारतीय मिलें कपड़ेकी मौजूदा मांगको कभी पूरा नहीं कर सकतीं वहां चरखा और हाथ-करघा कर सकते हैं। परन्तु चरखेकी पैदावार खादीको अभी तो लोकप्रिय और सार्वत्रिक बनना है। यह तभी हो सकता है जब भारतका विचारशील समुदाय काम आरम्भ कर दे। अिसलिअ अुसे अपने लिअ कपड़ेका अुपयोग खादी तक ही सीमित कर देना चाहिये। हमारी मिलोंको हमारे संरक्षणकी जरूरत नहीं। अुनका माल काफी लोकप्रिय है। साथ ही मिलों पर राष्ट्रका कोअी नियंत्रण नहीं है। वे परोपकारी संस्थाअें नहीं हैं। वे साफ तौर पर स्वार्थी हैं। वे अपना प्रचार खुद कर लेती हैं। अगर वे समयकी गतिको पहचानेंगी तो अपना कपड़ा सस्ता करके और जहां आजकल खादीसे काम नहीं चलता अुन अिलाकोंमें अपना कपड़ा पहुंचा कर विदेशी वस्त्र-बहिष्कारको सहायता देंगी। वे चाहें तो खादीसे स्पर्धा नहीं करेंगी और असकी कमी पूरी करके ही संतोष कर लेंगी।

यंग अिंडिया २२-५-२४

अेक भाअी लिखते हैं

> यह समझमें नहीं आता कि आप यह क्यों नहीं अनुभव करते कि खद्दरका 'पागल' रूपमें अपनानेका आग्रह करके आप बहुतसे मिल-मालिकों और अुनसे भी अधिक संख्यामें हिस्सेदारोंको भयंकर हानि और विपत्तिमें डाल देंगे।

मैं चाहता [redacted] कि पत्रलेखकका भय सच्चा सिद्ध हो। तब अन्हें पता चलेगा कि मिलों और मिलोंके हिस्सेदारोंको होनेवाली बरबादीका समय ही अुनकी अपनी और भारतकी मुक्तिका समय होगा। अुस समय अन्हें मालूम होगा कि भारत नवजीवनसे अनुप्राणित हो रहा

२२

हमारी मिलें क्या कर सकती ह ?

[कुछ अश]

कुछ अच्छ और कुछ बुरे वर्षोंका कमसे कम औसत लेकर वे अपन भावाको स्थिर कर सकती ह।

वे कपडेकी अुन किस्मोको तयार करनसे अलग रह सकती ह जो खादी-सस्थाओ द्वारा आसानीसे और तुरत तयार की जा सकती ह और अिस प्रकार अपनी शक्तिको वह माल अधिक तयार करनके लिअे मुक्त कर सकती ह जिसे वे खादी सस्थाओकी अपेक्षा फिलहाल ज्यादा सुगमतासे बना सकती ह।

वे अपना मुनाफा कमसे कम रख सकती ह और कोअी बचत हो तो अुसे मजदूरोकी हालत सुधारनेमें लगा सकती ह।

अिसका परिणाम होगा चतुमुखी प्रामाणिकता अव्यवसाय पार स्परिक विश्वास तथा श्रम पूजी और खरीदारोके बीच अब स्वेच्छापूर्ण और सम्मानपूर्ण मत्री। अिसका अथ होगा अेक विशाल पमाने पर सगठनकी क्षमता।

मेरी नम्र रायमें हम अिस कामके लिअे खूब योग्य ह। अिस कामके लिअ आवश्यक सगठनस हम अपरिचित नही ह। अब ही प्रश्न है कि क्या हममें सकल्पबल है ? क्या मिल मालिकोमें पर्याप्त दृष्टि पर्याप्त देशप्रेम है ? अगर हो तो वे अिस विषयमें नेतृत्व कर सकते ह।

यग अिडिया १५-३-२८

'कुछ ही मिलें खादी न बनानेकी प्रतिज्ञा कर सकती ह। परन्तु अुनका क्या होगा जो केवल हल्के नम्बरका सूत ही कातती है ? खादीकी आपकी कसौटी क्या है ?

यह मामला खादी-सस्थाओ और मिलोके बीचमें सामान्य प्रामाणिकता और व्यवस्थाका है। अगर कोअी चलन लायक व्यवस्था बनी

ही अपने पैरों पर खड़ी हो जायगी। लेकिन जब तक खादीके थोड़े ही भक्त हैं तब तक उन भक्तोंको खादीका ही लाजिमी तौर पर प्रचार करना चाहिये और हमारी मिलोंमें तैयार हुअे सूत और कपड़े पर भी खादीको तरजीह देना चाहिये और मिलके कपड़ेको दूर रखना चाहिये। अुस कपड़के अपयोगकी छूट देना खादीको मार देना है।

यंग अिंडिया २८-८-२४

राष्ट्रीय जीवनकी अयरचनामें मिलोंका अभी हद तक स्थान है जिस हद तक वे हमारी लाखों झोपड़ियोंमें हाथ-कताओीके राष्ट्रीय अुद्योगकी कमीको पूरा करती हैं। अगर वे कताओी अद्योगसे स्पर्धा करने या असका स्थान लेने लगें तो वे बाधक बन जायेंगी।

यंग अिंडिया ५-४-२८

अेक अेक गज खादी खरीदनेका अर्थ यह है कि कमसे कम ८५ फीसदी कीमत भारतके भूखे और गरीब लोगोंके पेटमें जायगी। मिलके कपड़ेका प्रत्येक गज खरीदने पर खर्च किये हुअे पैसेका ७५ फीसदीसे ज्यादा पूंजीपतियोंकी जेबमें जायगा — २५ फीसदीसे भी कम मजदूरोंको मिलेगा। ये पूंजीपति कभी असहाय नहीं होते। वे अपनी रक्षा भलीभांति खुद कर सकते हैं। वे कभी भूखे नहीं रहते और अुन्हें भूखे रहनेकी जरूरत भी नहीं पड़ती। यह नौबत तो अुन लाखों लोगोंको ही आती है जिनके खातिर खादीकी कल्पना की गअी है।

यंग अिंडिया ४-१०-२८

२२

हमारी मिलें क्या कर सकती ह ?

[कुछ अग]

कुछ अच्छे और कुछ बुरे वर्षोंका कमसे कम औसत स्तर वे अपने भावोंका स्थिर कर सकती ह।

व कपडका अुन किस्मोको तयार करनेसे अलग रह सकती ह जो खादी-सस्थाओ द्वारा आसानीसे और तुरत तयार का जा सकती ह और अिस प्रकार अपनी शक्तिका वह भाग अधिक तयार करनके लिअे मुक्त कर सकती ह जिसे व खादी सस्थाओकी अपेक्षा किफायतसे ज्यादा सुगमतासे बना सकती ह।

वे अपना मुनाफा कमसे कम रख सकती ह और कोअी बचत हो तो अुसे मजदूरोकी हालत सुधारनेमें लगा सकती ह।

अिसका परिणाम होगा वस्तुमुखी प्रामाणिकता अध्यवसाय पार स्परिक विश्वास तथा श्रम पूजी और खरीदारोके बीच अक स्वच्छापूर्ण और सम्मानपूर्ण मत्री। अिसका अथ होगा अक विशाल पमान पर सगठनकी क्षमता।

मरी नम्र रायमें हम अिस कामके लिअे खूब योग्य ह। अिस कामके लिअ आवश्यक सगठनसे हम अपरिचित नही ह। अक ही प्रश्न है कि क्या हममें सकल्पबल है ? क्या मिल मालिकोमें पर्याप्त दृष्टि पर्याप्त देशप्रेम है ? अगर हो तो वे अिस विषयमें नेतृत्व कर सकते ह।

यग अिडिया १५-३-२८

कुछ ही मिलें खादी न बनानेकी प्रतिज्ञा कर सकती ह। परतु अुनका क्या होगा जो केवल हलके नम्बरका सूत ही कातती है ? खादीको आपकी कसौटी क्या है ?

यह मामला खादी-सस्थाओ और मिलोके बीचमें सामान्य प्रामाणिकता और व्यवस्थाका है। अगर कोअी चलने लायक व्यवस्था बनी

तो मैं आशा रखता हूं कि खादी-केन्द्रों और मिलों द्वारा तैयार होने वाले कपड़ेमें फिलहाल कोअी सीमारेखा तय हो जायगी। कपड़ेके अुत्पादन पर वैसा ही नियंत्रण रखना होगा जैसा युद्धके समय अक्सर होता है। जो बात हम हिंसात्मक युद्धमें दबावसे करते हैं वह अिस अहिंसात्मक युद्धमें स्वेच्छासे करेंगे।

> रुअीका नियमन कैसे किया जायगा? आप भी जानते हैं और मैं भी जानता हूं कि रुअीके भाव बहुत ही अनियमित ढंगसे घटते बढ़ते रहते हैं।

अिसमें यह मान लिया गया है कि हम रुअीके बाजारका नियंत्रण नहीं कर सकते। अवश्य ही यदि देशके बड़से बड़े अुद्योगपति अिस राष्ट्रीय कार्यके लिअे अेक हो जायं तो वे रुअीके बाजारका नियंत्रण कर लेंगे। अमरीका हमारे रुअीके भावों पर अिसलिअे काबू रख सकता है कि हम मूर्खता विचारहीनता और स्वार्थके कारण अपनी रुअी बाहर भेज देते हैं। परंतु बहिष्कारका अर्थ ही यह है कि जैसे हम और बहुतसी चीजोंका नियंत्रण करेंगे वैसे रुअीके आवागमनका भी करेंगे। तभी हम बहिष्कारको पूरा सफल कर सकेंगे। और यह तो हमें करना ही है अगर हमने अपनेमें सच्ची राष्ट्रीय भावना पैदा कर ली है और हमें अपने आपमें तथा अपने राष्ट्रमें विश्वास है।

> अगर आप अीमानदारी अध्यवसाय पारस्परिक विश्वास आदि पर बहुत जोर देंगे तो आपकी नाव पार नहीं लगेगी।

चूंकि मेरे पास तलवार नहीं है और हो भी तो मैं अुसे अपनाअूंगा नहीं अिसलिअे मुझे तो अुन्हीं गुणों पर जोर देना होगा जिनकी अिन भाअियोंके खयालसे बहुत कीमत नहीं है। मुझे अुनके जैसा अंदेशा नहीं है। अितना ही नहीं मुझमें अितना धीरज है कि ये गुण आज अगर काफी मात्रामें नहीं पाये जाते तो अुनके विकासकी प्रतीक्षा करूंगा। कारण यह राष्ट्र तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकता जब तक राष्ट्रके रूपमें हम अिन गुणोंका परिचय न देंगे।

यंग अिंडिया २२-३-२८

खादी प्रचार मिलोंका सहायक है

मिलोंने खादी प्रचारका कभी विरोध नहीं किया है। अुलटे अुनके बहुतसे प्रतिनिधियोंने मुझे विश्वास दिलाया है कि खादी प्रचारसे अुन्हें लाभ हुआ है। क्योंकि अुससे विदेशी कपड़ेके विरुद्ध वातावरण पैदा हुआ है जिसके कारण वे अपना मोटे सूतका कपड़ा बेच सके हैं। केवल खादी ही लो वाला विचार खादीका प्रचारकार्य बन्द कर दीजिये और मिलके कपड़ेके साथ खिलवाड़ कीजिये तो आप खादीको मार देंगे और अन्तमें मिलके कपड़ेको भी मार देंगे। क्योंकि वह अकेला विदेशी स्पर्धामें टिक नहीं सकता। अगर खादीकी भावना न हो तो देशी और विलायती प्रतिस्पर्धामें रुकावट पैदा करनेवाली स्वस्थ सामूहिक वृत्तिकी जो अेक बात है वह नहीं रहेगी।

सबसे अन्तिम लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि खादीमें आम जनताको विशाल पैमाने पर शिक्षा देने और अुसका सामूहिक अुत्थान करनेकी तथा बढ़ती हुअी भुखमरीमें ठोस राहत पहुंचानेकी अैसी क्षमता है जिसका मूल्य नहीं आंका जा सकता। जहां मिलके कपड़ेसे आम जनताको कोअी काम और कोअी आर्थिक सहायता नहीं मिलती, वहां खादीके अेक अेक गज कपड़ेका अर्थ है अुन गरीबोंके लिअे जो काम और मजदूरीके अभावमें दोहरी बरबादीके शिकार हो रहे हैं अुतना काम और अुतना रुपया। अिसलिअे प्रत्येक देशभक्तके लिअे अेकमात्र खादीका अुपयोग और प्रचार करनेके सिवा और कोअी चारा नहीं है।

यंग अिंडिया, १०-५-२८

२४

मिल मालिकोंका लोभ

हमारी मिलोंने जो नकली खादी तैयार की है अुसके आंकडे ये हैं।

खादी ड्रिल या खद्दरके अुत्पादनके अप्रैलसे जनवरी तकके दस मासके आंकडे

	१९२५–२६	१९२६–२७	१९२७–२८
पौंड	२ ५८ २२ ४४२	३ ११ ९५ १६९	३,७० ३६ ७०६
गज	७ ३२ ४४ २३८	८ ५४ ३१ ६९१	१० ३० ६१ ०७२

अिनसे जाहिर है कि अुन्होंने हर महीने अेक करोड गज या कमसे कम बीस लाख रुपयेकी खादी तैयार की। अिसका अर्थ हुआ असली खादीका अेक वर्षका अुत्पादन। यह तो स्पष्ट ही गरीबोंके मुंहका कौर छीन लेना है और वह भी अेक असे आन्दोलनके मार्फत जिसका हेतु करोडों भूखोंकी सहायता करना था। अिससे अधिक नीचता और क्या हो सकती है? अगर मिल-मालिक खादीको अन्यायपूर्ण और अप्रामाणिक स्पर्धा द्वारा मारनेकी कोशिश करनेके बजाय अुसके साथ मिलकर अुसकी सीधी मदद करते तो वह देशकी सेवा होती।

यंग अिंडिया १०–५–२८

२५

मिलकी खादी

मुझे मदुरामें मालूम हुआ कि कपड़ेके कुछ व्यापारी मिलके सूतकी बनी खादीको हाथ-कती हाथ-बुनी कह कर बेच रहे हैं। मुझे वे नमूने दिखाये गये जो खादीके विशेष नमूनोंकी हूबहू नकल थे। खादी प्रेमियों और खादीकी हरिजन सेवाकी शक्तिमें विश्वास रखनेवाले हरिजन सेवकोंसे मेरा अनुरोध है कि वे अुस खादीको न खरीदें जिस पर अखिल भारत चरखा संघकी छाप न लगी हो। मैंने यह भी सुना कि देशी विदेशी दोनों तरहकी मिलोंका कपड़ा भी बाजारमें खादीके नाम पर काफी मात्रामें बेचा जाता है। और मेरे दुःखका प्याला भरनेको यह कहा जाता है कि मैंने खादीके बारेमें अपने विचार बदल लिये हैं और देशी मिलोंके कपड़ेको खादीके बराबर मान लिया है। यह मेरे खादी-संबंधी विचारोंको गलत रूपमें रखना है। खादीमें मेरा विश्वास नैतिक आर्थिक और राष्ट्रीय (व्यापक अर्थमें) दृष्टिसे पहलेसे अधिक दृढ़ हुआ है। खादी और मिलके कपड़ेमें मिलका कपड़ा देशी हो तो भी कोई तुलना नहीं हो सकती। मिलके कपड़े या मिलके सूतके द्वारा गरीबोंका जो शोषण होता है वह खादीमें हो ही नहीं सकता। मिलके कपड़े और मिलके सूतसे गरीबोंका शोषण किसी न किसी रूपमें होना ही अनिवार्य है। असली खादीके अुपयोगसे गरीबोंको अुस निरन्तर शोषणका (थोड़ा ही सही) कुछ न कुछ बदला अपने-आप मिल जाता है जो अमीरोंने किया है और कुल मिलाकर देहातके रहनेवाले जनसाधारणके लिअे यह बदला पूरा न होने पर भी काफी बड़ा हो सकता है। अगर हरअेक मिल भी राष्ट्रकी संपत्ति बना दी जाय तो भी अिनमें से कोअी काम मिलका कपड़ा हरगिज नहीं कर सकता। मिल-अुद्योगमें यदि वह केवल राष्ट्रकी थातीके रूपमें चलाया जाय और अुसका योग्यतापूर्वक प्रबंध किया जाय तो भी अपने आप वितरण

कभी नहीं हो सकता और विशाल पैमाने पर मजदूरोंमें बेकारी तो जुससे फैलेगी ही। खादीमें तो चरखा घर घरमें चलेगा, अिसलिअे मजदूरोंमें कोओी बेकारी पैदा नहीं होगी और श्रमकी पैदावारका वितरण तो अुसमें हमेशा अपने आप होता ही है। अिसलिअे मेरी दृष्टिसे खादी और मिलके कपड़ेमें कोओी तुलना नहीं हो सकती और वे साथ साथ नहीं रख जा सकते, क्योंकि दोनों अेक ही प्रकारकी वस्तुअें नहीं हैं। संभव है खादी मिलके कपड़ेकी सफाओी या अुसकी विविधता या बाजारके अेक अुसकी सस्ताओीको कभी न पहुंच सके। दोनोंके लिअे माप अलग अलग हैं। खादी मानवीय मूल्योंकी प्रतीक है जब कि मिलका कपड़ा केवल भौतिक मूल्य प्रगट करता है। मेरे लिअे चार आने गजकी खादी सस्ती है और अुसी अेक या पौनेका मिलका कपड़ा दो आने गजका भी महंगा है। अिसलिअे मेरा अनुरोध है कि हमें विवेकसे काम लेना चाहिये और विचारोंकी गड़बड़से बचना चाहिये। दोनों अपने अपने मंच पर ही खड़े हों। मिल-मालिकोंको खादीको अुसका आजका स्थान देनेसे द्वेष नहीं होना चाहिये। अन्हें अैसा कपड़ा तैयार करना शोभा नहीं देता जो खादी जैसा दिखाओी देता है और अिसलिअे ग्राहकोंको खादी होनेका धोखा देता है।

हरिजन ९–२–३४

२६

कुछ विकट प्रश्न

खद्दर प्रेमियोंके लिअे कुछ विकट प्रश्न ये हैं

'क्या आप मुझे कृपा करके समझायेंगे कि कराची कांग्रेसमें खादी प्रचारके सबधमें स्वीकृत प्रस्तावसे अुस अुद्देश्यकी पूर्तिमें कैसे सहायता मिलेगा ? देशी मिल मालिकोंसे अपील की गअी है कि वे स्वय खादी अिस्तेमाल करके हाथ-कताअीके सहायक ग्राम-अुद्योगको अपना नैतिक समर्थन प्रदान करें। यदि मिल मालिकोंका अपनी मौजूदा मिलोंका विकास करनेके लिअे अुन्हें चलाते रहनेका अबाध विशेषाधिकार प्राप्त है तो क्या हाथ-कते कपड़ेके अुपयोग मात्रसे यह समझ लिया जायगा कि खद्दरके लिअे अुनका नैतिक समर्थन है ? मेरी नम्र रायमें खादीके लिअे मिल मालिकोंका नैतिक समर्थन तब तक नहीं माना जा सकता जब तक कि वे मिलों और चरखेके बीचके विरोधको समझकर अपनी प्रवृत्तिको धीरे धीरे सीमित करनेका प्रामाणिक प्रयत्न नहीं करते। फिर यह समझमें नहीं आता कि अगर मिलें खद्दरकी जगह अुपयोगके लिअे ज्यादा बारीक और सस्ता माल पैदा करती रहेंगी तो खद्दर कैसे अपना स्थान बनाये रख सकेगा। और फिर मिल मालिकोंसे कपड़ेकी कीमतें नीची रखनेको कहना तो खद्दरको मारनेका निश्चित अुपाय होगा।

ये सब अच्छे प्रश्न हैं। अिसमें शक नहीं कि अगर खद्दरका मिल मालिकों द्वारा व्यक्तिगत अुपयोग अुनके भीतरी विश्वासका चिह्न नहीं है तो अुससे कोअी लाभ नहीं और वह दभका चिह्न भी हो सकता है। अगर भीतरी विश्वास है तो जैसे अेक माली अपने मजबूत पौधोंकी अिस तरह व्यवस्था करता है कि कमजोर पौदोंको हानि न पहुंच

ठीक वैसे ही मिल मालिक अपनी मिलें असे ढंगसे चलायेंगे जिससे खद्दरको कभी नुकसान न पहुंचे। कायम मिलोंको महत्व करती है तो अिस विश्वासके आधार पर करती है कि परिवर्तन कालमें मिलें अुपयोगी काम कर सकती हैं। अगर देशी मिलें आन्दोलनके साथ सहानुभूति रखकर काम करें तो अुनकी सहायतासे विलायती कपड़ेका तात्कालिक बहिष्कार आसान हो जाता है। अकेली देशी मिलोंसे निबटना और स्पर्धा करना खादीके लिअे ज्यादा आसान है लेकिन अुनके साथ और अंग्रेजी जापानी अिटालियन और दूसरी मिलोंके साथ अिकट्ठा निबटना अुतना आसान नहीं है। खद्दरवालोंको देशी मिलोंकी संख्या बढ़नेसे रंज नहीं होना चाहिये। यह वृद्धि निःसंदेह अिस बातका प्रमाण है कि खादीका आर्थिक प्रभाव अभी तक पूरी तरह महसूस नहीं हुआ है। जब खद्दर सार्वत्रिक हो जायगा तब संभव है बहुतसी मिलोंका काम ही न रह जाय। यह अंदाज लगाना गैरजरूरी है कि खद्दरका लोगों पर असा प्रभाव होगा या नहीं। यह कार्यकर्ताओंकी वफादारी पर निर्भर रहेगा। खद्दरके पक्षमें जो दलीलें की जाती हैं अुनमें कोअी दोष नहीं है। यह केवल सारे ग्रामीणोंको सच्ची शिक्षा देनेका राष्ट्रीय रुचि बदलनेका और देशसे दारिद्र्यको भगानेके लिअे चरखेकी जबरदस्त ताकतको महसूस करनेका प्रश्न है। अब असा मार्ग बना सकना कोअी छोटी बात नहीं जिससे अपमानसे भुखमरी और अुसके साथ लगे हुअे परिणामोंसे रक्षा हो जाय।

अब दूसरा प्रश्न लें। अिसमें सन्देहकी गुंजाअिश नहीं कि मिलों द्वारा बारीक कपड़ा पैदा करानेकी जरूरत है। खादीके युगमें ढाकाकी बारीक खादी मिलती थी। वह आज भी तैयार की जाती है। मगर वह अितनी ज्यादा और सस्ती नहीं होती कि जो चाहे अुन सबको मिल सके। अिसलिअे परिवर्तन कालमें मिलोंको महीन कपड़ा तैयार करनेको प्रोत्साहन दिया जा सकता है। और यह समझ लेना आसान है कि मिलोंकी पैदावारको बारीक माल तक सीमित रखना खादीके लिअे पूरी तरह लाभदायक है। दुःखकी बात अितनी ही है कि मिलोंकी तरफसे राष्ट्रीय मांगका कोअी अच्छा अुत्तर नहीं मिलता।

आखिरी सवाल कीमतोंके बारेमें है। अवश्य लेखक यह तो नहीं कहना चाहते कि खद्दरको जिन्दा रखनेके लिअे मिलोंको अूंचे दाम लगाने चाहियें। खादीके पुनरुद्धार आन्दोलनका प्रवर्तक होनेके नाते मुझे स्वीकार करना चाहिये कि मेरे दिमागमें यह बात कभी नहीं आअी कि मैं खादीकी रक्षाके लिअे मिलोंके मालके अूंचे भावोंकी निन्दा करूं। हमारा भयंकर स्पर्धासे बचाव चाहना अेक बात है और जो चीजें थोड़ेसे लोग बहुतोंके लिअे पसन्द करते हैं अुनके दाम किसी मिलते-जुलते अुद्योगकी रक्षाके लिअे भी अूंचे रखवाना दूसरी बात है।

यंग अिंडिया, १६–७–३१

२७

स्वदेशी प्रदर्शनियोंमें खादी

भारतके अन्य सब भागोंमें जहां स्वदेशी प्रदर्शनियोंमें मिलका कपड़ा रखने दिया जाता है, वहां अखिल भारत चरखा संघने खादी रखनेसे नियमपूर्वक अिनकार कर दिया है और जिस हेतुसे यह नियम बनाया गया था वह हेतु अिससे पूरा हुआ है। परन्तु अुत्तर प्रदेशसे अिस नियमको ढीला करनेकी मांग आयी है। लेकिन मैंने अभी तक अिस लोभका संवरण किया है। अुत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंने अपने मार्गदर्शनके लिअे खास तौर पर पूछा है।

मेरा अपना अनुभव मुझे बताता है कि भड़कीले बने मिलके कपड़ेके साथ साथ खादीको रखकर जनसाधारणके मनमें भ्रम पैदा करना खतरनाक है। यह बहुत कुछ अैसा ही है जैसा मानव प्राणियोंको यांत्रिक मानवोंके साथ रख देना। अगर मानव प्राणी अिन यांत्रिक मानवोंके साथ स्पर्धामें अुतरेंगे तो हार जायेंगे। मिलके बने कपड़ेकी स्पर्धामें खादीका भी यही हाल होगा। दोनोंके स्तर अलग अलग हैं। उद्देश्य विरोधी हैं। खादी सबको काम देती है, मिलका कपड़ा कुछको

काम देता है और बहुतोंसे अीमानदारीकी मेहनत छीन लेता है। खादी सर्वसाधारणकी सेवा करती है मिलका कपड़ा अूपरी वर्गोंकी सेवाके लिअ बनाया जाता है। खादी मजदूरोंकी सेवा करती है मिलका कपड़ा अुनका शोषण करता है। मेरे अनुभवका समर्थन भारत भरके खादी-कार्यकर्ता करते हैं। अिसलिअ मुझे आशा है कि श्री जवाहरलाल नेहरूके साथ साथ अुत्तर प्रदेशके कांग्रेसजन चरखा संघके अनुभव और नीतिका आदर करेंगे और अुनकी अपनी राय चरखा संघके विपरीत हो तो वे चरखा संघकी रायको तरजीह देंगे।

हरिजन १-४-३७

२८

भारतीय मिलोंका संरक्षण

अगर भारतको आर्थिक दृष्टिसे स्वतंत्र राष्ट्र बनना है, अगर अुसके किसानोंको चिरकालीन दरिद्रतासे मुक्त करना है, अगर अुन किसानोंको अकाल और अैसी ही दूसरी विपत्तियोंके समय सम्मानपूर्ण धंधा दिया जा सके अैसी व्यवस्था करना है, तो भारतके बाजारसे विदेशी कपड़ेको बिलकुल बाहर निकाल देना चाहिये। अपने प्रधान अुद्योगकी रक्षा करना अुसका जन्मसिद्ध अधिकार है। अिसलिअे मैं भारतीय मिलोंकी विदेशी स्पर्धामें रक्षा करना चाहूंगा, भले ही अिसका परिणाम फिलहाल गरीब लोगों पर दण्ड ही होता हो। गरीबोंके अिस तरह दण्डित होनेकी नौबत तभी आ सकती है जब मिल-मालिक अितने देशप्रेम विहीन हो जाय कि अुन्हें जो अेकाधिकार मिल जाय अुसके कारण वे अपने मालका भाव बढ़ा दें। अिसलिअे मुझे रुअीके भीतरी करोंको अुठा देने और निषेधात्मक आयात-कर लगा देनेका समर्थन करनेमें कोअी संकोच नहीं है।

यंग अिंडिया २८–८–'२४

यद्यपि मने अिस प्रश्नकी चर्चा अिस पत्रमें पहले भी की है फिर भी अक्सर पत्रलेखक पूछते ह कि विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके आदोलनमें भाग लेनको देशी मिलोसे क्यो नही कहा जाता।

वर्तमान मिलोकी सहायतासे आन्दोलनका तत्काल पूरा सपादन होना असभव वस्तु है। नओ मिलें तुरन्त मानसे खडी नही हो सकती अिसलिअ बहिष्कार यदि सफल हो सकता है तो खादीके जरिये ही हो सकता है। खादीको मिलके कपडके साथ साथ आगे नहा बढाया जा सकता। लोगोको बनावकी सुविधा दी जाय तो अफसोसके साथ स्वीकार करना पडगा कि विचारहीन जनसाधारण तो मिलके सस्ते और सुलभ कपडको ज्यादा पसद करेंगे और जाहिरा तौर पर महगी मोटी दिखाओी देनेवाली और दुर्लभ खादीको कम पसन्द करेंगे। अिसलिअ यह निश्चय निकलता है कि कायस कार्यकर्ताओको चाहिये कि जहा तक अुनका प्रभाव पहुचता है — और वह अभी दूर तक नही पहुचता — व खादीका ही प्रचार कर मिलके कपडका नही।

य ह वे शर्तें जिनके मातहत मिलें (विदेशी वस्त्र बहिष्कार)* आन्दोलनमें पूरा या अधूरा प्रत्यक्ष भाग ले सकती है

१ व अपनी अजेंसियोंके जरिये खादी बच सकती ह

२ वे आन्दोलनमें अपनी बढिया काम ले सकती ह

३ चरखा सघस परामर्श करके व (विदेशी वस्त्र)* बहिष्कारकी दृष्टिसे यह तय कर सकती ह कि अुन्हें क्या क्या माल तयार करना चाहिये

४ वे खादीके नामस या और किसी नामसे खादी तयार करना बन्द कर सकती है

५ वे अपन भाव अिस तरहसे स्थिर कर सकती ह कि जिसस न तो अन्हें हानि हो और न अमका लाभ घट और

६ वे (विदेशी वस्त्र-बहिष्कार)* आन्दोलनमें आर्थिक सहायता दे सकती ह।

---

* कोष्ठकके शब्द हमारे ह। — सम्पादक

जो मुख्य छह अुपाय मने बताये ह अुनसे और कअी अुपाय आसानीसे निकाले जा सकते ह। यह मदद तभी दी जा सकती है, जब मिल मालिकों और हिस्सेदारोंमें देशप्रेमकी भावना हो और वे अपना मुनाफा सीमित करनेको तैयार हों। मुझे विश्वास है कि हिस्सेदारोंमें ठीक ढंगसे प्रचार किया जाय तो अुनमें से अधिकांशको आपत्ति नहीं होगी।

यंग अिंडिया, ४–७–२९

मिल मालिक चाहें तो खादीके द्वारा बहिष्कारकी सहायता अिस प्रकार कर सकते ह कि वे अुन मिलोंकी सूची प्रकाशित करें जिनका स्वामित्व नियंत्रण और प्रबंध भारतीयोंके हाथमें हो जो बुनाअीमें विलायती सूत जरा भी काममें न लेती हों और जो खादीसे मिलता जुलता कपड़ा तैयार नहीं करेंगी अपने विज्ञापनोंमें खादी या चरखेका नाम अिस्तेमाल नहीं करेंगी और भाव अनाप शनाप नहीं बढ़ायेंगी।

मुझे पक्का विश्वास है कि जो लोग बहिष्कारका प्रचार करते ह और अिस बात पर जोर नहीं देते कि बहिष्कार करनेवाले खुद कातकर या कातनेवाले जुटाकर खादीके अुत्पादनमें सहायता दें और जो स्वदेशीकी ढीलीढाली बातें करते ह व अगर बहिष्कार-आंदोलनको सचमुच नुकसान नहीं पहुंचाते तो अुसकी प्रगतिको अवश्य रोकते ह। बहिष्कारके हिमायतियोंको अपने मार्गसे विचलित नहीं होना चाहिये भले ही थोड़े समयके लिअे वे खादीकी मांगको पूरा न भी कर सकें। अुन्हें जान लेना चाहिये कि खादीके अुत्पादनके लिअे यही समय बहुत मूल्यवान है। हमें विलायती कपड़ेके बहिष्कारकी जरूरत अंग्रेजोंको सजा देनेके लिअे नहीं बल्कि करोड़ों भूखोंको चरखे द्वारा काम और अन्नके जरिये अन्न देनेके लिअ है।

यंग अिंडिया २४–४–३०

३०

मेरी स्थिति

मेरी स्थिति साफ है।

१ अगर मेरी चले तो भारतमें कपडा खादीका ही होगा। दूसरा कोओ कपडा देशकी मिलोंमें बना हुआ कपडा भी नही होगा।

२ जब तक भारत अपनी जरूरतकी सारी खादी तयार करनेको तयार नही है (असमथताका कोओ प्रश्न नहा है) तब तक म देशी मिलोंके कपडको खादीकी कमी पूरी करने दूगा।

३ विलायती कपड पर धरना अिसलिअ है कि विलायती कपडा खादी और भारतीय मिल-कपडा दोनोके साथ स्पर्धा करता है। अिस सम्बधमें यह सवाल अप्रासगिक है कि यह स्पर्धा न्यायपूण है या अन्यायपूण यानी जिन देशामें विदेशी कपडा तयार किया जाता है वहा न्यायपूवक तयार किया जाता है या नहा और यहा न्यायपूवक लाया जाता है या नही।

४ अगर स्पर्धा न हो और यह स्पष्ट हा जाय कि थोडा कपडा भारतमें बाहरसे मगानकी जरूरत है और अगर अिग्लण्ड स्वतन्त्र भारतका साझदार हा तो म अन्य सब देशो पर अिग्लण्डको तरजीह दूगा। मगर मेरा विश्वास है कि जब भारत आजाद हा जायगा तो वह अपनी जरूरतकी काफी खादी थोड ही समयमें तयार कर लेगा और परिवतन-कालमें अपनी कमीको देशकी मिलोंके कपडसे पूरा कर लेगा।

यग अिडिया ३०–७–३१

विभाग ७ खादीका अर्थशास्त्र

३१

खादीका आधार मानव हितका विचार है

खादीका परित्याग करना जनसाधारणको, भारतकी आत्माको बेच देना है।

यंग अिंडिया १५–१–२८

खादीका अर्थशास्त्र साधारण अर्थशास्त्रसे सर्वथा भिन्न है। साधारण अर्थशास्त्रमें मानव तत्त्वका कोअी विचार नहीं किया जाता। खादीके अर्थशास्त्रका सारा सम्बन्ध मानव तत्त्वसे होता है। सामान्य अर्थशास्त्र साफ तौर पर स्वार्थी है खादीका अर्थशास्त्र लाजिमी तौर पर निःस्वार्थ होता है। खादीकी कल्पनामें स्पर्धा और असलिअे कीमतोंकी गुंजाअिश नहीं होती। होटलों और घरेलू भोजनालयोंमें कोअी स्पर्धा नहीं होती। गृहस्वामिनीके दिमागमें अपनी मेहनतके मूल्यका और रसोअीके काममें लगनेवाली घरकी जमीनके क्षेत्रफलका हिसाब लगाने वगैराकी बातें कभी आती ही नहीं। वह सिर्फ अितना जानती है कि जितना बच्चोंकी परवरिश करना अुसका कर्तव्य है अुतना ही घरका भोजनालय चलाना भी है। अगर वह कीमत गिनने लगे तो वस्तुस्थिति अुस कंगाल-सी हालतमें ले जायगी जिसमें बच्चों और भोजनालय दोनोंका विनाश निश्चित है। कुछ लोगोंने दोनोंका ही नाश कर दिया है। परन्तु अीश्वरकी कृपासे अिस पथमें कोअी खास वृद्धि होनेके आसार नजर नहीं आते। हम अपने स्वभावगत आलस्यके कारण ही यह नहीं देख पाते कि जब हमने घरेलू चरखेको नष्ट किया तब हमने भारतीय मानव-समूहके प्रति पाप किया। हमें अपने पापका पश्चात्ताप करना चाहिये और शांतिदायक चरखेको फिरसे अपनाना चाहिये।

यंग अिंडिया १६–७–३१

खादीके अर्थशास्त्रके नियम

मैंने देख लिया है कि अब खादी-कार्यकर्ताओंके लिअे खादीके अर्थशास्त्रके नियमोंके पालन पर शक्ति केन्द्रित करने पर पहलेकी अपेक्षा अधिक जोर देनेका समय आ गया है। अिनमें से कुछ नियम सामान्य अर्थशास्त्र पर लागू होनेवाले नियमोंसे वास्तवमें भिन्न हैं। अुदाहरणके लिअे आम तौर पर अेक जगह तैयार की हुआी वस्तुअें संसारके तमाम हिस्सोंमें भेजी जाती हैं या अुन्हें भेजनेकी कोशिश की जाती है। जो अिन वस्तुओंको तैयार करते हैं अुनके लिअे अुनका अुपयोग करना बिलकुल जरूरी नहीं होता। खादीकी बात असी नहीं है। अिसकी विशेषता यह है कि अुसे जहां पैदा किया जाता है वहीं काममें लेना पड़ता है और अच्छा तो यही है कि कातने और बुननेवाले खुद अुसे काममें लें। जब खादीका अुपयोग अिस तरह किया जाता है तो अुसकी मांग अपने आप निश्चित हो जाती है। बेशक यह विचार अभी पूरी तरह कार्यान्वित नहीं होगा। परन्तु खादीका मूल्य जिस हद तक हम अिस लक्ष्यको प्राप्त करेंगे असी हद तक लगाया जायगा। खादी असा ग्राम अुद्योग है जैसा और कोअी अुद्योग न तो है न हो सकता है। अलबत्ता यदि कृषिको अुद्योग माना जाय तो वह भी असा ही ग्राम अुद्योग है यद्यपि खादीकी अपेक्षा सीमित अर्थमें। अिसलिअे कातने और बुननेवालोंको खादीके सीधेसादे अर्थशास्त्रको समझनेकी शिक्षा देना जरूरी है। जहां कातने और बुननेवाले अपने ही अुपयोगके लिअे कातते-बुनते हैं वहां खादीका अुनके लिअे सबसे सस्ता होना स्वाभाविक है।

अिससे यह परिणाम निकलता है कि हमें खादीको अुसके अुत्पादनके स्थानसे बहुत दूर बिक्रीके लिअे भेजनेकी कोशिश नहीं करनी चाहिये। परन्तु खादी अुसी गांवमें बिकनी चाहिये जिसमें वह तैयार की जाती है। अगर फिर भी बच रहे तो वह अुसके अुत्पादनके

जिल्में बेच दी जाय। अवश्य ही खास नमूने अुन घरानों द्वारा तैयार होते रहेंगे जो अतीत कालसे कलापूर्ण नमूने बुनते रहे हैं। अिस प्रकारकी खादी जिन्दा रहेगी, भले ही ग्रामीणोंकी खादीका कुछ भी हाल हो। यह खादी तो देहातियोंके लिअे श्रम और आयके स्थायी साधनके तौर पर है।

अुपरोक्त बातोंका अर्थ यह नहीं है कि चरखा संघके प्रबंधमें तुरन्त कोअी क्रान्ति कर दी जाय। अुसके भण्डार पहलेकी तरह रहेंगे। परन्तु अिसका अर्थ विचार जगतमें क्रान्ति अवश्य है। खादी कार्यकर्ताओंमें अुत्तम विचारक अपनी सारी शक्ति ग्रामीण खादी तैयार करने पर लगायेंगे। वे अिस बातका ध्यान रखेंगे कि अुसका रंग रूप और टिकाअूपन ग्रामीणोंकी रुचिके अनुकूल हो। अिस प्रकार अेक तरफ ओटनेवाला धुननेवाला कातनेवाला तथा बुननेवालोंके बीच और दूसरी तरफ खादी-कार्यकर्ताओंके बीच अधिक अच्छा और सच्चा प्रेम-संबंध रखना होगा। नगरोंमें बिक्री बढ़ानेकी हाय हाय नहीं रहेगी। अिस बिक्रीका नियमन शहरी लोगोंकी माग और खादीप्रेमियोंके प्रचार कार्यके अनुसार किया जायगा। ये लोग सीधे ग्रामीणोंके पास नहीं पहुँचेंगे या नहीं पहुँच सकेंगे। मगर वे अुस समय तक सन्तुष्ट नहीं होंगे जब तक गरीब किसानों और जुलाहोंके खातिर कुछ खादी बच नहीं लेंगे। यह याद रहे कि खादी स्थायी तभी हो सकती है जब वह स्थायी रूपमें देहातियोंके पहनावेकी वस्तु बन जायगी।

हरिजन २७–४–३४

भाव

जीवन रुपयेसे बड़ी चीज है। अपने बूढ़े माता पिताको मार डालना सस्ता है क्योंकि वे कोअी काम नहीं कर सकते और हमारे अल्पसाधनों पर अेक भार होते हैं। हमारे बच्चोंको मार डालना और भी सस्ता है क्योंकि हमें अपने भौतिक आरामके लिअे अनकी जरूरत नहीं और अुनसे बदलेमें कुछ भी प्राप्त हुअे बिना हमें अुनका पालन-पोषण करना पड़ता है। परन्तु न हम माता पिताको मार डालते हैं और न बच्चोंको बल्कि अुनका पालन-पोषण करना अपना सौभाग्य समझते हैं भले ही अुस पर कुछ भी खर्च करना पड़े। अिसी तरह हमें और सब कपड़का छोड़कर खादीका पोषण करना चाहिये। खादीका विचार भावोंकी दृष्टिसे हम केवल आदतके कारण ही करते हैं। हम खादीके अर्थशास्त्रके बारेमें अपनी कल्पना बदल देनी चाहिये। और जब हम अुसका अध्ययन राष्ट्र-कल्याणकी दृष्टिसे करेंगे तो हमें पता चलेगा कि खादी महंगी नहीं पड़ती। अलबत्ता परिवर्तन-कालमें हमें घरेलू अर्थव्यवस्थामें कुछ गड़बड़ बरदाश्त करनी ही होगी।

अिस समय तो हम अेक भारी बाधाके शिकार हैं। कपासका अुत्पादन लंकाशायरके खातिर या कहिये कि देशी मिलोंके खातिर केन्द्रित कर दिया गया है। कपासके भावोंका निर्णय विदेशोंके भावोंसे किया जाता है। जब कपासका अुत्पादन खादीके अर्थशास्त्रकी मांगके अनुसार बंट जायगा तब कपासके भावोंमें अुतार चढ़ाव नहीं होगा और हर सूरतमें भाव आजसे कम रहेंगे। जब लोगोंको राज्यके संरक्षणके कारण या स्वेच्छापूर्ण प्रयत्नके फलस्वरूप केवल खादी ही काममें लेनेकी आदत पड़ जायगी तब वे अुसका विचार रुपयेकी दृष्टिसे नहीं करेंगे। करोड़ों शाकाहारी अपने निरामिष आहारकी कीमतकी तुलना मांसाहारकी कीमतसे कहां करते हैं? अुन्हें मांसाहार मुफ्त भी दिया जाय तो वे भूखों मर जायंगे मगर मांसाहार ग्रहण नहीं करेंगे।

हरिजन १०-१२-'३८

३५

खादी-कार्यकर्ताओंके समक्ष प्रवचन

अपनी खादी-अुत्पत्तिका पुनगठन करते समय आपको यह नहीं भूलना चाहिये कि कुछ बातोंमें खादीका शास्त्र साधारण व्यवसायसे बिल्कुल अुल्टे ढंग पर चलता है। आप जानते हैं कि अडम स्मिथने किस प्रकार अपने 'वेल्थ आफ नेशन्स' नामक ग्रंथमें पहले तो कुछ असे सिद्धांत बताये हैं जिनके अनुसार आर्थिक घटनाक्रम चलता है और बादमें कुछ असी बातें बयान की हैं जो अिसमें गडबड पैदा करती हैं और जिनके कारण आर्थिक नियमोंको पूरी तरह अपना काम करनेका मौका नहीं मिलता। अिनमें से मुख्य है मानव तत्त्व। यही मानव तत्त्व है जिस पर खादीके समूचे अर्थशास्त्रका दारमदार है और मानवकी स्वार्थपरायणता जिसे अडम स्मिथ शुद्ध आर्थिक हेतु कहता है वह गडबड पैदा करनेवाला तत्त्व है जिस पर हमें काबू पाना होगा। अिसलिअे जो बात मिलके कपडेके अुत्पादन पर लागू होती है वह खादी पर लागू नहीं होती। व्यावसायिक अुत्पादनमें घटिया माल बनाना मिलावट करना और मानवकी हीन रुचियोंको सन्तुष्ट करना वगैरा आम बातें हैं खादीमें अिनके लिये स्थान नहीं है और न खादीमें अधिकसे अधिक मुनाफा और कमसे कम मजदूरीके सिद्धांतकी गुंजाअिश है। अिसके विपरीत खादीमें खालिस लाभ जैसी कोअी वस्तु नहीं है। और घाटा तो होना ही नहीं चाहिये। घाटा है जरूर लेकिन अिसीलिअे कि हम कार्यकर्ता अभी तक अयोग्य और नौसिखुअे हैं। खादीमें जो दाम वसूल किये जाते हैं वे मूल अुत्पादकों अर्थात कत्तिनोंको वापस मिल जाते हैं और दूसरे लोगोंको अपनी मजदूरीसे अधिक कुछ नहीं मिलता।

अब समान स्तर (स्टैण्डर्ड) कायम करनेका सवाल लें। खादीमें अुसे जारी नहीं किया जा सकता। जैसा राजगोपालाचार्यने अेक बार कहा था अेक गरीब कत्तिन हमेशा अेक ही तरहका सूत नहीं कात

सकती। वह कोओ यंत्र नहीं है। आज अुसकी तबीयत अच्छी न हो कल अुसका बच्चा बीमार पड़ जाय तो अुसका मन अुद्विग्न हो सकता है। अगर आपमें गरीब कत्तिन या असके बच्चेके प्रति प्रेम हो तो आप यह आग्रह नहीं रखेंगे कि अुसका धागा हमेशा चिकना और अकसा हो बल्कि जो वह दे देगी असीसे संतोष कर लेंगे। शर्त यही है कि अपनी स्थितिके अनुसार वह यथाशक्ति अच्छा सूत काते। अुसके हाथका पवित्र स्पर्श खादीको वह जीवन और अितिहास देता है जो यंत्रसे निकला हुआ सूत कभी नहीं दे सकता। यंत्रके बने पदार्थमें जो कला है वह सिर्फ आंखको भाती है खादीकी कला पहले हृदयको और बादमें आंखको भाती है। अिसलिअ मैं मांड निकलवाकर खादीकी धुलाअी करवाना नापसन्द करता हूं। अुससे अुत्पादनका खर्च बढ़ता है कपड़ेके टिकाअूपनमें फर्क आता है और धोखेबाजीका पता लगाना और भी मुश्किल हो जाता है। हमें लोकरुचिको अनुचित संतोष नहीं देना चाहिये परन्तु अेक नअी रुचिके निर्माणका प्रयत्न करना चाहिये। साधारण क्रममें कुछ धुलाअियोंसे खादी बिल्कुल सफेद निकल आयगी और असमें वह मुलायमी आ जायगी जो शर्मिंगसे नष्ट हो जाती है। हम सबको अनावश्यक खर्च कम करनेके लिअे भरसक प्रयत्न करना चाहिये।

कत्तिनोंका विचार-परिवर्तन

अिसलिअ खादीको हम अगर व्यवसायकी वस्तु नहीं बल्कि करोड़ों अधभूखोंके सहारेके लिअ जरूरी चीज मानते हों तो हमें कत्तिनोंके घरोंमें प्रवेश करके अन्हें अपने ही सूतकी बनी खादी पहननेको राजी करना चाहिये। अिससे अुत्पादनका खर्च अवश्य घट जायगा और बटवारा अपने आप होने लगेगा। अब तक हमने सिर्फ शहरी लोगोंके लिअ खादी तैयार करनेकी कोशिश की है। तुच्छ प्रारंभसे खादीका अुत्पादन बअी लाख वार्षिक तक बढ़ गया है। हमने प्रचार भी बहुतसे किया है। परन्तु अब मुझे अिससे संतोष नहीं होता। खादीकी कल्पना बहुत बड़े महत्त्वाकांक्षी हेतुसे की गअी थी। वह हेतु यह था कि हमारे

देहातमें कभी भुखमरी न आने पावे। यह तब तक असंभव है जब तक हमारे देहाती लोग शुद्ध खादी न पहनने लगें और शहरोंको सिर्फ फालतू खादी न भेजें। खादीका विशेष रहस्य अिस बातमें है कि वह अपने अुत्पादनके स्थानमें बची जा सकती है और अुसे तैयार करने वाले खुद अुसे काममें ले सकते हैं।

व्यवस्था खर्च

मेरी दृष्टिसे हमारा मौजूदा व्यवस्था खर्च बहुत ज्यादा है। अगर हम अपना ध्यान खादीके मुख्य हेतु पर केन्द्रित करें तो यह खर्च बहुत कम हो जायगा। खादीके भाव कम करनेके नियम पूरी तरह नहीं तो अनंत अुन नियमोंसे भिन्न हैं जो मुख्यतः लाभके लिअ तैयार किये जानेवाले निरे व्यावसायिक पदार्थों पर लागू होते हैं। खादीमें औजारोंके सुधारकी मर्यादा होती है। परन्तु मानव बुद्धि और ग्रामीण दस्तकारी सुधारकी कोअी मर्यादा नहीं होती। अगर हम अिन दोमें सफलताकी आशा छोड़ दें तो हमें खादीकी ही आशा छोड़ देनी चाहिये। अिसलिअ खादीमें जहां तक संगठनके व्यवस्थित सत्यान्तम रुकावट नहीं होती वहां तक हम बीचके लोगोंको हटाकर खर्च घटाते हैं। और जब खादी स्वावलम्बी और अपने आप काम करनेवाली प्रवृत्ति बन जायगी तब तो संगठनकी भी ज़रूरत नहीं रहेगी।

खादीशास्त्र अभी तक शैशव अवस्थामें है। अुसका विकास हो रहा है। अिसमें जो भी नअी खोज मैं करता हूं अुससे मुझे और भी अच्छी तरह यह अनुभव होता है कि जिस शास्त्रका मुझे कितना थोड़ा ज्ञान है।

हरिजन २१–९–३४

३६

खादीशास्त्र क्या है?

मैंने अकसर यह कहा है कि अगर खादी अेक सही आर्थिक योजना है, तो वह शास्त्र भी है और काव्य भी है। हरअेक चीज शास्त्र और काव्य बनाओी जा सकती है, यदि असके पीछे शास्त्र अथवा काव्यकी दृष्टि हो। कुछ लोग खादीकी खिल्ली अुड़ाते हैं और जब कोअी हाथ कताओीकी बात करता है तब अधीरता या अरुचि प्रगट करते हैं। लेकिन ज्यों ही आप यह कहते हैं कि असमें भारतव्यापी आलस्य, बेकारी और अससे पैदा होनेवाली दरिद्रताको दूर करनेकी शक्ति है, वह अरुचि या हंसीकी वस्तु नहीं रह जाती। वास्तवमें यह जरूरी नहीं कि वह अिस त्रिविध दुःखको दूर करनेवाला अिलाज हो ही। अुसे रसमय बनानेके लिअे अीमानदारीसे अितना मान लेना काफी है कि अुसमें यह शक्ति है। लेकिन यदि हम यह मान लें कि खादीमें वह शक्ति है, तो फिर अिस कामको हम अुस तरह नहीं कर सकते जिस तरह अनाड़ी और गैरअकलमन्द कारीगर करते हैं। वे ओटाओी, पिंजाओी, कताओी या बुनाओी अिसलिअे करते हैं कि पेट अैसा करनेको अुन्हें मजबूर करता है। परन्तु अुसकी शक्तिमें विश्वास रखनेवाला अुसे सोच समझकर बुद्धिमानीसे और व्यवस्थित ढंग पर तथा शास्त्रीय भावनासे अपनायेगा। वह किसी चीजको मानकर नहीं चलेगा, हर बातकी परीक्षा करेगा, तथ्यों और आंकड़ोंकी जांच करेगा, हारसे घबरायेगा नहीं, छोटी छोटी सफलताओंसे फूलकर कुप्पा नहीं होगा और जब तक लक्ष्यकी पूर्ति नहीं हो जायगी कभी सन्तुष्ट नहीं होगा।

शास्त्र तभी शास्त्र है जब वह शरीर, मन और आत्माकी भूखको मिटानेका पूरा मौका दे। शंकाशील लोगोंको आश्चर्य होता है कि

खादीसे असा सतोष कस मिल सकता है या दूसरे शब्दोंमें, जब म खादीशास्त्र शब्दका प्रयोग करता हू तो मेरा क्या मतलब होता है? अिस प्रश्नका सबसे अच्छा अुत्तर म नीचे अन प्रश्नोंकी नकल करके ही दे सकता हू जो मन अक खादी कार्यकर्ताके लिअे जल्दी जल्दीमें बनाये थ। अुसने कहा था कि म अुसकी परीक्षा लू। प्रश्न न तो तार्किक क्रमसे तयार किये गये थ और न अुनमें सारी बातें ही आ गअी थी। अुन्हें फिरसे क्रमबद्ध किया जा सकता है और अुनमें वृद्धिकी गुजाअिश भी है।

पहला भाग

१ भारतमें कपास कितनी और कहा पैदा होती है? अुसकी किस्मोंके नाम बताओ। असमें से भारतमें कितनी रह जाती ह हाथसे कितनी कानी जाती है कितनी अिग्लण्ड और दूसरे देशोंको चली जाती है?

२ (क) भारतीय मिलोंमें कितना कपडा तयार होता है? अुसमें स भारतमें कितना काम आता है और कितना बाहर भेजा जाता है?

(ख) अुपरोक्त कपडेमें स कितना स्वदेशी मिलोंके सूतसे तयार किया जाता है और कितना विदेशी मिलोंके सूतसे?

(ग) बाहरसे कितना कपडा मगाया जाता है?

(घ) भारतमें कितनी खादी अुत्पन्न होती है?

टिप्पणी अपने अुत्तर वजनमें और रुपयोंमें दो।

३ अुपरोक्त तीनों प्रकारके कपडेके गुण-दोषोंकी चर्चा करो।

४ कुछ लोग कहते ह कि खादी महगी पडती है मोटी होती है और टिकाअू नही होती। अिन शिकायतोंका जवाब दो और जहा किसी शिकायतका आधार हो वहा अुसका हल बताओ।

५ (चरखा सघके) खादीकार्यमें कितनी तरक्की हुआी ह? अिन तमाम वर्षोंमें कुटुम्बोंने कितनी कमायी की है? मिलोंमें कातने वालोंकी सख्या और अुनकी कुल सालाना कमाअी बताओ।

पिछले लेखमें मैंने यह समझानेका प्रयत्न किया है कि खादी शास्त्रमें क्या क्या बातें आ जानी चाहिये। मेरी रायमें चरखा संघके किसी भी अुत्पत्ति केन्द्रमें काम करनेवाले प्रत्येक खादी-कार्यकर्ताके लिअ लाजिमी होना चाहिये कि वह अिस शास्त्रकी प्रारंभिक बातोंको जाने। श्री लक्ष्मीदास खादीप्रेमी है और खादीशास्त्रके अेक अत्यन्त सावधान विद्यार्थी है। परन्तु मैं अुन्हें भी अिस शास्त्रका आचार्य नहीं कहूंगा। अुन्होंने नवम्बर १९३६ में मुझे अेक पत्र लिखा था। अुसमें अुन्होंने प्रत्येक खादी-कार्यकर्ताकी न्यूनतम परीक्षाकी शर्तें बताओ थी। वह कसौटी नीचे दी जाती है

१ कार्यकर्ताको बढ़िया और घटिया दर्जेकी कपास बिनौले और रूओकी पहचान होनी चाहिये।

२ असे हाथ-ओटनीकी मरम्मत करना और अुनमें आवश्यक सुधार करके अुस लाटके साथ बाकायदा बिठाना आना चाहिये। अुनकी लकड़ीकी गालाओंमें असमानता हो या वह कहीं टेढ़ी हो गयी हो तो वह अुसे सुधारेगा और अुसकी जगह ठीक बिठा देगा।

३ असे धुनकी सजाना तथा तांत और चाकर बनाना आना चाहिये।

४ अुसमें हाथ-ओटनी पर चार घंटे तक काम करने और पांच पौंड फी घंटा ओटाओकी गति दिखानेका सामर्थ्य होना चाहिये।

५ अुसकी धुनाओकी गति दस तोला प्रति घंटेकी होनी चाहिये। अिसमें पूनियां बनानेका समय शामिल नहीं होगा।

६ अुसे हर किस्मके चरखेकी बनावट मालूम होनी चाहिये और अुसके अलग अलग हिस्सोंको जोड़ना भी आना चाहिये। तकुआ टेढ़ा हो जाय तो अुसे सीधा करना और माल व दामण (ओतर) बनाना भी आना चाहिये।

७ अुसमें चार घंटेकी परीक्षामें २० नम्बरका ३०० तार (४०० गज) सूत कातनेकी गति कायम रखनेकी क्षमता होना चाहिये। जिसका कस ८० प्रतिशत और समानता ९५ प्रतिशत होना चाहिये।

८ अुसे कताअीकी आम्र क्रिया आनी चाहिये और दो घंटेकी परीक्षामें ७० से ८० नंबरका ८० प्रतिशत कस और ९५ प्रतिशत समानतावाला २०० तार सूत कात सकना चाहिये।

९ अुसे खड़ी करघा और फटका करघा दोनोंकी बनावट मालूम होना चाहिये और राछ वही कंघी तथा कूंच बनाता आना चाहिये।

१० अुसमें ५० अिंच अर्जकी खादी २० नंबरके सूतम फन्का करघे पर बुननेकी क्षमता होनी चाहिये और साड़ियोंकी कमसे कम पांच अलग अलग तरहकी किनारियां डालनेके लिअे आवश्यक सारी क्रियायें करनेकी क्षमता होनी चाहिये।

११ बुनाअीकी गति अेक घंटेमें २० नंबरके सूतका अेक गज कपड़ा बुननेकी हो जानी चाहिये।

१२ अुसे अलग अलग प्रकारकी कपास अुगानेके बारेमें सब जानकारी होनी चाहिये और अुसमें हाथ-चरखे, धुनकी तथा चरखा करघा और अुनके भिन्न भिन्न भाग स्थानीय सामग्रीसे अपने ही गांव या गांवमें तैयार करा लेनेकी योग्यता होनी चाहिये। अिसके लिअे नीचे लिखी बातोंकी जानकारी जरूरी होगी

(क) कपास भिन्न भिन्न भागोंमें क्या कहां कितना होती है और किस कामका अुपयोग होता है तथा जमीन कैसी है।

(ख) भिन्न भिन्न प्रकारकी लकड़ी और लकड़ीके माप-तौलका हिसाब किताब।

(ग) अुपरोक्त आवश्यकताओंके लिअे रेखाचित्र खींचनेका काम चलाअू ज्ञान।

१३ भिन्न भिन्न यंत्रोंकी मरम्मतके लिअे बढ़ईगिरीका काफी ज्ञान।

अिस परीक्षामें अुत्तीर्ण होना बिलकुल आसान नहीं है। लेकिन काफी लगन और परिश्रमशीलता हो तो अच्छी शिक्षा पाया हुआ कोअी भी व्यक्ति थोड़ी उम्मीदामका परीक्षामें पास हो सकता है। फिर

भी अिसमें खादीशास्त्रके व्यावसायिक पहलू नहीं आते। वे मेरे तैयार किये हुओ प्रश्नोंमें आते हैं। श्री लक्ष्मीदासके तैयार किये हुओ पाठ्यक्रममें कारीगरीवाला पहलू आता है। अिन दोनों क्षेत्रोंमें प्रवीण होकर ही कोअी खादीशास्त्रके मूल तत्त्वोंका ज्ञाता कहला सकता है।

हरिजन १३-२-३७

जो व्यक्ति किसी विषयका अुस्ताद बनना चाहता है अुसके लिअे पहली जरूरी बात यह है कि अुस विषयमें अुसकी सजीव श्रद्धा हो। अिसके बाद अुसमें सीखनेकी अुत्सुकता और अुसके खातिर जरूरी त्याग करनेकी तैयारी होनी चाहिये। बेशक पुस्तकें, शिक्षा और शिक्षाकी दूसरी सामग्री थोड़ी-बहुत मात्रामें जरूरी है, परन्तु ज्ञानकी पिपासा और जिज्ञासा सबसे अधिक आवश्यक है। ये बातें हों तो और सब बातें अपने आप आ जाती हैं। अिसलिअे खादीशास्त्र सीखनेकी अिच्छा रखनेवाले अिन विद्यार्थियोंको मेरा सुझाव है कि वे तुरन्त ही अिस बातका पता लगायें कि खादी-अुत्पत्तिकी कौन कौनसी प्रक्रिया अुनके नजदीकके पड़ोसमें की जा रही है। और तत्संबंधी सारी अुपयोगी जानकारी जो वहां अुपलब्ध हो, संग्रह कर लें। आजकल खादीशास्त्रके विद्यार्थीके सामने जो मुख्य काम है वह व्यक्तिगत अनुभवके संग्रह और सामंजस्यका है। अिस समय देशके भिन्न भिन्न भागोंमें खादी अुत्पादन संबंधी अनेक भिन्न भिन्न प्रक्रियाअें प्रचलित हैं, परन्तु अेक भी आदमी असा नहीं है जो अुन सबको पूरी तरह जानता हो। फिर भी खादी-शास्त्रके विकासके लिअे अिन तमाम अलग अलग प्रक्रियाओंका सम्पूर्ण और ब्यौरेवार ज्ञान आवश्यक है। जाहिर है कि यह काम किसी अेक व्यक्तिके बूतेका नहीं है। परन्तु यदि कुछ व्यक्ति असे हों जिनमें खोजकी वैज्ञानिक भावना सचमुच तीव्र हो और जो व्यवस्थित ढंगसे अिस काममें जुट जायं तो वे अपनी बुद्धि और अनुभवकी अिकट्ठी शक्तिसे थोड़े ही समयमें अेक सजीव और विकासशील खादीशास्त्र तैयार कर लेंगे। परन्तु यह तभी हो सकेगा जब वे देशमें अिस समय प्रचलित खादी-अुत्पत्तिकी तमाम प्रक्रियाओंमें सामूहिक प्रवीणता प्राप्त कर लेंगे।

अेक ठोस अुदाहरण लीजिये। जिस समय आपके अलग अलग भागोंमें कभी तरहकी खादी तयार होती है जिसमें धुननेके अलग अलग तरीके काममें लाये जाते हैं। अब आपका कोअी खादी-कार्यकर्ता जो खादीशास्त्रको जाननेके लिअे अुत्सुक है अिन तमाम भिन्न भिन्न तरीकोंका अुस्ताद बनकर काम शुरू कर सकता है। अिसके लिअे अुसे अपना प्रान्त छोड़नेकी जरूरत नहीं है। आरम्भके तौर पर वह अुस प्रक्रियाको ले जो अुसके नजदीकके पड़ोसमें प्रचलित है। कपास धुनाअीके वैज्ञानिक अध्ययनमें विद्यार्थीके लिअे धुनकी बनानेका ज्ञान शामिल होगा। साथ ही अुसे अुस सामग्रीकी जानकारीकी भी जरूरत होगी, जिससे तांतका तार और धुनकीके दूसरे अंग बनाये जाते हैं। अुसे यह भी जानना चाहिये कि अुत्तम परिणाम लानेके लिअे धुनकीकी ठीक लंबाअी कितनी होनी चाहिये और आदर्श लंबाअी न होनेसे क्या नतीजा होता है; धुनकीकी तांत पर चोट ठीक किस तरह पड़नी चाहिये और क्यों पड़नी चाहिये। अिसी प्रकार बहुतसे दूसरे सवाल हैं जिनके बारेमें हमारे अच्छेसे अच्छे पेशेवर पिंजारे आजकल बहुत कम जानते हैं और अुससे भी कम ध्यान देते हैं। अिसी प्रकार रुअीके बारेमें जो कार्यकर्ता धुनाअीका अेक शास्त्रके रूपमें अध्ययन आरम्भ करता है, अुसे भिन्न भिन्न प्रकारकी रुअीके बारेमें सब बातें जाननेकी आवश्यकता होगी। अुसके रेशोंकी लंबाअी, कस और बारीकी; अुसके हाथोंमें पहुंचनेसे पहले किन अलग अलग प्रक्रियाओंमें होकर अुसे गुजरना पड़ता है; वह कहां अुगाअी जाती है; प्रति अेकड़ अुसकी कितनी पैदावार है; और फसलका रुपयेके रूपमें कुल मूल्य कितना है; रुअीका काश्तका क्षेत्र कितना लंबाचौड़ा है; पहले वहां कौनसी फसल होती थी जिसका स्थान कपासने ले लिया है; अथवा क्या पहले वह प्रदेश बंजर था; कपासके स्थान पर और कोअी फसल अुगाअी जाय तो किसानके लिअे अुससे क्या फर्क पड़ेगा; अित्यादि अित्यादि। अिस प्रकार अुसके व्यावहारिक अनुभवमें शास्त्रीय ज्ञानका पुट लग जायगा और अुसका अपने विषय पर अितना मजबूत काबू हो जायगा और अुसके पड़ोसियोंमें अुसका अितना प्रभाव हो जायगा कि आपके भिन्न भिन्न भागोंमें प्रचलित

पिंजाओकी दूसरी प्रक्रियाओंमें प्रवीण होना अुसके लिअे काफी आसान बात हो जायगी और अुसमें थोड़ासा ही समय लगेगा। अिसके अलावा यदि वह अपने प्रयोगों और अनुभवोंकी नियमित नोंध रखेगा तो समय पाकर अुसकी ये टिप्पणियां पिंजाओी शास्त्र पर अेक अधिकृत पुस्तिकाका स्थान ले लेंगी।

अिस प्रकार यह समझमें आ जायगा कि किसी भी खादी-कार्यकर्ताको खादी-शास्त्र सीखनेकी खातिर अपना कार्यक्षेत्र छोड़नेकी जरूरत नहीं। अगर अुसमें जिज्ञासाकी वृत्ति प्रज्वलित है और अेकनिष्ठ परिश्रमकी शक्ति और धीरज काफी मात्रामें है, तो वह अुन प्रक्रियाओंका जितने लिअे अुसके पड़ोसमें विशेष सुविधायें प्राप्त हों गहरा अध्ययन करनेमें जुट जायगा और न सिर्फ अुन विशेष प्रक्रियाओंमें ही विशेषज्ञ बन जायगा, बल्कि धीरे धीरे अपने ज्ञानका अैसा और अितना विस्तार करेगा कि वह शास्त्री नामका पात्र हो जायगा।

हरिजन १०-४-३७

३७

यथार्थताकी जरूरत

अेक भाअीने अखबारकी अेक कतरन भेजी है, जिसमें खादीकी प्रशंसामें अेक विज्ञापन छपा है। अुसमेंसे मैं नीचे लिखे प्रसंगोचित अंश अुद्धृत करता हूं:

> विलायती कपड़े पर खर्च किये गये अेक रुपयेका अर्थ यह होता है कि डेढ़ आना तो भारतीयोंको मिलता है और साढ़े चौदह आने सीधे विदेशी व्यापारकी वृद्धिमें जाते हैं।
>
> मिलके कपड़े पर खर्च होनेवाले अेक रुपयेका यह अर्थ है कि आधी रकम तो मिल-मालिकोंको मिलती है, छह आने मजदूरोंको मिलते हैं और दो आने विदेशियोंके जेबमें जाते हैं।

खादी पर खर्च होनेवाले अेक रुपयेका मतलब यह है कि व्यवस्था-खर्चके अेक आनेके सिवा बाकी सारी रकम केवल अुत्पादकको मिलती है।

पत्रप्रेषक पूछते हैं कि क्या यह सच है कि खादीमें लगाये गये प्रत्येक रुपयेमें से पन्द्रह आने अुत्पादकोंके पास जाते हैं और सिर्फ अेक आना विक्रेताओंको मिलता है। मैं यही अुत्तर दे सकता हूं कि चरखा संघके भंडारोंके व्यवस्थापकोंके सामने आदर्श यह रखा गया है कि भावोंका नियमन अिस प्रकार किया जाय कि अुत्पत्ति-केन्द्रसे प्राप्त होनेवाली हर पन्द्रह आनेकी खादी पर कुल बिक्रीकी दृष्टिसे अेक आनेकी बचत रहे, ताकि सारा खर्च वसूल हो जाय। अिसलिअे अिन पन्द्रह आनोंमें भाड़ा आदि दूसरे कअी खर्च शामिल होंगे। अिसलिअे यह कहना बिलकुल गलत है कि खादीमें लगाये गये प्रत्येक रुपयेमें से पन्द्रह आने अुत्पादकको मिलते हैं।

बुनकरोंके हाथसे निकलनेके बाद खादी कअी प्रक्रियाओंसे गुजरती है, जैसे धुलाअी, रंगाअी, अिस्तरी, बोधके भंडारोंमें जमा किया जाना आदि। अगर अुत्पादक शब्द सिर्फ अुगानेवाले, बीननेवाले, ओटनेवाले, पीजनेवाले, पूनिया बनानेवाले, कातनेवाले, परेतनेवाले, ताना बाना करनेवाले, मांड लगानेवाले और बुननेवाले तक सीमित रखा जाय और बुनाअीके बादकी प्रक्रियाअें करनेवाले मजदूर अुसमें शामिल न किये जायं तो शायद अुत्पादकको रुपयेमें आठ आनेसे अधिक नहीं मिलता। आम तौर पर दूसरी प्रक्रियाओंको शामिल नहीं किया जाता और यह ठीक ही है क्योंकि खादीके अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअे वे जरूरी नहीं हैं। और संभव है जिन्हें सचमुच ग्रामीण या मजदूर कहा जा सकता है अुनके द्वारा वे प्रक्रियाअें होती हों या न भी होती हों। धुलाअी रंगाअी वगैरा अक्सर संगठित अर्थात् पूंजीवादी संस्थाओं द्वारा की जाती हैं। अब वे सब लोग जो खादीका मूल्य बढ़ानेमें सहायक होते हैं अुत्पादकके साथ मजदूरी बांटते नहीं हैं। दूसरे शब्दोंमें वे अुत्पादकके मुंहका कौर छीनते नहीं बल्कि अुसे अपने मालके लिअे मंडी जुटानेमें मदद देते हैं और यह वे पूंजीवादी होते हुअे भी करते हैं। कारण

लेना चाहिये। परन्तु मुख्य डर यह है कि भावोंके मामलेमें काफी गौर नहीं की गयी है। आम लोग यह सवाल पूछते हैं खादी मिल्के कपड़ेसे महंगी क्यों है? जिस प्रश्नका संतोषजनक अुत्तर देना पड़ेगा। जो अुत्तर प्रगट हैं अुन्हें मैं संतोषजनक नहीं मानूंगा। अुन अुत्तरोंकी पूरी जांच-पड़ताल करनी पड़ेगी और कठिनाअियोंका पता लगाकर अुन पर काबू पाना पड़ेगा और यह प्रयत्न तब तक जारी रखना होगा जब तक कि खादी अपने स्वाभाविक वयस्कको प्राप्त न कर ले।

यह शर्मकी बात है कि हम अपनी जरूरतसे ज्यादा रुओी पैदा तो करते हैं लेकिन हमें अुसका कपड़ा बनानेके लिअे अुसे बाहर भेजनेकी जरूरत होती है। अुतनी ही शर्मकी बात हमारे लिअे यह है कि हमारे पास देहातोंमें बेशुमार बेकार मजदूर मौजूद हैं और हम माल बनानेके देहाती औजार आसानीसे प्राप्त हो सकते हैं फिर भी हम अपनी रुओी अपने कामका कपड़ा तैयार करानेके लिअे अपने शहरोंकी मिलोंमें भेजते हैं। हमें अिस लज्जाका अितिहास मालूम है। परन्तु हम अभी तक पता नहीं लगा पाये हैं कि जनतासे देशभक्तिकी अपीलें करनेके आगे अिस दोहरी शर्मको मिटानेका अचूक अुपाय क्या है। जनताने अुत्साहवर्धक अुत्तर दिया है। परन्तु जब तक खादी सार्वत्रिक पहनावेकी चीज न बन जाय तब तक हम संतुष्ट नहीं हो सकते। हो सकता है कि अपनी खोजके दौरानमें हमें यह पता चले जैसा कि कुछ लोगोंका कहना है कि खादी कभी आर्थिक दृष्टिसे सफल नहीं हो सकेगी। तब हमें यह स्वीकार कर लेनेमें कोअी संकोच नहीं होना चाहिये चाहे अिसमें हमारे अहंकारको कितनी ही ठेस पहुंचे और हमने जो दावे अब तक अितने विश्वासके साथ किये हैं वे गलत साबित हो जायं। परन्तु यह बात हम तब तक स्वीकार नहीं कर सकते जब तक कि हम मानव प्राणीके लिअे संभव सारी खोज करके मेरे द्वारा प्रतिपादित प्रश्नोंका असंदिग्ध अुत्तर प्राप्त न कर लें।

हरिजन २६-८-३९

३९

अिसका अर्थ क्या है?

अक देश जिसकी संस्कृतिका आधार अहिंसा पर है यह जरूरी समझेगा कि असका प्रत्येक घर अधिकसे अधिक स्वावलम्बी हो। किसी समय भारतीय समाजकी अनजाने ही अहिंसक आधार पर रचना हुअी थी। घरेलू जीवन अर्थात् देहाती जीवनको जंगली लोगोंकी टोलियोंके समय समय पर होनेवाले आक्रमणोंकी बाधा नहीं सताती थी। मैंने बताया है कि भारतवर्षके देहात गणतंत्रोंके समूह थे। अनमें सामान्य जनतासे बड़ा माना जानेवाला कोअी भद्र वर्ग या तो था ही नहीं या सभी भद्र माने जाते थे।

मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि हमारी अहिंसाकी कमी हमारे खादी कार्यक्रमकी कमीसे नापी जा सकती है। दोनोंमें ही हमारा विश्वास अधूरा रहा है। मैं चाहता हूं कि दोनोंमें हम पूरे मनसे विश्वास करें।

अिस पृष्ठभूमिको ध्यानमें रखकर कांग्रेसजन आगे (पृ० ११२) दिये हुअे नक्शेका सावधानीके साथ अध्ययन करें। यह श्री कृष्णदास गांधीका बनाया हुआ है, जो अन थोड़ेसे खादी विशेषज्ञोंमें से हैं जिन्होंने खादीके सब पहलुओंका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है।

खादीके आंकड़े
प्रति वगगज

नंबर	तार प्रति अिंच	वगगज कपड़ा प्रति सौ गज सूत	वगगज कपड़ा ३६ दिन के लिअ सौ गज सूत रोजके हिसाबसे	सूत गज	सूत गुंडी	वजन तोलोंमें	लागत रुई	लागत पिंजाई	लागत कताई	लागत बुनाई	कोरा कपड़ा	अपना काता कपड़ा	अपना काता अपना पींजा कपड़ा
							आ पा	आ पा	आ पा	आ पा	आ पा	आ पा	आ पा
१०	३८	१/३०	१२	३०४०	३ ५/१६	१४ १/४	१–१० १/२	०–८ १/२	२–६	१–५	६–६	४–०	३–३ १/२
१२	४	१/३२	११ १/४	३२ ०	३ ३/४	१२ १/२	१–६ ३/४	०–७ १/२	२–१०	१–६	६–६ १/४	३–८ १/४	३–० ३/४
१४	४२	१/३४	१० १/२	३३६०	३ ११/१६	११ १/४	१–५	०–६ ३/४	३–१	१–६ १/२	६–७ १/४	३–६ १/४	२–११ १/२
१६	४५	१/३६	१०	३६ ०	४ १/४	१ ५/८	१–४	–६	३–५ १/२	१–८	६–११ १/२	३–६	३–०
२	५	१/४	९	४० ०	४ ११/१६	९ ३/४	*१–५	–८ १/२	३–९ १/२	१–१	७–९	३–११ १/२	३–३

*यह हिसाब अूंच दर्जेकी रुअी पर लगाया गया है।

(नक्शेके साथका नोट अगले पृष्ठ पर देखें।)

नोट १ चूंकि सामान्य आवश्यकतायें ८ से २० नंबरवाले सूतसे पूरी हो जाती हैं, अिसलिये हमारे नीचे लिखे हिसाबके लिअे अुस बीचका अर्थात् १२ नंबरका मान लिया गया है।

२ यथार्थ कात गये सूतसे बने हुअे प्रत्येक गज कपड़े पर ३ आने ८$\frac{१}{३}$ पाअी खर्च आयगा।

३ यह सूत १०० गज रोजके हिसाबसे ११$\frac{१}{४}$ वर्गगज कपड़ा प्रतिवर्ष पैदा करेगा, अर्थात् १५ वर्गगजके हिसाबसे आदमीकी तीन चौथाअी आवश्यकता पूरी हो जायगी।

४ बच्चों, बीमारों और दूसरे असमर्थ व्यक्तियोंको छोड़कर स्वस्थ कातनेवालोंकी संख्या सारी आबादीकी ४० प्रतिशत मानी जा सकती है। (अवश्य ही यह अंदाजा कंजूसीसे लगाया गया है। सही आंकड़ा ४० प्रतिशतकी अपेक्षा ६० प्रतिशतके अधिक निकट होगा।) अिसलिअे $\frac{२}{५}\times\frac{३}{४}=\frac{३}{१०}$ या सारी जरूरतके कपड़का लगभग तीसरा भाग अपनी कताअीसे तैयार होगा और बाकी दो तिहाअी भाग मजदूरीकी कताअीसे पूरा करना होगा। अिस प्रकार अेक वर्गगज खादीकी लागत लगभग ५ आने ८ पाअी होगी।

ये आंकड़े खादीप्रेमियोंके लिअे अध्ययनकी दिलचस्प सामग्री पेश करते हैं। ये कामचलाअू हैं और कृष्णदासके अनुभवके आधार पर निकाले गये हैं। बढ़िया ब्योरेकी रकमोंके लिअे भिन्न आंकड़े होंगे। परन्तु कामचलाअू संकेतके लिअे ये काफी अच्छे हैं। जो सारे नंबरोंका अध्ययन करनेका कष्ट नहीं अुठाना चाहते अुन्हें १४ नंबरको ही देखना चाहिये। वे देखेंगे कि खुद कातनेवालेकी खादीका खर्च ३ आने प्रति वर्गगजसे कम पड़ेगा। मैंने कल्पना की है कि प्रत्येक कार्यकर्ता कमसे कम आध घंटा रोज कातेगा। नौसिखुअेको भी ३० मिनटमें १०० गज सूत आसानीसे कात लेना चाहिये। बहुत लोग अितने समयमें आसानीसे २०० गज सूत कात लेते हैं। मान लीजिये कि स्वयं कातनेवालेको सालभरमें २० गज कपड़की जरूरत होती है, तो अुसे अधिकसे अधिक

अब घटा रोज कातना पड़गा। अिस प्रकार सारी आबादीके पाचवें हिस्सेको २० गज प्रति मनुष्यके हिसाबसे सारे भारतका जरूरी कपड़ा देनके लिअ अधिकसे अधिक ५ घट रोज कातनेकी जरूरत होगी। आजकल का औसत प्रति मनुष्य १५ गज बताया जाता है। अधिक क्षमताके कामसे घट काफी घटाय जा सकते ह। मेरी रायमें खादीके अिस तरह बढ हुअ अस्तित्वमें कमसे कम प्रयत्न और खर्चकी आवश्यकता होती है। अिसका अथ वतमान कालमें जितने बड पैमाने पर कभी कही नहीं हुआ वसा स्वेच्छापूर्ण सहयोग है। अगर वैछित सकल्प हो तो यह योजना पूरी तरह कार्यान्वित होने लायक है।

हरिजन ९-१२-३९

४०

चरखेका सुधार

कताओ-आदोलनके जन्मदाताओंके अिस प्रयत्नमें कोओ विरोधाभास नहीं है कि कोओ असा चरखा या यत्र अपनाया किया जाय जिससे झोपडियोंमें रहनवाल लोग अपनी ही झोपडियोंमें मौजूदा चरखेके बराबर समय देकर भी अधिक मात्रामें या ज्यादा बारीक सूत कात सकें। घरेलू यत्रोके सुधारकी प्रगतिशील पद्धति प्राचीन कालसे चली आओ है। तकलीका स्थान चरखने लिया। स्वय चरखमें धीरे धीरे सुधार हुअ जसा कि हम आज भी भिन्न भिन्न प्रातोंमें काम करनेवाले भिन्न भिन्न पुराने नमूनोंमें देखते ह। जब चरखेका रिवाज बन्द हो गया तब सुधारका सिलसिला अचानक रुक गया। अिसलिअ चरखा सघकी समिति केवल अस मार्गका अनुसरण कर रही है जो अीस्ट अिडिया कपनीके गुमाश्तोंके छलबलसे अचानक बन्द हो गया था। हकीकत यह है कि न तो समितिको और न मुझ यत्रोंके खिलाफ कोओ आपत्ति है। परतु हमारा निवेदन यह अवश्य है कि अुद्योगके यत्रीकरणकी प्रक्रियाको अिस हद

तक न जाना वजा है जिससे गृह अुद्योग मारे जाय और क्षेत्र सकुचित क्षत्रमें सीमित हो जाय दूसरे गब्दोंमें हम भारतकी सस्कृति और ग्रामीण जीवनको हानि पहुचाकर असे शहरी बना देनेके विरुद्ध ह।

यग अिन्डिया २१-११-२९

४१

खादी विद्यार्थी

मुझे आजकल खादी विद्यार्थियोंके बारेमें कुछ लिखनको कहा गया है। मने तो कुछ पहले ही लिख दिया है। मगर अिस बारेमें जितना साफ साफ कहा जाय या जोर दिया जाय अुतना ही थोडा है कि केवल कताअी धुनाअी आदि प्रक्रियाओंकी जानकारी ही सच्ची खादी विद्या नही होती। अुस जिसका यत्रशास्त्र कहा जा सकता है। खादीका भीतरी अथ समझनेके लिअे यह जानना पडेगा कि अुसे हाथसे ही क्या तयार करना पडता है और मशिनस चलनवाले यत्रोंसे क्यों नही। जब अकेला आदमी किसी असे अँजिनको चला सकता है जिससे बहुत थोडे समयमें अुतना ही कपडा तयार किया जा सके तब अिस काममें असख्य हाथ क्या लगाय जाने चाहिये? अगर खादीका हाथसे ही बनाना है तो फिर केवल तकली द्वारा क्यों नहीं? और अगर तकली ही रखनी है तो बांसकी तकली क्यों नही? और अगर हम सूतको पत्थरस लटकाकर काम चला सकते हों तो फिर तकलीकी भी क्या जरूरत? असे प्रश्न बिल्कुल स्वाभाविक ह। अिन सबके अुचित अुत्तर खोजना खादीकी खोजका जरूरी भाग है। म यहा अिन प्रश्नोंकी चर्चा नहीं करना चाहता। म अितना ही कहना चाहता हू कि खादीका सच्चा ज्ञान यात्रिक प्रक्रियाओंसे बहुत आगे जाता है और धयपूर्ण अनुसधान चाहता है। आज हमारे पास अिस प्रकारका ज्ञान देनके साधन नही ह। अिसलिअे शिक्षा देते हुअे

दानोंके बिना काम नहीं चल सकता — दोनों अपनी अपनी जगह अपयोगी हैं।

जब मुझे पहले-पहल चरखेका पता लगा तो केवल अन्तःप्रेरणासे ही लगा था। असके पीछे ज्ञान नहीं था। यहां तक कि मैं चरखे और करघेको अेक ही चीज समझता था। लेकिन बादमें मैंने स्वर्गीय मगनलाल गांधीको मदद करने तथा असकी सम्भावनाओंका हिसाब लगानेकी कोशिश की। अुदाहरणार्थ यह सवाल अुठा कि तकुआ लोहेका क्या बनाना चाहिये या पीतलका क्या नहीं? वह पतला होना चाहिये या मोटा? असकी ठाव मोटाई क्या होगी? हमने प्रारम्भ मिलके तकुवोंसे किया। अस समय तकुवोंका चमरख घास और लकडीकी होती थी। बादमें हम चमडे और तागेकी चमरख पर आये। पता लगा कि तकुवे आसानीसे मुड जाते हैं और अन्हें सीधा करना कठिन होता है। अिसलिअे हमने बुननेकी सलाअियोंसे तकुवे तैयार किये और अन्तमें छतरीकी ताडियोंके तकुवे बनाये। अिन सब कामोंमें आविष्कारशक्ति और शास्त्रीय खोजके प्रयोगकी जरूरत मालूम हुई थी।

शास्त्रीय मानसवाला खादी-कार्यकर्ता यहीं नहीं रुक जायगा। वह अपने मनमें पूछेगा : चरखा क्या कताओी मिलें क्यों नहीं? अुत्तर यह होगा कि हरअेकके हाथमें कताअी मिल नहीं हो सकती। अगर लोग अपने कपडेके लिअे कताअी मिलों पर निर्भर रहेंगे, तो जिसके भी हाथमें मिलें होंगी वही अुन पर नियंत्रण करेगा और अिस प्रकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त हो जायगी। आज काअी भी बिजली और पानीके साधनोंको काटकर २४ घंटेमें सारे लंदन और न्यूयार्कको अपने अधीन कर सकता है। सामाजिक जीवनके लिअे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और परस्परावलंबन दोनों अत्यावश्यक हैं। केवल रॉबिन्सन क्रूसो ही पूरी तरह स्वयं-संपूर्ण बनकर रह सकता है। अपनी मूल आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे आदमी जो कुछ कर सकता है वह सब कर लेनेके बाद ही अुसे बाकी बातोंके लिअे पडोसियोंके सहयोगकी तलाश करना चाहिये। यही सच्चा सहयोग होगा। अिस प्रकार चरखेका शास्त्रीय अध्ययन हमें समाज विज्ञानकी दिशामें ले जायगा। अगर हम चरखेसे

सम्बधित विविध शास्त्रोका गहरा अध्ययन नही करेंगे तो करघा हमारे हाथमें भारतकी आजादी हासिल करनेवाला शक्तिशाली हथियार नही बनेगा। लेकिन यदि हमने असा किया तो फिर वह न केवल भारतको ही आजाद करेगा बल्कि सारे ससारको आजादीका रास्ता दिखायेगा।

जब किसी मनुष्यका दृष्टिकोण शास्त्रीय होता है तब अुसकी पर छाया अुसके खान-पान विश्राम और निद्रा आदि सभी कामोमें पड़ता है — अुसके सारे काम शास्त्रीय ढगसे नियमित होगे और अस तरहसे कामका वक्त और विफलित्व पूरी तरह मालूम रहेगा। आखिरी बात यह है कि शास्त्रीय मानसवाले आत्मीमें अनासक्ति होनी चाहिये नहीं तो अुसे पागलखानेकी हवा खानी पडेगी।

हरिजन ३१-३-४६

४४

बोलनेवाले आकड़े

मद्रास प्रान्तीय कपडा कमिश्नर श्री अेम० वेंकटस्वरन खास तौर पर मद्रास खादी-योजनाके कामके लिअे दिल्ली आये थे। अुस समय मैं अनसे कहा था कि वे यह मानकर अपने आकड़े सब बनायें कि मद्रासमें मिलें नहीं है और सारे प्रान्तको खादीका कपड़ा ही देना है।

ये है वे आकड़े जो अपनी कहानी आप सुनाते है

मद्रास प्रान्तकी जनसख्या	५२० लाख
प्रान्तमें परिवारोंकी सख्या	
५२००००००	
———————	१३२५००००
४	
हाथ-कते सूतकी मात्रा जो प्रत्येक कातनेवाला	
अेक घटा रोज काम करके कात सकता है	३ गुंडी

गया-

विभाग ९ खादी-कार्यकर्ता

४५

बुनियादी जरूरतें

हमने माना है कि खादीकी जड़ सत्य और अहिंसा है। अगर हम अिस मौलिक बातको भूलकर खादीको चाहे जिस तरह अुत्पन्न करते रहेंगे तो अेक समय अैसा आयेगा जब हम स्वयं अुसे नष्ट कर देंगे। अगर हम अपनी बुनियादी बातों पर कायम नहीं रहेंगे तो अिसमें हमारा पतन हो जायगा। कार्यकर्ताओंका यह देखते रहना धर्म है कि खादीकार्यके प्रत्येक भागमें शुद्धि बनी रहे। मैं आज यह आशा नहीं करता कि हमारी कत्तिनें सत्य और अहिंसाकी भक्त होंगी, परन्तु यह आशा मैं हमारे तीन हजार खादी-कार्यकर्ताओंसे अवश्य रखता हूँ। अगर वे अैसे नहीं हैं तो हमारे कामकी प्रगति नहीं होगी और हमारा नाश हो जायगा।

दि आअिडियालाजी आफ दि चरखा पृ० ८१ (दिस० १९४१)

खादी-कार्यकर्ता नये अुत्साहके साथ खादीशास्त्रके नियमोंका अनुसंधान करें, खादीको ज्यादा टिकाअू तथा अधिक आकर्षक बनानेकी कोशिश करें और खादीको सार्वत्रिक बनानेके साधनोंका पता लगानेकी जिम्मेदारी स्वीकार करें। अीश्वर अुन्हींकी मदद करता है जो सदा जागरूक रहते हैं और अपने जीवनकार्यमें अपनी सारी बुद्धि लगाते हैं।

हरिजन १०–१२–३८

खादीकार्यके प्रत्येक कार्यकर्ताको वे प्रक्रियाअें जाननी चाहिये जिनमें होकर खादी बननेसे पहले रुअी गुजरती है।

हरिजन ६–७–३५

कार्यकर्ताओंको अुस रहनमाओी पर चलना होगा जो केन्द्रकी तरफसे समय समय पर मिले और अुन्हें जिन देहातियोंकी सेवा करनी है अुनके आसपासका पहलेसे ख्याल रखना होगा। अिस कामके लिअे अुन्हें ग्रामीणोंके साथ गहरे संपर्कमें आना होगा। अुन्हें ग्रामीणोंके पास सहानुभूति और विश्वास लेकर पहुंचना चाहिये। वे ग्रामीणोंके सामने कभी सरदार बन कर न जायं बल्कि अुन्हें अेक स्वेच्छा-सेवक बनकर जाना चाहिये जिन्होंने अब तक अपने कर्तव्य-पालनकी अुपेक्षा की है। अिस प्रारंभिक अनिवार्य नियमका ठीक तरह पालन हो जाय तो बाकी बातें अपने आप वैसे ही हो जायेंगी जैसे दिनके बाद रात होती है।

हरिजन २४-८-३५

४६

राजनीतिक दलबंदीकी गुंजाइश नहीं

अेक तरहसे खद्दर अेक शुद्ध आर्थिक योजना है। खद्दरकी किसी संस्थाको पहले व्यावसायिक संस्था होना चाहिये बादमें और कुछ। अिसलिअे (राजनीतिक दलबंदीका) लोकतन्त्रीय सिद्धान्त अुस पर लागू नहीं हो सकता। लोकतन्त्रमें अिच्छाओं और विचारोंका संघर्ष लाजिमी

चरखा संघके अेक प्रतिनिधि (अेजेंट) पूछते हैं कि वह अपने साथी कार्यकर्ताओंसे क्या कहें जिन्होंने अेक संघ बनाकर अुनके सामने अपनी शर्तें पेश की हैं। मैं अैसे संघोंका बनना गलत समझता हूँ। अिन कार्यकर्ताओंने साफ तौर पर चरखा संघके कार्यक्षेत्र और अुद्देशको भुला दिया है। वह कायदेसे बनाया हुआ अेक परोपकारी संगठन है और अुसे स्वशासनके अधिकार अिस विशेष हेतुसे दिये गये हैं कि वह हाथ-कताओके मुख्य ग्राम-अुद्योग और अुससे साथ लगी हुआी और सब चीजोंका विकास करे। जो लोग अिस स्वेच्छा सेवाके काममें लगे हुओ हैं वे अुससे कोअी आर्थिक लाभ नहीं अुठाते। अितना ही नहीं अगर हो सके तो अुनसे यह आशा की जाती है कि वे कुछ भी मजदूरी न लेकर मेहनत करेंगे। और चूंकि संसारके अिस सबसे गरीब मुल्कमें बहुत आदमी अैसा नहीं कर सकते अिसलिओ बहुत लोगोंको गुजारे भरके लिओ वेतन दिया जाता है। अुन्हें आराम पहुँचानेके सब प्रयत्न किये जाते हैं फिर भी अुन्हें साधारण अर्थमें नौकर नहीं माना जाता। मुनाफेमें किसीको हिस्सा नहीं दिया जाता। अगर अुसके कोअी हिस्सेदार या मालिक हैं तो वे कत्तिनें और बुनकर वगैरा हैं। ग्राहकोंको कोअी लाभ नहीं होता। खादी पहननेकी आशा अुनसे अिसलिओ नहीं रखी जाती कि वह मिलके कपड़ेसे सस्ती या दिखावमें अच्छी है बल्कि अिसलिओ कि वह आधे भूखे आधे बेकार लोगों— ज्यादातर औरतों —की सबसे बड़ी तादादको काम देती है। अिस विशाल परोपकारी संगठनको चलानेमें होनेवाले वेतनके और दूसरे खर्चको निकालनेके बाद बाकीका सारा रुपया अिन मूक कारीगरोंके पास जाता है।

अिसलिओ अगर कोअी कार्यकर्ता चरखा संघके विरुद्ध संघ बनाते हैं तो अुसका अर्थ यह होगा कि वे अिन कारीगरोंके खिलाफ हैं। जो कुछ वे लेते हैं वह अिन कारीगरों या ग्राहकोंकी जेबसे आता है। कार्यकर्ताओंके लाभके लिओ ग्राहकों पर बोझ डालना साफ तौर पर बेहूदा बात होगी। क्या कार्यकर्ता यह अनुभव नहीं करेंगे कि प्रतिनिधि (अेजेंट) लोग भी वैसे ही कार्यकर्ता हैं जैसे वे खुद हैं? कअी जगह तो प्रतिनिधि बिल्कुल अवैतनिक हैं। अलबत्ता यदि वहाँ कोअी

प्रतिनिधि अपने कर्तव्य-क्षेत्रकी सीमाका अुल्लंघन करके असा आचरण करता पाया जाय कि वह अपने साथ और अपने अधीन काम करनेवाले लोगोंका साथी न होकर मालिक और प्रभु है तो वह दूसरी बात होगी। अभी सूरतमें कार्यकर्ताओंके पास केन्द्रीय कार्यालयके मारफत अुपाय है। परन्तु दूसरे क्षेत्रोंमें प्रचलित प्रकारके संघ बनाना अवश्य ही वह अुपाय नहीं है। दूसरे क्षेत्रोंमें संघ आवश्यक हैं लेकिन यहां वे न केवल गैरजरूरी हैं बल्कि जैसा मैं अूपर कह चुका हूं गलत चीज हैं। और अगर किसी व्यापक पैमाने पर अुनका आग्रह रखा जाय तो वे अुस चरखा संघको नष्ट कर सकते हैं जिसके वे अेक हद तक रक्षक और संरक्षक हैं।

हरिजन १६-७-३८

४७

खादी, ग्राम-अुद्योग और ग्रामोत्थान

मैं स्वीकार करता हूं कि अगर किसी खादी-कार्यकर्ताका सारा समय खादीकाममें लगता है तो अुसके लिअे ग्रामोत्थानमें या ग्राम-अुद्योगोंमें ध्यान देना सम्भव नहीं है। अिन तीन कामोंके लिअे तीन व्यक्तियोंकी आवश्यकता होगी। मेरा विचार यह है कि अेक सुसंगठित गांवमें अेक आदमी काफी होना चाहिये। अुदाहरणके लिअे यह अेक कार्यकर्ता दो घंटे सूत लेने, पूनियां और कताअीके औजार बांटने और खादी बेचनेमें लगाये, ग्राम-अुद्योगोंके काममें सम्भवतः अिससे भी कम वक्त लगेगा और बाकीका समय वह ग्रामोत्थान और लोगोंको सामान्य शिक्षा देनेमें लगा सकता है। अब तक यह सम्भव नहीं हो सका है क्योंकि खादी-कार्यकर्ताका समय लोगोंको कताअी वगैरा सिखानेमें लगता रहा। परन्तु अब समय आ गया है कि खादी और देहातकी बनावटें जहां बनें वहीं खपनी भी चाहियें। अिस सूरतमें अेक व्यक्ति

ये सारे काम कर सकेगा। आज तो अितना कहना काफी है कि य सारे काम अक दूसरेके सहायक ह और जहा तक हा सके अक बन जान चाहिय। अकीकरण अूपरसे थोपा नही जा सकता असका स्वाभाविक विकास होना चाहिय। वतमान स्थितिके लिअ म किसीको कोअी दोष नहा देता नहा दे सकता। हमारी याजनाओंकी प्रगति अतनी ही हुअी है जहा तक हमारी बुद्धि और अनभव अहं ल जा सकता था। खादी विद्यालयोंकी स्थापनाका अद्देश्य यही है कि काम करनेकी कलामें वृद्धि और सुधार हो। अुनसे हम यह सीखेंगे कि ग्रामकायके सारे विभाग मिलकर अक कसे किय जा सकते ह।

हरिजन ३१-५-४२

४८

कायकर्ता और पसा

आजकल चरखा-सघमें कायकर्ता भारतभरमें फले हुअे ह। अुनकी सख्या लगभग ३ ० है। म असे छोटी सख्या समझता हू। जब खादी भारतमें सावत्रिक हो जायगी तब अिन कायकर्ताओंकी सख्या बहुत ज्यादा बढ़ जायगी। अगर अक गावके लिअ अक कायकर्ता हो तो चरखा-सघकी सूचीमें ७ ० ० कायकर्ता होग। असके लिअ विशाल धनराशिकी जरूरत होगी मगर अिससे हमें डरना नहा चाहिय। अगर काम लाभदायक है और लोग अुसकी कद्र करते ह तो रुपया मिल जायगा। म जीवनभर सस्थाअें बनाता और चलाता रहा हू। मरे अनुभवमें किसी सस्थाको द्रव्यके अभावमें अपना काम बन्द या कम नही करना पडा। अिसके विपरीत अगर सस्थाओंको बन्द करना पडा या अुनका काम घटाना पडा तो असा कायकर्ताओंके अभावमें हुआ है। अुत्तरमें यह पूछा जा सकता है बडी बडी व्यापारिक सस्थाओं और सरकारी नौकरीमें काम करनेके लिअ रुपयके सिवा और क्या

आकर्षण है? जिन लोगोंने मेरी बात पूरी तरह नहीं समझी है, वे ही अिस तरहकी आपत्ति अुठा सकते हैं। मैंने यह नहीं कहा कि रुपयेसे कुछ नहीं किया जा सकता। रुपयेमें अगर अनेक परिणाम लानेकी शक्ति नहीं होती तो लोग अुसके पीछे क्यों पड़ते? मेरे कहनेका मतलब यह था कि अगर हम रुपयेके गुलाम हों तो हमें लोगोंकी सेवा करनेका विचार छोड़ देना चाहिये। गुलामको मालिकसे सताया जाना ही होता है। परन्तु यदि हम रुपयेको साधन समझकर काममें लें और अुसे अपना सेवक मानें और वह भी सेवाकी भावनासे, तो हम अुसका सदुपयोग करेंगे। लोगोंकी सेवाके लिअे पहली और अनिवार्य आवश्यकता अच्छे कार्यकर्ताओंकी है। जब अैसे कार्यकर्ता होते हैं तब रुपया अपने आप आता है और अुन्हें अुसकी तलाशमें जानेकी जरूरत नहीं होती। अिसलिअे मैंने कहा कि अगर हमें सात लाख कार्यकर्ता और मिल जायें तो भी हम यह मान सकते हैं कि रुपया आ जायगा। यह सच है कि लोगोंको हमारे काममें आकर्षित करनेके लिअे हमारे पास रुपया नहीं है। अिसे मैं स्वीकार करता हूँ। यहाँ तो आकर्षित करनेवाली चीज भावना और कार्यनिष्ठा ही है। जो लोग चरखा-संघ जैसी संस्थामें गरीब हों, अुन्हें वेतनके बजाय सेवाभावसे गरीब होना चाहिये। अगर अुन्हें थोड़ासा वेतन देना पड़ता है तो अिसलिअे कि खानेको तो गरीब-अमीर सभीको चाहिये। परन्तु कार्यकर्ता सेवाके खातिर ही जिन्दा और तन्दुरुस्त रहनेके लिअे वेतन लेता है। अैसे कार्यकर्ता सुख या शौकके लिअे कभी खाते-पीते या पहनते नहीं हैं।

दि आअिडियालॉजी ऑफ दि चरखा, पृ० ८५-८६, ३-११-'४५

ये सारे काम कर सकेगा। आज तो अितना कहना काफी है कि ये सारे काम अेक-दूसरेके सहायक हैं और जहां तक हो सके अेक बन जाने चाहियें। अेकीकरण अूपरसे थोपा नहीं जा सकता; असका स्वाभाविक विकास होना चाहिये। वर्तमान स्थितिके लिअे मैं किसीको कोअी दोष नहीं देता, नहीं दे सकता। हमारी योजनाओंकी प्रगति अुतनी ही हुअी है जहां तक हमारी बुद्धि और अनुभव अुन्हें ले जा सकता था। खादी विद्यालयकी स्थापनाका अुद्देश्य यही है कि काम करनेकी कलामें वृद्धि और सुधार हो। अुनसे हम यह सीखेंगे कि ग्रामकार्यके सारे विभाग मिलाकर अेक कैसे किये जा सकते हैं।

हरिजन, ३१-५-'४२

४८

कार्यकर्ता और पैसा

आजकल चरखा-संघके कार्यकर्ता भारतभरमें फैले हुअे हैं। अुनकी संख्या लगभग ३,००० है। मैं अिसे छोटी संख्या समझता हूं। जब खादी भारतमें सार्वत्रिक हो जायगी, तब अिन कार्यकर्ताओंकी संख्या बहुत ज्यादा बढ़ जायगी। अगर अेक गांवके लिअे अेक कार्यकर्ता हो, तो चरखा-संघकी सूचीमें ७,००,००० कार्यकर्ता होंगे। अिसके लिअे विशाल धनराशिकी जरूरत होगी, मगर अिससे हमें डरना नहीं चाहिये। अगर काम लाभदायक है और लोग असकी कद्र करते हैं तो रुपया मिल जायगा। मैं जीवनभर संस्थाअें बनाता और चलाता रहा हूं। मेरे अनुभवमें किसी संस्थाको द्रव्यके अभावमें अपना काम बन्द या कम नहीं करना पड़ा। अिसके विपरीत, अगर संस्थाओंको बन्द करना पड़ा या अुनका कार्य घटाना पड़ा तो असा कार्यकर्ताओंके अभावमें हुआ है। अुत्तरमें यह पूछा जा सकता है: बड़ी बड़ी व्यापारिक संस्थाओं और सरकारी नौकरीमें काम करनेके लिअे रुपयेके सिवा और क्या

आवश्यक है? जिन लोगोंने मेरी बात पूरी तरह नहीं समझी है वे ही अिस तरहकी आपत्ति अुठा सकते हैं। मैंने यह नहीं कहा कि रुपयेसे कुछ नहीं किया जा सकता। रुपयेमें अगर अनेक परिणाम लानेकी शक्ति नहीं होती तो लोग अुसके गुलाम क्यों बनते? मेरे कहनेका मतलब यह था कि अगर हम रुपयेके गुलाम हैं तो हमें लोगोंकी सेवा करनेका विचार छोड़ देना चाहिये। गुलामके भाग्यमें सताया जाना ही होता है। परन्तु यदि हम रुपयेको साधन समझकर काममें लें और अुसे अपना सेवक मानें और वह भी सेवाकी भावनासे तो हम अुसका सदुपयोग करेंगे। लोगोंकी सेवाके लिअे पहली और अनिवार्य आवश्यकता अच्छे कार्यकर्ताओंकी है। जब अैसे कार्यकर्ता होते हैं तब रुपया अपने आप आता है और अुन्हें अुसकी तलाशमें जानेकी जरूरत नहीं होती। अिसलिअे मैंने कहा कि अगर हमें सात लाख कार्यकर्ता और मिल जायें तो भी हम यह मान कर चल सकते हैं कि रुपया आ जायगा। यह सही है कि लोगोंको हमारे काममें आकर्षित करनेके लिअे हमारे पास रुपया नहीं है। अिसे मैं स्वीकार करता हूँ। यहाँ तो आकर्षित करनेवाली चीज भावना और कार्यनिष्ठा ही है। जो लोग चरखा-संघ जैसी संस्थामें शरीक हों अुन्हें वेतनके बजाय सेवाभावसे शरीक होना चाहिये। अगर अुन्हें थोड़ासा वेतन लेना पड़ता है तो अिसलिअे कि खानेको तो गरीब-अमीर सभीको चाहिये। परन्तु कार्यकर्ता सेवाके खातिर ही जिन्दा और तन्दुरुस्त रहनेके लिअे वेतन लेता है। अुसे कार्यकर्ता गुड़ या गौरवके लिअे क्या खाते-पीते या पहनते नहीं हैं।

[1] दि आअिडियालाजी आफ दि चरखा, पृ० ८५-८६ ३-११-४५

खादी कार्यकर्ता और राजनीति

खादी-कार्यकर्ताओंको राजनीतिमें भाग लेनेके लिअे समय नहीं मिल सकता। चरखा-संघ अपना काम पूरी तरह नहीं कर सकता, अगर अुसके कार्यकर्ता सिर्फ आठ घंटे काम करें और अपना बाकीका समय मौज करनेमें और विनोदके दूसरे कामोंमें लगायें। चरखा-संघका बनाना और बिगाड़ना अुन पर ही निर्भर है। अिसलिअे अुन्हें अपना बचा हुआ समय खादी तैयार करनेकी विविध प्रक्रियाओं और खादीके शास्त्र और कलाका अध्ययन करके अपने काममें अधिक कुशल और योग्य बननेमें लगाना होगा।

किन्तु अुसका यह अर्थ नहीं है कि चरखा-संघके कार्यकर्ता राजनीति या दूसरे मामलोंमें कोअी दिलचस्पी नहीं रखेंगे। दिलचस्पी अुन्हें है और रखनी चाहिये, परन्तु राजनीतिको वही ठीक तरह समझता है जो चरखा-संघके कामके द्वारा ही सारी दिलचस्पी लेता है और संयमके साथ अुसका सदुपयोग करता है। वह सचमुच अच्छा मतदाता होगा और कांग्रेसकी तरफसे खड़े होनेवाले अुम्मीदवारके लिअे मत देगा। मगर वह किसी व्यक्ति विशेषके पक्षमें मत देनेके लिअे दूसरोंको राजी करनेके काममें नहीं फंसेगा और न व्याख्यान देगा। कांग्रेसका काम जनताका काम है। कांग्रेस जनताकी प्रतिनिधि है। कांग्रेसने चरखा-संघको जन्म दिया है। चरखा-संघ भी जनताका है। जैसे राजनीतिक काम कांग्रेसकी अेक प्रवृत्ति है, ठीक अुसी तरह चरखा-संघ भी कांग्रेसकी अेक प्रवृत्ति है। परन्तु कोअी दो घोड़ोंकी सवारी कैसे कर सकता है? जो चरखा-संघमें काम करता है अुसे पूरी तरह अुसीमें लगना चाहिये। और जो राजनीतिमें घुसता है अुसे राजनीतिमें लगना चाहिये। अिस प्रकार दोनोंको आपसमें काम बांट लेना चाहिये। अिसलिअे चरखा-संघका यह नियम रहा है कि अुसके कार्यकर्ताओंको राजनीतिमें सक्रिय भाग नहीं लेना चाहिये।

दि आअिडियालॉजी आफ दि चरखा, पृ० १८१-९, ३-११-४५

मे अिनका संबंध ग्रामीण कार्यकर्ताओंसे है। अनुका कर्तव्य है कि वे अपना समय मुख्यतः कातने और दूसरोंसे कतवानेमें लगायें। खादी कामकी नअी कल्पनामें कपासकी खेतीसे लगाकर कपड़ेकी तैयारी तककी सारी प्रक्रियायें शामिल हैं। जो कार्यकर्ता अिन सबको बुद्धिपूर्वक जानता है और चरखे या तकुअेकी मरम्मत कर सकता है अुसे अपनी रोज़ी कमाने और दूसरोंको कमाना सिखानेमें कभी कोअी कठिनाअी नहीं होगी। अिसके साथ साथ और खादीकार्यको हानि पहुंचाये बिना खादी-कार्यकर्ता साधारण बीमारियोंका अिलाज कर सकता है और गांवकी सफाअीकी तरफ ध्यान दे सकता है। शिक्षा किसी अुद्योगके द्वारा देनी चाहिये। अिसलिअे मैं अिसे खादीके कामसे अलग नहीं समझता। जो शिक्षा लेने आयें अन्हें खादी पहनना चाहिये और खादीके ज़रिये शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।

दूसरा सवाल यह है कि खादी-कार्यकर्ताओंको कितने अर्से तक वैतनिक कार्यकर्ताके रूपमें काम करना चाहिये। मेरे विचारसे अुसे शुरूसे ही स्वावलम्बी होना चाहिये। यह संभव न हो तो अुसे अपने लिअे खुद काअी मियाद मुकर्रर कर लेनी चाहिये। मेरी रायमें अधिकसे अधिक अवधि पांच सालकी है। जिस कार्यकर्ताको पांच बरसके अन्तमें स्वावलम्बी बन जाना है अुसे हर साल अपना भत्ता घटाते जाना चाहिये। अुससे यह आशा नहीं रखी जा सकती कि वह पांच सालके आखिरमें अचानक अपने पैरों पर खड़ा हो जायगा। यह अेक कला है जिसमें सावधानीसे विचार और योजनाकी ज़रूरत होती है। जो दूसरोंको स्वावलम्बी बनना सिखाता है अवश्य ही अुसे पहले खुद स्वावलम्बी बन जाना चाहिये।

हरिजन ४-८-४६

५१

संरक्षक कौन हो सकता है?

चरखा-संघने जो काम हाथमें लिया है वह अितना विशाल और महान है कि अुसके लिअे चरखा संघके संरक्षक (ट्रस्टी)की जरूरी योग्यताओंका अत्यन्त ध्यानपूर्वक विचार होना चाहिये। मेरी रायमें वे ये होनी चाहिये :

(१) किसीको भी नाममात्रका या नामके खातिर संरक्षक नहीं होना चाहिये।

संरक्षकमें यह श्रद्धा होनी चाहिये कि भारत जैसे देशमें जहां करोड़ों आदमी वर्षमें चार छह महीने बेकार रहते हैं, अगर वे सब लोग जो शरीरसे तन्दुरुस्त हैं रोज काफी वक्त अर्थात् औसतन अेक घंटा कातनेमें खर्च करें तो सबको अपना काता हुआ कपड़ा आसानीसे मिल सकता है और अुन्हें और किसी कपड़ेको छूनेकी जरूरत नहीं होगी।

(२) जिस संरक्षकमें यह अटल श्रद्धा होगी वह दूसरोंके सामने अच्छी मिसाल कायम करनेके लिअे और देशकी सेवामें भरसक सहायता देनेके संतोषके लिअे नियमित रूपसे कातेगा।

(३) वह भारतके देहाती जीवनसे अपने जीवनको अेकरस बनानेकी पूरी कोशिश करेगा।

(४) भारतवर्ष गांवोंसे बना है। परन्तु हमारे शिक्षित वर्गोंने गांवोंकी अपेक्षा की है। चरखा-संघका संरक्षक हमारे ग्रामीण जीवनको दुःखमय बनानेवाली बाधाओंका अुपाय करनेका पूरा प्रयत्न करेगा। असा करते हुअे अुसे यह याद रखना चाहिये कि ग्रामीण जीवन शहरी जीवनकी नकल या पुछल्ला नहीं बन जाना चाहिये। शहरोंको ही देहाती जीवनका नमूना अपनाना होगा और देहातके लिअे जिन्दा रहना सीखना होगा।

(५) अगर किसी महिला संरक्षकका पति मिल-उद्योगसे संबंध रखता है तो उसे अपने निजी उपयोगके लिए खुद कातकर रख लेना चाहिये या उसको या उसके लिए किसी दूसरेका काता हुआ सूत बुन दें और उसे इस प्रकार तैयार किया हुआ कपड़ा पहनना चाहिये।

( ) संरक्षकको हाथ-कताई और हाथ-बुनाईके बारेमें सारी बातें जानना चाहिये और इन उद्योगोंके आर्थिक और नैतिक महत्त्वको समझना चाहिये। उसे यह भी समझना चाहिये कि इनका संगठन/प्रचार कैसे किया जा सकता है और यह बात दूसरोंको समझाना चाहिये।

(७) संरक्षकको प्रारम्भसे लेकर अब तकके चरखा-संघके इतिहासको जानना और समझना चाहिये और यह भी समझना चाहिये कि उसने वस्त्र-निर्माणकी विविध प्रक्रियाओंमें कैसे शामिल कर ली है।

ये मेरे विचार हैं। जब तक संघ उन्हें स्वीकार न कर ले ये बन्धनकारक नहीं हो सकते। संशोधन या परिवर्तनके तौर पर मुझे जो भी सहायक सुझाव मिलेंगे उनका मैं स्वागत करूँगा।

हरिजन —११—४५

५२

यज्ञार्थ कताअी क्यों ?

यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि मुझे खानेके लिअे काम करनेकी जरूरत ही नहीं तो मैं क्यों कातूं ? अुत्तर है — अिसलिअे कि मैं वह खाता हूं जो मेरा नहीं है। मैं अपने देशवासियोंकी छीनी हुअी कमाअी पर गुजर करता हूं। जब पैसा भी जो आपकी जेबमें जाता है वह कहांसे आया है अिस बातकी खोज कीजिये और मैं जो लिख रहा हूं अुसकी सचाअीका अनुभव आपको हो जायगा।

यंग अिंडिया १३-१०-२१

अगर मैं अुड़ीसाके नरकंकालोंके आगे चरखा रख दूं तो वे अुसकी तरफ आंख अुठाकर भी नहीं देखेंगे। परन्तु मैं अुनके बीच बैठकर कातने लगूं तो वे अुसे वैसे ही अपना लेंगे जैसे मछली पानीको। आम लोग बड़ोंके अुपदेशको नहीं अुनके आचरणका अनुकरण करते हैं। अिसलिअे कताअीके प्रस्तावकी जरूरत है। वह हमें ग्रामीणोंके प्रति सच्ची जिम्मेदारीकी भावना प्रदान करता है, वायुमण्डलको कातनेकी रुचिसे भर देता है और खादीको सस्ता बनाता है। अगर कताअीके प्रस्ताव पर देश वफादारीसे अमल करे तो अुसमें वह शक्ति छिपी हुअी है जिसकी हमें अभी तक कोअी कल्पना नहीं है।

यंग अिंडिया ७-८-२४

अब अीश्वर-कृपासे हम शिक्षित मध्यम वर्गके लोगोंमें अपनी पतित बहनों और भूखे भाअियोंके साथ तादात्म्य स्थापित करनेकी अिच्छा जागी है। हम स्वराज्य अिसलिअे चाहते हैं कि वे जिन्दा रह

सकें। पर हम सब गाँवोंमें जाकर ग्रामीणोंकी मदद नहीं कर सकते। हमारी पतित बहनोंका चित्र हमें सदा अिस बातकी याद दिलाता है कि हमारा चरित्र शुद्ध और निर्मल बने। तो फिर हम क्या करें जिससे हमें बराबर अुनकी सदा याद बनी रहे और अुनके प्रति हमारी सहानुभूति तीव्र होती जाय? हम प्रतिदिन अुनके लिअ क्या कर सकते हैं? हम अितने दुर्बल हैं कि हम यथासंभव कमसे कम काम करना चाहते हैं। वह कमसे कम क्या है? चरखेके सिवा मैं और कोअी चीज सोच नहीं सकता। वह काम आसान होना चाहिये — पंडित और अनपढ़, भले और बुरे, जवान और बूढ़े, पुरुष और स्त्री, दुर्बल और सबल, सब चाहे किसी भी धर्मके हों, सबके बूतेका होना चाहिये। काम कारगर तभी होगा जब वह सबके लिअ अकसा होगा। चरखा अिन सब शर्तोंको पूरा करता है। अिसलिअ जो कोअी चरखा रोज कातता है, वह जनसाधारणकी अत्यंत कारगर ढंगसे सेवा करता है। यही नहीं, वह भारत भूमिके पतित मानव समाजकी भी पूरे दिलसे शानपूर्ण सेवा करता है और अिस प्रकार अुस सेवाके लिअ स्वराज्यको दिन दिन अधिक निकट लाता है।

हमारे लिअ चरखा समूचे सार्वजनिक सामूहिक जीवनकी बुनियाद है। अिसके बिना किसी स्थायी सार्वजनिक जीवनका निर्माण असंभव है। यही अेक प्रत्यक्ष कड़ी है जो हमें देशके छोटेसे छोटे लोगोंके साथ अटूट बंधनमें बांधकर अुन्हें आशा प्रदान करता है। हम अुसमें और बहुतसी चीजें जोड़ सकते हैं, हमें जोड़नी चाहिये। मगर हमें पहले अिस बुनियादकी मजबूतीका निश्चय कर लेना चाहिये। होशियार कारीगर अिमारतकी अूपरी मंजिलें बनाना शुरू करनेसे पहले अुसकी नींवकी मजबूतीका निश्चय कर लेता है और जितनी बड़ी अिमारत हो अुतनी गहरी और अुतनी ही मजबूत नींव डालता है। अिसलिअ अपने अुद्देश्यकी सिद्धिके लिअे पहले सारे देशमें कताअी सार्वत्रिक हो जानी चाहिये।

मगर कताअी जनसाधारण और वर्गोंको ही जोड़नेवाली कड़ी नहीं होगी, वह अलग अलग राजनीतिक दलोंके बीचकी कड़ी भी होगी।

वह मव दगाके लिअे सामान्य हा जायगी। वे चाहें ता और मव वातामें मतभद रखें मगर कमसे कम जिस वात पर ता वे सहमत हा सकते ह।

जिसलिअ जो दगास प्रेम करते ह सबसे गरीब और गिरे हुअ लागाम मुहब्बत करते अन सव लोगोंस मेरा अनुरोध है कि अिन लोगोंके खातिर और अीश्वरके नाम पर समान और अच्छ कपास सूत कातनके लिअ अक घटा रोज श्रमदान कीजिये। चूकि यह राष्ट्रको अनकी भेंट हागी जिसलिअ अन्हें अिसे अखिल भारत खादी मडलको धार्मिक नियमिततासे साथ अपण करना चाहिये।

यग अिडिया ४-९-२४

म जितनी वार चरखे पर सूत निकालता हू अतनी ही वार भारतके गरीबोंका विचार करता हू। भूखकी पीडासे व्यथित और पेट भरनेके सिवा और कोअी अिच्छा न रखनेवाले मनुष्यके लिअ असका पेट ही अीश्वर है। अुस जो रोटी देता है वही अुसका मालिक है। अुसके द्वारा वह अीश्वरके भी दर्शन कर सकता है। अैसे लोगोंको जिनके हाथ-पर सही सलामत ह दान देना अपना और अनका दोनोंका पतन करना है। अन्हें तो किसी न किसी तरहके धधकी जरूरत है और वह धधा जा करोडोंको काम देगा केवल हाथ कताअीका ही हो सकता है। लेकिन म भारतके मेहनत मजदूरी करनेवाले लोगोंके मनमें हाथ-कताअीकी छिपी हुअी शक्तिके प्रति अपनी श्रद्धा भाषण देकर नहा बल्कि स्वय कातकर ही भर सकता हू। अिसलिअ मन कताअीको प्रायश्चित्त या यज्ञ कहाया है। और चूकि म मानता हू कि जहा गरीबोंके लिअ शुद्ध और सक्रिय प्रेम है वहा अीश्वर भी है अिसलिअ चरखे पर म जा सूत निकालता हू असके अक अक धागमें मझ अीश्वर दिखाअी दता है।

यग अिन्डिया २०-५-२६

५३

यज्ञार्थ कताओी वांछनीय है?

एक भाओीने कताओीकी वांछनीयतामें शंका प्रगट की है और गंभीरतापूर्वक सुझाया है कि अगर सब लोग कातेंगे तो जो गरीब अपनी आजीविकाके लिअे कताओी पर निर्भर करते हैं वे घाटेमें रहेंगे। यह भाओी भूल जाते हैं कि जो लोग यज्ञार्थ कातते हैं वे खद्दरका वातावरण बनाते हैं, कताओीको आसान करते हैं और छोटे छोटे आविष्कार करके अुसे अधिक लाभदायक बनाते हैं। यज्ञार्थ कताओीसे पेशेवर कत्तिनों और मजदूरोंको किसी भी तरह हानि नहीं पहुंच सकती।

यंग अिंडिया, १७-६-'२६

एक पत्रलेखक पूछते हैं:

"आपका यज्ञार्थ कताओी या खुद कातने पर क्यों आग्रह है? यज्ञार्थ कताओी तो दान देनेके लिअे कातना है। खुद कातना अपने निजी अुपयोगके लिअे अपना सूत खादीमें बदल लेना है। दोनों ही हालतोंमें आप जिसे गरीब कत्तिनका सबसे कम वेतनवाला मजदूर कहते हैं अुसके मुंहसे कुछ न कुछ छीन लेते हैं। यज्ञार्थ कताओीमें आप केवल खादीका भाव घटाकर गरीबोंकी थोड़ीसी सेवा करते हैं। पर अपने लिअे की जानेवाली कताओीमें तो अिसके सिवा और कुछ नहीं होता कि हम कत्तिनके मुंहकी रोटी छीन लेते हैं।"

अगर कताओी सार्वत्रिक हो जाती तो यह बात थोड़ी या पूरी सच होती। परन्तु आज कुछ हरिजन असे हैं जिनकी कमानेकी शक्ति आधी रह गओी है, क्योंकि अुनके पास — वे बुननेका धंधा करते हैं — बुननेको हाथ-कता सूत नहीं है। अिस समय वे किसी तरह बड़ी कठिनाओीसे गुजर करनेकी कोशिश कर रहे हैं। अिन बुनकरोंकी यह दुर्दशा न हो यदि देशमें बड़े पैमाने पर यज्ञार्थ कताओी हो रही हो।

म अिस पत्रमें पहले ही कह चुका हू कि किस प्रकार अुडीसामें लगभग दस हजार बुनकराके प्रतिनिधि जो (किसी जातिमें परिगणित न होनेके कारण) हरिजना जसे ह कामके अभावमें या या कह लीजिय कि हाथ-कते सूतके अभावमें भूखा मर रहे ह। यह कहना व्यय है कि वे मिलका सूत बुन सकते ह। यह काम य दस हजार जुलाहे कर रहे थे। मगर जापानी स्पर्धाके कारण मिलके सूतके हाथ-बुने कपडकी माग बहुत घट गअी है। खादी बुननवालाको अपनी खादीके लिअ स्थानीय ग्राहक मिल सकत ह मगर मिलके सूतके हाथ-बुने कपडके स्थानाय ग्राहक नहा मिल सकत। अक समय था जब हाथ कते सूतकी बहुतायत थी क्योकि हजारा नही ला सकडा यज्ञाथ कातनवाले थे और बुनकरोकी कमी थी। अब यज्ञाथ कताअीका रिवाज अठ गया है और बुनकरोकी सेना मौजूद है जो हाथ कते सूतको खुशीस बुन देंगे। अिसलिअ बहुत समय तक और जब तक बाजारमें खादीकी माग है तथा जब तक कताअी अितनी सामान्य न बन जाय कि अुससे माग पूरी हो जाय तब तक यज्ञाय कताअी और अपन लिअ कताअी दोनाका राष्ट्रीय अथरचनामें निश्चित स्थान है। अिससे गरीबोकी और अनमें भी खास तौर पर हरिजनाकी निश्चित और ठोस सेवा होगी।

जिसक अलावा चूकि यह कताअी बुद्धिमान और शिक्षित स्त्री पुरुषाका करनी पडगी वह कलायुक्त होगी और अुसमें बडा विकास किया जा सकेगा। चरखे और अुसके सरजाममें तथा हाथ चरखी और धुनकीमें जा अदभत सुधार हो गय ह वे अुस दिलचस्पीके कारण हुअ ह जो शिक्षित मध्यमवगकी स्त्रिया और पुरुषोन अिस आदोलनमें ली है। हरिजन के सब पाठकाको शायद मालूम न होगा कि चरखा सघके मत्री अक अम० अ और बम्बअीके अक मशहूर और सफल वकरक रहके ह अुसके अध्यक्ष देशके योग्यतम व्यापारियामें स अक ह तामिलनाडमें खादी-सगठनके सचालक भी अक सुप्रसिद्ध भूतपूव वकील ह बगालके सगठनकर्ताओंमें अक भूतपूव डाक्टर ह और दूसरे योग्य रसायनशास्त्री ह। अिसी प्रकार अत्तर प्रदेशमें यह काय अक राष्ट्रीय महाविद्यालयके भूतपूव आचाय द्वारा चलाया जा रहा है। म थोडस

नाम है। असे और भी बहुतसे लोगोंके नाम मैं बता सकता हूँ जिन्होंने खादीके द्वारा दरिद्रनारायणकी सेवामें अपनेको समर्पित कर दिया है। यह भक्तसमूह न होता तो खादीकी जो ठोस प्रगति हुअी है वह असंभव थी और जो आधा करोड़ रुपया लगभग अढ़ाअी लाख मजदूरोंमें दानके रूपमें नहीं मगर प्रामाणिक श्रमकी मजदूरीके रूपमें खादी-आन्दोलनके अिन वर्षोंमें बांटा गया है वह न बंटता। चरखेके सिवा और किसी तरह या बेहतर ढंग पर अितनी जल्दी असा काम नहीं हो सकता था। अुससे दीन-दुखियोंका देशके कुछ अत्यन्त सुसंस्कृत नर-नारियोंके साथ सजीव सम्पर्क हुआ है, अंधेरी झोपड़ियोंमें प्रकाशकी अेक किरण पहुँची है, जर्जर शरीरोंमें साहस आया है, हजारों दुग्धविहीन बालकोंको दूध मिला है। जिन देहातियोंने अुसे अपनाया है अुन्हें अुसने अकालके खिलाफ अपनी रक्षा करनेका अेक सहज साधन दे दिया है। अुसने आलस्यको कम किया है और हजारोंका भिखारी जीवनसे अुद्धार किया है।

अिसलिअे यह कहना गलत है कि यज्ञार्थ कताअी या अपने लिअे कातना मजदूरीसे कातनेवालोंके लिअे हानिकारक है। जिन लोगोंके लिअे संभव है अुन सबका निश्चित धर्म है कि भारतके हरिजनों — अछूतों — के खातिर कमसे कम आध घंटा कातें।

हरिजन १०–१०–'३४

कथित अुच्च वर्णोंने युगों तक नीचे वर्णोंकी बिलकुल अुपेक्षा की है। नतीजा यह हुआ कि नीचे वर्णोंको जीनेकी कला नहीं आती। वे समझते हैं कि हम तो केवल लकड़ी चीरने और पानी भरनेवाले हैं। कथित अूँचे वर्ग अपने अिन कुकर्मोंका दण्ड भोगनेसे बचे नहीं। क्योंकि अुन्हें भी जीनेकी कला नहीं आती और यदि अुन्हें नीचे वर्गों की सहायता न मिले तो वे आज नष्ट हो जायँ। खादीका अुद्देश्य अूँचे वर्गोंसे नीचे वर्गोंके प्रति किये गये अिस अन्यायका प्रायश्चित्त कराकर अिस दुहरी बुराअीको ठीक करना है।

हरिजन ६–७–'३५

५४

खादीवृत्ति

खादीवृत्ति का यह मतलब है कि खादी पहननेके साथ जो अर्थ लगा हुआ है वह हमें मालूम होना चाहिये। हर बार जब हम प्रातःकाल खादीके कपड़े बाहर जानेको पहननेके लिये निकालें तब हमें याद रखना चाहिये कि यह काम हम दरिद्रनारायणके नाम पर और करोड़ों भूखे भारतीयोंकी सेवाके खातिर कर रहे हैं। अगर हममें खादीवृत्ति हो तो हम जीवनके हर क्षणमें अपने चारों ओर सादगी पैदा कर लेंगे। खादीवृत्ति का अर्थ है असीम धैर्य क्योंकि जो लोग खादीकी उत्पत्तिका कुछ भी ज्ञान रखते हैं अुन्हें मालूम है कि कत्तिनों और जुलाहोंको अपने धंधेमें कितना घोर परिश्रम करना पड़ता है। अिसी तरह हमें भी स्वराज्यका तार कातते हुअे धीरज रखना होगा। खादीभक्ति का अर्थ अपार श्रद्धा भी है। जैसे चरखा पर कातनेवालेको यह असीम श्रद्धा होती है कि वह जो सूत कातता है वह भले ही थोड़ा हो फिर भी कुल मिलाकर अितना हो जायगा जिससे भारतके प्रत्येक मानव प्राणीको कपड़ा दिया जा सके अुसी तरह हममें असीम श्रद्धा होनी चाहिये कि अन्तमें सत्य और अहिंसामें हमारे रास्तेकी सब बाधायें दूर हो जायेंगी।

खादीभक्ति का अर्थ है संसारके प्रत्येक मानव प्राणीके साथ अपनापन। असका अर्थ है प्रत्येक अुस वस्तुका संपूर्ण त्याग जो हमारे मानव भाअियोंको हानि पहुंचा सकती है। अगर हम अपने करोड़ों देशवासियोंमें यह वृत्ति पैदा कर दें तो हमारा यह भारत देश कैसा सुन्दर बन जाय!

लेकिन मैं स्वीकार करता हूं कि अिस बातके पीछे अेक शर्त है, अिस वृत्तिकी अभिव्यक्तिकी अेक ही शर्त है। रामनाम हमारे मनमें अेक सजीव वस्तु अिसलिअे बन गया कि अुसके पीछे हमें रामनाम प्रदान

करनेवालोकी अद्वितीय तपश्चर्या थी यही बात खादी-आन्दोलनकी भी है। खादीके पीछे खादाके समयवालों तपश्चर्या होनी चाहिये। मेरे मनमें यह विचार हर क्षण बना रहता है कि जिन लोगोंने अपने जीवन खादीको अपण कर दिये हैं वे अगर जीवनकी शुद्धताका सतत आग्रह नहीं रखेंगे तो खादी पर हमारे देशवासी नाक भौं सिकोड़ेंगे।

यंग अिंडिया २२-९-'२७

५५

कताओ आत्मदर्शनका साधन

आप पूछ सकते हैं कि चरखेके द्वारा ओश्वर प्राप्ति कैसे सभव है। जैसा मैं आपको पहले बता चुका हूं, चरखा करोड़ो लोगोंके साथ हमारा तादात्म्य कराता है। करोड़पति लोग समझते हैं कि ससारमें रुपया अुन्हें कोओ भी चीज प्राप्त करा सकता है। परन्तु बात असी नहीं है। मौत किसी भी समय आकर अुनके जीवनदीपको बुझा सकती है। कुछ लोग रोज छुरीके शिकार होते हैं। परन्तु अिस तरह अपना प्राण गवाना और अहं को छोड़ना अक ही चीज नहीं है। ओश्वर प्राप्तिके लिओ स्वार्थ और अहकारको स्वेच्छासे और ओश्वरके प्रति निवेदित पवित्र बलिदानके रूपमें मिटा देना सीखना पड़ता है। चरखेमें अहंभावके लिओ स्थान नहीं है। वह गरीबसे गरीबके साथ सबका प्रतीक है। अिसलिओ वह चाहता है कि हम नम्र बनें और घमण्डको पूरी तरह छोड़ दें।

जब अहंभाव छूट जायगा तब हमारे बाह्य व्यवहारमें अुस परिवर्तनकी परछाओं पड़ेगी। वह हमारे छोटे छोटे कार्योंमें प्रदर्शित होगा। हमारा जीवन-संबंधी सारा दृष्टिबिन्दु बदल जायगा। हम जो कुछ करेंगे वह अपने सुख बढ़ानेके लिओ नहीं परन्तु सबके लिओ करेंगे।

५४

खादीवृत्ति

खादीवृत्तिका यह मतलब है कि खादी पहननेके साथ जो अर्थ लगा हुआ है वह हमें मालूम होना चाहिये। हर बार जब हम प्रातःकाल खादीके कपड़े बाहर जानेको पहननेके लिअे निकालें तब हमें याद रखना चाहिये कि यह काम हम दरिद्रनारायणके नाम पर और करोड़ों भूखे भारतीयोंको बचानेकी खातिर कर रहे हैं। अगर हममें खादीवृत्ति हो तो हम जीवनके हर क्षेत्रमें अपने चारों ओर सादगी पैदा कर लेंगे। खादीवृत्तिका अर्थ है असीम धैर्य, क्योंकि जो लोग खादीकी अुत्पत्तिका कुछ भी ज्ञान रखते हैं अुन्हें मालूम है कि कतैयों और जुलाहोंको अपने धन्धेमें कितना घोर परिश्रम करना पड़ता है। अिसी तरह हमें भी स्वराज्यका तार कातते हुअे धीरज रखना होगा। खादीवृत्तिका अर्थ अपार श्रद्धा भी है। जैसे चरखे पर कातनेवालेको यह असीम श्रद्धा होती है कि वह जो सूत कातता है वह भले ही थोड़ा हो फिर भी कुल मिलाकर अितना हो जायगा जिससे भारतके प्रत्येक मानव प्राणीको कपड़ा दिया जा सके, अुसी तरह हममें असीम श्रद्धा होनी चाहिये कि अन्तमें सत्य और अहिंसासे हमारे रास्तेकी सब बाधाअें दूर हो जायगी।

खादीवृत्तिका अर्थ है संसारके प्रत्येक मानव प्राणीके साथ अपनापन। अुसका अर्थ है प्रत्येक अुस वस्तुका संपूर्ण त्याग जो हमारे मानव भाअियोंको हानि पहुँचा सकती है। अगर हम अपने करोड़ों देशवासियोंमें यह वृत्ति पैदा कर दें तो हमारा यह भारत देश कैसा सुन्दर बन जाय!

लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि अिस बातके पीछे अेक शर्त है, अिस वृत्तिकी अभिव्यक्तिकी अेक ही शर्त है। रामनाम हमारे मनमें अेक सजीव बल अिसलिअे बन गया कि अुसके पीछे हमें रामनाम प्रदान

करनेवालेकी अद्वितीय तपश्चर्या थी। यही बात खादी-आन्दोलनकी भी है। खादीके पीछे खादीके समर्थकोंकी तपश्चर्या होनी चाहिये। मेरे मनमें यह विचार हर क्षण बना रहता है कि जिन लोगोंने अपने जीवन खादीको अर्पण कर दिये हैं वे अगर जीवनकी शुद्धताका सतत आग्रह नहीं रखेंगे तो खादी पर हमारे देशवासी नाक भौं सिकोड़ेंगे।

यंग अिंडिया २२-९-'२७

५५

कताअी आत्मदर्शनका साधन

आप पूछ सकते हैं कि चरखेके द्वारा अीश्वर-प्राप्ति कैसे संभव है। जैसा मैं आपको पहले बता चुका हूँ, चरखा करोड़ों लोगोंके साथ हमारा तादात्म्य कराता है। करोड़पति लोग समझते हैं कि संसारमें रुपया अुन्हें कोअी भी चीज प्राप्त करा सकता है। परन्तु बात अैसी नहीं है। मौत किसी भी समय आकर अुनके जीवन-दीपको बुझा सकती है। कुछ लोग रोग छूतके शिकार होते हैं। परन्तु अिस तरह अपने प्राण गंवाना और 'अहं' को छोड़ना अेक ही चीज नहीं है। अीश्वर प्राप्तिके लिअे स्वार्थ और अहंकारको स्वेच्छासे और अीश्वरके प्रति निर्व्याज पवित्र बलिदानके रूपमें मिटा देना सीखना पड़ता है। चरखेमें अहंभावके लिअे स्थान नहीं है। वह गरीबसे गरीबके साथ [illegible] प्रतीक है। अिसलिअे वह चाहता है कि हम नम्र बनें और [illegible] पूरी तरह छोड़ दें।

जब अहंभाव छूट जायगा तब हमारे बाहर [illegible] जीवनकी परछाईं पड़ेगी। वह हमारे [illegible] होगा। हमारा जीवन-संबंधी सारा दृष्टिबिन्दु [illegible] कुछ करेंगे वह अपने खुद अहंके लिअे नहीं [illegible]

ओीश्वरको खोजके लिओ वहां बाहर जानेकी आवश्यकता नहीं। वह हमारे हृदयमें निवास करता है। परंतु अगर हम वहां स्वार्थ या अहंकारको प्रस्थापित कर लेते हैं तो हम बेचारे ओीश्वरको सिंहासन च्युत कर देते हैं। मैंने यहां 'बेचारा' विशेषण जानबूझकर अिस्तेमाल किया है। क्योंकि यद्यपि वह राजाओंका राजा सबसे अूंचा और सर्वशक्तिमान है, फिर भी वह असे हर व्यक्तिकी सेवाके लिओ अुसके संकेतमात्र पर हर दम तैयार रहता है जिसने अपने आपको शून्य बना लिया है और जो अत्यंत नम्र भावसे ओीश्वरोन्मुख हो गया है। अिसलिओ आअिये हम नम्रभाव रखकर असे अपने ही भीतर खोजें।

हरिजन १३-१-'४६

५६
वेदोंमें चरखा

औंधके पंडित सातवलेकरजीने १९२२ में हिन्दीमें 'वेदमें चरखा' नामक अेक पुस्तिका लिखी थी और जब मैं यरवडा जेलमें आराम कर रहा था तब अुन्होंने कृपा करके मुझे अुसकी अेक प्रति भेजी थी। यहां ग्रंथकार द्वारा अद्धृत ऋग्वेद १०.५३.६ का जिसे कातने और बुननेवालोंका मूल मंत्र कहा जा सकता है स्वतंत्र अनुवाद दिया जाता है :

> 'सूत कातकर और अुस चमकदार रंग देकर गांठोंके बिना बुन लो और अिस प्रकार अुन मार्गोंकी रक्षा करो जो ज्ञानियोंने अंकित किये हैं और अच्छी तरह विचार करके आम वाली संतानोंको दिव्य ज्योतिका मार्ग दिखाओ या (ग्रंथकारके अनुवादके अनुसार) दिव्य संतान अुत्पन्न करो। सचमुच कवि योंका यही काम है।'

अगर अनुवाद कुछ भी सही है — और लेखकने केवल अपना ही अनुवाद नहीं दिया है, बल्कि अपनी पुस्तिकामें ग्रिफिथका अनुवाद

भी अुद्धत किया है—तो जिस मत्रसे न केवल यह साबित होता है कि वदिक कालमें कताओका अस्तित्व था परन्तु यह भी प्रमाणित होता है कि यह छोटसे छोटे और अूचस अूसे स्त्री-पुरुष दोनोका धधा था। यह अुन मार्गोंमें स अेक था जिन्हें ज्ञानियोंने तयार किया था और जिनकी रक्षा करना कवियोका काम था। जब मने हमारे कवि सम्राटके सामने यज्ञके रूपमें नम्रभावसे चरखा पश किया था तब मुझे क्या मालूम था कि मेरे पीछे सबस प्राचीन समने जानवाले वेदका प्रमाण है? जो लोग जिस प्राचीन और पवित्र अुद्योग तथा कलाका पुनरुद्धार करनेके काममें लगे हुअ ह अुन सबस म जिस मत्रकी सिफारिश करता हू। यज्ञार्थ कताओ करते समय वे जिस मत्रका विचार पूवक जप करें। वे अुस अपने हृदयाम अकित करके रखें और अपनी आगेकूचमें निराशाअें और हार होन पर भी अपनी श्रद्धा अविचलित रखें।

जिस पुस्तिकामें से अेक और सुदर मत्र अुद्धत किये बिना म नही रह सकता। वह भी ऋग्वेद १० १३० १ में स है। अुसका अथ यह है

> यज्ञमें अेक सौ अेक कलाकार काम कर रहे ह और वह लाखो धागोंके द्वारा पृथ्वीतल पर फला हुआ है। यहा बुजुग सरक्षक अुपस्थित हैं। वे जिन प्रक्रियाओको ध्यानसे देख रह ह और कह रहे ह 'यहा बुनो यहा वह सुधारो।

जिस प्रकार हम देखते ह कि अुस प्राचीन कालमें कताओ और बुनाओको अेक यज्ञ माना जाता था और बुजुग अुसकी सावधानीसे रक्षा करते थे। ग्रथकारने प्रचुर प्रमाणोसे सिद्ध किया है कि कताओ और बुनाओ स्त्री-पुरुष दोनो करते थे। वास्तवमें यह अुद्योग अुतना ही सार्वत्रिक था जितना खेती।

यग अिडिया २-६-'२७

५७

चरखा मंडल

१ चरखा मंडलके सदस्य प्रति वर्ष ६ गुण्डी सूत या प्रति मास ३२० तार देंगे। शर्त यह है कि सूत मंडलके निश्चित किये हुअे दिनोंमें और सामूहिक कताअीके लिअे निश्चित किये हुअे स्थान पर काता जाय। सदस्योंको तुनाअी द्वारा अपनी पूनियां आप बनाकर अुन्हें कातना होगा। अैसे सदस्य सहयोगी सदस्य कहे जायेंगे।

२ सहयोगी सदस्य १ रुपया प्रवेश शुल्क देगा और कलम नं० १ के अनुसार काते हुअे सूतके ३२ तार प्रतिमास देगा। जब तक वह सूतकी मासिक मात्रा देता रहेगा तब तक वह सहयोगी सदस्य रहेगा।

३ महीनेमें कब और कितने दिन सामूहिक कताअी हो अिसके लिअे जरूरी नियम स्थानीय मण्डल खुद बना लेंगे। जो दो मास तक निश्चित मात्रामें सूत नहीं दे सकेगा अुसका नाम सदस्य सूचीसे काट दिया जायगा। अगर वह फिर सदस्य बनना चाहेगा तो अुसे दुबारा प्रवेश शुल्क देना होगा। अेक ही सालमें कोअी तीसरी बार सदस्य नहीं बन सकेगा।

४ प्रत्येक महल्ले ग्राम और छोटे कस्बेमें अैसे मंडल खोलनेका प्रयत्न होना चाहिये। प्रत्येक जिले या प्रांतके लिअे अेक केन्द्रीय कार्यालय हो सकता है।

५ अैसा अिरादा है कि सारे देशमें प्रति मास अेक राष्ट्रीय दिवस नियत किया जाय। अुस दिन सब मंडलोंमें अेक ही समय पर सामूहिक कताअी रखी जाय।

६ विविध स्थानोंमें मंडलोंके साथ साथ कताअी वर्ग शुरू करनेकी कोशिश की जा रही है। अिन वर्गोंमें सलाअी द्वारा

अठाअीस गुण्डे करके लुनाअी पूनी बनाअी और कताअी तककी विविध प्रक्रियाअें सिखाअी जायेंगी। प्रवेश-शुल्क अेक रुपया होगा। चरखा-वर्गमें अिन प्रक्रियाओंको सीख लेनेके लिअे अेक महीनेके भीतर जो मंडलमें सम्मिलित होंगे अुन्हें मंडलमें भरती होनेके लिअे अेक रुपया और नहीं देना पड़ेगा। अुन्हें सिर्फ ३२० तार सूत ही देना होगा।

७ यद्यपि प्रति मास काता हुआ सूत मंडलका होगा फिर भी सर्वार्पित कातनेवाला अिस सूतसे खादी खरीद सकेगा। खादी खरीदनेमें सहयोगी सदस्योंको प्राथमिकता दी जायगी।

मनु गांधी

चरखा मंडल भंगी बस्तीमें चल रहे तीन कताअी-वर्गोंमें से निकला है। काश असे मंडल देशभरमें पैदा हो जायें! असा होनेसे पहले दिल्लीमें कअी मंडल खुल जाने चाहिये। खेलकूद और मनोरंजनके लिअे कअी क्लब हैं। राष्ट्रीय कार्यके लिअे अनेक मंडल क्यों न हों?

हरिजन २७-१०-४६

क — कताओीकी मजदूरी

५८

निश्चित और समान मजदूरीकी जरूरत

खादीको व्यवसायकी चीज बनानेके प्रयत्नमें चरखा सघ पर अब तक प्रचलित भावोका मुख्य प्रभाव रहा है। फल यह हुआ है कि किसी भी तरहकी मेहनतके लिओ सब मजदूरियोंमें कताओीकी मजदूरी खराबसे खराब रही है। मजदूरिया विविध प्रान्तोंमें विविध रही है। अिसलिअ खादीके भाव भी प्रान्त प्रान्तमें अलग अलग रहे है। जिन्हें सिर्फ मुनाफा ही करना है असी सस्थाओके लिअ तो यह ठीक है कि वे अिस तरहकी घातकी स्पर्धाको सहन करें और अुत्साहित भी करें मगर जिन सस्थाओका अेकमात्र हेतु करोडो लोगोकी सेवा करना है वे असी स्पर्धामें शरीक नही हो सकता। कोओी कारण नही कि बिहारकी अेक कत्तिनको अपनी गुजराती बहनसे कम मिले। बेशक भिन्न भिन्न प्रान्तोंके भावोमें फर्क है क्योंकि रहन-सहनके मापदण्डोंमें फर्क है। परतु चरखा सघ वस्तुस्थितिको जसी वह है वसी ही कायम रखनेकी बात नही मान सकता। अगर वह अन्यायपूर्ण है तो सघको असे बदलना पडेगा। अिसका भी कोओी कारण नहा कि अक घटेकी कताओीकी मजदूरी अक घटकी बुनाओीसे कम हो। साधारण बुनाओीसे कताओीमें ज्यादा कारीगरी है। सादी बुनाओी तो निरी यान्त्रिक प्रक्रिया है। लेकिन सादीसे सादी कताओीमें भी हाथकी कारीगरीकी जरूरत होती है। फिर भी जहा बुनकरको कमसे कम छह पाओी फी घटा मिलती ह वहा कत्तिनको अक पाओी ही मिलती है। पिंजारेको भी ज्यादा मिलता

है यानी लगभग अुतना ही जितना बुनकरको। अिस अवस्थाके लिअे अैतिहासिक कारण हैं। परन्तु अैतिहासिक होनेसे ही वे न्यायपूर्ण नहीं हो जाते। संघके लिअे अब समय आ गया है कि वह जितने प्रकारके परिश्रमका नियमन करता है अुसे मूल्य स्थिर न भी कर सके तो समान अवश्य कर दे। कअी जगह अिसमें बुनकरको जहां अेक आना प्रति घंटेसे अधिक मिलता है वहां अुसे अपनी मजदूरीका स्तर घटानेको कहना पड़ेगा। संभव है अैसा समय कभी न आये कि बुनकर स्वेच्छासे अिस समीकरणकी प्रक्रियाके लिअे रजामंद हो जाय। परन्तु यदि सब प्रकारके अुत्पादक श्रमके लिअे समान मजदूरीका सिद्धान्त सही है, तो संघको आदर्शके अधिकसे अधिक निकट पहुंचनेकी कोशिश करनी ही चाहिये। अगर पूरी छलांग अेकदम नहीं मारनी है तो कत्तिनोंकी मजदूरीका घंटेभरके अच्छे कामके लिअे अच्छा स्तर तक बढ़ा कर हमें अिस दिशामें शुरुआत अवश्य कर लेनी चाहिये।

मेरी योजनामें यह फर्ज ही मान लिया गया है कि कत्तिनके जीवनसे कार्यकर्ताओंका सजीव संपर्क रहेगा। जो संघ मजदूरीमें आशासे अधिक वृद्धि करेगा वह यह भी देखेगी कि जो पैसे वह बांट रहा है वे किस तरह खर्च होते हैं। अगर मजदूरी शराबखोरी या ब्याह-शादी या दूसरी दावतोंमें अुड़ा दी जाय तो मुफ्तमें मजदूरी बढ़ाना बेकार होगा।

हरिजन ६-७-'३५

अखिल भारत ग्रामोद्योग संघने अपने प्रतिनिधियों (अेजेंटों) और दूसरे लोगोंको निम्नलिखित प्रश्नावली भेजी है। अिन प्रश्नोंके अुत्तर केन्द्रीय कार्यालय वर्धामें अगली १ अगस्तसे पहले पहुंच जाने चाहियें:

> यह प्रस्ताव पास है कि अखिल भारत ग्रामोद्योग संघकी देखरेखमें तैयार होने या बेची जानेवाली तमाम चीजोंके संबंधमें देहाती कारीगरको अुसकी मेहनतका पर्याप्त पारिश्रमिक मिले अैसा आग्रह हमें रखना चाहिये। अिस हेतुके लिअे मजदूरीका

कोओ समान व्यावहारिक मान स्थिर करना जरूरी होगा। यह मान समान मात्रावाले कामके लिअ स्त्री-पुरुष दोनोंके लिअ अेक ही होना चाहिये। अिसका आधार आठ घंटेके दिन और निश्चित की हुआी कमसे कम अुत्पत्ति पर रखा जा सकता है। यह मजदूरी खर्चमें जुड़ेगी और भाव अुसीके अनुसार कायम होने चाहिये। आम तौर पर स्पर्धावाले बाजारमें हम निश्चित भाव नहीं ठहरा सकते, मगर जो पदार्थ स्पर्धामें नहीं अुतरते और जिस मालको विशेष गुणोंके कारण ग्राहक चुनता और पसन्द करता है, अुनके भाव हम स्थिर कर सकते हैं।

यह प्रश्नावली नीचे लिखे मुद्दों पर आपकी राय जाननेके लिअ भेजी जा रही है :

१ क्या आप अिसे व्यावहारिक समझते हैं कि कमसे कम दैनिक मजदूरी स्थिर कर दी जाय और भाव स्थिर करके मजदूरके लिअ अुस मजदूरीकी गारंटी कर दी जाय?

२ हम मजदूरीका अपना अंतिम मान निश्चित कर लें और अुत्तरोत्तर अुसकी ओर बढ़ते जायं या शुरूमें अेक अल्पतम दर निश्चित करें और असे धीरे धीरे अूंची करते जायं?

३ मजदूरीके अिस मानका निर्णय किस आधार पर होना चाहिये? क्या आप फिलहाल सिर्फ भोजनका विचार करके ही काफी गुजारे लायक मजदूरी सुझा सकते हैं, क्योंकि कपड़ा तो व्यक्तिगत प्रयत्नसे बनना चाहिये? आधा आना फी घंटा बहुत कम तो नहीं होगा?

चरखा संघ और ग्रामोद्योग संघ जैसी परोपकारी संस्थाअें सस्तेसे सस्ता खरीदने और महंगेसे महंगा बेचनेके व्यापारिक सिद्धांतका अनुसरण नहीं कर सकतीं। अवश्य ही चरखा संघने सस्तेसे सस्ता खरीदनेकी कोशिश की है। ग्रामोद्योग संघको खादीके विकासके अपने अनुभवका लाभ देनेकी अिच्छासे मैंने कमके असरमें काम करनेवाले कारीगरोंको मिलनेवाली मजदूरीके विषयमें चर्चा आरंभ की। यह प्रश्नावली अुसीका परिणाम है।

अिस बातका पता तो पहले ही लग चुका है कि प्रतिनिधियोंमें कमसे कम कीमत पर आवश्यक पदार्थ तैयार करनेकी प्रवृत्ति है। कारीगरकी कमाअी पर कुल्हाड़ी न चलाअी जाय तो और कहां चलाअी जाय? अिसलिअे अगर कम से कम दर निश्चित की गयी तो देहाती कारीगरको नुकसान पहुंचनेका पूरा खतरा है यद्यपि अुसीके खातिर ग्रामोद्योग संघका जन्म हुआ है।

गरीब घरवाली ग्रामीणोंका शोषण हमने बहुत दिन तक किया। अब ग्रामोद्योग संघ परोपकारकी आड़में अिस शोषणको तीव्र न करे। अुसका अुद्देश्य सस्तेसे सस्ते देहाती पदार्थ तैयार करना नहीं है, अुसका अुद्देश्य है ठीक न्यायके मजदूरी पर बेकार ग्रामीणोंको काम देना।

कुछ लोगोंने यह दलील दी है कि यदि किसी भी कारणसे देहातमें बनी वस्तुओंका मूल्य बढ़ाया गया तो अुससे वह अुद्देश्य विफल हो जायगा जिसके लिये ग्रामोद्योग संघ स्थापित किया गया है, क्योंकि यह कहा जाता है कि अगर भाव बहुत अूंचे हुअे तो देहाती वस्तुओंको कोअी नहीं खरीदेगा। मगर किसी वस्तुकी कीमत बहुत ज्यादा मानी ही क्या जाय यदि वह बनानेवालेको सिर्फ गुजरके लायक मजदूरी देती है? ग्राहकोंको यह समझाना पड़ेगा कि लोगोंकी कैसी बुरी हालत है। अगर हमें करोड़ों श्रमिकोंके प्रति न्याय करना है तो हमें अुनका हक देना ही चाहिये। हमें अुन्हें अैसी मजदूरी देनी चाहिये जिससे अुनका गुजर हो सके। हमें अुनकी लाचारीसे फायदा अुठाकर अैसी मजदूरी नहीं देनी चाहिये जिससे अेक जून भी अुन्हें पूरा खानेको न मिले।

यह बिलकुल स्पष्ट है कि चरखा संघको मिलोंके साथ स्पर्धा करनेसे अिनकार कर देना चाहिये। जिस बाजीमें हम जानते हैं कि हमें हारना ही पड़ेगा अुसमें हमें भाग नहीं लेना चाहिये। रुपये पैसेकी दृष्टिसे बड़े बड़े व्यापारिक संघ, वे देशी हों या विदेशी, मनुष्यके हाथकी बनी हुअी चीजोंको भावमें हमेशा ही हरा सकते हैं। चरखा-संघ तो झूठे और अमानुषिक अर्थशास्त्रके स्थान पर सच्चा और

मानव अथगास्त्र चलाना चाहता है। मानव प्राणियोका धम हत्यारा स्पर्धा नहीं जीवनदायी सहयोग है। सहृदयताकी अुपेक्षा करना यह भूल जाना है कि मनुष्यमें भावना है। अगर हमें अीश्वरने स्वय अपना प्रतिरूप बनाया है तो हम चद लोगोकी भलाओी नहीं बहुतोकी भलाओी भी नहीं परतु सबकी भलाओी करनेको बनाये गये ह।

ग्रामोद्योग सघ जसी परोपकारी सस्था अिस प्रश्नावलीमें निहित समस्याओका विचार करनेसे बच नहीं सकती। अगर सच्चा हल अव्याव हारिक दिखाओी देता है तो अुसे व्यावहारिक बनानेका प्रयत्न करना अुसका धम है। सत्य सदा व्यावहारिक होता है। अिस तरह सोचा जाय तो मधके कायक्रमको प्रौढ शिक्षा कहना ठीक ही होगा।

और अगर सघको अपने अधीन काम करनेवाले कारीगरोको गुजरके लायक मजदूरी दिलानी है तो अुसे अिस बातका भी पता लगाना चाहिये कि अुसका कारीगर अपनी गृहस्थीकी किस मदमें क्या खच करता है। अुसे देखना चाहिये कि अुसके दिये हुअे अेक-अेक पसेका क्या अुपयोग हो रहा है। सबसे कठिन प्रश्न तो कमसे कम या जीने लायक मजदूरीका प्रमाण तय करना है। मने सुझाया है कि आठ घण्टेका कठोर परिश्रम करके अच्छी योग्यतावाला कारीगर अमुक माल जितनी मात्रामें तयार करता है अुसका विचार करके आठ घटेके परिश्रम पर आठ आना मजदूरी दी जाय। आठ आने तो जीवनकी आवश्यकताओकी अमुक मात्रा बतानेवाला प्रतीकमात्र है। अगर पाच आदमियोंके परिवारमें दो पूरा काम करनेवाले ह तो व प्रस्तावित दरसे ३० रुपये मासिक कमायेंगे। अिसमें कोओी छुट्टी या बीमारीका समय शामिल नहीं है। पाच खानेवालोंके लिअे तीस रुपया मासिक कोओी बहुत बड़ी आमदनी नहीं है। यहा जिस पद्धतिका प्रस्ताव किया गया है अुसमें अवश्य ही स्त्री-पुरुष या अुम्रका भदभाव नहीं रखा गया है। परतु प्रत्यक निर्णायक अपने निजी अनुभवके आधार पर अुक्त प्रश्नोका जवाब दे।

हरिजन १३-७-३५

जो बात ग्रामोद्योग संघके मारफत काम करनेवाले कारीगरोंके लिअे सही है वह चरखा संघ द्वारा काम करनेवालोंके लिअे भी अुतनी ही सही है। फर्क जितना ही है कि ग्रामोद्योग संघको साफ पट्टी पर लिखना है — अुसका काम शुरू ही हो रहा है। लेकिन चरखा संघको यदि अुसे सबके लिअे कमसे कम समान मजदूरी जारी करनी है तो पन्द्रह बरसकी पुरानी परम्पराको मिटाना होगा। बहुसंख्यक कत्तिनोंकी मदद करनेमें अुन बुनकरोंसे जो कत्तिनोंकी संख्याका दसवां भाग हैं, पिंजारोंसे, ओटनेवालोंसे और दूसरे लोगोंसे भी निपटना होगा। प्रत्येककी मजदूरी भिन्न है। बुनकरोंकी कमाअी और कत्तिनोंकी कमाअीका अन्तर जितना बड़ा है कि अुसमें समानताकी गुंजाअिश दिखाअी नहीं देता। जहां कत्तिनको दो पाअी प्रति घंटे मिलती हैं वहां जुलाहेको कमसे कम अेक आना और बहुधा दो आने मिल जाते हैं। कत्तिनोंको दोसे बारह पाअी तक ले आना बहुत बड़ी समस्या है, खास तौर पर जब हम यह याद रखें कि अुनकी संख्या लगभग डेढ़ लाख है।

परन्तु संघको अपने प्रति लोगोंका जो विश्वास है अुसका पात्र बनना हो तो अुसे महान् प्रयत्न करनेकी हिम्मत पैदा करनी होगी। कठिनाअियां सामना करनेको होती हैं, न कि हमें कायर बनानेको। हमें विश्वास रखना होगा कि जो लोग दरिद्रनारायणके प्रेमके खातिर खादी खरीदते हैं वे पहलेसे ज्यादा दाम अदा कर देंगे। अगर यह विश्वास गलत है तो बिक्रीमें कितनी ही बड़ी कमी हो जाय तो भी अुसका सामना हमें करना होगा। जिन्हें खादीसे प्रेम है वे अुसे किसी भी भाव खरीदेंगे, अगर अुन्हें मालूम हो कि सौमें से पचानवे रुपये दरिद्रनारायणकी जेबमें जाते हैं।

यह अच्छा ही है कि हम कत्तिनोंको काफी मजदूरी देकर अपनी भूल सुधार लें। वह आठ आने रोज हो या कम? वह यथाशक्य कुछ भी हो, कत्तिनसे प्रति घंटे कितने सूतकी आशा रखी जाय जिससे वह निश्चित मजदूरी पानेकी हकदार हो जाय? यही प्रश्न ओटनेवालों

कठिनाअियाँ पर तो विजय प्राप्त करनी ही होगी। क्या मैं नहीं जानता कि काफी लम्बे समय तक यह दारुण कथा चलती रहेगी — कुछ लोग कहेंगे कि हम कत्तिनोंको अपने मुद्देके लिअ कातनेको राजी नहीं कर सकते, कुछ कहेंगे कि हम अुनसे अपनी आवश्यकतानुसार काम नहीं करा सकते।

मगर मान लीजिये कि वे हमारे नियमोंका पालन करती हैं और हम अुन्हें पहलेसे अच्छे यन्त्र और सलाह देते हैं, तो वे अपने आप अधिक काम और दुगुनीसे ज्यादा मजदूरी कर लेंगी।

यह तो वे अपने आप करेंगी, परन्तु अिसमें आप क्या पुण्य करेंगे? यह तो स्पष्ट ही है कि जितनी अधिक अुत्पत्ति अुतनी ही अधिक कमाअी होगी। परन्तु जिस न्यायसे हमने अुन्हें वंचित रखा है अुसके लिअ हम क्या करने जा रहे हैं?'

गांधीजीने अुपसंहार करते हुअ कहा, "नहीं, हमें भूल जाना पड़ेगा कि खादीकी मिलके कपड़ेसे स्पर्धा है। मिलका कपड़ा मिलका कपड़ा है और खादी खादी है। मिलके कपड़ेका अुत्पादक सदा अुसे सस्ता बनाने पर शक्ति केंद्रित करेगा, हमें न्याय और न्यायपूर्ण मजदूरी पर अपनी शक्ति केंद्रित करनी होगी। अिसलिअ दोनोंकी कोअी तुलना नहीं हो सकती। रही बात व्यावहारिक कठिनाअियोंकी। सो हम अपना व्यवस्था-खर्च कम कर दें, विज्ञापन बंद कर दें और खानगी मुनाफा दुकानका नाम न लें। असमें अुन लोगोंकी परीक्षा होनेवाली है जो खादीके लिअे प्रतिज्ञाबद्ध हैं। वे या तो खादी खुद तैयार करें या अपने भाअियों और बहनोंको गुजरके लायक मजदूरीके दाम चुकायें। यह तमाम खादी पहननेवालोंकी आत्मशुद्धिका सवाल है। हम यह न भूल जायँ कि हमारा अुद्देश्य दरिद्रनारायणकी सेवा करना है। कठिनाअियाँ हो सकती हैं, मगर हम अुन्हें धीरे धीरे हल कर लेंगे।"

आम तौर पर अिस बातमें सहमति मालूम हुअी कि जहाँ कहीं संभव हो, यह प्रयोग शुरू कर दिया जाय और कत्तिनोंके लिअे मजदूरी भिन्न भिन्न भले ही हो, मगर वह बढ़ी हुअी होनी चाहिये।

हरिजन १०-८-३५

५९

शुरुआत कैसे करें ?

खादीके कारीगरोंके लिअ मजदूरीकी दर स्थिर कर दी जाय या न्यूनतम मजदूरी तय कर दी जाय, मगर काफी परिवर्तन निश्चित प्रतीत होता है। अेक विरोधी मतके सिवा अब तक जो बहुतसी रायें मिली हैं, अुनमें से किसीने भी बढ़ी हुआी दर निश्चित करनेके पर प्रस्तावका विरोध नहीं किया है। आठ आनेवाले प्रस्तावको अभी तक कोअी समर्थक नहीं मिला है। कुछ लेखक आठ आनेवाले प्रस्तावको खादीके लिअ घातक समझते हैं। वे कहते हैं कि अुस सूरतमें खादीकी कीमत अितनी अधिक बढ़ जायगी कि अुसके बहुत थोड़े ग्राहक रह जायेंगे। कुछ भी हो, किसी भी अुल्लेखनीय परिवर्तनमें कुछ शर्तें तो पूरी करनी ही होंगी। अिसलिअ समयसे पहले ही चेत जाना और जहां भी संभव हो नीचे लिखी बातों पर तुरन्त अमल शुरू कर देना बुद्धिमानी होगी :

१ कार्यकर्ताओंको कपास चुननेसे लेकर बुनाअी तककी सब प्रक्रियाओंमें पारंगत हो जाना चाहिये, ताकि वे दूसरोंको सिखा सकें।

२ संगठन करनेवालोंको अपने अपने हल्के या जिलेमें तमाम पिंजारों, कत्तिनों, जुलाहों आदिकी सूची तैयार करना चाहिये।

३ अुन्हें मालूम होना चाहिये कि अुनकी कत्तिनें कौनसी रुअी काममें लेती हैं और अुससे कितने नंबरका सूत कत सकता है। अुससे अूंचे नंबरका न कातने दिया जाय।

४ कत्तिनों और दूसरे कारीगरोंको चेतावनी दे देना चाहिये कि अगर वे अपने अपने घरोंमें खादी अिस्तेमाल नहीं करेंगे, तो अुन्हें काफी काम नहीं मिलेगा।

५ जिन कारीगरोंको यह चेतावनी दी जाय, अुनके लिअ असी सुविधायें कर दी जायं जिनसे वे अपने परिश्रमके बदलेमें हमेशा खादी ले सकें।

६ सूतकी अब अब मुद्दी जो भिन्न अुसकी समानता और वसकी जाच की जाय और जमे वम सिकी राटी नही ली जाती वसे ही असमान और कच्चा सूत भी न लिया जाय।

७ आम तौर पर प्रत्यक धत्तिनका सून अलग जमा किया जाय और जब अब थानके लायक हो जाय तब अलग ही वना जाय। जिससे खादीके टिकाअूपन अुसकी बनावट तथा असके स्वरूपमें सर्वांगीण सुधार निश्चित हो जायेंगे।

८ अिस प्रकार तयार हुअ सब थाना पर कागज चिपका होना चाहिये जिसमें ओटनवाला पीजनवाला कातनेवाला और वुननवालेके नाम दिय जाय जहा व सब अलग अलग व्यक्ति हा।

९ जहा कारीगर गृहस्थी हो वहा अुन्हें सारी प्रक्रियाअें अपन ही घरामें करनेके लिअ रजामद और प्रोत्साहित किया जाय। जब मज दूरी समान या लगभग समान हो जायगी तब यह काम आसान होगा।

१ जो परिवार कायकर्ताओंके असरमें आयें अुनके जीवन और आय-व्ययका ध्यानपूवक अध्ययन किया जाय और जो अपनी कमाअी विवेकपूवक खच करते है अुन्हें मदद दी जाय।

११ सब जिन कारीगरोकी सेवा करता है अुनकी सख्याको ग्राहकोंकी कमीके कारण कभी घटाना जरूरी हो जाय तो पहले अुन्हें अलग किया जाय जिनके पास आजीविकाके दूसरे साधन हो। मुझे मालूम हुआ है कि आजकल कअी प्रान्तोंमें कातनवाली बहनें व ही नहीं है जो सबसे ज्यादा मोहताज है बल्कि मितव्ययी स्त्रिया भी है जिन्हें अधिक अच्छे भोजनके या कज चुकानेके बजाय अपने लिअ कुछ छोटी छोटी चीजें खरीदनेको थोडासा रुपया चाहिये।

१२ हर जगह कायकर्ताओंको धनक्रिया और चरखाकी ध्यान पूवक परीक्षा करनी होगी। खास तौर पर अुन्हें देखना होगा कि तकुअ कसे हैं और व कसे घूमते है। कारण मजदूरीमें प्रस्तावित वृद्धि अपने आप हरगिज नहीं हो जायगी। वह कुछ तो अतने ही समयमें पहलेसे ज्यादा और बेहतर माल तयार करनेसे मिलगी और कुछ अपन

आप होगा। अगर खादीकी माँग न बढ़ी तो किसी भी कातनेवालेको जो अपने कामके ढंगमें सुधार नहीं करेगा वृद्धि नहीं मिलेगी।

१५. पिछली शर्तसे यह निश्चय निकलता है कि पहली बार तो संघ आसान शर्तों पर नये यंत्र या पुर्जे मुहैया करेगा। कअी जगह माल और तकुओंमें अपने आप अधिक परिवर्तन होने लगेंगे और कपड़ा बढ़िया निकलने लगेगा।

ये सब शर्तें तभी पूरी हो सकती हैं जब कार्यकर्ता अच्छी तरह समझ लें कि अुनके सामने अेक बड़ा लक्ष्य है और वे आधा भूखा या पूरा भोजन न पानेवाले कारीगरों और मजदूरोंके अेक विशाल परिवारके ही सदस्य हैं।

हरिजन २७-७-'३५

६०

अूँचे भाव

यह खादीके प्रेमियों, दरिद्रनारायणके भक्तोंको चेतावनी देनेके लिये है कि खादीके भाव जरूर अूँचे जाने चाहियें। खादी-कार्यकर्ताओंमें अधिक कला और कारीगरीका विकास होना ही चाहिये और खादीके उत्पादन और वितरणसे सम्बन्ध रखनेवाले सब वर्गोंमें त्यागकी अधिक भावना जाग्रत की जानी चाहिये। मिश्री महाराज क्रमशः भावोंकी कमी लिवाजमें गढ़ी मानी है। मुझे वह समय याद है जब मैंने बहुत मोटी खादीका पहला थान अेक रुपया गजके अूपर बेचा था। अैसी मोटी खादीके आज दो आने नहीं मिलेंगे। वह खादी भंडारों पर रखा सड़ा जाता। कीमतोंकी यह कमी खादीके हर विभागमें क्रमशः कार्यक्षमता बढ़नेसे हुआ है लेकिन अिसकी ज्यादातर कीमत कातनेवालोंको चुकानी पड़ी है। फिर भी कत्तिन दरिद्रनारायणकी प्रत्यक्ष मूर्ति है क्योंकि सारे भारतमें वह कमसे कम मजदूरी पानेवाला मजदूर है। यह अच्छा हुआ कि चरखा-संघके अधिकारियोंने पुराने कीमतोंके लिये अेक पाअी प्रति घंटा जैसी थोड़ी मजदूरी पर भी

अधिकसे अधिक व्यापक पमाने पर काम करना साधन जुटाया। परन्तु अस सौंपा हुआ काम पूरा करना हो तो कत्तिनके लिअ कमसे कम गुजारेके लायक मजदूरी जुटानी पडेगी। आगेसे चरखा सघकी रिपोर्टमें यह वर्णन नहीं होना चाहिये कि आलोचना-कालमें खादीकी कीमत कितनी कम हुआी है परन्तु असमें यह दिखानेमें गर्व होना चाहिये कि कताअीकी मजदूरीमें कितनी वृद्धि हुआी है। अस तब तक सन्ताप नहीं होना चाहिये मुझे तो नहीं हो सकता जब तक कि कत्तिनकी मजदूरी की घट जुलाहेके बराबर न हो जाय। खरीदार जनता याद रखे कि वह अिस ट्रस्टकी बनाम सरक्षक है और कत्तिनें असकी सरक्षित हैं। अक बार यह सबध अच्छी तरह समझ लिया जाय तो खादीकी नित-नयी प्रगति होनेमें कोअी कठिनाअी नहीं होनी चाहिये। काश प्रत्येक खादीप्रेमी अपना धर्म जान ले और खादी कार्यकर्ताओंमें जो अश्रद्धालु यह समझते हैं कि जनता खादीके लिअ अूची कीमत कभी अदा नहीं करेगी अनके डरको झूठा साबित कर दें।।।

हरिजन १ –८– ३५

६१
खानगी अुत्पादक सावधान रहें

जब कि खादी निर्माणमें काम करनेवाली कत्तिनों और दूसरे लोगोंको काफी मजदूरी देनेकी नअी नीति बन रही है तब खादीके प्रमाणित खानगी अुत्पादकोंका सवाल गभीर विचारके लिअ सामने आता है। खादीकी अेक बडी मात्राके लिअ वे जिम्मेदार हैं। सघका मजदूरी कमानेवालोंके प्रति जितना धर्म है अुतना ही अिन लोगोंके प्रति भी है। अनके साथ किये गये करार वाजिब तौर पर पूरे किये जाने चाहिये। परन्तु वह कर्तव्य यहां पूरा हो जाता है। चरखा सघका सारा सगठन कत्तिनोंके लिअ अेक सरक्षकके रूपमें है या चलाया जाना चाहिये और क्रमश अुनकी हालत सुधारी जानी चाहिये।

खानगी अुत्पादकोंको मुख्यतः कत्तिनोंके लाभके लिये प्रमाणपत्र दिये जाते हैं। अुन्हें अपना मुनाफा कत्तिनोंकी सेवा करके लेना चाहिये न कि अनकी कमाओी छीन कर, जैसा कि हमें मालूम हुआ है कि वे और दूसरे लोग कर रहे हैं।

परन्तु यदि वे संघके साथ प्रतिनिधियोंकी पद्धतिमें अपनेको मिला दें तो अुनको दिये गये प्रमाणपत्र वापस लेनेकी जरूरत नहीं है। मगर असा करनेके लिअे अुन्हें अपने कामका तरीका बिलकुल बदल देना पड़ेगा। अुन्हें अपना मुनाफा घटाकर सन्तोष करना पड़ेगा और हानि भी सहनी पड़ सकती है। संघकी शर्तोंके अनुसार अुन्हें जिन कत्तिनों और दूसरे श्रमजीवियोंकी वे सेवा कर रहे हैं अुनकी सूचियाँ रखनी होंगी। अुन्हें मजदूरी चुकानेका सबूत पेश करना और अुसके सम्बन्धमें आंकड़े जमा करना और मुहैया करना होगा। यह अुनके लिअे बहुत ही भारस्वरूप हो सकता है। खादीकी कीमत बढ़नेकी सम्भावनामें जो खतरा है वह अितना बड़ा हो सकता है जिसे वे बरदाश्त न कर सकें। संघकी शर्तें अुत्पादकोंके लिअे बहुत अधिक कठोर हो सकती हैं, क्योंकि निःसन्देह वे जो मुनाफा कर रहे हैं अुसके लिअे अुन्हें बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। जिनका यह खयाल हो अुन्हें अभीसे अपना खादीका व्यवसाय बन्द करना शुरू कर देना चाहिये। जो खादीका काम जारी रखना चाहते हों अुन्हें संघके प्रतिनिधियोंसे सम्पर्क साधना चाहिये। अुन्हें अितना जरूर जान लेना चाहिये कि शर्तोंके पालनमें जरासी भी गफलत होनेसे प्रमाणपत्र रद्द कर दिये जायेंगे। संघके साथ अुनका करारनामा जारी रहनेकी आवश्यक शर्त यह है कि हानि हो या न हो, बड़ीसे बड़ी प्रामाणिकता रखी जायगी। अिसलिअे अुन्हीं लोगोंको काम जारी रखना चाहिये जो खादीके प्रेमी और दरिद्रनारायणके सेवक हों और अुनके खातिर नुकसानकी परवाह न करें। जो स्वयं अपने शरीर और घरके लिअे खादी काममें न लेते हों अुन्हें करारनामेके जारी रहनेकी कोओी आशा नहीं रखनी चाहिये।

हरिजन, ७–९–३५

६२

न्यूनतम मजदूरी

जैसा कि अिस नामसे जाहिर होता है हमारा अुद्देश्य कम-से-कम मजदूरी पानेवाले मजदूरों अर्थात् कत्तिनोंके प्रतिनिधि बनना यानी अुनकी हालत सुधारना है। अिसलिअे हमें अुनकी स्थितिमें प्रगतिशील सुधार दिलाना पड़ेगा। आपको मेरा सबसे प्रारंभिक सूत्र याद रखना होगा जो आज भी अुतना ही लागू होता है जितना अुस वक्त था। वह सूत्र है हरअेक घरमें अेक चरखा और प्रत्येक गांवमें अेक करघा या करघे। यह आत्म निर्भर खादीकी कल्पना है। और अगर मैं आपको अपनेसे सहमत कर सकूं तो मैं चाहूंगा कि आप कत्तिनोंकी सेवा अुनकी खादी बेचकर नहीं बल्कि अुनसे अपने ही अुपयोगके लिअे खादी तैयार कराकर कीजिये। यह बात नहीं है कि अुनमें से कुछ फालतू खादी नहीं बनायेंगी। परंतु यह मांग पर ही निर्भर होगा। शहरके जो लोग हमारी खादी चाहेंगे अुनसे हम जरूर आर्डर लेंगे और वह खादी हम अुनसे बनवायेंगे जिन्हें अपनी दैनिक आवश्यकताके अनुसार प्रति घंटे मजदूरी मिलती हो। अिसका यह नतीजा हो सकता है कि खादीके मौजूदा भावमें कुछ समयके लिअे वृद्धि हो जाय। लेकिन हम अब लोगोंकी दरिद्रताका शोषण नहीं करेंगे। मैंने यह कभी नहीं कहा कि यह शोषण जान-बूझकर किया गया है। पिछले पन्द्रह वर्षमें हमने जो कुछ किया है असकी पूरी जिम्मेदारी मैं लेता हूं और जो कुछ हमने किया है वह अनिवार्य था। परंतु अब हमें नया रास्ता अख्तियार करना पड़ेगा। हमने सदियों तक जनसाधारणकी अुपेक्षा की है और जहां हमने अुनसे परिश्रम करानेका अधिकार अपने ही हाथमें ले लेनेकी धृष्टता की है वहां यह विचार तक हमारे मनमें कभी नहीं आया कि अुन्हें अपनी मजदूरी निश्चित करनेका हक है और जैसे रुपया हमारी पूंजी है वैसे ही श्रम अुनकी पूंजी है। अब समय आ गया है कि हम अुनकी

आवश्यकताओं, अुनके काम और अवकाशके घण्टों और अुनके रहन सहनके स्तरकी दृष्टिसे सोचने लगें।

हरिजन, १४-९-'३५

श्री गोपबन्धु चौधरीने बडी कटकसे लिखते हुअे ये तीन प्रश्न भेजे हैं:

१. आत्म निर्भर खादीमें बची हुअी खादीका क्या भाव रखना चाहिये?

२. अगर किसी ग्रामवासीके पास रुअी है, मगर अुसके परिवारकी आवश्यकतायें पूरी करनेको काफी न हो और वह अपने खुदके परिवारकी जरूरतोंके लिअे अपने गांवके या पड़ोसके गांवके लोगोंसे अपनी रुअी कतवाना चाहता हो, तो मजदूरी क्या होनी चाहिये? क्या व्यापारिक खादीके लिअे प्रस्तावित गुजारे लायक मजदूरी यहां लागू होगी? या वह आपसमें तय कर लेनेको छोड़ दी जायगी?

३. जब कतिनके पास अुसकी अपनी रुअी न हो और वह आजीविकाके लिअे नहीं, मजदूरी पर न कातकर रुअीके लिअे कातती हो और वह भी अुस वक्त तक जब तक वह अपनी जरूरतके कपड़ेके लिअे काफी न कमा ले, तो अुसकी मजदूरी क्या होनी चाहिये?

चरखा-संघके मारफत आनेवाली बचत खादीका भाव वही हो सकता है जो प्रान्तमें और किसी खादीका होगा। अब चूंकि शहरोंकी जरूरतके अलावा खादीकी अधिकांश बिक्री अुन्हीं प्रान्तोंमें सीमित रहेगी जहां वह बनाअी जायगी, अिसलिअे भिन्न भिन्न प्रान्तोंके भावोंमें शायद आजसे अधिक फर्क रहेगा। परन्तु बचत खादी और दूसरी किसी खादीमें कोअी भेद नहीं हो सकता। असलमें सारी खादी बचत खादी ही होगी, क्योंकि जो पूरी तरह खादीधारी नहीं होगा अैसे किसी भी व्यक्तिकी खादीको चरखा-संघ या अुसकी शाखायें स्वीकार नहीं करेंगी। अवश्य ही परिवर्तन-कालमें अिस नियमको ढीला रखना पड़ सकता है।

पहले अन्तरकी तरह ही जिसमें शक नहीं कि जहां तक मसका सम्बन्ध है आगे तो सभी कत्तिनोंको अधिक मजदूरी देनी पड़ेगी। परन्तु कत्तिनोंके अपने बीचके लेन-देनका नियन्त्रण संघ नहीं करेगा। अुन्हें अपने परस्परके सम्बन्ध खुद ठीक कर लेने देना चाहिये। दूसरी कोओ भी नीति असफल रहेगी।

तीसरे मामलेमें भी पहले दावा सिद्धान्त ही लागू होता है। याद रखनेकी बात यह है कि संघ गुजारेके लायक न्यूनतम मजदूरी देनेके लिअे वही जिम्मेदार रहेगा जहां असका सुदका सम्बन्ध आता होगा। अगर असकी नीति लोकप्रिय और अिसलिअे सामान्य हो जाती है तो अिसमें सन्देह नहीं कि कम मजदूरी पर काम कराना किसीके लिअे भी असंभव नहीं तो कठिन जरूर हो जायगा। और चरखा-संघ तथा ग्रामोद्योग-संघमें सहयोग अितना प्रबल हो सकता है कि और सब विभागोंका मापदण्ड तुरन्त अूंचा होकर बराबरी पर आ जाय। अिस प्रयत्नकी सफलताका आधार खरीदार जनताकी तरफसे हार्दिक अुत्तर मिलने पर रहेगा। अगर वे अच्छी तरह समझ लें कि जिन गरीब ग्रामीणों पर अुनका अस्तित्व निर्भर करता है अनका वे अब शोषण नहीं कर सकेंगे तो बेकारी और आधी भूखकी समस्या अपने आप हल हो जायगी।

हरिजन ५-१-३५

संघको जनताकी तरफसे मांग कम हो जानेके डरसे कत्तिनोंके साथ न्याय करनेसे विमुख नहीं होना चाहिये। लेकिन अगर जरूरत हो तो जिन कत्तिनोंको अपने खानेके लिअे कताओकी सहायताकी जरूरत नहीं है अुनका नाम अपनी सूचीसे निकाल देना पड़ेगा। हजारों नहीं तो सैकड़ों कत्तिनें असी हैं जो अन्न खरीदनेके लिअे नहीं परन्तु तम्बाकू, चूड़ियां या असी ही अन्य चीजें खरीदनेके लिअे कुछ पैसे प्राप्त करनेकी खातिर कातती हैं। अगर दबाव हो तो अुन्हें कहा जा सकता है कि जिन कत्तिनोंको अन्नके लिअे पैसेकी जरूरत है अुनके साथ वे स्पर्धा न करें। बहुत अधिक कत्तिनें असी ही हैं।

अिसलिअे कार्यकर्ताओंके सामने तो संघकी योजनाकी दृष्टिसे गरजमन्द कत्तिनोंको तलाश करनेका प्रश्न है। अिस व्याख्यामें वे छोटे छोटे किसान शामिल नहीं होंगे जो मजदूरोंसे काम लेते हैं, जिन्हें आम तौर पर भोजन-वस्त्रका अभाव नहीं होता और जो अन्न खरीदनेके लिअे अपनी जमीनें या दूसरी सम्पत्ति बेचनेको मजबूर नहीं होते। परन्तु संघ पूरा जोर लगाकर कताओी या कताओीसे सम्बन्ध रखनेवाला कोओी दूसरा काम देनेकी भरसक कोशिश करेगा और विश्वास दिलायेगा कि हरअेक धंधेमें ८ घंटे रोजके हिसाबसे कमसे कम गुजारेके लायक मजदूरी अुन सब भूमिहीन और सम्पत्तिहीन श्रमिकोंको अवश्य मिल जायगी जो चरखा-संघ या ग्रामोद्योग-संघ द्वारा दिये हुअे कामके बिना आधे या पूरे भूखे रहेंगे। दूसरी तरफ अिन संघोंको अुन लोगोंसे कोओी सरोकार न होगा जो और किसी तरहसे गुजर कर लेते हैं। अिसमें संघोंकी अिच्छाका अभाव नहीं होगा परन्तु सामर्थ्यका ही अभाव होगा। अगर ये संस्थायें अपने अुद्देश्यमें पूरी तरह सफल हो जायें तो अुनका हेतु ही पूरा नहीं होगा बल्कि अप्रत्यक्ष रूपसे वे और सब मेहनतियोंको भी मदद देंगी और अुनके नितान्त निराशामय जीवनको अेकदम आशामय जीवनमें बदल डालेंगी।

हरिजन ५-१-३५

चरखा-संघके मंडलकी अेक सभा अपनी खादी-नीतिमें नयी दिशा अपनानेके लिअे गांधीजीके प्रस्ताव पर गंभीर विचार करनेके लिअे हुअी। जैसा कि अेक सदस्यने कहा, पिछले पन्द्रह वर्षमें अुन्होंने जितनी बैठकोंमें भाग लिया था अुन सबमें यह बैठक गंभीर थी। जैसा कि संघ संस्थाने मंजूर किया, खादी-अुत्पत्तिमें तमाम श्रमजीवियोंके लिअे गुजारेके लायक मजदूरीका प्रस्ताव सीधा-सादा था और अुसका आधारभूत सिद्धान्त निर्विवाद था। परन्तु अुनमें से कुछको अुसे अमलमें लाना अत्यन्त जटिल प्रश्न मालूम होता था। नअी दिशामें महाराष्ट्रमें पहलेसे ही अमल होने लगा था और कुछ लोग कहते थे कि अुस प्रान्तके अनुभवकी प्रतीक्षा की जाय और अुससे लाभ अुठाया

अब अन्होंने अुसे छोड दिया है और श्री शंकरलाल बंकरका जो अुत्तर मिला है अनमें से अेक अुत्तर काठियावाड शाखाके मंत्रीजी आरम जिस शिकायत आया है कि अुन्हें नआ नीति पर कोअी आलोचना नहा करनी है और न कोअी राय जाहिर करनी है। क्योंकि यहांके केन्द्रमें खादी स्वावलम्बी शर्ती बननी है।

अिस चर्चाका परिणाम यह हुआ कि नीचे लिखा प्रस्ताव सवसम्मतिसे स्वीकार किया गया

अिस परिषदकी राय है कि अिस समय कताओकी जो मजदूरी दी जाती है वह काफी नहीं है और अिसलिअे परिषद निश्चय करती है कि असे बढाया जाय और कोअी अचित स्तर तय किया जाय जिससे कत्तिनोंको आठ घंटेके अच्छे कामके आधार पर निश्चित की गअी न्यूनतम मजदूरी मिल सके। वह अितनी जरूर हो जिससे २० गज वार्षिकके हिसाबसे कपडा और आहारकी कमसे कम आवश्यकताके अनुसार शास्त्रीय ढगसे निश्चित किये हुअ पैमाने पर आजीविका प्राप्त हो सके। जसे जस स्थिति अनकूल बनती जाय सभी सबधित लोगोंको मजदूरीकी दरें क्रमश बढानी चाहिये ताकि व असे स्तर पर पहुच जाय जिससे कातनेवाले परिवारका असके काम करनेवाल सदस्योंकी कमाअीसे अच्छा तरह गुजारा हो सके।

अिस प्रस्तावके आधारभूत सिद्धात पर अमल करनेमें चरखा सघके कार्यकर्ताओंको मार्गदर्शन करनेके लिअे सघकी तमाम शाखाओं और असके सबध रखनेवाली या और किसी तरह अुसके अधीन काम करनेवाली संस्थाओंको निम्न लिखित बातोंको अस समय तक सघकी निश्चित नीति मानना चाहिये जब तक कि परिषद अधिक अनुभवके प्रकाशमें असे बदल न द।

१ सघका मुख्य काय यह है कि कपडेकी जरूरतोंके बारेमें भारतके प्रत्येक घरको खादीके द्वारा स्वावलम्बी बना दिया जाय और खादीके कारीगरोंमें सबसे कम मजदूरी पानेवाली कत्तिनों तथा कपास अुगानेसे लगाकर खादीकी बुनाअी तककी भिन्न भिन्न प्रक्रियाओंमें लगे हुअ अन्य लोगोंका कल्याण-साधन किया जाय।

२ अिसके लिअे यह परम आवश्यक है कि जो खादी-अुत्पत्तिका काम करें वे भले ही कारीगर हों, विक्रेता हों या अन्य रूपमें खादी-अुत्पत्तिका काम करते हों, और किसी प्रकारका कपड़ा काममें न लेकर अपनी कपड़ेकी जरूरतें खादीसे ही पूरी करें।

तमाम शाखायें और सम्बद्ध संस्थायें अिस योजनाको अिस तरह कार्यान्वित करें कि कुछ भी नुकसान न रहे, अर्थात् वे अपनी अुत्पत्तिको अपने नजदीकके पड़ोससे शुरू करके अपने ही चुने हुअे अिलाकोंकी मांगके भीतर सीमित रखें और अपने प्रान्तसे बाहर कभी अुत्पत्तिका विस्तार न करें। जब दूसरे प्रान्त अपनी मांग पूरी करनेको कहें तब अपवाद किया जा सकता है।

४ अतिरिक्त अुत्पत्तिसे बचनेके लिअे अुत्पादक लोग अपना काम अुन कत्तिनों तक ही सीमित रख सकते हैं जो सारे वर्ष और अुसके कुछ भागमें अपनी रोजीके लिअे अेकमात्र कताअी पर ही निर्भर करती हैं। शाखायें और दूसरी संस्थायें अपनी तमाम कत्तिनों और दूसरे कारीगरोंका सही रजिस्टर रखें और अुनसे सीधा सरोकार रखें। भोजन और वस्त्रके लिअे मजदूरीके अुपयोगको निश्चित बनानेके लिअे मजदूरी पूरी या अुसका अेक हिस्सा पदार्थों यानी खादी या जीवनकी दूसरी जरूरी चीजोंके रूपमें चुकाया जा सकता है।

५ बाहर काम, अनुचित स्पर्धा या शहरी खपत बचनेके लिअे जहां अनेक अधिक खादी-अुत्पत्तिकी संस्थायें हैं वहां हरअेकका कार्यक्षेत्र पहलेसे निश्चित कर लिया जाय। संघ खानगी प्रमाणित अुत्पादकोंको प्रोत्साहन नहीं देगा। जो पहलेसे प्रमाणित हैं अुनमें से केवल अुन्हींको फिरसे प्रमाणपत्र दिये जायेंगे जो संघकी शाखाओं पर लागू होनेवाले नियमोंके अधीन काम करेंगे और तमाम जोखिम संघसे किसी सहायताकी आशाके बिना अुठायेंगे। अुनके साथ यह कठोर शर्त होगी कि समय समय पर बनाये जानेवाले नियमों अथवा दी जानेवाली सूचनाओंका जरा भी भंग होने पर अुनके प्रमाणपत्र अपने-आप रद्द हो जायेंगे।

६ यह समझ लेना चाहिये कि संघके मातहत काम करनेवाली तमाम संस्थाओंका यह पहला और परम आवश्यक कर्तव्य है कि वे

स्वावलम्बी खादीकी योजनाको बढ़ावा दें। शहरोंकी या खुदके लिअे न कातनेवाले शहरोंमें बाहरसे खादी न पहननेवालोंकी माग पूरी करनेके लिअे खादी-अुत्पत्ति करना गौण अथवा सहायक मंतव्य है। असी खादीको पैदा करना या बेचना किसी संस्थाके लिअे लाजिमी नहीं माना जायगा।

हरिजन १९-१-३५

जब कत्तिनोंके लिअे बढ़ी हुआी मजदूरीकी योजना शुरू की गआी थी तब बहुतसे कार्यकर्ताओंको अुसकी सफलताके बारेमें गंभीर शंकाअें थीं। अुन्हें लगता था कि अिससे खादीके भाव बढ़ जायंगे और बिक्री पर बुरा असर पड़ेगा। अनुभवने यह डर दूर कर दिया है और चरखा संघकी केन्द्रीय समिति अुत्सुक है कि जल्दी ही कोआी आगेका कदम अुठाया जा सकता हो तो अुठाया जाय। अिसलिअे जहां आगेका कदम अुठानेके बारेमें जल्दबाजी करनेकी जरूरत नहीं, वहां कार्यकर्ताओंको अिसके बारेमें सुस्त भी नहीं हो जाना चाहिये। अुन्हें मालूम होना चाहिये कि लक्ष्य तो आठ घंटेके दिनके लिअे आठ आने देनेका है। हम केवल नामको तीन आने तक पहुंचे हैं और वे वृद्धि और क्षमताके बीचमें बराबर बराबर बंटे हुअे हैं। क्षमताकी कमाआीका बिक्रीके भाव पर सीधा असर नहीं पड़ता। कभी असर पड़ता है तो यह कि कत्तिनोंकी क्षमतासे खादीके गुणमें वृद्धि होती है। मजदूरीमें प्रत्यक्ष वृद्धि होनेसे कीमतें कुछ बढ़ जाती हैं परन्तु खादीके गुणमें वृद्धि होनेके कारण अुनका बोझ महसूस नहीं होता। फिर कीमतोंकी वृद्धिका अिस प्रकार विवेकपूर्वक नियमन किया जाता है कि सबसे गरीब ग्राहक पर या तो बिलकुल बुरा असर न पड़े या बहुत ही थोड़ा पड़े। मुझे जरा भी शंका नहीं कि अगर कार्यकर्ता स्वयं अधिक क्षमतावान, अधिक जागरूक और अधिक श्रद्धावान हों तो वह दिन जल्दी आ जायगा जब बिक्रीके भावमें बहुत ज्यादा वृद्धि हुअे बिना ही कत्तिनें आठ घंटेके कामके लिअे आठ आने रोज आसानीसे कमा लें। अधिक शास्त्रीय

ज्ञानसे हाथ चरखी धुनकी और चरखेकी कार्यशक्तिमें सुधार जरूर होगा। कत्तिनोंके कामको अधिक ध्यानसे देखें तो वे अवश्य ही अधिक निपुण और क्षमतावान बनेंगी। अिसी तरह प्रबंध सम्बन्धी ब्यौरे पर अधिक काबू रखा जाय और काम अधिक वफादारीसे किया जाय तो व्यवस्था-खर्चमें जरूर काफी कमी हो जायगी। दूसरे शब्दोंमें आठ आने रोजके ध्येयको पहुंच सकनेमें हमारी मौजूदा असमर्थताका असली कारण हमारा ज्ञान-सम्बन्धी अभाव है। प्रस्तावका हेतु प्रयत्नको गति देना है। ओीश्वर सदा जाग्रत रहनेवालोंकी ही सहायता करता है।

हरिजन १७-४-३७

मैं संघको प्रेरित कर रहा था कि कत्तिनोंके लिअे आठ घंटेके दिनकी मजदूरी बढ़ाकर आठ आने कर दी जाय। मैं जानता था कि अिस ध्येय तक अब छलांगमें नहीं पहुंचा जा सकता। फिर भी मन यह आशा रखी थी कि थोड़े थोड़े महीनोंके बाद मजदूरीमें क्रमशः वृद्धि नजर आयेगी। परन्तु भिन्न भिन्न शाखाओंसे जो विवरण मिले हैं और श्री विनोबाके पथप्रदर्शनमें श्री जाजूजी द्वारा वृद्धि होती रहनेकी बड़ी बड़ी आशाओंके साथ मेरी नाकके नीचे हो रहे प्रयोगमें जो आंशिक असफलता हुआी है अुसे देखकर मेरी आंखें खुल गओी हैं और मेरे सामने यह गंभीर और भयानक हकीकत स्पष्ट हो गओी है कि यह देश अितनी भयंकर दरिद्रतामें फंसा हुआ है कि करोड़ों स्त्रियोंको आठ घन्टे दिनकी आठ आने मजदूरी नहीं दे सकता। आम तौर पर देहाती अिलाकोंमें कहीं भी ग्रामीण मजदूर या कारीगर आठ घंटे काम करके आठ आने नहीं कमा सकते। और सब वर्ग अितना नहीं कमा सकते तो कत्तिनें भी आठ आने नहीं कमा सकतीं। और जब तक परिस्थिति जड़से न बदल दी जाय तब तक खरीदार वर्गोंके पास अितना रुपया ही नहीं है कि वे आठ आने रोजकी मजदूरी सबको दे सकें। सेनाका भार अितना कुचल देनेवाला और अनुत्पादक है कि वह देशके सारे धनको सफाया कर देता है। अिसमें असाधारण तौर पर अूंचे वेतन और अुतनी ही अूंची पेंशनें और

जोड़ दीजिये जो किन्नोंमें दी जाती है और वहां सब हाती है। जिस बुनकर पर खानवाली दरिद्रताके लिये और भी भीतरी कारण भी हैं। मगर मुझे जिस लक्ष्य अुद्देश्यसे भटक नहीं जाना चाहिये।

कारण कुछ भी हो खादी-धारकताओंने यह दुःखद तथ्य भली भांति साबित कर लिया है कि जिनका जितना हो हो फिर भी मध्यम श्रेणीके खादी-ग्राहकोंके पास अितना रुपया ही नहीं है जिससे वे तीन आनसे आगे मजदूरीकी वृद्धिके कारण बढ़ हुअे भावों पर खादी खरीद सकें। अुनकी सूचना है कि कमसे कम अभी तो यही हद रहनी चाहिये जिससे आगे बढ़नेकी गुंजाअिश नहीं है।

हरिजन २६–८–'३९

प्रश्न आपने हरिजन में अेक बार कुछ अैसा लिखा था कि देहातियोंको छूट है कि व गुजारेके लायक मजदूरीका विचार किये बिना अपने अपने गांवोंके कते हुअे सूतको खरीद लें और अ० भा चरखा संघको अुन्हें अिस मामलेमें अपनी अिच्छानुसार करने देना चाहिये। क्या अैसे सूतकी बनी खादीका पहननेवाले लोग कांग्रेसके प्रतिनिधि बन सकते हैं? और अिस बारेमें ग्रामसेवक क्या करे? वह स्वभावत गुजारेके लायक मजदूरीके पक्षमें प्रचार-कार्य करता है। ग्रामवासियोंकी अेक निश्चित संख्या तो सदा अैसी होती है जो चरखा संघकी खादी खरीदती है, परन्तु साथ ही बहुतसे अैसे होते हैं जो अैसा नहीं कर सकते। और अगर वे गुजारेके लायक मजदूरीसे काम देते हैं तो अिसमें शक नहीं कि कत्तिनोंको अधिक राहत मिलती है और खादीको ग्रामीण जीवनमें भी निश्चित स्थान प्राप्त होता है। तो क्या ग्रामसेवक अैसी खादीको प्रोत्साहन दे?

अुत्तर अगर हम सदा यह सावधानी रखें कि किसी लेखकके वाक्योंका अैसा अर्थ न लगायें जिससे अुसका अुद्देश्य ही विफल हो जाय तो अैसे प्रश्न क्वचित ही अुठें। जहां कोअी मजदूरी नहीं दी जाती हो और सूत अपना ही काता हुआ हो वहां किसी प्रकारकी पाबन्दी नहीं लगाअी जा सकती। अवश्य ही यह मान लिया जाता है

कि चरखा संघका नियम आत्मनिर्भरताके झूठे दाव पर नहीं तोड़ा जायगा। यही बात ग्रामसेवक पर लागू होती है।

परन्तु आपके सवालमें अेक महत्त्वपूर्ण मुद्दा अुठाया गया है। किसी विशेष गांवमें चरखा संघका कार्यकर्ता अगर गांवका खादी काममें ले तो वह गुजारेके लायक मजदूरी नहीं दे सकता। अिसलिअे वह कम दर पर सूत खरीदेगा और जिन कत्तिनोंको दूसरी तरह कुछ भी नहीं मिलेगा अुन्हें कुछ काम दे देगा। परन्तु वह कांग्रेसका सदस्य न बने। वह कांग्रेसकी बाहरसे सेवा करेगा। कभी कभी अैसे लोग कांग्रेसकी अधिक सेवा करते हैं और साथ ही वे अुन महत्त्वाकांक्षाओंसे बच जाते हैं जो सदस्यताके साथ अक्सर लगी रहती हैं। स्पष्ट है कि अैसी खादी अुस गांवसे बाहर नहीं बेची जा सकती। वह वहीं खपनी चाहिये। ज्यों ही अप्रमाणित खादी बाजारमें रख दी जाती है त्यों ही चरखा संघका कानून भंग हो जाता है और असली खादीकी प्रगतिको धक्का लगता है। कत्तिनोंकी मजदूरी बढ़ानेके प्रयत्नमें चरखा संघ पर बड़ा जोर पड़ रहा है। संसारमें कभी यह नहीं सुना गया कि मजदूरी देनेवालोंकी तरफसे मजदूरीमें वृद्धिकी मांग हुअे बिना ही मजदूरी अेक-अेक पैसेसे बढ़ाकर आठ बारह पैसे कर दी गयी हो। चरखा संघने अिस मामलेमें चिरस्मरणीय काम किया है।

हरिजन १-९-४०

ख — अप्रमाणित खादी

६३
अप्रमाणित बनाम प्रमाणित

कताओीके लिअ नये पैमाने पर मजदूरी जारी करनेसे तामिल नाडमें जो कठिनाओी पैदा हो गओी वह और स्थानों पर भी और खास तौर पर आंध्रमें भी खड़ी हो गओी है। यह भारतके अुस भागसे प्राप्त हुअे कओी पत्रोंसे दिखाओी देता है। खादीके अप्रमाणित व्यापारी अुन गरीब स्त्रियोंके हितोंको जिन्हें अेक पैसेसे अधिक कमानेका कोओी मौका ही नहीं है जो नुकसान पहुंचा रहे हैं अुसकी पत्र-लेखक बड़ी कटु शिकायत करते हैं। पता नहीं अप्रमाणित व्यापारी मेरा यह अनुरोध मानेंगे या नहीं कि अुन्हें अितना स्वार्थी नहीं बनना चाहिये कि हमारी गरीब कत्तिनोंके पैसे छीन लें। आशा है वे मान लेंगे। परन्तु असली अुपाय खादी खरीदनेवाले लोगोंके हाथमें है। अगर वे चरखा संघ द्वारा प्रमाणित भंडारोंके सिवा और कहींसे खादी नहीं खरीदेंगे तो अप्रमाणित भंडारोंको बन्द हो जाना पड़ेगा। जनताको मालूम होना चाहिये कि संघकी दरोंसे ही कत्तिनोंको अूंची मजदूरी दी जा सकती है।

हरिजन २९–८–३६

दुर्भाग्यसे कांग्रेसजन अज्ञानवश या खादीमें विश्वास न होनेके कारण आत्म-वंचनाके लिअे अप्रमाणित भंडारोंसे सस्ती खादी खरीदते हैं और अिस प्रकार खादी-सम्बन्धी कांग्रेसकी नीतिको विफल करते हैं तथा जितनी खरीदारी करते हैं अुस हद तक कत्तिनोंको मजदूरीकी वृद्धिसे वंचित रखते हैं। जनता अच्छी तरह समझ ले कि खादीका भाव जितना बढ़ेगा कत्तिनको कमसे कम अुतना तो अधिक

मिल ही जायगा। 'ममसे कम म समझकर वह रहा हू क्योंकि मजदूरीकी सारी वद्धि ग्राहकोंसे वसूल नही की जाती।

जो काग्रसी नेता ~रखा सघसे पूछ बिना या अुसके कहे बिना खादी भडार खोलते ह वे अवश्य ही अपनी खुदकी सस्थाको हानि पहुचाते ह घोखेबाजोको प्रोत्साहन देते ह और काग्रेसकी नीतिका भग करते ह अिसके विपरीत प्रत्येक काग्रेसजनका यह धम और गव होना चाहिये कि वह सबसे नि सहाय मानव समूहकी दशा सुधारनेमें चरखा सघकी कोशिशोंमें हर तरहसे मदद द।

हरिजन १७-१ -३८

जब सघने कत्तिनोकी मजदूरी बढानेका निणय किया तब महाराष्ट्र शाखा अिस प्रस्तावको अुत्साहपूवक समथन करनेमें सबसे आग थी। अुसे श्री विनोबाका सीधा मागदशन प्राप्त है। अुसने वद्धिके कायक्रम पर जितना सही सही अमल किया है अुतना दूसर प्रान्तोंने नही किया। नतीजा यह है कि चकि दूसरे प्रान्तोंने अुसी हद तक मजदूरी नही बढाओी है जिस हद तक महाराष्ट्र शाखाने बढाओी है अिसलिओ वे महाराष्ट्रकी खादीसे कम कीमत पर अपनी खादी बेच लेते ह और महाराष्ट्र शाखाको अिलाकेमें अपना माल भेजनेमें सकोच नही करते। अिस स्थितिसे लाभ अुठानेमें बेअुसूल व्यापारियोको देर नही लगती। अिस प्रकार नागपुर वर्धा और दूसरी जगहो पर अप्रमाणित खादी भडार खुल गये ह। भोलीभाली जनताको नओी व्यवस्थाका पता नही और वह सस्ती खादी खरीदनेको अुत्सुक होती है अिसलिओ वह अप्रमाणित भडारोको अपनाना अधिक पसन्द करती है और अिस प्रकार महाराष्ट्र शाखाके भडारोको बडी हानि पहुचती है। परिणाम यह है कि महाराष्ट्र शाखाको या तो मजदूरी घटानी पडेगी या अपना व्यवसाय बन्द कर देना पडगा। अिसका अथ यह हुआ कि खादी ही खादीको मार रही है। खादीप्रेमियोको जानना चाहिय कि खादीका अथशास्त्र स्पर्धा प्रणालीवाले साधारण अथशास्त्रसे भिन्न और अक्सर विपरीत होता है। स्पर्धावाली प्रणाली सर्वोत्तम अर्थात्

पद-दलितोंमें सबसे छोटेकी भलाईके सिद्धान्तके अनुसार नहीं चलती। अिस प्रकार अिस पत्रमें मैंने यह दिखानेका प्रयत्न किया है कि अगर खादीको अपना विशेष कार्य पूरा करना है तो

१ जब तक हम कमसे कम अेक आना प्रति घंटे तक न पहुंच जायं तब तक कत्तिनोंकी मजदूरी क्रमशः बढ़ती ही रहनी चाहिये।

२ आदर्श यह है कि प्रत्येक गांवको अपनी खादी स्वयं पैदा और अिस्तेमाल करनी चाहिये। अिससे यह स्पष्ट है कि फिलहाल कमसे कम अितना होना चाहिये कि प्रत्येक प्रान्त अपनी अपनी जरूरतोंके लिअे ही काफी अुत्पत्ति करें, अुससे अधिक नहीं। अपनी सीमासे बाहर अुसी खादीको बचनेकी अिजाजत होनी चाहिये जो सिर्फ अुसी प्रान्तमें तैयार हो सकती है। अुदाहरणार्थ आंध्र अपनी सीमासे बाहर ८० नम्बरके सूतकी खादी भेज सकता है मगर मोटी खादी नहीं भेज सकता, भले वह कितनी ही सस्ती हो।

३ मुनाफेके लिअे मुनाफा नहीं किया जा सकता। संसारकी अिस सबसे बड़ी सहकारी संस्थामें मजदूर ही हिस्सेदार और मालिक हैं। अिसलिअे यदि किसी अेक वर्षमें मुनाफा हो तो अुसका सदुपयोग यह होना चाहिये कि जब तक कोअी जरूरतमंद कत्तिनें हों तब तक अुसे कत्तिनोंकी संख्या बढ़ानेमें लगाया जाय या मौजूदा कत्तिनोंकी मजदूरी बढ़ानेमें लगाया जाय।

४ कोअी भी प्रान्त वांछित स्तर तक कत्तिनोंकी मजदूरी बढ़ानेका प्रयत्न करे तो दूसरी शाखाओं और खादीप्रेमियोंको अुसे प्रोत्साहित करना चाहिये।

५ आम जनताको दूसरे प्रान्तोंमें महंगी होने पर भी अपने प्रान्तकी बनी खादी ही काममें लेना चाहिये। अुन्हें विश्वास रखना चाहिये कि चरखा संघ प्रत्येक प्रान्तके लिअे भरसक अच्छा करेगा।

६ कत्तिक चरखा संघकी नीति यह होनी चाहिये कि हिंदुस्तान भरमें मजदूरी और भाव अेकसे हो जायं। परन्तु जब तक यह आदर्श स्थिति प्राप्त न हो जाय तब तक जनताको यह याद रखने जितनी मानवता अवश्य रखनी चाहिये कि अपने अपने प्रान्तोंके मजदूरोंके

प्रति अुसका कोअी धर्म है। बाहरी दुनियाके साथ स्पर्धा करना जितना बुरा है लगभग अुतना ही बुरा अेक प्रान्तका दूसरे प्रान्तके साथ स्पर्धा करना है।

तुरन्तके लिअे वाञ्छनीय वस्तु तो यह है कि तमाम अप्रमाणित भण्डार बन्द कर दिये जायं। कांग्रेसजन और दूसरे लोग जनताको सावधान कर दें कि असे भण्डारोंसे खरीद न की जाय और प्रान्तीय शाखाओंको चरखा संघकी सम्बन्धित प्रान्तीय अेजेन्सियोंकी सूचनाके सिवा अपना माल बाहर बेचनेसे मजबूतीके साथ अिनकार कर देना चाहिये।

हरिजन २४-६-३९

जिन्हें श्रद्धा नहीं है वे समझते हैं कि खादी लड़खड़ा रही है। वास्तवमें अुसकी जड़ जम रही है। वह गरीबोंके जीवनका सहारा तो थी ही। अब स्वाधीनता प्राप्त करनेका अहिंसक साधन बननेकी कोशिश कर रही है। तामिलनाडसे आये हुअे अेक पत्रके नीचे दिये हुअे अंशमें कठिनाअी काफी स्पष्ट रूपमें प्रगट होती है :

> चरखा संघके सामने अिस वक्त दो समस्यायें हैं। अेक तो यह है कि मौजूदा तरीकों पर खादी-अुत्पत्ति जारी रखी जाय। दूसरी यह है कि जिन कारीगरों और अुनके देहातोंकी हम सेवा करते हैं अुनसे सम्बन्ध रखनेवाली अपनी प्रवृत्तिको नया रूप दिया जाय।
>
> खादीके अप्रमाणित व्यापारियोंकी स्पर्धाके कारण पिछले कुछ महीनोंमें मौजूदा व्यापारिक अुत्पत्ति पर गंभीर असर पड़ा है। अप्रमाणित व्यापारी हमारी बस्तियोंमें सूत खरीदते हैं जो हमारी दी हुअी बेहतर रुअी कातती हैं। वे हमारे सूतसे जुलाहों द्वारा बुनी हुअी खादी खरीदते हैं और अुसे मुनाफेके साथ बेचते हैं। वे हमारे जुलाहोंके घरों पर जाकर अधिक मजदूरी देते हैं और मामूली बराबरका सूत लेकर हमारे लिअे बुनी हुअी खादी खरीद लेते हैं। अुन्होंने हमारा खादी अिसलिअे दे रखे हैं कि अुन्हें अपने ही घरों पर अधिक मजदूरी और सूत मिल

पद-दलितामें सबसे छोटेकी भलाओीके सिद्धान्तके अनुसार नहीं चलेगी। अिस प्रकार अिस पत्रमें मन यह दिखानेका प्रयत्न कियाहै कि अगर खादीको अपना विशेष लक्ष्य पूरा करना है तो

१ जब तक हम कमसे कम आठ आना प्रति घंटे तक न पहुंच जाय तब तक कत्तिनोंकी मजदूरी क्रमशः बढती ही रहनी चाहिये।

२ आदर्श यह है कि प्रत्येक गांवको अपनी खादी स्वयं पैदा और अिस्तमाल करनी चाहिये। अिससे यह स्पष्ट है कि फिलहाल कमसे कम अितना होना चाहिये कि प्रत्येक प्रान्त अपनी अपनी जरूरतोंके लिअ ही काफी अुत्पत्ति करें अुससे अधिक नहीं। अपनी सीमासे बाहर अुसी खादीको रवानगी अिजाजत होनी चाहिये जो सिर्फ अुसी प्रांतमें तयार हो सकती है। अुदाहरणार्थ आंध्र अपनी सीमासे बाहर ८० नम्बरके सूतकी खादी भेज सकता है मगर मोटी खादी नहीं भेज सकता भले वह कितनी ही सस्ती हो।

३ मनाफेके लिअ मुनाफा नहीं लिया जा सकता। संसारकी अिस सबसे बडी सहकारी संस्थामें मजदूर ही हिस्सेदार और मालिक हैं। अिसलिअ यदि किसी अेक वर्षमें मुनाफा हो तो अुसका सदुपयोग यह होना चाहिये कि जब तक कोअी जरूरतमंद कत्तिनें हों तब तक अुसे कत्तिनोंकी संख्या बढानेमें लगाया जाय या मौजूदा कत्तिनोंकी मजदूरी बढानेमें लगाया जाय।

४ कोअी भी प्रान्त वांछित स्तर तक कत्तिनोंकी मजदूरी बढानेका प्रयत्न करे तो दूसरी शाखाओं और खादीप्रेमियोंको अुसे प्रोत्साहित करना चाहिये।

५ आम जनताको दूसरे प्रांतसे महंगी होने पर भी अपने प्रान्तकी बनी खादी ही काममें लेना चाहिये। अुन्हें विश्वास रखना चाहिये कि चरखा संघ प्रत्येक प्रांतके लिअे भरसक अच्छा करेगा।

६ व्यापक चरखा संघकी नीति यह होनी चाहिये कि हिन्दुस्तान भरमें मजदूरी और भाव अेकसे हो जाय। परन्तु जब तक यह आदर्श स्थिति प्राप्त न हो जाय तब तक जनताको यह याद रखने जितनी मानवता अवश्य रखनी चाहिये कि अपने अपने प्रांतोंके मजदूरोंके

चाहे गरीबोंकी दृष्टिसे देखें चाहे अहिंसाकी दृष्टिसे अप्रमाणित खादीके व्यापारी खादीके लिअे जबरदस्त खतरा हैं। क्योंकि व्यापारी सिर्फ अपने ही जेबको जानता है। अुसे और किसी बातकी परवाह नहीं होती। हां वह जुलाहों और कत्तिनोंके पास जाकर तरह तरहके वादे जरूर करता है। वह नहीं जानता कि अगर वह चरखा सबको मार देता है तो स्वयं भी मारा जायगा।

सबसे दुःखकी बात यह है कि कांग्रेसजन अिन अप्रमाणित व्यापारियोंके हाथोंमें जान-बूझकर हथियार बनते हैं। अुन्होंने विनयपूर्वक अेक संघ स्थापित किया है। फिर भी वे नहीं जानते कि वे अिच्छा या अनिच्छासे सोनेका अण्डा देनेवाली मुर्गीको मार रहे हैं। अिसके अतिरिक्त खादीसे सार्वजनिक ओमानदारीकी कड़ी परीक्षा होती है। यह सार्वजनिक व्यवहारमें प्रामाणिकता लानेका अुत्तम अुपाय लाजनेका अेक बड़ा प्रयत्न है क्योंकि अिसका अर्थ गांवके करोड़ों स्त्री-पुरुषोंके घनिष्ठ और निःस्वार्थ संपर्कमें आना है।

सारी बातोंका निचोड़ यह है कि नेतृत्व जैसे कार्यकर्ताओंको अपने विषयमें पूरी श्रद्धा रखकर अपना काम जारी रखना पड़ेगा और परिणाम ओश्वरके हाथोंमें छोड़ देना पड़ेगा।

हरिजन १२-५-४६

अेक गुजराती भाओ पूछते हैं

अनेक राष्ट्रीय संस्थायें आग्रह करती हैं कि अुनके तमाम कर्मचारियोंकी पोशाक ही खादीकी नहीं होनी चाहिये परन्तु अुनकी पुस्तकोंकी जिल्द भी खादीकी होनी चाहिये। चूंकि प्रमाणित खादी तो निश्चित मात्रामें सूत देने पर मान्य किये हुअे भण्डारोंसे ही मिल सकती है अिसलिअे वे कुदरती तौर पर अप्रमाणित खादीका आश्रय लेते हैं। क्या यह ठीक है? क्या मिलका कपड़ा अप्रमाणित खादीसे बहतर नहीं है? क्या खादीके लिअे आग्रहका परिणाम अुसे अप्रमाणित दुकानोंसे खरीदनेमें आता है वह वास्तवमें अेक झूठा दिखावा नहीं है?

जाता है। अिस प्रकार गरीबोंने हुअी हानी अूंचे भावों पर विनोद खादीके रूपमें बची जाती है।

अिस क्षेत्रमें पचाससे अधिक अप्रमाणित खादीके व्यापारी हैं। कहा जाता है कि वे प्रतिमास लगभग सात लाख रुपयेकी अप्रमाणित खादी तैयार करते हैं। अिनमें कांग्रेसजन भी हैं जो कांग्रेसकी कार्यकारिणीमें स्थान रखते हैं।

हम कारीगरों पर यह असर डालनेमें असमर्थ हैं कि वे अप्रमाणित व्यापारियोंके चंगुलमें न फंसें यद्यपि कारीगरोंका रुपया हमारे पास जमा रहता है। वे अितना ही कहते हैं कि जब अुन्हें घटिया मेहनतकी अूंची मजदूरी मिलती है और बढ़िया माल तैयार करने और खादी पहनने वगैराकी जो शर्तें हम लगाते हैं वे नहीं लगाअी जातीं तो वे अुसका लोभ संवरण नहीं कर सकते। अिसके सिवा कत्तिनोंको काता नामक घटिया रूअी दी जाती है जिसे पीजनेकी जरूरत नहीं होती। यह मिलकी रद्दी रूअी होती है जो अच्छी रूअीकी पौनी कीमतमें मिल जाती है। कता हुआ सूत लच्छियोंमें ही होता है अुसकी गण्डियां नहीं बनाअी जातीं। यह तरीका अधिक सीधा है और अिसलिअे कत्तिनें अिस रूअीको ज्यादा पसन्द करती हैं। चूंकि घटिया मेहनतके लिअे अूंची मजदूरी दी जाती है कत्तिनोंसे खादीके लिअे अमानत रकम नहीं ली जाती और सूत वगैराके बढ़ियापनका आग्रह नहीं रखा जाता अिसलिअे कत्तिनोंकी यह वृत्ति है कि अप्रमाणित व्यापारियोंके मातहत काम करें।

कारीगरोंकी यह वृत्ति चरखेके द्वारा ग्रामोंकी पुनरचनाके हमारे आदर्शोंको अुन तक पहुंचानेमें अेक बड़ी रुकावट और बाधा है।

अगर खादी-अुत्पत्तिका मौजूदा तरीका खादी प्रवृत्तिको नया स्वरूप देनेमें बाधक होता है तो असे बलिदान करना पड़ेगा। अिसके लिअे श्रद्धाकी और श्रद्धासे आनेवाली जागरूकताकी जरूरत है। आलसियोंमें श्रद्धा कभी नहीं होती।

चाहे गरीबोंकी दृष्टिसे देखें चाहे अहिंसाकी दृष्टिसे अप्रमाणित खादीका व्यापारी खादीके लिये जबरदस्त खतरा है। क्योंकि व्यापारी सिर्फ अपने ही जेबको जानता है, अुसे और किसी बातकी परवाह नहीं होती। हां, वह जुलाहों और कत्तिनोंके पास जाकर तरह तरहके वादे जरूर करता है। वह नहीं जानता कि अगर वह चरखा संघको मार देता है तो स्वयं भी मारा जायगा।

सबसे दुःखकी बात यह है कि कार्यकर्ता अिन अप्रमाणित व्यापारियोंके हाथोंमें जान-बूझकर हथियार बनते हैं। अुन्होंने विशेषज्ञोंका अेक संघ स्थापित किया है। फिर भी वे नहीं जानते कि वे अिच्छा या अनिच्छासे सोनेका अण्डा देनेवाली मुर्गीको मार रहे हैं। अिसके अतिरिक्त खादीसे सार्वजनिक अीमानदारीकी बड़ी परीक्षा होती है। यह सार्वजनिक व्यवहारमें प्रामाणिकता लानेका अुत्तम अुपाय खोजनेका अेक बड़ा प्रयत्न है, क्योंकि अिसका भय गांवके करोड़ों स्त्री-पुरुषोंके घनिष्ठ और निःस्वार्थ संपर्कमें आता है।

सारी बातोंका निचोड़ यह है कि लेखक जैसे कार्यकर्ताओंको अपने विषयमें पूरी श्रद्धा रखकर अपना काम जारी रखना पड़ेगा और परिणाम अीश्वरके हाथोंमें छोड़ देना पड़ेगा।

हरिजन, १२-५-४६

अेक गुजराती भाअी पूछते हैं:

अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं आग्रह करती हैं कि अुनके तमाम कर्मचारियोंको पोशाक ही खादीकी नहीं होनी चाहिये, परन्तु अुनकी पुस्तकोंकी जिल्द भी खादीकी होनी चाहिये। चूंकि प्रमाणित खादी तो निश्चित मात्रामें सूत देने पर मान्य किये हुओे भंडारोंसे ही मिल सकती है, अिसलिअे वे कुदरती तौर पर अप्रमाणित खादीका आश्रय लेते हैं। क्या यह ठीक है? क्या मिलका कपड़ा अप्रमाणित खादीसे बेहतर नहीं है? क्या खादीके लिअे आग्रहका परिणाम अुसे अप्रमाणित दुकानोंसे खरीदनेमें आता है, यह वास्तवमें अेक झूठा दिखावा नहीं है?

जब और बानाके सिवा खादीकी कमी भी है अुस समय जिन्द बघाओ वगराके कामोंके लिअे असका आग्रह रखना अनुचित है। जब खादीकी बहुतायत थी तब मने ही सिफारिश की थी कि अुसे असे सब कामोंमें अिस्तेमाल किया जाय। १९२१ में अहमदाबादकी काग्रसका सारा मण्डप खादीसे सजाया गया था। आज असी कोशिश करना पागलपन होगा। समय और परिस्थितियोंसे तरीके बदल जाते हैं।

परतु अप्रमाणित खादीके विरुद्ध मिलके कपडेके पक्षमें लेखककी वकालत मेरी समझमें नही आती। अप्रमाणित खादी क्या है? क्या वह अप्रमाणित होते हुअ भी हाथ-कता और हाथ-बुना कपडा नही है? अिसमें धोखबाजी होना दूसरी बात है। प्रमाणित खादीमें भी चरखा सघ सौ फीसदी शुद्धताकी गारण्टी नही दे सकता। अिस दुनियामें धोखबाजीका कोओ अिलाज नही है। यह बात युग-युगसे सही है। अप्रमाणित खादीकी त्रुटिया सबको मालूम ह। अुसमें कत्तिना और जुलाहोंके लिअ मजदूरीका कोओ बधन नही है। असे दबनवाले मन माना नफा कमाते ह। अक्सर लोग चरखा सघके भण्डारोंसे दुश्मनी निकालनेके लिअे ही दुकानें लगा लेते ह। फिर भी जहा धोखबाजी न हो वहा जो भी कपडा हाथका कता और हाथका बुना हो अुसे खादी ही कहना पडगा। कोओ खुद कातकर अपने लिअ अस सूतका कपडा बनवा लेता है। यह कपडा कानूनी अथमें तो प्रमाणित नही है लेकिन वह अूचेसे अूचे और शुद्धसे शुद्ध अथमें खादी है। अुस आदमीके लिअ यह पाप होगा कि अपने ही हाथोंकी मेहनतसे बने हुअ कपडेके बजाय वह मिलका कपडा काममें ले।

निष्कर्ष यह है कि मिलके कपडेका बहिष्कार जारी रहना चाहिये। जहा तक सभव हो अप्रमाणित खादीसे बचना चाहिये। लेकिन जहा प्रमाणित खादी न मिल सके और मिलके कपडे और अप्रमाणित खादीके बीच चुनाव करना हो वहा अप्रमाणित खादीको पसन्द करना चाहिये। अिसमें यह तो मान ही लिया गया है कि वह शुद्ध खादी होगी। आप चाहें तो अपने ही हाथोंकी मेहनतसे बने हुअ कपडेको अप्रमाणित बताकर अुसकी निन्दा कर सकते ह परतु सचाओ यह है कि वह

प्रमाणित खादीसे अधिक शुद्ध है। और अगर सब लोग अपनी जरूरतका कपड़ा बनवानेके लिये काफी सूत कात लें तो फिर चरखा संघकी जरूरत ही क्या रहे? फिर तो चरखा संघके जय-जयकारसे पृथ्वी और आकाश गूंज अुठेंगे।

हरिजन २२-९-४६

अब और सदस्यने पूछा आपने हमें हर बातमें सरल और शुद्ध होना सिखाया है। क्या यह बअीमानी नहीं है कि अप्रमाणित खादी पहनकर खादीवाले कहलायें जब कि हम खादी पहननेकी सब शर्तें पूरी नहीं करते? क्या अिसके बजाय अीमानदार बनकर मिलका कपड़ा काममें लेना बहतर नहीं है?

गांधीजीने अुत्तर दिया मैं अप्रमाणित खादीका समर्थन नहीं करता परन्तु मेरी राय है कि खादी शुद्ध हो तो वह मिलके कपड़ेसे अच्छी है। सभी अप्रमाणित खादीमें अप्रमाणिकता नहीं होती। अुदाहरणके लिये जो लोग अपने या अपने परिवारके लिये कातकर अपने सूतका कपड़ा बुनवा लेते हैं वे प्रमाणित खादी अिस्तमाल नहीं करते। फिर भी अुस खादीका सबसे अधिक महत्त्व है। प्रमाणित खादीमें यह आश्वासन होता है कि चरखा संघके नियमोंका पालन किया गया है मसलन कतिनोंको अेक निश्चित अल्पतम मजदूरी दी गयी है। जब कतिनोंको चरखा संघके मापदण्डके अनुसार मजदूरी नहीं दी जाती थी तब भी खादी मिलके कपड़ेसे अच्छी थी। कताअीकी मिलोंमें मजदूरोंको जो अधिक मजदूरी दी जाती है वह वास्तविक नहीं दिखावटी ही है। आज मिलका कपड़ा खादीसे अनाओ गुना सस्ता है। विशेषज्ञोंने सुझ बताया है कि यदि मिल-अुद्योगको वे विशेष सुविधायें और रिआयतें न मिलें जो अुसे आज कअी तरहसे मिल रही हैं तो मिलका कपड़ा खादीसे सस्ता नहीं बिक सकता। अुदाहरणके लिये हम मिलोंको अेक स्थानसे दूसरे स्थान तक कच्चा माल और बड़े पैमाने पर तैयार माल ले जा सकनेके लिये सस्ते यातायातकी सुविधायें देते हैं। अिसके अलावा ध्वज तारकी रक्षा अुगाने या अुद्योग बिगानकी

सस्थाअें खोलने और खोजका काम करनेके लिअ भारी रकमें खच की गअी ह। लेकिन भारतके सात लाख गावोंमें से किसीके लिअ कुछ भी करनेकी किसीने चिता नही की। अिस प्रकार किसी न किसी रूपमें अिस समय मिलोंको अनेक सरकारी सहायता दी जा रही है। यह सब हटा लीजिये और फिर देखिये कि मिलका कपडा सस्ता है या खादी।

गाधीजीने आगे कहा म अप्रमाणित खादीको किसी तरह प्रोत्साहन नही दे सकता परतु मिलके कपडका तो बिलकुल बहिष्कार ही होना चाहिये। कोअी दिन असा आ सकता है जब चरखा सघ प्रमाणपत्र देना बन्द कर दे। फिर तो सभीको खादी बचनेका छूट होगी। जब खादी सार्वत्रिक हो जायगी तब यह अनिवाय होगा। अुस समय चरखा सघ खादीके नीतिशास्त्र और सामान्य नीतिके रक्षकका काम करेगा। अुसका व्यापारिक कामकाज बद हो जायगा। लोगोको आदतसे अीमानदार बनकर आग्रह करना चाहिये कि खादीके अुत्पादक और व्यापारी अितनी सख्त अीमानदारीसे काम करें कि केवल शुद्ध माल ही बचा और खरीदा जाय।

हरिजन २०–१०–४६

वही भाअी जो सुझाव देते ह कि खादी कपडेकी कमीको दूर कर सकती है लिखत ह जब भारतको आजादी मिल गअी है तब प्रमाणित और अप्रमाणित खादीमें और मिलके कपड तथा विलायती कपडमें शायद ही कोअी अन्तर रह गया है। जो सूत कातकर अपने लिअ कपडा बुनवाता है असके लिअ खादीका महत्व हो सकता है मगर लोग असा नही कर सकते। भण्डारोसे खादी खरीदनके लिअ निश्चित अल्पतम मात्रामें सूत ही कात सकते ह। शुद्ध खादीके बन्धियापनमें कोअी सुधार नजर नही आता जब कि अप्रमाणित खादीके कअी अुपयोगी प्रकार अुपलब्ध ह। अिसके अतिरिक्त जिसे गुजारेके लायक मजदूरी कहा जा सकता हो असी मजदूरी आजकल खादी-अुद्योगमें दे सकना कठिन है। लेखक कहते ह कि अिन कारणोंसे

अप्रमाणित खादी खरीदनेकी छूट होनी चाहिये। वे यह दलील भी करते हैं कि देशभरमें कपड़की अत्यन्त कमीको और अिस बातको देखते हुअे कि संघ-सरकार स्वयं विलायती कपड़ा आयात करती है यह कपड़ा खरीदनेमें भी कोअी आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

अैसे प्रश्न अुठाये जा सकते हैं जिनसे जाहिर होता है कि समय कितना बदल गया है। मेरा अुत्तर यह है कि केवल प्रमाणित खादी ही काममें लेनी चाहिये। मैं अिस शब्दका अर्थ बता दूँ। चरखा संघकी व्याख्या भी अधूरी है। असलमें अिस शब्दका अर्थ यह है कि कत्तिनों और जुलाहोंको वाजिब मजदूरी दी जाय और खादीका भाव मुनाफेकी भावनाके बजाय जनहितको ध्यानमें रखकर मुकर्रर किया जाय। अैसी खादीको चरखा संघका प्रमाणपत्र देना जरूरी हो जाता है क्योंकि लोगोंको आम तौर पर स्वावलम्बी खादीके अतिरिक्त खादी खरीदनेका आश्रय लेना पड़ता है। बाकी सब खादी अप्रमाणित और आपत्तिजनक है अिसलिअे अुसे काममें नहीं लेना चाहिये। जनताको अधिकार है कि खादीका प्रमाणपत्र देनेके लिअे रखी गअी शर्तोंमें सुधार सुझाये, परन्तु प्रमाणित और अप्रमाणित खादीका भेद मिटा देना निश्चित रूपमें गलत होगा।

और विदेशी राज्य खतम हो जानेसे ही खादी मिलके कपड़े और विलायती कपड़ेसे भेदकी अुपेक्षा कैसे की जा सकती है तथा विलायती कपड़ेका आयात कैसे अुचित हो सकता है? हमें याद रखना होगा कि हमने विदेशी राज्यका विरोध अिसलिअे किया था कि अुससे देशका आर्थिक विनाश होता था। अिसलिअे आजादीका पहला परिणाम अिस अभिशापको मिटा देना होना चाहिये।

सारांश यह है कि स्वराज्यमें केवल शुद्ध खादीका ही स्थान है। अिसीमें लोक-कल्याण है और सच्ची आर्थिक समानता है।

हरिजन ११-१-४८

ग — खादी-भंडार

६४

खादी भंडार*

कोअी खादी भंडार घाटेमें नहीं चलाया जाना चाहिये। चरखा संघका मुख्य लक्ष्य खादीका गुण बढ़ाना होना चाहिये न कि कलाकी आड़में केवल दिखावा करना। कौन जानता है कि सच्ची कला क्या है? अधिकसे अधिक यह अेक सापेक्ष शब्द है। चरखा संघको मौलिकता दिखाना चाहिये, शहरोंमें ग्रामीण कला जारी करनी चाहिये और विश्वास रखना चाहिये कि अन्तमें अुसकी जीत होगी। खादीका प्रत्येक थान मजबूत और टिकाअू होना चाहिये। हमें टिकाअूपनको हानि पहुंचाकर बारीकपन नहीं लाना चाहिये। कपड़ा टिकाअू न हुआ और कमजोर हुआ तो खादी मर जायगी। यदि हम मजबूतीका बलिदान किये बिना बारीक खादी पैदा नहीं कर सकते तो हमें अपनी असमर्थता स्वीकार कर लेनी होगी। मैंने देखा है और अक्सर देखकर मैं धुलाअीके बारेमें डर गया हूं कि मसालेसे धुली हुअी खादी लगभग पहली ही बार पहनने पर फटने लगती है। मेरा कहना यह नहीं है कि यह बात सदा ही सच है। मेरे कामके लिअे अितना ही कहना काफी है कि मसालेसे धुली हुअी खादी टिकाअू साबित नहीं होती यह बात अितनी अधिक बार देखनेमें आती है कि ग्राहक कम हो जाते हैं। अिसलिअे मैंने यहां जो कुछ कहा है अुसके प्रकाशमें जितना जरूरी मालूम हो अुतना सुधार खादी भंडार अपने पैमानेमें कर लें।

हरिजन २९-३-३५

---

* खादी भंडारके विषयमें अधिक लेखोंके लिअे देखिये विभाग १३ अध्याय ७४ और विभाग १४ अध्याय ८२ से ८४।

६५

स्वावलम्बी खादी

स्वावलम्बी खादीका अर्थ वह खादी है जो स्वयं ग्रामीणोंकी काती हुओी और बुनी हुओी हो और जहां भी संभव हो अपने अपने गांवोंमें अुगाओी हुओी, ओटी हुओी और पींजी हुओी रुओीसे बनी हो। खादीका यही असली मिशन है। यह अुद्देश्य गांववालोंके साथ लगातार मानव-संपर्क रखकर ही पूरा किया जा सकता है। अुन्हें अिस कामके आर्थिक मूल्यके सिवा अुसका गौरव और महत्त्व जानना चाहिये। अिस योजनाके अनुसार खादी देहाती रुचिके अनुकूल तैयार की जायगी। अुसमें मसालेकी धुलाओी और सादी धुलाओी भी टाली जायगी क्योंकि हर देहाती अपने लिअे आप धुलाओी कर लेगा। अिस प्रकार अुत्पन्न की हुओी खादी अगर अुसके टिकाअूपनका विचार किया जाय तो किसी भी कपड़ेसे सस्ती होगी। शहरी खादीके साथ सब तरहके खर्च लगे हुअे हैं, जैसे फालतू प्रक्रियाओं, मालका संग्रह, यातायात भाड़ा और कमीशन। देहाती खादीमें ये खर्च नहीं होते। कस्बों और शहरोंको अपनी जरूरतकी खादीके लिअे गांवोंके अुपयोगके बाद बची हुओी अतिरिक्त खादी पर आधार रखना चाहिये।

हरिजन, २९-२-'३५

जब स्वावलम्बी खादी पर जोर दिया जायगा तब व्यापारिक अुत्पत्ति शहरके लोगोंकी सच्ची आवश्यकताओं तक सीमित रहेगी। फिर वह संघके हाथोंमें केन्द्रित होनेके बजाय खानगी व्यापारियोंके हाथोंमें चली जायगी।

हरिजन, ६-७-'३५

तमाम खादी-संस्थाओंमें स्वावलंबी खादीको प्रथम स्थान देना पड़ेगा। अेक प्रकारसे स्वावलंबी खादी और बिक्रीके लिअे अुत्पत्ति साथ साथ चलेगी। बिक्रीके लिअे अुत्पत्ति स्वावलम्बी खादीको अेक अुपधारा होगी और स्वावलंबी खादी बिक्रीके लिअे अुत्पत्तिकी सफलताको पक्की करेगी। चूंकि अुत्पत्तिकी शर्त यह है कि मजदूरोंको खादी पहननी ही चाहिये अिसलिअे अुन्हें अपने लिअे खादी बनानी या लेनी पड़ेगी। यह वे अपनी मजदूरीमें होनेवाली (अुनके लिअे) अुस बहुत बड़ी वृद्धिमें से आसानीसे कर सकते हैं जो अुन्हें बिना किसी आशा या मांग किये मिलेगी। परन्तु मजदूरीका मिलना अुस अतिरिक्त अुत्पत्ति पर निर्भर करेगा जो आसानीसे बिकने पर ही अुपयोगी होगी। अिस प्रकार स्वावलंबी खादीका प्रयोग वहां आसान होगा जहां अुत्पत्ति-केन्द्र हों। कारण जिन लोगोंके साथ कार्यकर्ताओंका कभी कोअी सम्पर्क ही नहीं आया अुनकी अपेक्षा कतिनों और दूसरे कारीगरोंको समझाना आसान होगा।

परन्तु कुछ लोग पूछते हैं अूंचे भावों पर खादी कौन खरीदेगा? मेरी रायमें अिससे अज्ञान तथा श्रद्धा और सूझबूझका अभाव प्रगट होता है।

अब तक हमने अपना ध्यान शहरोंमें खादीकी मांग बढ़ाने पर केन्द्रित किया है हमारा मानस शहरी रहा है। हमने अुत्पत्ति-केन्द्रोंके बिल्कुल आसपासके स्थानोंका भी अध्ययन करनेकी कभी परवाह नहीं की हमने तो खुद अुत्पादकोंकी ही अपेक्षा की है। अब अुनकी परीक्षा लिये बिना ही हमें विश्वास होता है कि अनकी तरफसे ठीक अुत्तर मिलेगा। आसपासके स्थानोंके लोगोंके बारेमें भी हमें यही विश्वास क्या न होना चाहिये? अवश्य ही अुन्हें अपने दैनिक अुपयोगके लिअे कपड़की जरूरत है। क्या अनसे यह आशा रखना बहुत अधिक है कि वे अपने ही निकटके पड़ोसियोंकी तैयार की हुअी कुछ खादी लेंगे? मैं जानता हूं कि जिन्होंने अिस दिशामें लगनके साथ प्रयत्न किया है वे कभी असफल नहीं हुअे। असफलता हमारी रही है न कि सम्भावित ग्राहकोंकी। आज वे कुछ भी खरीदते और काममें लेते हों

लेकिन वे सदा हमारे साथ हैं। अगर हम आसपासके स्थानोंकी आवश्यकताओंका अध्ययन करें तो हम असी खादी तैयार करेंगे जो अुनकी रुचिके अनुकूल हो और अुनका ध्यान आकर्षित करे। खादी-कार्यकर्ताओंने अबसे पहले शहरवालोंके खातिर यह काम सफलतापूर्वक किया है। क्या अब वे अपना ध्यान देहाती जिलोंकी तरफ मोड़ेंगे? लोगोंको खादीसे विमुख करनेवाली चीज खादीकी महंगाओ अितनी नहीं है जितनी हमारी श्रद्धा और सूझबूझकी कमी है। अगर हममें श्रद्धा है तो हमें पता चल जायगा कि ये ही करोड़ों लोग जैसे दूर पूर्वसे आनेवाले कटपीस बेचनेवालोंके असरमें आते हैं वैसे ही हमारे असरमें भी आ सकते हैं।

चरखा संघकी कार्यकारिणी समितिने जो यह आग्रह किया है कि प्रत्येक खादी-संस्था स्वावलम्बी और अिसलिअे स्वशासनभोगी हो यह बिलकुल ठीक है। अुन्हें अब केन्द्रकी ओरसे प्राप्त मदद पर आधार रखनेकी जरूरत नहीं। केन्द्रीय कोषको अुन अिलाकोंके लिअे जिनकी अब तक हमने अुपेक्षा की है मुक्त कर देना चाहिये।

हरिजन २६–१०–३५

खादीशास्त्र अुत्पत्ति और बिक्रीके विकेन्द्रीकरणकी मांग करता है। खपत खादीके अुत्पत्ति-केन्द्रके अधिकसे अधिक निकट स्थानों पर होनी चाहिये। सब प्रयत्न अिसी दिशामें होने चाहियें। हम शहरोंकी मांगके लिअे अुत्पत्ति कर सकते हैं, मगर खपतके लिअे हमें अुन पर कभी आधार नहीं रखना चाहिये, जैसा स्थानीय बिक्री पर। हमें पहले स्थानीय बाजारका अध्ययन करके अुसकी जरूरतें पूरी करनी होंगी। और चूंकि गांवके तमाम कारीगरोंसे और जहां कहीं संभव हो वहां चरखा संघ या ग्रामोद्योग संघकी छत्रछायामें काम करनेवाले तमाम कारीगरोंसे खादी अिस्तेमाल करनेकी आशा रखी जायगी, अिसलिअे अब अुत्पन्न निश्चित मांगका तो मसला सुलझा रहेगा ही। मनीगयारू और अनन्तपुरवाले श्री जगन्नाथने स्वतंत्र हिसाब लगाया है और यह नतीजा निकाला है कि स्वावलम्बी खादीका अर्थ यह होगा कि

खादी केन्द्र तो हैं ही। वहाँ कार्यकर्ताओंको कत्तिनों और दूसरे कारीगरोंको खादी पहननेके लिअे राजी करना चाहिये। वे अुनसे यह कहें कि अगर अुन्हें संघके मार्फत काम पाते रहना है तो अुन्हें खादी पहनना चाहिये। अुनमें अनेक असे हैं जो कताओ, बुनाओ, धुनाओ या रंगाओ पर लगाओ हुओ अपनी मेहनत पर ही अपने गुजारेके लिअे पूरी तरह निर्भर करते हैं। अगर वे अतिरिक्त खादी तैयार करते हैं और अिस मालको बिक्री चाहते हैं तो खुद अुन्हें तो केवल खादी ही पहनना चाहिये। यह कठिन नहीं होना चाहिये, अगर कत्तिनकी मजदूरी बढ़ जाने पर खादीकी मौजूदा माँग बनी रहे।

व्यवहारमें सारी मंजिलें साथ साथ तय होती रहेंगी। नओ योजना अितना ही करती है कि ठीक जगह पर जोर देती है और लक्ष्य क्या है यह असन्दिग्ध भाषामें बताती है। खादी-कार्यकर्ता अब बिक्री बढ़ाने और खादीका मूल्य घटाने पर सारी शक्ति नहीं लगायेंगे। वे आगेसे जिस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि लोग कमसे कम कताओकी हद तक अपनी कपड़ेकी जरूरतके बारेमें स्वावलंबी बन जायें। अुन्हें कारीगरोंके साथ व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करना होगा, अुनसे मित्रता करनी होगी, अुनकी आवश्यकताअें जाननी होंगी और सबको समान अवसर देते हुअे अुनके अवकाशका भरसक सदुपयोग करके क्रमशः अपनी आर्थिक स्थिति सुधारनेमें अुनकी मदद करनी होगी। अधिकसे अधिक महत्त्वाकांक्षी कार्यकर्ताके लिअे भी यह काफी अच्छा कार्यक्रम होना चाहिये। सबसे मुश्किल काम अेक ओर तो यह होगा कि करोड़ों लोगोंके ज्ञानचक्षु खुल जायँ और वे अपनी ही भलाओके लिअे अपनी फुरसतका समय काममें लेनेको राजी हो जायँ; और दूसरी तरफ ग्राहकों — शहरवासियों और दलालोंको यह महसूस कराना होगा कि अगर वे देहातका बना माल खरीदेंगे तो अंतमें अुन्हें फायदा ही रहेगा, भले ही खर्च जाहिरा तौर पर मामूलीसे कुछ ज्यादा पड़ जाय और दीखनेमें भी माल अुनकी अब तककी आदतके बिल्कुल माफिक न हो। फायदा अिसलिअे रहेगा कि अिससे लोगोंकी माली हालत सुधरेगी और अुनकी खरीदनेकी शक्ति भी बढ़ेगी। अिसलिअे

नअी योजनाका हेतु यह है कि जाति, रंग या धर्मके भेदके बिना समूचे राष्ट्रकी अुत्तम शक्तियोंका अुपयोग हो। अंतमें प्रश्न यह रह जाता है: क्या अिस कामके लिअे हमारे पास आवश्यक शुद्धता, त्याग, परिश्रम और बुद्धिवाले काफी कार्यकर्ता हैं?

हरिजन ३०-११-'३५

६६

देहातके लिअे खादी

खादी-कार्यकर्ता अच्छी तरह समझ लें कि खादीका काम शहरों तक ही सीमित नहीं रखना है। अुसे करोड़ों ग्रामीणोंमें फैलाना पड़ेगा, जो अवतक आह्वानको सुननेकी राह देख रहे हैं। शहरोंमें तो अतिरिक्त खादी ही जायगी। असलमें बहुत बड़ा हिस्सा खुद ग्रामीणोंको ही बनाना और काममें लेना होगा। ग्रामीणों तक पहुंचनेका सही तरीका यह है कि अुनकी अपनी झोंपड़ियोंमें ही जमकर अेकाग्रतासे काम किया जाय। अिसलिअे शहरोंकी बिक्रीसे खादीके कामकी प्रगतिका पता नहीं लग सकता। खादीके भावी आंकड़ोंमें यह दिखाना पड़ेगा कि देहातमें कम प्रतिशत क्या प्रगति हुअी। अगर देहातमें खादीके फैलावके लिअे बहुतसे कार्यकर्ताओंको मुक्त करना है तो हमें शहरोंमें अपना परिश्रम घटाना पड़ेगा।

हरिजन ७-१२-'३५

मैं कार्यकर्ताओंको सुझाअूंगा कि अब चूंकि खादीका सच्चा संदेश अुनकी समझमें आ गया है, अिसलिअे अुन्हें खादी-संबंधी तमाम काम अेकसाथ हाथमें लेने चाहिये। आरंभ कपास अुगानेसे किया जाय। अुसके लिअे कपासकी खेतीका अच्छा ज्ञान होना चाहिये। स्थानीय कामके लिअे लगभग सभी जगह कपास अुगाना संभव होना चाहिये। संसारकी जरूरत पूरी करनेकी महत्त्वाकांक्षा हो तो ही सबसे अनुकूल भूमिमें

शक्ति केन्द्रित करना जरूरी होता है। लेकिन जब गांवकी आवश्यकता पूरी करनेकी महत्त्वाकांक्षा हो तब जिसमें उल्टी बात लागू होती है। ग्रामीण किसानके लिझे काफी कपास खतमें अक कोनेमें आसानीसे अुग सकती है अथवा सहयोगसे गांव अपने लिझे कपास अुगा सकता है। अगर असा किया जाय तो यह समझना आसान है कि लागत या टिकाअूपन किसीमें भी जिस तरह तैयार किये गये कपडेकी बराबरी कोअी बाहरसे मंगाया हुआ कपडा नहीं कर सकता। जिस प्रक्रियामें शक्तिका अधिकसे अधिक संचय होता है।

हरिजन २०–४–३५

खुद कातनेवालेके द्वारा या लगभग हर गांवमें कपास अुगाये बिना स्वावलम्बी खादी कभी सफल नहीं होगी। जिसका अर्थ यह है कि जहां तक स्वावलम्बी खादीका संबंध है कमसे कम वहां तक कपासकी खेतीको विकेन्द्रित किया जाय। जिसके लिझे हमें जिन गांवोंकी सेवा की जाय अुनकी जनगणनाकी जरूरत होगी। क्योंकि प्रत्येक कातने या बुननेवालेके पास (छोटासा भी) जमीनका टुकडा असा नहीं है जहां वह कपास अुगा सके। स्वावलम्बी खादी ही असी योजना है जिसके लिझे चरखा संघका अस्तित्व अुचित माना जा सकता है। यह असा क्षेत्र है जिसमें संघने किसी अुल्लेखनीय पैमाने पर अभी तक कोअी काम नहीं किया है।

हरिजन २७–७–३५

जब कोअी पदार्थ व्यक्तिगत अुपयोगके लिझे तैयार किया जाता है तब अक ही परिवार या अक व्यक्तिमें सारी प्रक्रियाओंका जितना अधिक केन्द्रीकरण होता है समय और धनकी किफायत अुतनी ही अधिक होती है। जिस आदमीके पास थोडीसी असी जमीन हो जिसे वह अक पर्याप्त अवधिके लिझे तो अपनी कह सकता है और अुस पर रोज काम करता है असे फुसतके समयमें अपनी या अपने आदमियोंकी मेहनत भरमें जरूरतकी खादी मिल सकती है। अुसे यह दिखानेको कि हरअेक आदमी लगभग मुफ्तमें अपनी खादी कैसे बना

प्रक्रियामें अधिक समय लगता है। अगर कोअी आदमी अपने लिअे ओटता, पींजता और कातता है, जो वह आसानीसे कर सकता है, तो अुसे लगभग अुसी कीमत पर अपनी खादी मिल जाती है जितनी कीमत पर मिलका कपड़ा। किसी पदार्थकी लागत अुसके अुत्पादन पर खर्च किये गये श्रमकी कीमतमें गिनी जाती है। अिसलिअे जब सारा श्रम स्वयं अुपभोक्ताका ही हो और वह भी फुरसतके समय किया गया हो, तब लागत लगभग कुछ भी नहीं होगी। स्वावलम्बी खादी बिचौलियोंको बिलकुल अुड़ा देती है। यह गांवोंके करोड़ों अधभूखे लोगोंकी आमदनी प्रत्यक्ष रूपमें बढ़ानेका सबसे सरल अुपाय है।

परन्तु क्या ग्रामवासी कभी स्वावलम्बी खादीको अपनायेंगे? हां, यदि हममें श्रद्धाके साथ साथ वैज्ञानिक कौशल हो या असी सजीव श्रद्धा हो जो पहाड़ोंको हिला दे और हम मजदूरको अुसके कामके लिअे आवश्यक सारी कुशलता प्रदान करें। यह काम कठिन है। परन्तु कठिन हो या आसान, अुसका अभी तक किसी बड़े या संगठित पैमाने पर अथवा किसी सुकल्पित योजनाके अनुसार प्रयत्न नहीं किया गया। जब तक कोअी सुकल्पित भारतव्यापी प्रयत्न गांववालोंको यह शिक्षा देनेका न होगा कि वे अपना कपड़ा आप तैयार कर लें और अिस तरह अुनके देहातमें जो थोड़ी-बहुत संपत्ति बाकी है अुसका अनावश्यक रूपमें वहांसे चला जाना रोका नहीं जायगा, तब तक चरखा संघका अस्तित्व अुचित नहीं माना जायगा। कारण, जैसा मैं कुछ समयसे अिस पत्रमें आग्रह कर रहा हूं, खादीका संदेश यही है कि स्थानीय अुत्पादन और स्थानीय अुपयोग द्वारा वह देहातमें सर्वत्र काम आने लगे। प्रत्येक गांवमें, अुन गांवोंमें भी जहां पहले कपास कभी नहीं बोअी गयी हो, कपासकी खेती बराबर आरम्भ करनी पड़ेगी। कपासकी मशीनके विकेन्द्रीकरणके बिना देहातमें खादीकी सार्वत्रिक अुत्पत्ति

सभव नहा होगी। हमारे पास अिसके प्रामाणिक अुदाहरण ह कि जमीनके विवेकपूर्ण सुधार और सभाऌस मरुस्थल भी लहलहाते अुद्यान बन गय ह। अिसलिअे प्रत्यक ग्राममें वहीं अुपयोगके लिअ कापी कपास अगा लेना असभव नही होना चाहिय। अिससे खादी ग्राम वासियोंके लिअ सस्ती ही नही हो जायगी परतु खादीका टिकाअूपन भी बढ जायगा। अनुभवने अतिम रूपसे प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया है कि सूतकी मजबूती और पदावार पर काममें लाअी जानवाली रुअीकी किस्मका और कपासको चुनने साफ करन ओटन धुनने और कातनकी पद्धतिका प्रभाव पडता है। जिस रुअीसे ढाकाकी प्रसिद्ध मलमल तयार हो सकती है अुस पर होनवाली तमाम प्रक्रियाओंमें कोमलता रहनी चाहिय। तभी वह नवनम में बदली जा सकती है।

हरिजन ३–८–३५

६७

तकली

गावमें कपड सबधी स्वावलबनका सदेश पहुचानेकी कोशिश करने वाले जो अनेक कायकर्ता भारतके भिन्न भिन्न भागोंमें काम कर रहे ह अनसे म अनुरोध करूगा कि वे कताअीके साधनके रूपमें तकलीकी निहित शक्तिया पर अपना ध्यान लगायें। क्योंकि सत्याग्रहाश्रम और वसी ही दूसरी सस्थाओंके निवासियोंने प्रत्यक्ष प्रमाण देकर सिखा दिया है कि साधारण कातनवालेके लिअ तकलीकी अुत्पादक शक्ति यदि अससे ठीक तरह काम लिया जाय हर प्रकारसे चरखके बराबर है। जो व्यक्ति बिलकुल कमजोर नहीं है और जो अवकाशके समय और कमाअीका हेतु न रखकर कातना चाहता है असके लिअ तकली चरखका स्थान पूरी तरह लेनेमें समर्थ है। अिसलिअ कायकर्ताओंको तकली चलानेका नया तरीका सीखकर देहातमें चरखेके बजाय अुसे जारी करना चाहिये। बूढ़ों और दुबलोंके लिअ फिर भी चरखा आवश्यक होगा।

कारण यंत्रशास्त्रके सिद्धान्तोंके अनुसार चरखा 'लीवर' प्रणालीसे चलनेवाली तकली ही है। और जैसे किसीकी मांसपेशियोंमें हाथसे वजन अुठानेका सामर्थ्य न हो तो अुसे जिसके लिअे किसी 'लीवर' की सहायताकी जरूरत होगी वैसे ही जो अपनी हथेलीकी मांसपेशियोंसे तकलीकी गतिमें जल्दी तेजी नहीं ला सकता या सतत अपना हाथ अूपर-नीचा करनेका जोर बर्दाश्त नहीं कर सकता अुसे चरखेकी जरूरत होगी।

हरिजन २२-३-३५

६८

धनुष तकली

आप जानते होंगे कि मैं मामूली चरखे पर अच्छा कात सकता हूं। मगर मैंने धनुष तकलीको ही काममें लेनेका नियम बना लिया है और अब मैं अुसमें लगभग प्रवीण हो गया हूं। कारण यह है कि जहां लक्ष्मीदासभाअी २५ लाख चरखोंकी फरमाअिश पूरी नहीं कर सकते वहां अुतनी धनुष तकलियां तो लोग खुद ही बना सकते हैं। यह बनानेमें बहुत आसान और बहुत सस्ती है अुसमें बहुत कम सामान चाहिये और लगभग कुछ भी कारीगरी नहीं लगती। यह गलत नीति है कि पंजाब या दक्षिण भारतमें भेजनेके लिअे चरखे साबरमतीमें तैयार कराये जायं। ये सब जगह स्थानीय रूपमें बनाये जाने चाहिये और अिस कामके लिअे धनुष तकली ही ठीक चीज है। अिसका सर्वत्र प्रचार होनेसे अुत्पत्ति खूब बढ़ जायगी।

हरिजन २२-३-३५

६९
तीन जरूरी बातें

यह मान लें कि करोड़ों लोगोंमें अिच्छा तो है, तो फिर हाथ कताअीका शीघ्र प्रचार नीचे लिखी तीन बातोंको अपनाने पर ही संभव है :

१. कपास अगर अपनी खुदकी जमीन पर बोअी गअी हो तो बहुत अच्छा; न बोअी गअी हो तो बिना ओटे हुओ कपास निकटतम स्थानसे लायी जाय और असका अिस्तेमाल किया जाय।

२. असे चिकनी पट्टी पर किसी लोहे या चिकनी लकड़ीकी सलाअीसे ओटा जाय और स्थानीय बने हुअ लकड़ीके चाकूकी मददसे अंगुलियों द्वारा धुन लिया जाय। अिस प्रक्रियाको तुनाअी कहते हैं।

३. पूनिया धनुष तकली पर कानी जाय।

हाथ परखिया आज कहते ही नहीं बनाअी जा सकता। जितनी भी बिना ओटी रुअी मिल सकती है असे क्रम नं. २ में समझायी गअी पद्धतिसे पहले तैयार कर लेना चाहिये।

जहां बिना ओटी रुअी अपलब्ध न हो वहां कारखानोंमें ओटी हुआ रुअी अिस्तेमाल करनी होगी। अिसकी भी तुनाअी हो जाती है यद्यपि जब गांठकी रुअी काममें ली जाती है तो असे तुनाअी पद्धतिसे धुननेमें बहुत अधिक समय लग जाता है। जहां धुनकी मिल सकता है वहां तो स्वभावतः वह काममें ली ही जायगी। लेकिन जो बात ओटाअीके लिअ सही है, वह धुनाअीके लिअ भी अतरी ही सही है। क्षणभरमें धनकी और तांत तैयार कर लेना संभव नहीं है। तुनाअीकी पद्धति श्री विनोबाने निकाली है और असे वे अक कलाकारकी कुशलता और अत्साहसे पूर्ण बना रहे हैं।

जब कताअी करोड़ों लोगोंमें फैल जायगी तो किसी केन्द्र या केन्द्रोंसे पूनियां पहुंचाना असंभव होगा। परिवार या समूह अधिकसे अधिक यह कर सकते हैं कि धुनाअीके लिअ अक निश्चित संख्याके पीछे अक या दो आदमी अलग रख दें। आदर्श, अुत्तम और अन्तमें

सबसे जल्दीका मार्ग यही है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपनी पूनिया बना ले। अिससे कताओी दिलचस्प हो जाती है और क्रियाओंकी विविधताके कारण कामकी नीरसता मिट जाती है।

हरिजन २२-२-४२

७०

बम्बआीका खादी-भंडार

बम्बआीका खादी भंडार चरखा संघका सबसे बड़ा खादी भंडार है। चूंकि खादीके संघमें नआी नीति अपनाओी जा रही है अिसलिअे नआी नीतिकी आवश्यकताके अनुसार कर्मचारियोंकी संख्या घटाओी जा रही है। श्री जेराजाणीजी अपनी रोचक बुद्धिसे सोच-सोचकर नये नये डिजाअिनोंकी खादी वहां मंगवाते थे भारतवर्षके तमाम भागोंसे आयी हुआी अिस खादीकी बिक्री बढ़ानेका असाधारण प्रयत्न वहां होता रहा है। परन्तु अिस प्रयत्नमें व्यवस्था-खर्च अितना अधिक बढ़ गया कि असकी तुलनामें दरिद्रनारायणकी दृष्टिसे परिणाम बहुत कम आया और अिससे प्रांतीय कार्यकर्ताओंका ध्यान अपने मुख्य कार्यसे हट गया। असल काम तो यह था कि वे खादीको अपने अपने प्रांतमें स्वावलम्बी या लोकप्रिय बनायें। खादीका सार्वत्रिक मिशन सच्चे प्रान्तीय प्रयत्नके बिना पूरा नहीं किया जा सकता। यह खादीका यथासंभव असली अुत्पत्ति-केन्द्रोंमें बांटनेसे ही हो सकता है। बाकी कुछ खादीकी जरूरत बम्बआी जैसे बड़े नगरोंके लिअे सदा रहेगी क्योंकि वे खुद अुसे कभी पैदा नहीं करेंगे। यह अेक स्वस्थ मांग होगी और वह असाधारण प्रयत्नके बिना पूरी की जा सकेगी। शहरकी खादीकी दुकानोंमें हमें जो तरह तरहके नमूने दिखायी देते हैं वे अिसीलिअे संभव हुअे कि सघन शहरी जनताकी विविध रुचियोंको पूरा करनेकी कोशिश की। परन्तु यदि खादीको अपना मिशन पूरा करना है तो वह समय आ गया है जब अुत्पत्ति केन्द्रोंकी तरफ ध्यान मोड़ा जाय। परन्तु वे बहुत हो

चाहते हैं। जैसे प्रत्येक घर पकाये हुअे भोजनकी अुत्पत्तिका केन्द्र है अुसी तरह प्रत्येक घरको नहीं तो प्रत्येक गांवको खादीकी अुत्पत्तिका केन्द्र बनना पड़ेगा। रसोअीघरकी अर्थव्यवस्था किताबोंकी अर्थव्यवस्थासे बिलकुल भिन्न है। खादीकी अर्थव्यवस्थाकी भी यही बात है। तब प्रस्तावित परिवर्तनका अर्थ यह है कि चरखा संघके द्वारा या अुसकी तरफसे चलाये जानेवाले बड़े भंडारोंमें कर्मचारियोंमें काफी कमी की जाय। अिसका यह अर्थ भी है कि प्रमाणित खानगी अुत्पादक बिलकुल खतम चाहे न किये जायँ पर अुनकी संख्या जरूर कम हो जाय।

हरिजन १०-८-'४५

७१

कताअीके पहले और पीछेकी प्रक्रियायें

कातनेवालेको कताअीके पहले और पीछेकी सब प्रक्रियायें स्वयं करनी चाहिये। अर्थात् अुसे बुनाअी तककी सारी प्रक्रियायें करनी चाहिये। यही स्वराज्यका मार्ग है। अब तक हम सिर्फ व्यापारिक खादी बनाते रहे हैं। व्यापारिक खादी हमारे लिअे बच्चोंकी गाड़ी थी। अुसने हमें चलना सिखाया। अब भी वह वहां है। पिंजाअी और दूसरी क्रियाअें औरोंसे करा लेना बच्चोंकी चालनगाड़ीकी तरह था और अब भी है। जैसे जैसे हम अिन सहारोंको छोड़ते जा रहे हैं हम स्वराज्यके ज्यादा नजदीक पहुँच रहे हैं। चरखा संघके अुत्पत्ति-केन्द्रोंमें यदि पिंजाअी वगैराकी प्रक्रियायें अलग अलग की जा रही हैं तो यथासंभव यह सब अब बंद कर देना चाहिये। समझौतेके बिना मनुष्योंका काम नहीं चल सकता। ये सहारे चालनगाड़ी जैसे हैं। अिसलिअे जितना जल्दी संभव हो अुन्हें छोड़ देना चाहिये। जिसका अिसमें विश्वास हो और जो अिसके गूढ़ार्थ समझता हो वह अिन्हें छोड़नेवाला पहला आदमी होगा।

'दि आअिडियालाजी आफ दि चरखा' पृष्ठ ९२ ३-४-४६

७२

नयी योजना

खादीकी कथित नयी योजनाको पाठक पूरी तरह समझ लें। मैं अिसे कथित अिसलिअे कहता हूं कि जो कुछ आज किया जा रहा है वह तो लाजिमी चीज है बशर्ते कि खादीके द्वारा ही ग्रामीणोंकी कपड़ेकी जरूरत पूरी करना हो। और खादीके बारेमें यह विचार तो शुरूसे ही रखा गया है। खादी सिर्फ शहरके लोगोंके लिअे ही कभी नहीं सोची गयी थी अुसका अुद्देश्य देहातियोंका सूत खरीदना नहीं था जैसा कि शहरके लोगोंको अिसे रखनेके लिअे आज हो रहा है। खादीकी कल्पना शुरूसे यह रही है कि यह क्रम अुलट दिया जाय यद्यपि अुसमें शहरवासियोंका सूत खरीदनेका उद्देश्य बिलकुल नहीं है। अिस क्रमको अुलट दिया जाय तो गांवों और शहरोंमें फिर स्वाभाविक संबंध कायम हो जायेंगे। शहर अंग्रेजोंके आनेसे पहले भी थे। तब भी हालत काफी खराब था। अब तो वह और भी खराब हो गयी है। परंतु शहर बन गये। और शहर अपने भारतीय करोड़पतियोंके होते हुअे भी मुख्यतः अंग्रेज मालिकोंका ही हित-साधन करते रहे। खादीका अुद्देश्य अैसी गम्भीर बुराअीको मिटाना है। मिलका कपड़ा ग्रामीण भारतकी गुलामीका चिह्न है अुसी तरह खादी अुसकी आर्थिक और राजनीतिक आजादीकी निशानी है या होनी चाहिये। अगर खादी अैसी नहीं बन सकती तो खादी निरर्थक है। अिसीलिअे खादीके विकासकी प्रक्रियामें जो भी अच्छा परिवर्तन किया जाय, वह स्वागतके योग्य माना जाना चाहिये। अभी तक जो विकास होता रहा वह यद्यपि अच्छा मालूम होता था फिर भी अुसमें यह दोष था कि वह ग्रामवासियोंके लिअे जितना चाहिये अुतना लाभप्रद सिद्ध नहीं हुआ। अुन्होंने सूत काता और खादी बुनी परंतु मुख्य

अुसका अुपयोग करना पड़ा गीता। ये खादीके अुपयोगके मिलनेवाले गौरव और महत्त्वको न तो समझ पाये और न अुसका अजरी कदर की। मजूर अनका नहीं था। कायकर्ता स्वयं नहीं समझाते थे। खादर या पहनी खादी पहनकर प्रायश्चित्त करना पड़ता था। वे चाहे स्वयं ज्यादा दाम करके अिस तरहका प्रायश्चित्त गरीबोंके लिये तैयार थे क्योंकि वे अिसके साथ आगामीके बचा सकते थे और बादमें पैसे भवन बचाते थे। परन्तु चरखा-संघ खादीकी बुनियादको हर अवस्थामें अपने जीवनका शिलापट बनाकर जा सकता था? अिसलिये वह अब अपने सारे साधनोंका अपयोग ग्रामीणोंको खादीधारी बनानेमें कर रहा है। खुल्ली तौर पर वह अपनी शुरुआत हाथ-बने सूतके कातने और बुननेवालोंसे कर रहा है। अगर यह प्रवृत्ति सफल हुआी और हाथी ही तो शहरों और कस्बोंके बाजारोंमें कुछ ही समयके बाद विपुल खादी मिलने लगेगी। फिर तो भारतमें अवश्यमेव कपड़ा खादीका ही मिल सकेगा। चरखा संघ यह परिणाम लानेके लिअे मेहनतसे काम कर रहा है। अगर खोजसे यह जाहिर हो जाय कि खादीमें अभी कोअी शक्ति नहीं है तो अुसे अपना दिवालियापन घोषित करनेमें कोअी संकोच नहीं होगा। पाठकोंको याद रहे कि यह असा शास्त्र है जिसे अिस यंत्रयुगमें चालीस करोड़ लोगोंके मनसे निबटना है। अिस तरह सोचा जाय तो यह अेक जबरदस्त समस्या है अगरचे साथ ही वह मनोहर और दिलचस्प भी है। अगर हार हुआी तो वह भी हार नहीं होगी। यह समझ लेना चाहिये कि यह अुस अंधकारमय युगमें वापस जानेका प्रयत्न नहीं है जिसमें चरखा आम लोगोंकी दासताका चिह्न था। जब भारत चरखेके द्वारा अपने बंधन तोड़ फेंकनेका प्रयत्न करेगा तो सचमुच ही वह मनुष्यकी समझदारीका अर्थात् भारतकी आत्माकी विजय होगी। स्वतंत्र मनुष्य वही रोटी खाता है जो गुलाम खाता है। लेकिन अेक आजादीकी रोटी खाता है दूसरा गुलामीकी।

परन्तु यदि शहरोंके निवासी और कस्बोंके निवासी चरखेके शुभ सन्देशको सुनना चाहेंगे तो वे अपना समय घुड़दौड़का जुआ खेलकर

या अपने बन्दघरामें शराब पीकर बरबाद करनेके बजाय खुशीसे अुस पिजाअी कताअी और बुनाअीमें लगायेंगे। और अुनके बच्चे? वे भी अपने माता पिताके लिअे भारतकी आजादीके लिअे काम कर सकते हैं और भारतको जिस ढंगकी शिक्षा चाहिये वह प्राप्त कर सकते हैं। जब मैं रांचीमें था तब मुसाल्लिनीके कर्मचारियोंने सबके साथ मुझ छोटे बच्चोंके नाविक दावपेंच दिखाये थे। अुन बच्चोंको नौविद्याकी हर तरहकी तरकीबें सिखायी जा रही थी। और अधर अंग्रेज बच्चे भी जिस चीजकी अिल्लतको जरूरत है अुसे अपनी मातृभाषाके द्वारा सीखनेके सिवा और क्या करते हैं?

चरखा संघके किसी भंडारका अुपयोग अब पहलेसे ज्यादा अच्छे कामके लिअे किया जायगा। वे लोगोंको कताअी और बुनाअीकी सारी तरकीबें सिखायेंगे। मुझे आशा है लोग अिन कामोंको सीखनेके लिअे अितनी संख्यामें पहुंचेंगे कि वहां अुनकी भीड़ लगी रहेगी। अुन्होंने असा किया तो अुन्हें अपनी जरूरतकी तमाम खादी मिल जायगी। जहां चाह होती है वहां राह निकल ही आती है।

हरिजन २१-७-४६

७३

खादीका नया युग

खादीका अेक युग समाप्त हो गया। खादीने गरीबोंके लाभके लिअे कुछ करके दिखा दिया। अब हमें यह दिखाना होगा कि गरीब स्वावलम्बी कैसे बन सकते हैं, खादी अहिंसाका प्रतीक कैसे बन सकती है। यही हमारा असली काम है। अिसमें हमें अपनी श्रद्धाका प्रत्यक्ष प्रमाण देना होगा।

दि आिअिडियालाजी आफ दि चरखा पृ० ९४ चरखा जयन्तीका सन्देश अगस्त १९४७।

सम्मेलन*

१

खादीके बारेमें नया दृष्टिकोण

दो साल्के ल्बे अरसेके बाद १९४४ में गांधीजी तथा चरखा संघके दूसरे कुछ ट्रस्टी जलसे रिहा हुअे तब १ २ ३ सितंबर १९४४ को सेवाग्राममें संघकी सभा बुलाओी गओी। सभामें तीनों दिन गांधीजीने जो महत्त्वपूर्ण भाषण दिये अुनका सारांश यहां दिया जाता है।

पहला दिन ता० १–९–४४

जलमें मने खादीके बारेमें काफी विचार किया और जिस नतीजे पर पहुंचा अुसे संक्षेपमें कहूंगा।

सबसे बड़ी बात जो मने जल्में पाओी वह यह थी कि मने देखा कि चरखा संघकी हस्ती मिट सकती है। सरकारने अुसे मिटानेकी काफी चेष्टा की है। हमारा काम कुछ-न-कुछ चलता तो रहा लेकिन मने देख लिया कि सल्तनत चाहे तो हमें नाबूद कर सकती है। यानी मेरी जो कल्पना रही कि अिस देशमें चरखेकी प्रवृत्ति तो किसी हालतमें नाबूद नहीं हो सकती वह सिद्ध नहीं हुओी। म जल्दीसे हार कबूल करनेवाला आदमी नहीं हूं लेकिन जेल ही में मने पाया कि हम सरकारकी दया पर जीते हैं। यह बात मुझे चुभती है।

जल्में मने सोचा कि हमारी चरखा प्रवृत्तिमें कुछ दोष है, अुसे सुधारना होगा। मने हिंदुस्तानको कहा चरखा चलाओ। किस तरीकेसे चलाना है सो भी म ठीक-ठीक जानता था। परन्तु जिस दृष्टिसे और जिस दिमागसे अुसे चलाना है अुस पर मने जैसा चाहिये था

* यह सारा प्रकरण यहां वहां कुछ शाब्दिक परिवर्तन करके अखिल भारत चरखा संघ द्वारा प्रकाशित चरखा संघका नवसंस्करण नामक मूल हिंदी पुस्तकमें से लिया गया है।

बना जाए नहीं लिया। मैं अपनेको व्यवहार-कुशल मानता हूँ। व्यवहारके पहलू पर ही सब आयी नार दत रहूं। अुस मैंने बरदाश्त किया। अुसमें मैं साथ भी रहता रहा। आज अब मैं सिर्फ अितना ही कहता रहूँ कि चरखा चलाओ तो हमारा काम नहीं चलेगा। अब हम काफी चल आये हैं।

मैं सोचता रहा कि अब आगे कैसा काम चलाया जाय। मैंने देखा कि जब तक हमारा चरखेका पैगाम हम घर घर नहीं पहुँचाते तब तक हमारा काम अधूरा ही है। यही कारण है कि हम अपने आदर्शसे अभी बहुत दूर हैं। सात लाख देहात पड़े हैं। जिनमें कितने लोग अैसे होंगे जिनको हमारी चरखा प्रवृत्ति क्या चीज है जिसका पता नहीं है। यही हमारा अैब है। जिस बात पर आप विचार करें। अिसी विचारधारामें से विकेन्द्रीकरणकी बात निकली है। अगर हम चाहते हैं कि खादी फले और अुसकी जड़ मजबूत बने तो हमें अिस कामका विकेन्द्रीकरण करना होगा।

हम पर अिल्जाम लगाया जाता है कि चरखा संघवाले ग्रामोद्योग संघवाले गांधीवाले सब जड़ होते हैं। लोगोंकी अुन पर श्रद्धा है लेकिन वे जनताको देखकर सब हालात ठीक तरहसे नहीं बता सकते। भारतका साहित्य हमारे हाथमें आ रहा है। अिन बाहरी शक्तियोंके प्रभावके सामने वे टिक नहीं सकते।

जब हम अपनेको अहिंसाके पुजारी बतलाते हैं तब हम अहिंसाकी शक्ति क्या है यह बतला न सकें तो हम कैसे गांधीवादी? असलमें तो गांधीवाद जैसी कोअी चीज ही नहीं है। वास्तवमें कुछ हो तो वह अहिंसावाद है। चरखा संघका हरअेक व्यक्ति अहिंसाकी जीवित मूर्ति होना चाहिये। अहिंसावादी या गांधीवादी कहो — तेजस्वी होना चाहिए। आज तो गांधीवादी शब्द गाली हो गया है। वह शब्द स्तुति-सूचक नहीं रहा। हम अहिंसामय नहीं हैं सो स्वीकार कर लें। यदि अहिंसामय होते तो आज हरअेक देहातमें चरखा पाते। मैं कबूल करता हूँ कि मैं यह नहीं कर सका। यदि यह अिल्म मैंने पाया होता तो कमसे कम सेवाग्राममें तो अुसका दर्शन करवाता। लेकिन अभी तो

यहांके लोगोंके हाथमें चरखा रख भी दूं तो भी व अुसे नहीं अपनाते। हम अुन्हें ज्यादा पैसा देते हैं, सिखाते हैं अन्य काम आदि देकर लालच भी दिखाते हैं तरह तरहसे अुनकी सेवा करते हैं तो भी हमें सफलता नहीं मिल रही है। फिर भी चरखेकी शक्ति परका मेरा विश्वास अटल है।

यह बात नहीं है कि हममें त्यागी कम हैं। काफी त्यागी भाअी बहन हमारेमें पड़े हैं। मैं अनकी वंदना करता हूं। अब अनकी याद करता हूं तो मेरा हृदय भर आता है। मेरी आत्मा कहती है कि जहां अितने त्यागी कार्यकर्ता पड़े हैं अुस देशकी अवनति हो ही नहीं सकती। परन्तु अितना त्याग होने हुअे भी मुल्ककी आजादी नहीं आअी। आजादी आ तो रही है कदाचित हम मानते हैं असमें कहीं अधिक जल्दी आ रही है। लेकिन असमें मेरा पेट नहीं भरता। मैं अपने मनको पूछता हूं कि अिसमें मेरा हिस्सा कितना? अपने दिलको मना लेता हूं कि हमने यथाशक्ति प्रयत्न तो किया है। अिसलिअे मैं किसी पर अिल्जाम नहीं लगाता। केवल परिस्थिति दिखा रहा हूं। परिस्थितिको अच्छी तरह पहचानना भी तो अेक बुद्धिका लक्षण है। हमने जो कुछ किया अुससे हम संतुष्ट न रहें। जो कुछ हमसे बन पाया यथाशक्ति हमने किया। परन्तु जो गज हमने अपनेको नापनेके लिअे रखा था अुसके अनुसार सबका काम यदि हम कर सकते तो आज हममें जो निराशा-सी छा गअी है वह नहीं दिख पड़ती। क्योंकि असमें हमने अहिंसक स्वराज्य हासिल किया होता।

आपके सामने अेक कड़ा-सा नुस्खा रखता हूं। अगर आप अुसके लिअे तैयार हैं तो मुझे भी आप अुसमें शामिल समझें। लेकिन यह अुपाय अज्ञानवश नहीं स्वीकारना है। वह निरे साहसकी भी बात नहीं है। बुद्धिपूर्वक विचार करके जिस नतीजे पर पहुंच सकें तो ही ठीक। यदि आप ठीक निर्णय पर पहुंचे तो आप चरखा संघको बिल्कुल बंद कर दें। असकी जो कुछ जायदाद है पैसा है, सब कार्यकर्ताओंमें कामके लिअे बांट दें। आगेका काम चलानेके लिअे अेक कौड़ी भी रखनेकी आवश्यकता नहीं। हम सब यही मानें कि चरखा ही अन्नपूर्णा

है। अगर चालीस करोड़ जनता यह समझ जाय तो फिर चरखेकी प्रवृत्तिके लिअे अेक कौड़ी भी लगानेकी जरूरत नहीं। फिर सल्तनतकी ओरसे निकलनेवाले फरमानोंसे घबड़ानेका कोअी कारण नहीं। पूंजी-पतियोंके मुंहकी ओर ताकनेकी जरूरत नहीं। हम खुद ही केन्द्र बन जायंगे और लोग दौड़ते हुअे हमारे पास आवेंगे। काम ढूंढनेके लिअे अुन्हें कहीं जाना न होगा। हरअेक देहात आजाद हिंदुस्तानका अेक-अेक केन्द्रबिंदु बन जायगा। बम्बअी कलकत्ता जैसे शहरोंमें नहीं किन्तु सात लाख देहातोंमें चालीस करोड़ जनतामें आजाद हिन्दुस्तान विभक्त हो जायगा। फिर हिंदू मुसल्मानका मसला अस्पृश्यताकी समस्या झगड़े फिसाद गलतफहमियां हमेशाके कुछ न रहेंगी। अिसी कामके लिअे सबकी हस्ती है। अिसीलिअे हमको जीना है और मरना भी है।

आप कहेंगे यह बहुत बड़ा काम है। अिसके लिअे बड़ी बुद्धिकी आवश्यकता है। मैं कहता हूं कि वह बड़ी बुद्धि लाअिब्रेरियोंमें बैठकर पठन-पाठन करनेसे मिलनेवाली नहीं है। अपने हाथोंसे मेहनत करके बुद्धिको तेजस्वी बनाना है। अिसीमेंसे बुनियादी तालीमका जन्म हुआ। अिस तालीममें हाथ-पैरके श्रमके जरिये बुद्धिको तेजस्वी किया जाता है। पुस्तकोंको जलाना तो नहीं है लेकिन अुनका स्थान गौण है। पहला स्थान चरखेका है। अुसकी साधनासे ही ग्रामोद्योग नअी तालीम आदि अन्य दूसरी चीजें पैदा हुई हैं। अगर हम बुद्धिपूर्वक चरखेको हासिल कर लेंगे तो देहातोंको फिरसे जिन्दा कर सकते हैं।

हमको देखना यह है कि हमने चरखेका ज्ञान पर्याप्त मात्रामें कर लिया है क्या? हमने अुसके पीछे काफी तपश्चर्या की है आविष्कार किये हैं। चरखे तो बहुत बनाये लेकिन अब अैसा शास्त्री पैदा करना है जो यंत्रशक्तिसे पूरा परिचित हो। वह अैसे चरखे बना दे जिनसे आज हम जितना सूत निकालते हैं अुससे अधिक अच्छा और अधिक सूत निकाल सकें। यदि अैसा शास्त्री न मिला तो भी मैं हारनेवाला नहीं हूं। बुद्धिसे कहूंगा कि मेरी बात सही है। यह काम विश्वाससे करना है। जब विश्वास मूर्तिमान होता है तो बुद्धिके मारफत

चमकता है। यह चीज अपने आप चमकनवाली नही है। जब श्रद्धा अत्यधिक बढ़ जाती है और अुसको दूसरा वाहन मिल जाता है तब वह चमक अुठती है। श्रद्धा कभी कम नही होती। वह आगे आगे ही बढती चली जाती है। अुसके सहारेस बुद्धि तेजस्वी होती जाती है और फिर श्रद्धा बुद्धिवादका सामना कर सकती है। हमें व्याख्यान नहीं देना ह सच्चा वैज्ञानिक परिणाम निकालना है। हम सारी दुनियाको अपनी श्रद्धाका अज्ञान करेंगे और कहेंगे तुम सच्चे नही हो हम सच्चे ह।

दूसरा दिन ता० २-९-'४४

कल रातको और आज प्रातःकाल काफी विचार करनेके बाद मने अेक ढाचा तयार किया है। जसा लिखा है वसा पढ़ता हू।

१ चरखेकी कल्पनाकी जड देहात है और चरखा सघकी कामनापूर्ति अुसके देहातमें विभक्त होनेमें है। अिस ध्ययको खयालमें रखते हुअ चरखा सघकी यह सभा अिस निणय पर आती है कि कामकी प्रणालीमें निम्न लिखित परिवतन किय जाय —

(अ) जितने कायकर्ता तयार हो और जिनको सघ पसद करे वे देहातोंमें जाय।

(आ) बिक्री भडार और अुत्पत्ति-केन्द्र मर्यादित किय जाय।

(अि) जो विद्यालय ह अुन्हें विस्तृत रूप दिया जाय और अभ्यासक्रम बढाया जाय।

(अी) जो सूबा या जिला स्वतत्र और स्वावलबी होना चाहे, अुसे यदि सघ स्वीकार करे तो स्वतत्रता दी जाय।

२ चरखा सघ ग्रामोद्योग सघ और हिन्दुस्तानी तालीमी सघकी अेक स्थायी समिति नियत हो जो नअी पद्धतिके अनुकूल आवश्यक सूचना निकाला करे। तीनो सस्थाअें समग्र

कि अुन पर पूर्ण अहिंसाको प्रकट करना निर्भर है। जिसके सपूर्ण विकासमें पूर्ण स्वराज्य छिपा है।

तीनों सस्थाओंका ज्ञान असा होना चाहिये कि सारा राजकारण अुन पर अवलम्बित रहे न कि वे प्रचलित राजकारण पर अवलम्बित रहें।

अिसका अर्थ यह हुआ कि अिन तीनों सस्थाओंके कार्यकर्ता स्थितप्रज्ञ-से होने चाहिये। अगर यह सभव न हो तो हमारी कार्यरेखा बदलनी चाहिये। हमारा आदर्श नीचे जाना चाहिये। आज हमारी हालत विचित्र-सी मालूम होती है।

जिसमें चरखा सघ ग्रामोद्योग सघ और तालीमी सघ अिन तीनों सस्थाओंकी सम्मिलित समिति बनानेकी सूचना मैंने की है। हमारा काम अैसा होना चाहिये जिससे सारा राजकारण अुन पर अवलम्बित रहे।

हमारी बहुत दीन स्थिति रही है। चरखा सघके कुछ लोगोंने मुझसे बताया कि हमें काग्रेसवालोंसे सहायता नहीं मिलती। आज तक हम पगु रहे हैं जिसलिअे हम काग्रेसका मुह देखते रहे हैं। मानते हैं कि अगर काग्रेस मदद दे तो हमारा काम चलेगा। लेकिन हममें जितनी शक्ति होनी चाहिये कि काग्रेसवाले हमारे पास पूछने आयें कि बताओ देहातमें हम कैसे काम करें। फिर चरखा सघके बाहर कौनसा काग्रेसवाला रह जाता है? अगर हममें यह ज्ञान होता तो हममें आपस-आपसमें मेल रहता। दोनों अेक-दूसरेमें सम्मिलित हो जाते। हम काग्रेसका रचनात्मक काय करते और काग्रेस सरकारके साथ लड़ाओीका धाराासभाओंका काम करती। वे दोनों परस्पर विरोधी काम मालूम नहीं होते।

अिसलिअे सब बातोंका हमें नये सिरेसे और नये आग्रहसे सोचना चाहिये। आज तक जिस ढगसे खादीका काय हम करते आये हैं अुससे जो शक्ति मैंने चरखेके भीतर मानी है अुसे हम सिद्ध नहीं कर सकते। जिस बातका मेरे दिलमें कोओी सन्देह नहीं रहा।

जो लोग यंत्रवादमें मानते हैं वे भी हिन्दुस्तानके मित्र हैं। अिसमें कोअी शक नहीं। लेकिन अुनमें और मुझमें दो ध्रुवों जितना अंतर है। यंत्रवादियोंके कथनानुसार शहरवाले भले ही चलें परन्तु आप देहाती लोग यदि गांवोंसे भी अुस पर चलें तो हिन्दुस्तानका नक्शा बदल जाय। यानी करोड़ों गरीब मर जायं और अेक करोड़ तगड़े योद्धा बचे रहें। मुझे १२५ वर्ष जीनेकी अभिलाषा है परन्तु ३९ करोड़को तबाह करके अेक करोड़ रहें — अुनचालीस करोड़ भस्म हो जायं यह मुझसे नहीं देखा जायगा। मेरी तालीम तो यह है कि जो सबसे अधिक पंगु है अुसकी सेवा करें और वह चले अुतने ही कदम चलूं। यही काम तालीमके जरिये करनेकी अितने वर्षोंसे हमारी कोशिश रही है। हमारा अितिहास चन्द वर्षोंका है। लेकिन अितने अरसेमें हमने कितने परिवर्तन किये? यदि आपकी यही राय रही कि परिवर्तन नहीं करना है तो वही सही। मैं हार न मानूंगा। आप सब भांति सोच विचार कर जिसे ठुकरा करें। अितने लोग फिर कब मिल सकेंगे क्या ठिकाना है? जो मेरे दिमागमें चीज आअी वह अुसीकी तैसी मैंने आपके सामने रखी है।

अगर हम मानते हैं कि चरखा ही हमारे लक्ष्यका सर्वोपरि प्रतीक है और अगर हम आजके तरीकेसे अपना दावा सिद्ध नहीं कर सकते तो हमें अपनी कार्यप्रणाली बदलनी ही चाहिये।

यह नहीं कि आज तक किया सो गलत ही गलत था। जो कुछ हमने किया सत्यनिष्ठासे किया। और वह क्या कम था? थोड़ीसी पूंजीमें साढ़े चार करोड़ रुपये देहातोंमें पहुंचाये। देहातोंमें पैसे पहुंचानेके लिअे जो खर्च किया वह परिमाणमें कम है। लेकिन फिर भी हमारे मकसदके अंदाजसे काम दूसरे दर्जेका हुआ। अिस प्रकारके व्यापारी कामके नीचे दब नहीं जाना है। जवाहरलाल मेरे पास चीनके सहकारी कार्यकी किताब भेजी है। हम जो काम कर रहे हैं अुसके मुकाबलेमें वहांका काम कुछ नहीं है। लेकिन कामकी हैसियतसे हमने कुछ भी काम नहीं किया। हम सात लाख देहातोंमें नहीं पहुंच सके हैं। मिलोंके मुकाबलेमें अेक प्रतिशत काम हम कर पाये हैं।

फिर असे अपने कामके लिओ गमान क्या करें ? अिसीसे मैं कहता हूँ कि यदि हम यह परिवर्तन नहीं कर सकते तो अेक निरी पारमार्थिक सस्थाके नाते काम करते हुए रह जायं। मुझे अिसमें शर्म नहीं मालूम होगी। अपने दावेको सिद्ध करना है और यह करनेमें किसीको धोखा नहीं देना है। यदि यह करना है तब फिर शक्ति कैसे बढ़ाना है यह सोचें। परिवर्तन करनेके लिओ अगर आप अपने हाथोंसे सब बन्द कर देंगे तो अपनी शक्ति बढ़नेवाली है।

तीसरा दिन ता० ३-९-'४४

हमारे कामका आरम्भ छोटीसी बातसे हुआ था। जब मैंने चरखेका काम शुरू किया तबसे मेरे साथ विट्ठलदासभाओ और चन्द बहनें थीं। अुनको मैं अपनी बात समझा सका था। मगनलालभाओ आदि दूसरे भी थे। वे जाते तो कहां जाते अुनको तो मेरे ही साथ जीना था — मरना था।

आज करोड़ दो करोड़ आदमी चरखेके असरमें आ गये हैं। चरखेमें स्वराज्य पानेकी शक्ति है असा हम आज तक कहते आ रहे हैं। चरखेके द्वारा अितने सालोंमें देहातके लोगोंके बीच काफी पैसा भी हम पहुंचा पाये हैं। क्या आज भी हम कह सकते हैं कि चरखेके बिना स्वराज्य नहीं आ सकता ? जब तक हम अपना यह दावा सिद्ध नहीं कर सकते तब तक चरखा चलाना हमारे लिओ अेक लाचारीका सहारा मात्र बन जाता है। वह मुक्तिमंत्र नहीं हो पाता।

दूसरी बात यह है कि हम हमारी यह बात करोड़ोंको नहीं समझा पाये हैं। आज अुन करोड़ोंमें चरखेके विषयमें न जिज्ञासा है, न ज्ञान।

कांग्रेसने चरखा अपनाया था सही लेकिन क्या अुसने यह अपना खुशीसे अपनाया ? नहीं वह तो चरखेको मेरे खातिर बरदाश्त करती है। समाजवादी तो अुसकी हंसी अुड़ाते हैं। अुसके खिलाफ अन्होंने व्याख्यान भी दिये हैं, लिखा भी काफी है। अुनका प्रत्यक्ष अुत्तर हमारे पास नहीं है। मैं अुनको कैसे विश्वास दिलाअूं कि

चरखेसे स्वराज्य हासिल हो सकता है। जितने वर्षोंमें ता नहीं कहा सका कि जिस जिस प्रकारसे हमारा दावा सिद्ध हो सकता है।

अब तीसरी बात।

अहिंसा तो कोओ आकाशकी चीज नहीं है। अगर वह आकाशकी चीज है तो मेरे कामकी नहीं। मैं पृथ्वीमें से आया हूं और अुसीमें मुझे मिल भी जाना है। अगर अहिंसा सचमुच ही कोओ चीज है तो अुसका दर्शन मेरे पैर पृथ्वी पर हैं जिसी बीच करना चाहता हूं। करोड़ों लोग जिसका पालन कर सकें असी अहिंसा मुझे चाहिये। जिस समाजमें कोमलता आदि गुण बसते हैं वहां अहिंसा न होगी तो कहां होगी?

हिंसावादीके घर पर जाओ तो देखोगे कि वहीं शेरका चमड़ा टंगा है तो कहीं हिरनके सींग। दीवार पर तलवार है बन्दूक है। मैं वाअिसरायके घर गया हूं मुसोलिनीके यहां भी मुझे ले गये थे। तो देखा कि चारों ओर शस्त्र लगे हुअे हैं। मुझे शस्त्रोंकी सलामी दी गअी। क्योंकि वही अुनका प्रतीक है।

अुसी प्रकार हमारे लिअे अहिंसाका प्रत्यक्ष दर्शन करानेवाला प्रतीक चरखा है। लेकिन हम जब वैसा ही काम कर बतायेंगे तब न वह सिद्ध होगा? मुसोलिनीके दरबारमें तलवार थी। वह कहती थी — अगर तुम मुझे छुओगे तो मैं काटूंगी। अुसमें हिंसाका प्रत्यक्ष दर्शन हो सकता है। वह कहती है मुझे छूओ और मेरा प्रताप देखो। असी प्रकार हमें चरखेका प्रताप सिद्ध करना चाहिये कि चरखेके दर्शन मात्रसे अहिंसाका दर्शन हो जाय। लेकिन आज हम कंगाल बने बैठे हैं। समाजवादियोंको क्या जवाब दें? वे कहते हैं अितने वर्षोंसे आप चरखा रटते रहे। आपने कौनसी सिद्धि हासिल की?

मुसलमानोंके वक्त भी चरखा चलता था। अुन दिनों ढाकाकी मलमल निकलती थी। तब भी चरखा कारीगरीकी ही निशानी था अहिंसाकी नहीं। बादशाह लोग औरतोंसे और नीचसे नीच प्राणियोंसे बेगार कराते थे। बादमें औस्ट अिंडिया कंपनीने भी वही

किया। कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें भी यही बात कही गयी है। तब ही से चरखा हिंसा और जोर-जबरदस्तीका प्रतीक बन रहा था। चरखा चलानेवालेको मुट्ठीभर अनाज या दो दमडिया मिल्ती थी। और अुसमें से प्राप्त मलमल गजा पहनने पर भी बादशाहोकी स्त्रिया विवस्त्र दिखाओी देती थी।

लेकिन आपको जो चरखा मने दिया है वह अहिंसाके प्रतीकके तौर पर दिया है। अगर यह बात अिसके पूर्व मने आपको नहा कही तो वह मेरी त्रुटि है। म पगु हू आहिस्ते आहिस्ते चलनेवाला हू। तो भी म मानता हू कि आज तक जो काम हुआ वह बेकार नहा गया है।

अब चौथी बात।

अगर चरखेसे स्वराज्य प्राप्त नही हो सकता यह बात हमने सिद्ध नही की है। काग्रेसवालोको यह बात न समझा सको तब तक वह सिद्ध नही होनेवाली है। चरखा और काग्रेस अेक-दूसरेके पर्याय वाची शब्द बनने चाहिये।

अहिंसाके प्रतिपादनका काम कठिन है। जब तक हम अुसकी तहमें न घुस जाय तब तक अुसकी सचाओी हमारे ध्यानमें नहीं आयगी। आज तक मने जो कुछ कहा सबका म समर्थन करता आया हू। जगत मेरी परीक्षा करनेवाला है। अगर मेरी अिस चरखेकी बातमें यह मेरी मूर्खता सिद्ध करे तो हर्ज नही है। जो चरखा सदियो तक बलात्स्थित व्यभिचारी जुल्म वगारीका प्रतीक रहा अस हमने आधुनिक ससारकी सबसे बडी अहिंसक शक्ति सगठन तथा अर्थ-व्यवस्थाका प्रतीक बनानेका बीडा अुठाया है। हमने अुल्टी बात सुल्टी बना दी है। और यह सब म आपके मारफत करना चाहता हू।

ये सब बातें समझ कर भी यदि आप नहीं मानते कि चरखेमें स्वराज्य पानेकी शक्ति है तो आप मुझे छोड दें। अिसमें आपकी परीक्षा है। श्रद्धा न होते हुअे भी अगर आप मुझे धागा

देंगे तो देशका बड़ा अकल्याण करेंगे। मैं अितने दिनोंमें आप मुझ धोखा न दें अैसी मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है।

यदि आज तककी कार्यप्रणालीमें दोष रहा हो तो अुसका जिम्मेवार मैं हूं। क्योंकि यह सब जानते हुअे भी मैं अुसका प्रमुख रहा हूं। लेकिन हम अब गअी-गुजरी सब छोड़ दें। क्या आज हम सच्चे दिलसे मानते हैं कि चरखा अहिंसाका प्रतीक है? जो दिलकी तहसे मानते हैं कि चरखा अहिंसाका प्रतीक है असे हममें कितने हैं?

यह जो आपका तिरंगी झंडा है, वह क्या है? अितने गज चौड़ा अितने गज लम्बा अेक कपड़ेका टुकड़ा ही है न? अिसके बदलेमें आप दूसरा भी लगा सकते हैं। लेकिन अिसमें भावना भरी पड़ी है अिसने भावना पैदा की है अिसके पीछे मरनेकी आपकी ख्वाहिश रही है। वह स्वराज्यका प्रतीक है, आतीय समझौतेका वह प्रतीक है। अुसे हम नहीं भुला सकते नहीं मिटा सकते। अुसी प्रकार अहिंसाका प्रतीक यह चरखा है।

अिस चरखेके नाम पर मैं विचारका स्रोत आप लोगों पर बहा रहा हूं। अिसे स्वावलम्बन कहो या जो कुछ कहो। राष्ट्रीय संगठन और स्वावलम्बनके नाम पर खूब पश्चिमी मुल्कोंमें और अुन मुल्कोंकी ओरसे करोड़ोंका रक्त-शोषण हो रहा है। वैसा स्वावलम्बन हमारा नहीं है। यह तो non-exploitation का exploitation से और जोर जबरदस्तीसे मुक्ति पानेका तरीका है। मेरा मतलब शब्दोंसे नहीं है चीजसे है। फिर भी शब्दोंमें चमत्कार भरा होता है। शब्द भावनाको देह देता है और भावना शब्दके सहारे साकार बनती है। हमारे धर्ममें साकार निराकारका झगड़ा हमेशा चलता आया है। साकार वादी सगुण भक्तिको श्रेष्ठ मानता है। अिस भावनाके अनुसार यदि अहिंसाकी अुपासना करनी है तो चरखेको अुसकी साकार मूर्ति — अुसका प्रतीक — मान कर अुसे आंखोंके सामने रखना चाहिये। मैं अहिंसाका ध्यान करता हूं तब चरखेका ही ध्यान पाता हूं। जो निराकारवादी है वह तो कहेगा कृष्ण कौन है? वह तो पहाड़ोंकी चोटी पर और आसमानके बादलों पर पैर रखकर चलनेवाला है। हम पृथ्वी

पर चलनेवाले हैं। हम हमारी मर्यादाको समझकर चुन लेते हैं कि असी कौनसी चीज है जो हमारे निज साकार ओश्वरका — हमारी अमूर्त श्रद्धा और भावनाका — प्रतीक हो सकती है। यदि आप अिस सत्यका दर्शन कर सकते हैं तो मेरे कथनकी दृढ़ताको समझ जायेंगे। जाजूजीसे भी अितनी दृढ़तासे मैंने आगे कभी बातें नहीं की थीं। जेराजानी कहते हैं मैं जल्दबाजी कर रहा हूं। किन्तु चरखेकी मेरी अुपासनाके पीछे जो भावना है अुसको अपने दिलमें स्थान दिये बिना सौ वर्षमें भी अहिंसाका दर्शन न होगा। मुझे चरखेमें अहिंसाकी शक्तिका जो दर्शन हुआ है वह आप जब मेरा-सा हृदय लेकर अुसके पास जायेंगे अुसे घुमायेंगे तभी न होगा? अिसलिअे कहता हूं कि या तो मुझे छोड़ दो या मेरा साथ दो। अगर मेरे साथ चलना है तो मैं आपको योजना दूंगा, सब कुछ करूंगा। अगर अभी आप सब समझ नहीं पाये हैं तो सारा दिन आपके साथ बैठूंगा। बिना समझे कहेंगे कि समझ गये तो धोखा खायेंगे और धोखा देंगे। हमने कोओ शिवजीकी बरात जमा नहीं की है। हम असे पामर थोड़े ही बन गये हैं जो कम भी रूखा-सूखा टुकड़ा लिअे पड़े रहेंगे। दूसरोंमें सबके काम छूटा पड़े हैं, अनेकों मार्ग मौजूद हैं। मेरी श्रद्धा मुझे सूझ दे जायगी, आपको नहीं। अिसलिअे धोखेमें मत रहिये। मुझे अपना रास्ता काटने दीजिये। यदि यह साबित हुआ कि मैं धोखेमें रहा, मेरी चरखेके विषयकी मान्यता निरी मूर्तिपूजा थी, तो या तो आप अुसी चरखेकी लकड़ियोंसे मुझे जलायेंगे या तो मैं ही खुद अुस चरखेको अपने हाथोंसे जलाअूंगा।

अगर चरखा सबको मिटाना है तो अपने ही हाथों अुसे बन्द कर दीजिये। अिससे सारी झंझट अपने आप मिट जायगी, जैसे सूरजके सामने ओस। फिर जिस चरखेने हमें रोक रखा है — फंसा रखा है वह चन्द लोगोंके हाथमें रह जायगा। तब शायद अुनके हाथों वह अेक बड़ा शस्त्र भी साबित हो। अगर आप अुसे मूर्खताभरी चीज मानते हैं तो मैं अब मूर्खता-सघ चलाना और हिन्दुस्तानको गिराना नहीं चाहता। अगर आप अिस चरखेमें से अहिंसाका दर्शन करा सकेंगे तो फिर आपका चरखा सिर्फ चलेगा नहीं बल्कि दौड़ने लगेगा।

म नहीं ले जा सकूंगा। चूंकि समीकी जड़ ग्रामोंकी सेवा और अुत्थान है, अिसलिअे यदि संचालक और कार्यकर्ता अलग अलग संघोंमें सच्चे हृदयसे काम करते होंगे तो भी वे स्वेच्छापूर्वक अवसाय वठ कर सब कुछ जरूर सोचेंगे ही। यह भी सोचेंगे कि चरखा संघका काम क्या रुका? कोअी कहेगा कि काम तो कोअी रुका नहीं है। १५ हजार देहातोंमें संघका काम फैला साढ़े चार करोड़ रुपये गरीबोंमें बांटे गये। यह सब तो ठीक है, पर अितनेसे हमें संतोष न होना चाहिये। बल्कि यह बात हमें चुभनी चाहिये कि अभी तक हम हमारे कामका केवल अेक सौवां हिस्सा ही अदा कर पाये हैं।

वहां यदि चरखा संघका काम करनेवाला कार्यकर्ता होगा तो वह केवल खादीका ही विचार नहीं करेगा किन्तु व्यापक अर्थमें वह ग्राम-अुद्योग गोसेवा आदिका प्रतिनिधि बनेगा। असा न हो कि कार्यकर्ता अिन सब कामोंको अपने क्षेत्रके बाहरके मान कर अपने पर यह अेक नया बोझ पड़ रहा है अैसा मान ले। यदि अैसा हुआ तो हमारी दृष्टि और नीति अहिंसक नहीं रहेगी। कार्यकर्ता असा हो जो गांवमें जाकर अिन सभी कामोंमें — यानी गांवके समग्र जीवनमें ओतप्रोत हो जाय और अिन सब कामोंका कुछ भी बोझ महसूस न करे।

जाजूजी — असे कार्यकर्ता कहीं गोसेवा संघकी ओरसे, कहीं ग्राम-अुद्योग संघकी ओरसे, कहीं तालीमी संघकी ओरसे और कहां चरखा संघकी ओरसे हो सकते हैं।

बापूजी — अिसीके मानी हुअे सब संघोंका अेकीकरण और सम्मिलित नीति। अिसमें कार्यके नियन्त्रणकी बात नहीं है, सबके सम्मिलित नैतिक प्रभावसे और अेक समग्र दृष्टिसे काम करनेकी ही बात है।

जाजूजी — चरखा संघमें व्यापार विभाग और जनसेवा (welfare) विभाग क्या अलग अलग चलाने होंगे? गांवके सारे कामोंका असी समग्र दृष्टिसे चलाने और मार्गदर्शन करनेके लिअे अिन कार्यकर्ताओंका नियन्त्रण भी मेरे खयालसे सब संघोंकी सम्मिलित समिति द्वारा होना आवश्यक होगा।

बापूजी — मेरा खयाल ठीक बसा नहीं है। अब यार सबोंकी सम्मिलित समिति मिल कर यह सोच सकती है कि कौनसी व्यवस्था ठीक होगी। असी व्यवस्था यदि सभी संघ अकत्रित होकर संगठित रूपमें करें तो तन्त्र-संचालनका काम बहुत ही सरल बनेगा और कृष्णा नदी जो मूलमें १०–२० बिंदुकी जरासी धारा थी और जिसका आगे चलकर कृष्णसागरका सा विशाल पट बन जाता है वैसे ही हमारे कामका अखंड प्रवाह बढ़ने लगेगा। मेरी सम्मिलित समितिकी कल्पना अिस प्रकारकी है।

कार्यकर्ता

जाजूजी — सारी मुसीबत कार्यकर्ताओंके बारेमें है। आप तो नये नये काम निकालते ही रहते हैं, लेकिन कार्यकर्ताओंके अभावमें सब कामोंको हम पहुंच नहीं सकते। फिर आप कहेंगे कि हमें तो सात लाख देहातोंमें पहुंचना है।

बापूजी — अलबत्ता कहूंगा। लेकिन जब हारेंगे तब मैं भी तो आपके साथ ही रहूंगा न?

जाजूजी — तब अितना निश्चय समझें कि अच्छे कार्यकर्ता तैयार करने हैं। फिलहाल अधिक संख्यामें संपूर्ण योग्य असे कार्यकर्ता मिलनेकी आशा न रखें। आज दूसरी श्रेणीके कार्यकर्ताओंसे ही काम चलाना होगा। बादमें अुन्हींमें से प्रथम श्रेणीके कार्यकर्ता निकल सकेंगे।

बापूजी — क्या चरखा संघके कार्यकर्ता दो हजार होंगे?

जाजूजी — करीब तीन हजार हैं।

बापूजी — तब अुन्हींसे काम लो। अिन सब नये कामोंका भार अुन्हीं पर डालो। काम करनेमें अुनको कुछ अधिक स्वतन्त्रता भी दो। कुछ खतरा अुठाकर भी यह विकेन्द्रीकरण हमें करना होगा।

जाजूजी — आपके अिस विकेन्द्रीकरणका ठीक अर्थ मेरी समझमें नहीं आया है।

बापूजी — कामको गांव गांवमें फैलाना है। जब अितना बड़ा काम करना है तो वह दबावसे नहीं होगा। कार्यकर्ताओंका मध्यवर्ती

देहाती अुद्योग चल सकते हैं यह भी असे देखना होगा। अिनमें प्रथम आयगी तेलघानी। मगनवाडीके झवेरभाअी पटेलने अिसका पूरा शास्त्र बना लिया है असे भी जानना होगा। तीसरा अुद्योग है हाथ-कागजका। अिससे सारे हिन्दुस्तानका कागज पूरा करनेकी दृष्टिसे नहीं लेकिन अपने गाँवको स्वावलम्बी बनाने और कुछ आमदनी बढानेकी दृष्टिसे सीखना है।

जाजूजी — कागजका काम चलने पर अुसे अेक छोटीसी फेक्टरी चलानेका ही स्वरूप आ जाता है।

बापूजी — मैं सिर्फ रूपरेखा दे रहा हूँ। तेल, हाथ-कागजके अुपरान्त आटेकी हाथचक्की हर देहातमें सजीवन करनी चाहिये। यह न हुआ तो आटेकी मिलें हमारे नसीबमें लिखी है ही। अिस बातको लेकर मेरे दिलमें कअी वर्षोंसे घबराहट-सी है। जैसे आटेका वैसे ही चावलका। यदि पूरे चावल (whole rice) खानेकी आदत हम देहाती लोगोंमें फिरसे न डालेंगे तो खुराककी समस्याको हम हल न कर पायेंगे। Polished rice (मिल-कुटा चावल) सफेद चीनी वगैरा सब मनुष्यके स्वास्थ्यके लिअे बडे ही हानिकारक हैं यह तो अब मानी हुअी बात है। सभी बडे विशारदोंने अिसे स्वीकार किया है। अमेरिकासे बहुत कुछ साहित्य अिन विषयों पर आता है। वहाँ अब ब्राअुन यानी पीली चीनी चल पडी है। यहाँ तक कि व्यापारी लोग सफेद पालिश्ड चीनीको हानिकारक रंग लगाकर पीला बनाते और बेचते हैं। चावलके लिअे भी हाथचक्की ही चलानी होगी।

खेती और गोपालन

अब मैं खेतीको लूँगा। देहातियोंका गुजर खेती पर होता है और खेतीका गाय पर। मैं अिस विषयमें अंधा-सा हूँ। निजी अनुभव मुझे नहीं है। परन्तु अैसा अेक भी गाँव नहीं जहाँ खेती नहीं और गाय नहीं। भैंसें हैं लेकिन वे मक्खन वगैराको छोडकर खेतीके लिअे अधिक अुपयोगी नहीं हैं। तब भी भैंसका हमने बहिष्कार किया है अैसी बात नहीं है। अिसलिअे ग्राम्य पशुधनको खासकर अपने गाँवके

मवशियोंका हमारे कार्यकर्ताको पूरा खयाल रखना होगा। अिस बड़ी भारी समस्याको यदि हम हल न कर सके तो हिंदुस्तानकी बरबादी होनेवाली है और साथ-साथ हमारी भी। क्योंकि अुस अवस्थामें हमें पश्चिमी देशोंकी तरह अिन पशुओंको अुनके आर्थिक दृष्टिसे बोझरूप होने पर कतल किये बिना चारा न रहेगा।

अिसलिओ हमारे कार्यकर्ताको अिन बातोंका भी कुछ-न-कुछ अिल्म हासिल करना ही होगा। अिस प्रश्नका हल करनेके लिअ हिंसक तरीका कौनसा है और अहिंसक तरीका कौनसा है यह भी समझना होगा। अिसीमें हमारी जनवृद्धि (surplus population) की समस्याका भी हल है। हमारा अहिंसक तरीका सफल होगा या असफल, यह मैं नहीं जानता। यदि अहिंसक तरीका न चला तो हम निकम्मे साबित होंगे न कि अहिंसा। हमारी तपस्या यानी सामान्य भाषामें हमारा प्रयत्न अधूरा साबित होगा। लेकिन हम सभी सेवकोंको कुछ-न-कुछ प्रयत्न तो करना ही होगा।

फिरसे खेती पर आता हूं। वहां भी आज केवल अराजकता है। सब जमीन टुकड़ा-टुकड़ामें बंट रही है। भाभी भाभी अलग होते हैं और खेतोंके टुकड़े होते जाते हैं। अब छोटा-सा रास्ता निकालना हो तो बीचके खेतवाला नहीं निकालने देता। अिस टुकड़ेकी नातिजा तो हम भर ही जानवाले हैं। गांवमें लोगोंको मिल-जुलकर सहयोगसे खेती करनेका सिद्धांत अपनाना होगा। ग्रामसेवक अपने यहांकी परिस्थितिकी पूरी जांच करेगा और लोगोंको अिस ओर खींचेगा।

पीनेका पानी और ग्राम-सफाओ

जमीनके बाद अपने-आप ही पानीकी बात आती है। यह पानीकी बात खेतीके पानीकी नहीं पीनेके पानीकी है। सेवक कार्यकर्ता गांवके सभी कुओंकी जांच करेगा। वह अुनके अन्दरकी और बाहरकी सारी सफाओ करेगा। गांवमें कितने कुओं हैं कितने पर सब लोग पानी भर सकते हैं अुनके अिर्दगिर्दकी सफाओ कैसी है पाखाने या पेशाब जानेकी जगह कुओंसे कितनी दूर है यह सब देखेगा। नजदीक हो तो पाखाने नजदीक रहनेके खतरे गांववालोंको समझायेगा और अुनको

सन्योग प्राप्त करके अुनको दूर हटायगा। अिसीमें सारे गावकी सफाअीकी बात आ जाती है। ग्रामसेवकका जितनी दूर तक जाना है अिसका अब हमको खयाल आ गया है। ग्रामसेवा करनेवालेके लिअे सारे ग्रामकी सफाअी व खाद-अुत्पत्ति व्यवस्थित गंदगी वगैरा विषयमें जानना तथा करना अनिवार्य है। चमारा बटवारा तो होगा ही लेकिन यह नहीं कि स्लेटकी डंडी छीलनेवाले बालकी तरह या चमडेकी फैक्टरीमें काम करनेवाली औरतकी तरह अपने तले (soles) बनानेके अतिरिक्त अुसका और किसी क्रियाका अिल्म ही न हो। वह निकम्मी चीज है। हमारे यहां तो हम सभीको सारा शरीर बनानेका पूरा अिल्म प्राप्त करना होगा। गांवमें थोडी सिलाअी भी चलेगी। गांवके काश्तकार लोहार बढअी चमार आदि सभीका आपसमें सहयोग कराके अुनमें मेल बिठाना अिसके मानी हुअे ग्रामोंका संगठन। ये सब बातें दीखनेमें बहुतसी दीखती हैं परन्तु असलमें वैसी नहीं हैं। निश्चयी तथा शरीर और बुद्धि दोनोंसे पूरा काम लेनेवाले कार्यकर्ताको ये बहुत कठिन नहीं लगनी चाहिये।

अंतमें मेरी आखिरी बात सुना दूं। गांवमें जाकर बैठनेवाला कार्यकर्ता यदि अहिंसामें अनपढ होगा तो काम नहीं चलेगा। यदि वह केवल अर्थशास्त्रको ही सामने रखेगा और नीतिशास्त्रको जरूरी नहीं समझेगा तो सब काम अंतमें केवल ढकोसला हो जायगा। अहिंसा ही हमारी बुनियाद है और अुसी पर हम अपने पैरों पर जमा कर खड़े रह सकते हैं। अुस आडमें रखनेसे हमारा काम नहीं चलेगा। चाहे लोग भले ही आरम्भमें कुछ कर भी जायं स्वराज्यका मकान बगैर बुनियादके खडा नहीं होगा। सबकोको अपने हर व्यवहारमें अपने चरित्रसे ही अिसकी शिक्षा देनी होगी सिर्फ पुस्तकोंसे या वर्ग चलाकर नहीं। यदि यह सब वह नहीं कर सकेगा तो गोलमाल ही होगा। हमारा अितिहास असा ही गोलमालसे भरा है।

जाजूजी — देहातमें अेकके बदले दो कार्यकर्ता रहें तो अधिक सुभीता रहेगा। कुछ काम अेक करेगा और कुछ दूसरा और अुन्हें अेक-दूसरेका सहारा होगा।

जब आर्थिक परिस्थिति हमको रोकेगी तब हम देख लेंगे। और मैं तो यहां तक जानेको तैयार हूं कि विवाहित कार्यकर्ता जायगा तो वह अेक और अुसकी पत्नी दूसरा कार्यकर्ता होनी चाहिये।

जाजूजी — कुछ कार्यकर्ता अूंचे दर्जेके होंगे और कुछ सामान्य। अूंचे कार्यकर्ताके हाथके नीचे यदि आसपासके देहातोंमें पांच-सात कार्यकर्ता हों तो?

बापूजी — अभी ठागासे मैंने अिसकी चर्चा की है। लेकिन हर जगह यह सब न्याय नहीं होगा। तिमप्पा नायकने मुझसे कहा था कि तुम बहुतसे कार्यकर्ता तैयार करो नहीं तो तुम्हारा काम चलनेवाला नहीं है। वे कर्नाटकके बडे मुख्य कार्यकर्ता हैं। पांच-सात रुपयेमें अपना गुजर करते थे। जब कार्यकर्ता तैयार करने पडे तब अुन्होंने देखा कि स्थानीय कार्यकर्ता ही कम खर्चमें तैयार हो सकेंगे। और अैसे ही कार्यकर्ताओंको अुन्होंने जिलेमें लिया और तैयार किया।

जाजूजी — लेकिन अकसर अनुभव अुलटा आता है। विवाहित कार्यकर्ताकी पत्नी कभी बार अुसकी मददरूप नहीं पर भाररूप होती है।

बापूजी — अिसीमें तो मैं अिस बारेमें कोअी कायदा नहीं बनाअूंगा। राजाजी तो कहते हैं कि कार्यकर्ता विवाहित ही होना चाहिये।

कार्यकर्ता पर खर्च

जाजूजी — अेक कार्यकर्ताके पीछे कितना खर्च करना होगा?

बापूजी — आज तो बहुत महंगाअीका समय है। मुझे भय है कि अिस समय तक अैसा ही चले। मैं अैसे कार्यकर्ताओंको साठ माहवार पचास या सत्तर रुपया और सौ भी।

जाजूजी—सादगी तो सभीको देना होगा। फिर परिवारवालोंको पढ़ाओ अिनका बोझ भी तो है?

बापूजी—हमको मध्यम मार्ग लेना होगा। अधिक झंझटवालोंको छोड़ना होगा। पुरुष पत्नी और दो बालक असे चार या अधिकतम पांचकी परवरिशका भार हो अितनी ही मर्यादा समझी जाय। अिससे अधिक झंझटवालोंको न लें तो अच्छा।

जाजूजी—कुछ कार्यकर्ता अपने भाभी-बहनोंका मातापिताका जैसी ही अन्याय जिम्मेवारी यहां पेश करते हैं।

बापूजी—अिसलिअ स्थिर स्थान नहीं रहेगा।

जाजूजी—कार्यकर्ताका वेतन निश्चित करनेमें हम अुसकी योग्यताको महत्त्व दें या अुसके परिवारके बोझको?

बापूजी—वल्लभस्वामीको तो मैं पांच दूंगा सौ नहीं। लेकिन किसी बड़े परिवारवालेको अधिकतम देकर भी न छोड़ूंगा। यानी दोनों रहेंगे और दोनोंको आपसमें कोअी द्वेष न होगा, न किसीको आशा।

जाजूजी—हमारे कार्यकर्ता देहातियोंसे किस हद तक सहायता (response) की अपेक्षा रखें? क्षेत्र चुनावके समय क्या अुन पर कुछ शर्तें लगाना अुचित होगा? आजकी हालत तो असी है कि हम देहातमें जाते हैं तो लोग समझते हैं कि ये पैसेवाले हैं। अिनसे जितना मिले अुतना ले लो। दो साल काम करनेके बाद जब कार्यकर्ता गांव छोड़कर चला जाता है तो पीछे सारा शून्य हो जाता है।

बापूजी—मेरे विचारमें हम कोअी शर्त नहीं कर सकेंगे। अुदाहरण-स्वरूप आदिवासियोंके बीच अुनकी सेवा करनेके हेतु हम जाकर बसेंगे तो अुनसे क्या शर्त हो सकती है? पर असल बात तो यह है कि जहां हमने कुछ-न-कुछ काम किया है कुछ अनुभव लिया है वहां बैठकर काम करेंगे तो ही काम आगे बढ़ेगा और फलेगा।

लेकिन सब कुछ आखिरमें कार्यकर्ता पर ही निर्भर रहेगा। देहातियोंका प्रेम संपादन करके अुनके पाससे वह अगर कुछ ले सके तो भले ही ले।

कार्यकर्ताकी परीक्षा

जाजूजी — कार्यकर्ता कितने वर्षमें स्वावलम्बी होना चाहिये? पांच वर्षमें?

बापूजी — आपने ही तो कहा कि पांच वर्ष।

कार्यकर्ता अेक ग्रामका सेवक बनकर गांवमें जायगा। देहातियोंसे ही जमीनका अेक टुकड़ा मांग लेगा और अुस पर झोंपड़ी बना लेगा। यदि किसीका घर खाली मिलेगा तो लेगा। जेबसे तकली निकालेगा, पेड़ तले रहेगा। चरखा गांववालोंके पास होगा तो अुसे भी लेकर दुरुस्त कर देगा और चलायेगा। गांवके लड़कोंको जमा करेगा, मन लगायेगा, कहानियां कहेगा, गाना सिखायेगा और गांवकी सफाई करेगा। वेतनके अलावा अन्नागार या अन्य कामके लिये पूंजीके रूपमें मैं अेक कौड़ी भी नहीं दूंगा। सब कुछ वह अपनी अुपज-शक्ति (resourcefulness) और श्रमसे जुटायेगा। जिसीमें अुसके श्रमकी, अुसके सेवाभावकी, अुसकी शक्तिकी परीक्षा है।

जाजूजी — बड़ी कठिन परीक्षा है।

बापूजी — अवश्य कठिन है। यहां तलवार थामनी ही क्या है? श्रमका और सेवाका मार्ग तो यही है जो मैंने बताया है। अहिंसक तरीकेसे स्वराज्य लेना है तो मेरे पास दूसरा तरीका नहीं है।

तीसरा दिन मंगलवार ता० १०–१०–'४४

स्वावलम्बन कैसे होगा?

जाजूजी — कार्यकर्ता स्वावलम्बी कैसे बनेंगे? गांववाले अुन्हें या तो दान दे सकते हैं या रोजगार दे सकते हैं, या गांववाले खुद कोअी अुद्योग चलाकर अुसके मुनाफेमें से कार्यकर्ताका निर्वाह चला सकते हैं।

बापूजी — ऐसा करना होगा। कार्यकर्ताको हम वेतन तो देंगे ही और अुसके अलावा गांववाले या वह स्वयं कुछ-न-कुछ गांवसे लेनेका धंधा करेगा ही।

कोअी अति बुद्धिशाली कार्यकर्ता देहातमें बस जाय और अपना ही नहीं बल्कि अपने सारे कारोबारका खर्च अपनी बुद्धिसे निकाल

और मिलोंसे कुछ न कुछ यह [illegible] माना है। फिर भी अिस तरह बुद्धिम धन अुपार्जन करनेका मन वहिका दुष्यम कहा है। अभी सब आमदनी मुनाफा ही जानी चाहिये।

जाजूजी — हमारे कायकर्ताओं खादीके ही आधार पर जाना हो तो वह सिर्फ स्वावलम्बी खादीसे नहीं हो सकेगा। व्यापारी ढंगसे खादी तैयार करवाना, यथा बाहर भिजवाना आदि काममें से अुसे अवलम्ब करना होगा।

बापूजी — मेरी योजनामें यह बात अिस तरह नहीं। मैं मानता हूँ कि यदि खादीसे ग्रामको स्वाश्रयी बनाना हो तो अतिरिक्त खादी बाहर भेजनी पड़ेगी।

किसीने मुझे अेक बार यह बात समझायी थी कि स्वावलम्बनका खादीके सिवा और भी खादी यदि काफी मात्रामें हम न बनायेंगे और हमारे पास या हमारे देहातियोंके पास जमीन आदि अन्य काफी आधार नहीं होगा तो केवल स्वावलम्बी खादी बनाना काफी नहीं होगा। आज मेरी कल्पना जितनी ही है कि वस्त्र अनाज आदि बुनियादी आवश्यकताओंको देहाती अपने यहाँ ही पैदा कर लें। अिसीको हम स्वावलम्बी (self sufficient) कहेंगे?

लेकिन अिसका भी अनर्थ होना संभव है। अिसलिये अिस योजनाको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। Self sufficiency का अर्थ कूपमण्डूकता नहीं है। Self sufficient यानी Self-contained नहीं। किसी भी हालतमें हम सभी चीजें पैदा कर भी नहीं सकते और न हमें करना है। हमको तो पूर्ण स्वावलम्बनके नजदीक पहुँचना है। जो चीजें हम पैदा नहीं कर सकते अुनके बदलेके लिअे अनेक वस्तुअें देनेके लिये हमें अपनी आवश्यकतासे अधिक पैदा करना ही होगा। लेकिन जो कुछ अधिक पैदा करेंगे वह बेचने नहीं भेजेंगे और न अुस दूरके बाजार पर नजर रखकर अुन्होंके कामकी चीजें पैदा करनेकी अिच्छा रखेंगे। वैसा करेंगे तो वह मेरी स्वदेशीकी कल्पनासे विरुद्ध होगा। स्वदेशीका अर्थ है अपने नजदीकके पड़ोसियोंको छोड़कर दूरके बसनेवालोंकी सेवा करने न जाना।

दृष्टि यही रखनी चाहिये कि प्रथम जिन्गिदवे देहात पीछे जिन्ग पीछे प्रान्त। अिस ढगसे काम करने पर चरखा सघको सिर्फ खादीका रक्षक बनकर ही सतोष मानना पडेगा। हम सभी झझटोंमें पडना नही है। हमारे पास तीन हजार कार्यकर्ता और कभी बिक्री भण्डार वगैरा है। अुन्हे आज ही भस्म नहीं करना है। परन्तु हमारा झुकाव किस तरफ रहना चाहिये यही मैं बता रहा हूं।

कार्यक्षेत्रकी व्यापकता

जाजूजी — कार्यकर्ता अपने कार्यक्षेत्रकी मर्यादा पांच मील त्रिज्याकी रखेगा?

बापूजी — हा कहीं अुससे भी कम होगी। जैसे बंगाल बिहारमें तो पांच मील त्रिज्यामें कभी देहात आ जाते है।

जाजूजी — कार्यकर्ता सुबह अपने यहांसे निकलकर ग्राम तक घूमकर वापिस लौट सके अितनी मर्यादा ठीक होगी।

बापूजी — हां हो सकती है।

जाजूजी — क्या चरखा सघ ही यह काम प्रथम करेगा?

बापूजी — जरूर क्योंकि चरखा सघ सूर्य है दूसरे अुद्योग ग्रह है। सूर्यकी गति ठीक रहेगी तभी दूसरे ग्रह चलनेवाले है। आज तो ग्राम-अुद्योगोंकी स्थिति धूमकेतु जैसी है।

कार्यकर्ताकी मर्यादा

जाजूजी — अस्पृश्यता निवारणके काममें कभी-कभी बहुत झझटें पैदा हो जाती है। हमारे कार्यकर्ता अन झझटोंमें कहां तक पड़ें?

बापूजी — जिससे काम रुक जाय असी झझटमें नहीं गिरना चाहिये। लेकिन कार्यकर्ता अपने जीवनमें अस्पृश्यताको बिलकुल स्थान नहीं देगा। हरिजन जहांसे पानी भरते होंगे वहींसे ग्रामसेवक भी भरेगा अुनके कुअें साफ करेगा खाद गाडेगा और खादका प्रकाश करेगा।

जाजूजी — दूसरी बात राजनीतिक है। मान लीजिये कि मैं अेक जगह काम करता हूं और मेरे मकान पर हमला होता है मेरे खान-पान पर पाबन्दी लगाओ जाती है। तब मेरा मौनव्रत भंग करना

अचित होगा? परन्तु अब राजनीतिक मामलेमें शायद मुझे अलिप्त रहना पड़े। लेकिन जब आम सविनय भंग चलता है तब खादीका असर कम नहीं सकता। अैसी दशामें क्या करना चाहिये?

बापूजी — आम सविनय भंगमें तो अब प्रकारकी अराजकता ही चलती है। सब अपने अपने सरदार हो जाते हैं। लोगोंकी भाषा चन्द लगती है। मगर आम सविनय भंगका जो कोअी प्रधान या सेनापति होगा अुसकी आज्ञानुसार चलना होगा। आम सविनय भंगमें से तो शायद ही कोअी अलिप्त रह सकता है। लेकिन तब भी जो कोअी चरखा-संघका प्रधान होगा अुसका कार्यकर्ता अपनी परिस्थिति निवेदन करेगा और प्रधान भी परिस्थितिको समझकर अपनी राय देगा। वैसा आम सत्याग्रह आज मेरी दृष्टिकी मर्यादामें नहीं है।

चौथा दिन बुधवार ता० ११-१०-४४

विकेन्द्रीकरण

जाजूजी — मैं आपकी विकेन्द्रीकरणकी बात अभी तक ठीक नहीं समझ पाया। असे समझाअिये।

बापूजी — मेरा दृष्टिकोण यह है कि जितने प्रान्त कहें कि हमको आज़ाद करो अुनको आज़ाद कर देना है। वे कहें कि नैतिक व्यवस्था भले आपकी रहे जितनी हमसे बन पड़ेगी निभायेंगे बाकी सब कारोबार हमारी ही रायसे और अपनी ही जिम्मेवारीसे करेंगे तो मुझको अच्छा लगेगा। वे यदि मेरी नीति पर चलते होंगे और स्वयं साधु चरित्र होंगे औमानदारीसे स्वच्छ प्रामाणिक प्रयोग करनेके पीछे अुन्हें अुतरे अुठाये होंगे तो मैं अन्हें पूरी आज़ादीसे काम करने दूँगा। बस मेरी शर्त अितनी ही रहेगी कि जितनी खादी पैदा करें वह सब वहीं अिदगिर्दके गांवमें तहसील जिला या आखिर प्रान्तमें ही बचा। यह नहीं कि चिकाकोलवालोंके माफिक सब कुछ बबओी लिअे ही पैदा करें और खुद घरमें पहनें ही नहीं।

जाजूजी — चिकाकोलकी खास बात है। देशभरकी महीन खादीका वही अेक अुत्पत्ति-केन्द्र है।

बापूजी — हाँ, अभी हालमें भी मैं पैदा करनेवालोंको और पैदा करानेवाले विक्रेताओंको ही कहूँगा कि यदि वहाँका काम चलाना है तो भले ही चलाओ। परंतु यदि वहाँके कारीगर खादीको छूअें भी नहीं और मिलका ही कपड़ा पहनते हों और सिर्फ बम्बईके लिअे ही खादी पैदा करते रहें तो संघकी ओरसे वहाँका केन्द्र नहीं चल सकता। मैं असे बन्द कर दूँगा, अितनी सख्ती मेरेमें है।

हमारा अर्थशास्त्र

जाजूजी — कारीगरोंकी मजदूरीमें से कुछ अंश काट कर आज हम अुन्हें अुसमें से कुछ खादी पहनाते तो हैं। परंतु अुसमें कुछ जबरदस्ती है, वे अपनी मर्जीसे नहीं पहनते।

बापूजी — अितनेमें भी मैं सन्तोष मान लूँगा, परंतु कुछ समय तक ही। अहिंसाको स्वीकार करके लोग तुरन्त खादी पहनने लग जायँ, असा मेरा आग्रह नहीं है। सच्चे अर्थशास्त्रकी दृष्टि यदि हम अुन्हें बता सकेंगे तो वे अंतमें अहिंसाको भी समझ जायँगे। जिस अर्थ-संपत्तिके साथ शुद्ध नीतिका मेल नहीं बैठ सकता, वह शुद्ध अर्थ नहीं हो सकता। हमारे कार्यकर्ता शुद्ध अहिंसा और नीतिसे प्रेरित होकर काम करनेवाले होंगे तो सच्ची अर्थदृष्टि लोगोंमें आयेगी। यह तभी होगा जब हमारा आचार शुद्धतम होगा और हम लोगोंका शोषण नहीं करेंगे। यह नहीं कि कारीगरोंको दुःखी करें, योग्य दाम न दें, अुनके दुःख-सुखमें शामिल न रहें, वे शराबी हों तब भी अुस तरफ ध्यान न दें और सारे हिन्दुस्तानको खादी पहनानेका प्रयास करें। अिस तरह हिन्दुस्तानकी सेवा करनेसे तो खादीको जला देना अच्छा होगा। मैं शराबीको भी निभाअूँगा, अुसे काम दूँगा, हटाअूँगा नहीं, लेकिन अुसकी मैत्री करूँगा और रोज अुसे समझाअूँगा। बिना अितना किये केवल खादीका काम मैं नहीं करूँगा।

चिरालाकी खादी सब लेते हैं और दूर-दूरके प्रान्तकी बिक्रीमें भी अुसका हिस्सा काफी रहता है, यह मैं जानता हूँ, लेकिन यह मुझे चुभता है। किसी प्रान्त, जिले, तालुके या देहातमें कहीं भी यदि हम नअी प्रणालीसे खादी-काम करनेमें सफलता चाहते हों तब

यह चीज नहीं बननी चाहिये। हमारी यह नीति है ही नहीं कि अक जिला किसी अन्य जिले के ऊपर जाकर पड़े यानी असम समाधा करे। सभी जिले अपनी अपनी आवश्यकताअें पूरी कर लेंगे। अिससे जिनारी सब बखेड़ाेंसे हम छुटकारा पायेंगे। मगर है कि अिस नयी नीतिको अमल करनेकी वजहसे शिन्दूस्तान हम गरीबवत् बन जायें परन्तु बादमें यह काम आगे बढ़ेगा। हिसाब जोड़कर तो मैं नहीं कह सकता। सिवा अिसके कि हिसाबको अभी मैं जानता नहीं हूं। वह तो मुझे आप ही बता सकते हैं। लेकिन अितना मैं जानता हूं कि खादीसे अहिंसाकी प्रतिष्ठा करनी है तो यह करना ही होगा।

अलग-अलग ट्रस्टीमंडल बनाना

जाजूजी — अिसलिअे क्या प्रान्तामें अलग अलग ट्रस्टीमंडल या अेसोसिअेशन बनाकर सबका सब काम अुनके सुपुर्द करना होगा?

बापूजी — ठीक क्या करना पड़ेगा यह मेरी बुद्धिमें अभी नहीं आया है। अितना जानता हूं कि जैसा मेरे खयालमें है वैसा विकेन्द्रीकरण करना हो तो आज जैसा सब कारोबार केन्द्रित होकर चलता है वैसा न चलेगा। आज तो हमारा यंत्र top-heavy हो गया है। दूसरा हो भी क्या सकता था? हां यदि शुरूमें हो मैं समझ जाता और आग्रह रखता कि बस असा करना है अन्य तरीकेसे नहीं तो कदाचित् असा हो पाता। यह सब ठीक दिशामें नहीं चल रहा है यह बात बिलकुल ही मेरे ध्यानके बाहर रही हो असी भी बात नहीं थी। लेकिन मैं भी कुछ काम कर लेना है अिस लोभमें पड़ गया और किसी तरह भी काम आगे बढ़ा लिया और अिसीमें से केन्द्रीय मंडल बना।

जाजूजी — फिर भी कुछ विधान तो सोचना ही होगा। प्रान्तोंका काम यदि किसीके हवाले कर देना है तो रजिस्टर्ड सोसायटियां बनानी होंगी और हरअेक सोसायटीमें कम-से-कम सात ट्रस्टी हों।

सिर्फ बिक्रीके विकेन्द्रीकरणमें खतरा

आप आज्ञा दें तो बिक्रीका विकेन्द्रीकरण मैं जल्द ही कर दूं। आज खादीके व्यवसायमें जितना मुनाफा और गुंजाअिश है कि व्यापा

रियाकी भीड लगी है। मेरे पास चिट्ठियां आ रही हैं कि हमको यह भंडार सौंप दो, वह भंडार सौंप दो। व्यक्ति जो विकेन्द्रीकरण हालवाला है वह कैसा होगा, जिसका चित्र अभी तक मेरे आगे नहीं आया है। जिसलिअ मुझे अभी ठीक नहीं सूझता कि क्या करें? व्यक्तियों या किसी भंडार या संस्थाको खादी-काम सौंप देना हो तब भी तीन बातें देखनी ही होंगी — १ खादीकी शुद्धता २ जीवन मजदूरी और ३ नफाखोरीका अभाव। ये तीन बातें हम संभाल न सकें तो सब बेकार होगा। जो कुछ करना है वही सावधानीसे करना है। संघके कामका ही उदाहरण लीजिये। हम बार-बार परिपत्र निकाल कर मजदूरी बढ़ाने तथा किसी भी तरह कामगारोंको नुकसान न हो जिस बारेमें कार्यकर्ताओंसे अनुरोध करते रहते हैं। फिर भी अनुभव यह है कि सूतका अेक निकालना हिसाबमें पसेन्दा पर अिधर या अुधर मिलाना असी ही कभी छोटी-मोटी बातोंमें हरअेक कामके हरअेक कार्यकर्ताको पूरे नियंत्रणमें रखना असंभव-सा हो जाता है। अिसमें भी ध्यान रखनेकी बात तो यह है कि अिसमें हमारे कार्यकर्ताका निजी स्वार्थ कुछ भी नहीं रहता है। अब आरंभ हमने खादीकी कीमतके बारेमें खरीदारोंकी भूखी भावनाओंको जाग्रत करके अुनके मुंह बन्द किये और दूसरी ओर कारीगरोंको मजदूरी कम पहुंची।

यह तो हुअी चरखा संघके प्रत्यक्ष नियंत्रणमें चलनेवाले केन्द्र या कार्यकर्ताओंके व्यवहारकी बात। अिस दशामें जब हम विकेन्द्रीकरण करके निकलेंगे और नियंत्रण बहुत कुछ ढीला हो जायगा या नहीं-सा रहेगा तब प्रमाणित व्यापारी लोग मार क्षेत्रमें कितना खाली करेंगे अिसका कोअी ठिकाना नहीं है। क्या व्यक्ति क्या संस्था जो कोअी खादी बिक्रीका काम आज कर रहे हैं अुनमें काफी स्पर्धा है। संस्थायें भी काफी नफा करते हैं। अिस अवस्थामें यदि चरखा संघका बिक्री काममें से हटना है तो फिर यह काम किसे सौंपना किस प्रकारकी शर्तें या मर्यादायें लगाना यह अेक जटिल समस्या है। संस्थाओंका अपना अपना अिन्तजाम कर देना हो तो अुनके काम पर ध्यान रखनेवाले समुचित दृष्टि रखनेवाले कार्यकर्ता मौजूद हैं असी बात नहीं है।

बापूजी — क्या अिसकी कोओ कुर्जी नहीं मिलती ?

जाजूजी — बाड प्रान्तोंमें जाय यह प्रान्तीय स्वावलम्बनकी समस्या जितनी सरल न होगी लेकिन बहुतसोंमें तो अत्यन्त कठिन जायगी। फिलहाल विकेन्द्रीकरणकी नीतिका प्रांत तक न ले जाकर जिले तक ही मर्यादित रखना शायद अधिक अुचित होगा। आज ही सारा परिवर्तन अेकदम न किया जाय।

अुत्पत्तिका विकेन्द्रीकरण

बापूजी — विकेन्द्रीकरण फिलहाल अुत्पत्तिका हो रहे। अुत्पत्ति करनेवाले अपने आसपासके प्रदेशोंमें ही खादी बेचें असी मर्यादा अुन पर रहे। यदि दूर कहीं भेजना हो तो मध्यवर्ती दफ्तरकी सम्मति जरूरी समझी जाय।

जाजूजी — हरअेक केन्द्र अपनी तहसीलकी मर्यादामें ही खादी बेचे, असी मर्यादा रखनेमें कोअी हर्ज नहीं है।

बापूजी — ठीक है। असल बात यही है कि जो बनायें वही पहनें। या अुसी गांवके या आसपासके रहनेवाले पहनें। यह तो हम मानते हैं कि जन्म स्थानोंके लिअे भी खादीकी जरूरत तो रहेगी ही।

जाजूजी — कार्यकर्ताओंको हम कहेंगे जहां खादीका काम ठीक चलता हो वहां जाओ और अिस नयी नीतिके अनुसार जितना काम बढ़ा सको बढ़ाओ। जहां-जहां असे कार्यकर्ता जाकर बैठें वहांसे संघ हट जायगा और अिस तरह विकेन्द्रीकरण होता जायगा। लेकिन अेक बात रहेगी। कार्यकर्ताओंको हमें कहना होगा कि जहां खादी पैदा करो वहां बेचो तहसीलमें बेचो बहुत-बहुत जिले तकमें बेचो। अितने पर भी जो खादी नहीं बिकेगी अुसे बेचनेमें फिलहाल संघ सहायता करेगा। अब यह सिद्ध बात है कि अिस काममें घाटा नहीं है। आज जितनी खादी पैदा होगी सब बिक जायगी। अब बिक्रीमें दिक्कत नहीं है जो है सो भेजने भिजवानेकी है।

बापूजी — खादी जिन अुत्पत्ति-केन्द्रोंमें बनती है वहीं बिक जाती है ?

जाजूजी — नहीं, यहाँ तक कि आसपासमें भी नहीं। आज बिक्रीका जो तंत्र बना है वह यह है कि ज़िलेके शहरमें सबसे खादी भंडार हैं, वहीं तहसीलकी जगहमें। कहीं-कहीं अैसी प्रथा भी चलती है। ये अैजन्सियाँ जिन भंडारोंसे खादी ले जाकर ज़िलेके अन्य स्थानोंमें बेचती हैं। अुत्पत्ति-केन्द्रोंमें कामगारोंकी मजदूरीमें से रुपयेमें दो आने चार आने आठ आने तक भी काटकर हम कामगारोंको खादी देते हैं। अिसके अतिरिक्त अधिकांश खादी शहरोंमें ही बिकती है।

बापूजी — अिसके बदलेमें मैं चाहता हूँ कि कार्यकर्ता देहातमें जायँ और अुतनी ही खादी-अुत्पत्ति करें जितनी कि वहाँके लोग पहन सकें। बाहरवालोंके लिअे पैदा न करें। और वह केवल खादी ही पैदा करना सिखा कर चुप नहीं बैठेगा, दूसरे व्यवसाय भी लोगोंको सिखायेगा। अुसमें से जो प्राप्ति होगी सो भी देहातियोंके जेबमें ही जायगी। जहाँके देहाती कहेंगे — हम खादी पैदा करेंगे। हमारा सारा परिवार अुसे पहने तो भी हमें नकद कमाअीकी ज़रूरत रहती ही है। अिसलिअे हम खादी अधिक मात्रामें पैदा करेंगे। आपको ही लेनी होगी। वहाँ पैदा हुअी अतिरिक्त खादी भी हम लेंगे, लौटायेंगे नहीं। लेकिन संभव है कि अैसे गाँव खादीके हाथ-अुद्योगके केन्द्र बनेंगे। परन्तु मेरी नज़रके सामने यह परिस्थिति नहीं है। मेरी कल्पनामें अैसे ही देहात और कार्यकर्ता-कामदार हैं जहाँ खादीकी अुत्पत्ति दोयम धंधेके ही ढंगसे चलेगी और जहाँ गाँव केवल अिस धंधे पर निर्भर नहीं रहेगा किन्तु अन्यान्य धंधे भी करेगा। अधिकांश गाँव यही करेंगे। यही हुआ सच्चे अर्थमें विकेन्द्रीकरण।

खादी बेकारोंके लिअे नहीं

जाजूजी — देहातोंका मुख्य धंधा काश्तकारी है। तेलघानी वगैरा अलबत्ता चल सकते हैं परन्तु अुसमें अवलम्ब थोड़ोंको ही होगा। गरीबोंकी बेकारीके लिअे व्यापक मात्रामें देहातमें खादी ही काम दे सकती है। स्वावलंबनके लिअे खादी पैदा करनेमें अवलम्बकी गुंजाअिश बहुत कम है। स्वावलम्बनके अुपरान्त यदि प्रत्यक्ष अवलम्बके रूपमें

दो पैसे देहातियोंकी जेबमें डालने होंगे तो फिर कुछ गांवमें विशेष लायक खादी भी देहातियोंके घरमें पैदा हो और वह बिक्रीके लिअ बाहर भेजी जाय असा प्रबंध करना होगा। अिसके बिना जिनका निर्वाहका पूरा धंधा नहीं है अुन आंशिक बेकार देहातियोंको राहत देनेमें हम असफल रहेंगे।

बापूजी — अिसमें अड़चन यह है कि खादी सर्वव्यापक नहीं बनेगी। कुछ लोगोंका ही पेशा बनी रहेगी।

जाजूजी — कताअी तो सब जगह चलेगी और बुनाअी तो आज भी खास पेशा है। और जब तक मिलें हैं तब तक खादीकी अुत्पत्ति बड़े पैमाने पर नहीं हो सकेगी। मुरगांवमें हमने वस्त्र-स्वावलंबनका काम शुरू किया। पांच वर्षका कार्यक्रम रखा। वल्लभस्वामीका अनुभव यह है कि लोग खादीको अपनाते हैं सही लेकिन समझते नहीं हैं। हम वहांसे हट तो कुछ समयके बाद खादी भी हट जायगी। लोग गांवके सामुदायिक अर्थशास्त्रको समझेंगे तब ही टिकेंगे अन्यथा नहीं। स्वावलंबनमें अपलाभ यत्किंचित् है। वह अितना थोड़ा है कि आकर्षक नहीं होता।

बापूजी — वही मेरी भी दिक्कत है। वल्लभका कथन मेरे कानोंमें गूंज रहा है। गांवमें दलबंदी हुअी। अुपवास करने पड़े। अिन सब घटनाओंके पीछे कहीं न कहीं विचारदोष है असा मुझे लगा है। हमने लोगोंको प्रलोभन लिए सुविधाअें दीं। लेकिन अिस तरह काम नहीं चलेगा। खादी अपने ही बल पर हिंदुस्तानको कहां तक ले जा सकती है अिसकी हमें खोज करनी है। अिस खोजमें हम अब तक यहां तक पहुंच पाये हैं कि खादी शहरोंमें बिक सकती है देहातोंमें नहीं। देहातियोंके लिअ अभी हम अुसे सहज प्राप्य नहीं बना सके हैं। यदि हम हारे हैं तो अपनी हार हमें कबूल करनी होगी और आगे चलना होगा। अनुभवसे शुद्ध बनकर हमें आगेके प्रयत्नोंमें लगना होगा। अिसीसे कहता हूं कि खादी शहरोंके लिअ ही बनाना और शहरोंमें ही बेचना अब बंद करना होगा। आज जो करोड़की खादी शहरोंमें बिकती है। परंतु अब हम शहरवालोंको यह कहें कि अब

हम तुम्हें तैयार खाना न देंगे बल्कि खादी पैदा करना सिखायेंगे तुम अपने लिअे खादी पैदा कर लो या करवा लो। मुझे अुनके अेक करोड़का प्रलोभन नहीं है। हम खादीमें अपनी बुद्धि और हृदय लगायेंगे रुपया नहीं। यानी हमें अब निर्णय करना है कि खादीकी शक्ति कहां तक है और कहां तक नहीं है अिस बातकी खोज करनी होगी। यदि देखेंगे कि खादी हमें वहां तक नहीं ले जा सकती जहां तकका हमने दुनियाके सामने दावा किया है तो अुसे छोड़ेंगे या अपना दावा सोचा करेंगे या कोअी अन्य दुनियाके पसन्देंगे जैसे खनी।

खादी नहीं तो खेती

प्रारम्भसे ही मेरी यह श्रद्धा अवश्य रही है कि अिस देशके वासियोंके लिअे खेती ही अेकमात्र अटूट अटल सहारा है। अिसकी भी खोज करेंगे और देखेंगे कि अिसके सहारे कहां तक जाया जा सकता है। यदि हमारे लोग खादीके बदले खेतीमें विशारद होकर लोगोंकी सेवा करेंगे तो मुझे अफसोस न होगा। मैं अितना देख सका हूं कि हमें बहुत कष्ट अुठाना है। अब खेतीकी ओर ध्यान देनेका समय आ गया है। आज तक मैं मानता रहा कि जब तक सरकारके अधिकार अपने हाथोंमें नहीं आते देशकी खेतीका सुधार असम्भव है। अब मेरे अिन विचारोंमें कुछ परिवर्तन हो रहा है। मैं यह महसूस करता हूं कि मौजूदा हालतमें भी हम कुछ हद तक सुधार कर सकते हैं। यदि यह ठीक है तो ध्यान देकर आसानीसे खेत भी जमानेके सहारे किसान अपने लिअे कुछ प्राप्त कर सकेगा। जवाहरलाल कहता है कि ऐसा सुधारोंसे तब भी जब तक विदेशी सरकार हम पर है तब तक किसी न किसी बहानेसे या तरीकेसे वह किसानका कमाया लूटती रहेगा। अब मैं सोचने लगा हूं कि अिसलिअे खेतीका ज्ञान और जानकारीका प्रचार करनेसे हम क्यों डरें? फिर भले ही हमारा किया-कराया लूट लें। लूटेंगे तो हम भी लड़ेंगे। लोगोंको लड़नेकी कला सिखायेंगे। सरकारसे कहेंगे कि तुम अिस तरह नहीं लूट सकते। यह तो मैंने केवल अेक चित्रमात्र खींचा है।

याने अब हमें अिस कार्यका प्रश्न है जिसकी कि सबमें दिलचस्पी हो।

जाजूजी — खेतीका प्रश्न तो प्रारम्भ ही हमारी आंखोंके सामने देहातियोंकी मुख्य समस्याके नाते था। लेकिन अति विकट समझकर हमने अुसे छोड़ ही रखा था और अिस विचारसे भी कि हमें अपनी हदअन्दर मर्यादाको समझकर ही चलना है। खेतीमें भी किसान आज बाहरी परिस्थितिके अधीन है जो असर बता रही है। हमने अुन्हें बहुत कुछ सिखाया बताया और अुनसे पैदावार भी अधिक ली। लेकिन अुधर कपासके दाम १०से ५ हो गये और किसान कमाता था वैसा ही बरबाद स्थितिमें रहा अैसी हालत है।

बापूजी — अिसका भी अिलाज है। अब तो हमने अुसकी तालीम नहीं दी और दूसरे पूंजीवालोंने अुसे कभी ही फसल बोना सिखाया जिससे अुन्हें पैसा मिले। जैसे फसलें रंज करवाओ गयी।

जाजूजी — जहां राजकर पर अधिकारका चलता है वहां यही होता है।

बापूजी — गोसेवाके क्षेत्रमें भी यही दशा है। गाय-बैल जमीनके साथ जुड़े हुअे हैं। अिस तरफ भी हमने लोगोंका अुतना ही दुर्लक्ष हुआ है जितना कि जमीनके बारेमें। अिसलिअे जो कार्यकर्ता देहातोंमें जायेंगे अुनसे तरफसे अिन सभी बातोंकी अपेक्षा है। अिनकी जानकारी और ज्ञान सबके लिअे अुनको लेना होगा। अुनके हाथों यह सब कहां तक होगा सो अब भगवान ही जानता है। परन्तु दिलमें जो बात आओ वह मैंने कह दी। कहना भी चाहिये।

पांचवां दिन गुरुवार ता० १२–१०–४४

खादीकार्यका विस्तार

जाजूजी — विकेन्द्रीकरणका विचार आगे चलानेके पहले खादीकार्यका विस्तार जो आज हुआ है अुस विषयमें आपसे थोड़ासा निवेदन कर दूं। अिससे प्रस्तुत विषयमें कुछ मदद मिलेगी। खादी

कायका विस्तार दो दिशाओंमें हुआ है : १ व्यापारी खादी अधिकसे अधिक पैदा करना और अुसे बेचना, और २ वस्त्र-स्वावलम्बनको अधिकसे अधिक बढ़ाना। आज दोनोंके बारेमें संघ पर आरोप लगाया जाता है कि अिन क्षेत्रोंमें संघने पर्याप्त रूपसे काम नहीं किया है।

बापूजी — अेक बात आपसे पूछ लूँ। क्या वस्त्र-स्वावलम्बनके क्षेत्रमें हमने पूरी पूरी कोशिश करके यह पाया, क्या यह निश्चयपूर्वक सिद्ध हो चुका कि वस्त्र-स्वावलम्बनकी खादी मिलके कपड़ेसे महँगी पड़ता है? यदि हम यह नहीं बतला सकते तो देहाती लोग वस्त्र-स्वावलम्बी नहीं होंगे और कार्यकर्ता निराश होंगे। बस अब आप चलिये।

जाजूजी — क्या व्यापारी क्या स्वावलम्बी दोनों प्रकारके कामकी मर्यादा है, यह हम समझ लें तो निराश नहीं होंगे। व्यापारी खादीका काम बहुत कुछ बढ़ा है। फिर भी हमने देखा है कि अुसकी गति अेकदम नहीं बढ़ सकती। जब तक कपड़ेकी मिलें मौजूद हैं तब तक लाचारीसे यह हो खादी बिकेगा। लेकिन अुसके जिस तरह बढ़नेमें हमारी कठिनाअियाँ भी बढ़ती हैं। आज अेक करोड़का काम होता है। अिसको बढ़ाकर पाँच करोड़ तक ले जानेकी कार्यक्रम बतानेकी बात पिछले साल चली थी। अिसका अर्थ यह होता है कि जैसे भी कार्यकर्ता मिलें अुन्हें लेकर काम बढ़ाना और अन्य पहलुओंकी ओर दुर्लक्ष करना। हमने हिसाब लगाकर देखा है कि हम हद दर्जेका परिश्रम करनेके बाद भी सालभरमें सवा गुना या पराकाष्ठासे डेढ़ गुना काम कर सकते हैं। दो चार गुना काम होना असंभव है। फिर अिस तरह परिमाण बढ़ानेके पीछे पड़नेमें और भी खतरे हैं। अभी अवस्थामें हमें जो मिलें वे कार्यकर्ताओंको भर्ती करना पड़ता है और अिनमें सत्य अहिंसा आदिके विषयमें विशेष ज्ञान या आग्रह न होनेसे परिणाम यह आता है कि चरखा गधेरी नीतिका तो क्षति हानी ही है और अनेक राग-द्वेषपूर्ण व्यवहारसे लोग यहाँ तक बहुल और मानने लगते हैं कि चरखा गधेवाले सब अेक ही हैं। अिसलिअे अिस तरह काम बढ़ानेके पक्षमें मैं नहीं हूँ।

वस्त्र-स्वावलम्बन

अिसी तरह स्वावलम्बनकी क्षमता भी मर्यादित है। देहातियों द्वारा कपास-संग्रह लेकर लोढाअी धुनाअी-कताअी तककी सब क्रियायें अुन्हींके घरोंमें करवाने पर भी कपड़े बुनाअीके ही दाम अितने लगते हैं कि मिलके कपड़ेकी अपेक्षा देहातियोंको जो बचत होती है वह अितनी अल्प होती है कि देहाती अिन सब झंझटोंमें पड़नेको आसानीसे राजी नहीं होता। और फिर खादीकी अपेक्षा मिलका कपड़ा सुन्दर भी तो अधिक होता है।

असलमें वस्त्र-स्वावलम्बनको न्यारे ढंगसे न्यारी दृष्टिसे कार्यकर्ताओंको समझाना और समझना चाहिये। वह यह कि वस्त्र-स्वावलम्बनसे समूचे देहातका पैसा बच कर देहातमें ही रहता है, बेकार समयका अुपयोग होनेसे लोग अुद्यमशील बनते हैं; यानी वस्त्र-स्वावलम्बनका काम अहिंसक ग्रामोत्थानका या ग्राम-संगठनका अंगस्वरूप समझकर करनेसे ही स्थायी लाभ हो सकता है। अमुक वर्षोंमें अितने ग्रामोंको पूर्ण वस्त्र-स्वावलम्बी बना देना है, अैसा कार्यक्रम मुझे नहीं जंचता। सही समझके साथ जितना काम करना सीखेंगे वही सच्चा काम होगा। केवल जोश और भावनावश होकर किया हुआ काम आखिर टिकता नहीं।

अन्य ग्राम-अुद्योग

यही बात अन्य ग्राम-अुद्योगोंकी भी है। फिलहाल तेलघानी देहातोंमें ठीक चल रही है, परंतु बादमें अुसका चलना कहां तक सफल होगा अिस बारेमें शंका है। असल बात यह है कि हमारी ग्राम-व्यवस्था जिसके खादी, चक्की आदि ग्राम-अुद्योग अंग थे, टूट गअी है। आज कपड़ा, आटा, चावल, तेल सब कुछ मशीनकी स्पर्धाके आगे महंगे बन बैठे हैं। यदि अुनको फिर देहातोंमें सजीवन करना है तो समूची ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थामें हाथ डालना होगा, अुसे नये सिरेसे जिन्दा करना होगा। केवल किसी अेक अंग पर खोज और मेहनत करनेसे सफलता नहीं मिलेगी। जन्तोंने देहातियोंको घेर लिया है। प्रगति

वेगसे नहीं होगी, बहुत धीरे धीरे विस्तार होगा। बड़ी कठिन समस्या है।

सारा काम ग्रामोत्थानकी कल्पनासे

बापूजी — मैं तो जिससे भी अेक कदम आगे जाना चाहूँगा। आपने बताया वह सब मैं मानता हूँ। अिसीलिअे तो चरखा संघके सामने मैंने तीन दिन अपना दिल खोल कर सारी बातें बतलायीं और यह सारा गोलमाल मचाया। हमको अब सारा काम समूचे ग्रामोत्थानकी कल्पनाके ढाँचेमें ढालकर नये सिरेसे करना है। देखें कहाँ तक कर पाते हैं। अेक कदम आगे जाकर भी मैं जो कहना चाहता हूँ सो यह है कि अिन परिवर्तनोंके कारण कुछ समयके लिअे यदि हमारा काम मन्द हो जाय शून्यवत् भी हो जाय तब भी यह करना है। खादीके बारेमें जो भावना हमने लोगोंमें पैदा की है वह सही होने पर भी अुसकी शक्तिके विषयमें जो खयाल हमने लोगोंमें पैदा किया है अुसमें यदि कहीं भूल थी तो फिरसे सोचना चाहिये। हमारा दावा यदि गलत था तो घोषणा करके हमें अुसे वापिस सोचना होगा।

शहरवालोंको मैं कहूँगा कि आप अपने लिअे खादी स्वयं पैदा कर लें। अिधर-अुधरसे खादी जुटाकर शहरवासियोंकी पहचानका लोभ छोड़ूँगा और फिर हम ग्रामोंमें डेरा डाल कर बैठ जायेंगे। अिस परिवर्तनके कारण कार्यकर्ता भाग जायेंगे तो अुन्हें जाने देंगे। हमारे दिल और दिमागका परिवर्तन जब अिस हद तक होगा तब ही हम जो चाहते हैं वह परिणाम निकलनेवाला है। चरखा संघ नीतिमात्रका मार्गदर्शक रहेगा और कामको जितना विभक्त कर सकेंगे कर देंगे और सारे बोझ हल्के हो जायेंगे। फिर हम अपनी सारी शक्ति और ध्यान जिस देहातमें हम डटे होंगे वहाँकी जिन्दगीके पचड़ोंमें चलनेवाले कामोंके निरीक्षणके पीछे लगायेंगे। तब ही हमको पता चलेगा कि हमारे कामोंमें तथ्यांश कितना है। अितने दिन मैं अिस भ्रममें पड़ा रहा कि साढ़े चार करोड़ रुपया हमने गरीबोंकी जेबमें डाला है। मैं साढ़े चार करोड़ ही नहीं बल्कि साठ करोड़के मोहमें रहा।

वस्त्र-स्वावलम्बन

अिसी तरह स्वावलम्बनार्थ कताओी भी मर्यादित है। देहातियों द्वारा कपास-संग्रहसे लेकर आगेकी बुनाओी-कताओी तककी सब क्रियायें अुन्हींके घरोंमें करवाने पर भी कपड़ा बुनाओीमें ही दाम अितने लगते हैं कि मिलके कपड़ेकी अपेक्षा देहातियोंको जो बचत होती है वह अितनी अल्प होती है कि देहाती अिन सब झंझटोंमें पड़नेको आसानीसे राजी नहीं होते। और फिर खादीकी अपेक्षा मिलका कपड़ा सुन्दर भी तो अधिक होता है।

असलमें वस्त्र-स्वावलम्बनको सारे ढंगसे सारी दृष्टिसे कार्यकर्ताओंको समझना और समझाना चाहिये। वह यह कि वस्त्र स्वावलम्बनसे समूचे देहातका पैसा बच कर देहातमें ही रहता है बेकार समयका अुपयोग होनेसे लोग अुद्यमशील बनते हैं यानी वस्त्र स्वावलम्बनका काम अहिंसक ग्रामोद्योगका या ग्राम संगठनका अंगस्वरूप समझकर करनेसे ही स्थायी लाभ हो सकता है। अमुक वर्षोंमें अितने ग्रामोंको पूर्ण वस्त्र स्वावलम्बी बना लेना है असा कार्यक्रम मुझे नहीं जचता। सही समझके साथ जितना काम करना सीखेंगे वही सच्चा काम होगा। केवल जोश और भावनावश होकर किया हुआ काम आखिर टिकता नहीं।

अन्य ग्राम-अुद्योग

यही बात अन्य ग्राम अुद्योगोंकी भी है। फिलहाल तेलघानी देहातोंमें ठीक चल रही है परंतु बादमें असका चलना कहां तक सफल होगा अिस बारेमें शंका है। असल बात यह है कि हमारी ग्राम-व्यवस्था, जिसके खादी चक्की आदि ग्राम अुद्योग अंग थे टूट गओी है। आज कपड़ा आटा चावल तेल सब कुछ मशीनकी स्पर्धाके आगे महंगे बन बैठे हैं। यदि अुनको फिर देहातोंमें सजीवन करना है तो समूची ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थामें हाथ डालना होगा असे नये सिरेसे जिंदा करना होगा। केवल किसी अेक अंग पर खोज और मेहनत करनेसे सफलता नहीं मिलेगी। अज्ञानने देहातियोंको घेर लिया है। प्रगति

वेगसे नहीं होगा, बहुत धीरे धीरे विस्तार होगा। बड़ी कठिन समस्या है।

सारा काम ग्रामोत्थानकी कल्पनामें

बापूजी — मैं तो अिससे भी एक कदम आगे जाना चाहूँगा। आपने बताया वह सब मैं मानता हूँ। अिसीलिओ तो चरखा संघके सामने मैंने तीन दिन अपना दिल खोलकर सारी बातें बतलायीं और यह सारा गोरखधंधा मचाया। हमको अब सारा काम समूचे ग्रामोत्थानकी कल्पनाके ढांचेमें डालकर नये सिरेसे करना है। अिसे कहां तक कर पाते हैं। एक कदम आगे जाकर भी मैं जो करनेको कहता हूँ सो यह है कि अिन परिवर्तनोंके कारण कुछ समयके लिओ यदि हमारा काम मन्द हो जाय शून्यवत् भी हो जाय तब भी यह करना है। खादीके बारेमें जो भावना हमने लोगोंमें पैदा की है वह सही होने पर भी अुसकी शक्तिके विषयमें जो खयाल हमने लोगोंमें पैदा किया है अुसमें यदि कहीं भूल थी तो फिरसे सोचना चाहिये। हमारा दावा यदि गलत था तो घोषणा करके हमें अुसे वापिस खींचना होगा।

शहरवालोंको मैं कहूँगा कि आप अपने लिओ खादी स्वयं पैदा कर लें। अिधर अुधरसे खादी अुठाकर शहरवासियोंको पहननेका लोभ छोड़ूँगा और फिर हम ग्रामोंमें डट कर बैठ जायेंगे। अिस परिवर्तनके कारण कार्यकर्ता भाग जायेंगे तो अुन्हें जाने देंगे। हमारे दिल और दिमागका परिवर्तन जब अिस हद तक होगा तब ही हम जो चाहते हैं वह परिणाम निकलनेवाला है। चरखा संघ खादीमात्रका संरक्षक रहेगा और कामको जितना विभक्त कर सकेंगे कर देंगे और सारे बोझ हल्के हो जायेंगे। फिर हम अपनी सारी शक्ति और ध्यान जिस देहातमें हम बैठे होंगे वहांके अिर्दगिर्दके पचरागोंमें चलनेवाले कामके निरीक्षणके पीछे लगायेंगे। तब ही हमको पता चलेगा कि हमारे काममें तथ्यांश कितना है। अितने दिन मैं अिस भ्रममें पड़ा रहा कि साढ़े चार करोड़ रुपया हमने गरीबोंकी जेबमें डाला है। मैं साढ़े चार करोड़ ही नहीं बल्कि साठ करोड़के मोहमें रहा।

वस्त्र-स्वावलम्बन

अिसी तरह स्वावलम्बनका क्षेत्र भी मर्यादित है। देहातियों द्वारा कपास-संग्रहसे लेकर ओटाओी धुनाओी-कताओी तककी सब क्रियायें अुन्हींके घरोंमें करवाने पर भी केवल बुनाओीका ही दाम अितना लगता है कि मिलके कपड़ेकी अपेक्षा देहातियोंकी जो बचत होती है वह अितनी अल्प होती है कि देहाती अिस सब झंझटमें पड़नेको आसानीसे राजी नहीं होता। और फिर खादीकी अपेक्षा मिलका कपड़ा सुन्दर भी तो अधिक होता है।

असलमें वस्त्र-स्वावलम्बनको ज्यादा लाभ ज्यादा दृष्टिसे कार्यकर्ताओंको समझाना और समझना चाहिये। वह यह कि वस्त्र-स्वावलम्बनसे समूचे देहातका पैसा बच कर देहातमें ही रहता है, बेकार समयका अुपयोग होनेसे लोग अुद्यमशील बनते हैं, यानी वस्त्र-स्वावलम्बनका काम अहिंसक ग्रामरचनाका या ग्राम संगठनका अंगस्वरूप समझकर करनेसे ही स्थायी लाभ हो सकता है। अमुक वर्षोंमें अितने ग्रामोंको पूर्ण वस्त्र-स्वावलम्बी बना लेना है, अैसा कार्यक्रम मुझे नहीं जंचता। सहज रीतिसे जितना काम करना चाहेंगे वही सच्चा काम होगा। केवल जोश और भावनावश होकर किया हुआ काम आखिर टिकता नहीं।

अन्य ग्राम-अुद्योग

यही बात अन्य ग्राम अुद्योगोंकी भी है। फिलहाल तेलघानी देहातोंमें ठीक चल रही है, परंतु बादमें अुसका चलना कहां तक सफल होगा अिस बारेमें शंका है। असल बात यह है कि हमारी ग्राम-व्यवस्था जिसके खादी वगैरा आदि ग्राम-अुद्योग अंग थे, टूट गयी है। आज कपड़ा, आटा, चावल, तेल सब कुछ मशीनकी स्पर्धाके आगे महंगा बन बैठे हैं। यदि अुनको फिर देहातोंमें सजीवन करना है तो समूची ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थामें हाथ डालना होगा, अुसे नये सिरेसे जिंदा करना होगा। केवल किसी अेक अंग पर खोज और मेहनत करनेसे सफलता नहीं मिलेगी। जड़तासे देहातियोंको घेर लिया है। प्रगति

वेगसे नहीं होगी, बहुत धीरे धीरे विस्तार होगा। बड़ा कठिन समस्या है।

सारा काम ग्रामोत्थानकी कल्पनासे

बापूजी — मैं तो जिससे भी अब कदम आगे जाना चाहूँगा। आपने बताया कि सब मैं मानता हूँ। जिसीलिअ तो चरखा संघके सामने मैंने तीन दिन अपना दिल खोल कर सारी बातें बतलायीं और यह सारा गोलमाल मचाया। हमको अब सारा काम समूचे ग्रामोत्थानकी कल्पनाके ढाँचेमें डालकर नये सिरेसे करना है। ऐसे कहाँ तक कर पाते हैं। अब कदम आगे जाकर भी मैं जो करनेको कहता हूँ सो यह है कि अिस परिवर्तनके कारण कुछ समयके लिअ यदि हमारा काम मन्द हो जाय शून्यवत् भी हो जाय तब भी यह करना है। गाँवके बारेमें जो भावना हमने लोगोंमें पैदा की है वह सही होने पर भी अुसकी शक्तिके विषयमें जो खयाल हमने लोगोंमें पैदा किया है अुसमें यदि कहीं भूल थी तो फिरसे सोचना चाहिये। हमारा दावा यदि गलत था तो घोषणा करके हमें अुसे वापिस खींचना होगा।

शहरवालोंको मैं कहूँगा कि आप अपने लिअ खादी स्वयं पैदा कर लें। अिधर अुधरसे खादी जुटाकर शहरवासियोंको पहुँचानेका लाभ छोड़ूँगा और फिर हम ग्रामोंमें डट कर बैठ जावेंगे। अिस परिवर्तनके कारण कार्यकर्ता भाग जायेंगे तो अुन्हें जाने देंगे। हमारे दिल और दिमागका परिवर्तन जब अिस हद तक होगा तब ही हम जो चाहते हैं वह परिणाम निकलनेवाला है। चरखा संघ नीतिमात्रका सलाहकार रहेगा और कामका जितना विभक्त कर सकेंगे कर देंगे और सारे बोझसे हलके हो जायेंगे। फिर हम अपनी सारी शक्ति और ध्यान जिस देहातमें हम डटे होंगे वहाँके अिन्डस्ट्रियल पचकारोंमें चलनेवाले कामोंके निरीक्षणके पीछे लगायेंगे। तब ही हमको पता चलेगा कि हमारे कामोंमें सच्चाई कितनी है। अितने दिन मैं अिस प्रलोभनमें फँसा रहा कि साढ़े चार करोड़ रुपया हमने गरीबोंकी जेबमें डाला है। मैं साढ़े चार करोड़के ही नहीं बल्कि साठ करोड़के मोहमें रहा।

मैं कहता रहा कि यदि हम चाहें तो साठ करोड़का कपड़ा अेक वर्षमें ही पैदा कर लें और तब स्वराज्य हमारे हाथमें है। अगर पीछे पड़ता तो शायद काम बना भी लेता, परन्तु अेक गांवमें जा कर पाता वह दूसरे गांव खतम हो जाता। लेकिन आज तो जितनी गहरी जड़ जा गई अुतना गहरा डालना है।

जाजूजी — मतलब यह हुआ कि देहातोंके कातनेवाले भी खादीका काम कम करके सूतके बदलेमें खादी लें और दूसरे ग्राम अुद्योगोंके कामोंमें हिस्सा लें।

बापूजी — ठीक। यदि हम यह न करेंगे तो हम अपनेको और दुनियाको धोखा देंगे। आज तो हम खुश होते हैं कि कार्यकर्ताओंने भंडारमें अितने हजारकी खादी हमने अेक ही दिनमें बेच कर खतम कर डाली।

खादीका प्रमाणपत्र

जाजूजी — तब भी सूतके बदले खादी देनेका अिंतजाम करना ही होगा। यदि चरखा संघ यह नहीं करेगा तो फिर खानगी व्यापारी कहेंगे कि हम सब करेंगे आप केवल प्रमाणपत्र दे दीजिये। यदि यह करने जायेंगे तब तो फिर बड़ी ही झंझटमें पड़ जायेंगे। अुनके हिसाब अुनकी कार्यवाही सब कुछ देखनी पड़ेगी। यह सब कैसे पार पड़ेगा?

बापूजी — सतीशबाबू कहते हैं कि अिस विषयमें हमें लोगोंको आजादी देनी पड़ेगी।

जाजूजी — अुनका कहना है कि सब अिस विक्रयका काम लोगोंको सौंप दो। संघ न करे।

बापूजी — पर अुनकी सूचनाके बारेमें हमको पूरा पूरा सोचना जरूरी है।

जाजूजी — यह पर्सेन्टेजका मामला है। अिसमें अच्छे भले लोग भी मुनाफा करनेके मोहका संवरण करनेमें असमर्थ पाये गये हैं। मजदूरी चुकाना, नंबर निकालना आदि बातोंमें कार्यकर्ताकी कुछ न कुछ मुनाफेकी दृष्टि रहती ही है। कत्तिन सूत लाती है। कार्यकर्ता

सबसे मोटे सूतवाली गुंडी ऊपर जब निकालता है फिर वही जब सब गुंडियोंको लगाता है। सूतका मोटे नोंका जब निकालने पर नोंका हिसाब लगाता है। जिस तरह अनजान भी हिसाब मुनाफेकी ओर रहता है। फिर कारीगर भी अपने अभ्यासकी युक्तियां चलाते हैं। जिस प्रकार मनुष्य-स्वभाव अपना खेल खेलता है। मतलब खादी-काम खानगी व्यक्तियोंके सुपुर्द करनेमें बड़े खतरे हैं।

खादीका व्यापार हो नहीं

बापूजी — अिसका जवाब मेरे पास है। सतीशबाबूके सुझावमें ठीक क्या है अिसका मुझे ठीक पता नहीं है। परन्तु मेरे सामने जो चित्र है अुसमें खादी-काम लोगोंके सुपुर्द करनेकी बात नहीं आती। हम तो शहरवासियोंको अितना ही कहेंगे कि यदि खादी पहनना है तो अुसका शास्त्र हमने जो रखा है वही है। यह केवल अर्थशास्त्र ही नहीं बल्कि अनिवार्य रूपसे नीतिशास्त्र भी है। अिसमें सबको अपनी अपनी खादी बनानी होगी। यदि शहरमें बुनाओका प्रबंध नहीं है तो शहरमें ही या नजदीकमें ही वहां बुनकरोंकी बस्तियां या ग्राम बना लें। वहां कपड़ा बना जाय। वहां स्पर्धा नहीं रहेगा। हम शहरवालोंको समझायेंगे कि आज जो खादी हम आपको दे रहे हैं वह निकम्मी चीज है। अिसमें गरीबोंको ठीक कितना मिला अिस बातका आपको पता नहीं है अिसलिअ आप अपनी जानकारीमें अपना आप तके खादी बुनवा लें। अिस प्रकार हम अपनी नीति बदल देंगे। आज हमें शहरवालोंको यह कहना पड़ता है कि खादीमें गरीबोंका पेट भरता है अिसलिअ खरीदो। लेकिन ऐसा करनेमें सबको व्यापार-व्यवसाय करना पड़ता है। यदि व्यवसाय ही करना है तो अिसके बल पर कितने ही लोगोंके पेट पाल सकते हैं।

अिसलिअ खादीका व्यवसाय करनेवालोंको प्रमाणपत्र देकर अुनको हम सबकी प्रतिष्ठा न देंगे। हम अुनके हाथमें से ही निकल जायेंगे ताकि प्रमाणपत्रका बाजी अब ही न रहने पाय। अितना ही मशहूर रखेंगे कि जिन-जिन देहातोंमें कोओ काम करता हो और वहां हमारे

पास कुछ खादी बच जाय और वह यदि शहरवालोंके कामकी है तो वे भले ही ले जाय। लेकिन शहरवालोंको ही अपने सामने रखकर हम खादी पैदा नहीं करते। यदि अिसमें कामकी खराबी हो तो क्या परवाह है? आज जिस तरीकेसे कर रहा हूँ अिससे तो सच्चे अर्थमें गरीबोंका अर्थलाभ मैं नहीं कर सकूँगा। आज तो मैं देहातियोंको मगर प्रलोभन दे रहा हूँ कि यह चरखा सबवाला तुम्हें अच्छी मजदूरी देता है। अिस तरीकेसे हम कामको टिका नहीं सकेंगे। हमें बुनकरोंको काम तो देना है यदि वे चाहें तो। असे ढंगसे हमारा काम चलाना है कि अनको दाम भी मिलें और शहरोंमें खादी भी न भेजनी पड़े।

देहातियोंकी सच्ची मदद

जाजूजी — यह मुझे अधिक समझना होगा।

बापूजी — आज हम सच्चे अर्थमें देहातियोंकी मदद नहीं करते। कातनेवालोंको मैं ३ ४ ६ ८ आने देता हूँ और सन्तोष मानता हूँ कि मैं अनको राजी रखता। सच्चे अर्थमें मैं अनको भिक्षा देता हूँ। कारण कि आज मैं जो काम दे रहा हूँ अुसको मैं टिका नहीं सकूँगा। यदि हमारे हाथमें राजसत्ता आजी और अुसने कल पर मान लो कि हमने मिलें बंद कर दीं तब शायद वह टिक जाय तो भले ही टिक जाय। लेकिन आज मैं अनको असे धोखेमें क्यों रखूँ कि मैं अनकी बेकारी टालता हूँ। यदि मुझको आठ पैसे ही देने हैं तो दूसरे धंधे भी अुन्हें सिखाअूँगा। आजकी आर्थिक अवस्थाकी पूरी समझ और ज्ञान अुन्हें दूँगा। मनमें तो यही रहेगा कि जितनी शक्तियाँ आयें अन सबको काम दूँ। परन्तु जो खादी पैदा होगी असका बोझा नहीं भेजूँगा। अिर्दगिर्दमें ही बेचनेको कार्यकर्तासे कह दूँगा। कातनेके सिवा और भी कौनसा काम अुनको दिया जा सकता है जिसकी खोज करूँगा। यदि हम यह न करेंगे तो हमारा काम स्थिर नहीं होगा। यह मैं मान लेता हूँ कि क्या देहातियोंको क्या हमको शहरोंका कुछ न कुछ प्रलोभन तो रहेगा ही। परन्तु शहरोंके प्रभावके नीचे आज जैसा हमारा जीवन बीतता है अुससे तो हम छूटेंगे। शहरोंकी

अपना देहातोंमें अधिक सुविधाजें किस प्रकार रह सकता है यह हम बता देंगे। यदि ८ आने मजदूरी देकर बनायी गयी खादी दाम बढ़ाकर हम बढ़जी भेजते रहेंगे तो यह काम कभी चलनेवाला नहीं है।

आपके साथ रोज अक घंटा बातचीतपरसे मुझे अिससे अिसलिअ रखा था कि जब यह प्रश्न नित्य मेरे सामने खड़ा रहेगा तो मेरा दिमाग भी साफ होगा और मुझे स्पष्ट दर्शन होगा। मैं देखता हूं कि हमको जल्दी सारा सारी सारा परिवर्तन करना होगा। यदि गिरना ही है तो जल्दीसे क्या? पूरा सावधानीसे गिरना मुझे बन कर नहीं। अितना करने पर भी यदि लोग मेरी हंसी करेंगे तो असे मैं बरदाश्त करूंगा। लोग कहेंगे कि गांधीने करोड़ रुपया बरबाद किया। किया लेकिन खो तो नहीं गया। यह सब बातें कर तो रहा हूं लेकिन वे सही हैं या नहीं अिस विषयमें आपके सहारेकी मुझे जरूरत है। आपकी राय जानना चाहता हूं।

धुनकारोंको अधिक सुयोग दें

जाजूजी—कारीगरोंकी मजदूरी बढ़ाकर जो खादी हम आज शहरोंमें भेजते हैं उससे देहातियोंको आज तात्कालिक अवकाश होता है। अिसके बदलेमें अब हम क्या देंगे?

बापूजी—यदि मेरा बस चले तो यही कहूंगा कि आज तक जिनका मन खादीके जरिये राजी थी अनको धीरे धीरे सिखलाना है अनका दूसरा काम क्या है। कौनसा काम क्या यह भी सोचना है। यदि सेवाग्रामका मिसाल मान लूं तो हम खादी कामके अतिरिक्त अन्याय काम भी यहांकी बस्तीको जो ज्यादातर हरिजन हैं दे सकते हैं।

जाजूजी—यहांकी परिस्थिति अलग है। यहां जितना संस्थाजें बन गयी हैं मेहमान आते हैं मकान बनते हैं कभी काम चलते रहते हैं। अिससे लोगोंको काम मिल जाता है।

बापूजी—हर जगह मैं यही स्थिति पैदा करूँगा। कुछ न कुछ काम पैदा करनेके लिअ हमको अपनी सारी बुद्धि और शक्ति लगानी होगी।

समग्र दृष्टि

जाजूजी—खेती, गोपालन अित्यादिके बारेमें आपने जो कहा सो सही है। लेकिन खादी द्वारा ज्यादा आर्थिक लाभ देहातियोंको करा दिया जाय यह भावना होगी। यदि मिलका कपड़ा सामने न रहता तब तो लाभ ही लाभ था परन्तु जब तक यह शत्रु सामने खड़ा है तब तक क्या किया जाय?

बापूजी—अिसलिअ मैं देहातीको समझाअूँगा कि मिलके जैसा कपड़ा नहीं मिलेगा। खादी यदि अेक पैसा महँगी मिलती है तो अुसे कहूँगा कि वह पैसा अुसका अुसके परिवारको या गाँवको ही मिलता है और ग्रामकी नीतिकी रक्षा भी अिसीमें है। यह नीतिका पहलू भी अुसे समझाअूँगा और साथ साथ देहातमें रहकर कमानेके अन्य तरीके भी अुसे सिखाअूँगा। केवल खद्दरके ही जरिये जीवन निर्वाह करनेकी बात तो अब मेरे दिमागमेंसे छूट गयी है।

जाजूजी—यानी खादीमें और अन्य ग्राम अुद्योगोंमें जो नैतिक और सामाजिक गुण हैं अुन्हें समझाकर ही अुनसे काम लेना है।

बापूजी—हाँ, अब केवल खादीको ही मैं जनताके सामने नहीं रखना चाहता। यही सोचता हूँ कि खेती, गोपालन और अन्य सब ग्रामीण अुद्योगोंको किस तरह देहातोंमें फिरसे बसाअूँ जिससे लोगोंकी स्थिति अच्छी हो। यदि दो चार देहातोंमें भी यह कर सका तो मेरी समस्या हल हो जायगी। यथा पिंडे तथा ब्रह्माण्डे।

जाजूजी—अर्थात् समग्र दृष्टि रखकर विकास करना होगा। हम खादीके केवल आर्थिक पहलू पर जोर न दें परंतु नैतिक और सामाजिक अंगको भी लोगोंको पूरे जोरसे समझायें।

बापूजी—अिसीलिअ वल्लभस्वामीका तरीका भी मुझे अेक हद तक चुभता है। अुसने अेक ही अंग पर जोर दिया। कहा कि सारे

गांवको मैं जितने अरसेमें स्वाश्रयी बना सकूंगा। अेक समय था जब मुझे यह बात प्रिय लगती थी परन्तु अब मैं देखता हूं कि जिसमें मेरी भूल थी। अकेली खादी ग्रामोंका अुत्थान नहीं कर सकती। सारे ग्राम-जीवनको सारे ग्राम-अुद्योगोंको जीवित करके ही ग्रामवासियोंको हम अुद्यमशील बना सकेंगे और तब ही ग्रामोंका अुत्थान होगा।

जाजूजी — बहुत महत्त्वपूर्ण बातें सामने आयीं। अब हम विकेन्द्रीकरणकी चर्चा करेंगे।

छठा दिन, शुक्रवार, ता० १३-१०-४४

यह विकेन्द्रीकरण नहीं

जाजूजी — आज आप विकेन्द्रीकरणके विषयमें कहिये। अेक दृष्टिसे देखा जाय तो अहमदाबादका विकेन्द्रीकरण हुआ ही है, क्योंकि औद्योगिक केन्द्र जगह-जगह बिखरे हुअे हैं। हां पूंजी अेक ही जगहसे लगती है। मैं तो मानता हूं कि आज जो केन्द्रीय नियंत्रण है वह सबका नीतिका ही है। पूंजीकी दृष्टिसे भावना हो तो यह भावना रहेगी कि देहातोंमें जो काम चलेगा सो किसका आरंभ करेगा और अुसमें आनेवाला घाटा-नफा किसका माना जायगा। अेक ढंग तो यह हो सकता है कि जिन कार्यकर्ताओंको हम बिठायें वही सब कुछ करें। दूसरा तरीका यह है कि देहातियोंके संघसे हम गांव-गांवमें रस लेनेवाले ग्रामीणोंकी कमेटियां बनाकर अुनसे सारा काम लें। मुहाजनवाला ही काम शुरू करें भी जुगायें। तीसरा प्रकार गांवके कारीगर अपनी समितियां बनाकर अपना कारोबार स्वयं मालिक होकर चलायें। कार्यकर्ताओंको यदि मालिक बनना है तो अुसके पास धन सम्पत्ति काफी होगी। वह किसी गांव पर दा जाय या अेस दृष्टिसे ही समझा जाय? कार्यकर्ता यदि व्यक्तिगत स्वार्थकी दृष्टिसे काम चलायेगा तो अुसके काममें गड़बड़ी होनेका काफी भय रहेगा। सबसे अच्छा तरीका गांववालोंकी समितियां बनानेका है। गांववालोंके स्वार्थ-संबंधके कारण कुछ गड़बड़ होनेकी संभावना है लेकिन जिस भयसे रुकना ठीक नहीं होगा। अब शासित वर्ग ही तत्पर होकर कागज आदिकी भी संस्थायें सब बनें। आवश्यकतानुसार कार्यमें कभी

गांवोंमें गधाका अक संयुक्त मंडियन बनाकर भी काम किया जा सकता है।

बापूजी — अिस विषयमें मुझे कुछ अधिक कहना नहीं है। जहां कायदेका जट जाय और अुसका विस्तार हो वहां काम शुरू हो। ताना दगैरा प्रमाण अवश्य चरखेमें हज नहीं है। परन्तु कल जो प्रश्न अुठा था और जिस पर चर्चा हुअी थी वह अगर सच है तो अिन सारी बातोंकी बहुतसी झंझटोंसे हम छूट जाते हैं। जब तक खादी बचनेकी चीज रहेगी तब तक ये सब झंझटें अुठानी ही होंगी। यह भी मैं मानता हूं कि आज ही हम अिनसे न छूट पायेंगे। परन्तु जब तक हम यह मानते हैं कि खादी रोटीकी तरह घरमें ही पकनी चाहिये यदि विक्टिर बाजारमें सस्ता भी मिले तो भी असको खाकर नहीं जीना है तब तक लोगोंको यही समझाना है कि बाजारका खाकर जानेमें नाश है। लोग यदि अिसे समझ जायेंगे तब फिर घर हीं घर पकानेका आसान तरीका ढूंढनेका बाकी रह जायगा। जैसे रोटी वैसे कपड़ा यही नारा बनेगा। फिर सब झंझट निकल जाती है। जब यह योगी सच निकलेंगे तब अनका नक्शा न्यारा होगी। आपने जब कहा कि अुत्पत्तिमें तो विकेन्द्रीकरण है ही तभी मैं कहने जा रहा था कि नहीं है। मसलन् न्काशायरमें भी कुछ कपड़ा घरोंमें बनता है लेकिन घरोंके अुपयोगके लिअ नहीं। जो मालिक हैं अनके लिअ ही बनता है। अिसे विकेन्द्रीकरण कहना अनर्थ होगा। वैसे ही जापानमें घर घरमें सब कुछ बनता है लेकिन घरके अुपयोगके लिअ नहीं। सबका सब सरकारके लिअ। सरकारने सबका केंद्रीकरण कर रखा है। चीजें घरोंमें ही बनती हैं। बनानेका ढंग भी अिनमें बढ़िया है। लेकिन घरवाले कुछ भी अपने अुपयोगके लिअ नहीं रख सकते। यह या तो सरकार कराती है या कहिये कि दो-चार व्यापारी सरकारके लिअ करते हैं। फिर अुन चीजोंको दूर देशके बाजारों तक पहुंचानेके लिअ जहाज वगैरा सब कुछ सरकार ही देती है और जिस तरह अन्याय देशोंका धन अपनी तरफ खींच लाती है। न्काशायरका भी वही हाल है। वहांकी मिलोंमें लाखों धोतियां बनती हैं लेकिन अुन्हें यदि वहां

खरीदना चाहें तो नहीं मिलेंगी। सब हिंदुस्तानियोंके लिअ मद्रास बम्बअी कलकत्ता जायगी। बस ही अहमदाबादमें जो माल बनेगा, वह वहां जायगा। अिस सबका मैं विवेचन नहीं करूंगा।

खादी बचनेकी चीज नहीं

हमने भी वही किया। हमारे कारीगर अितना ही जानते हैं कि वे चरखा संघका काम करते हैं और तैयार माल अुसीको देना है। हमने मजदूरी बढाअी। कारीगर खुश हुअे। यदि हम अिस नतीजे पर पहुंचे हों कि खादी बचनेकी चीज नहीं है पहननेकी चीज है तभी मानना चाहिये कि हम खादीका सन्देश पूरा समझ गये हैं और खादीकी शक्तिकी मर्यादा भी जान गये हैं। हो सकता है कि जब राजतंत्र हमारे हाथमें आयगा तब सारे मुल्कको हम खादी पहनायेंगे। जहां आज खादी पैदा होती है वहांसे सारे देशमें खादीको फैला देंगे। तब आजसे ही असी व्यवस्था क्यों न पसंद करें जिससे यदि भविष्यमें देशकी सरकारने चरखा संघको कहा कि तुम देशका वस्त्र-स्वावलम्बी बनानेवाली खास संस्था हो। तुमको हम सब साधन जुटा देंगे तुम देशको स्वावलंबी कर दो तो हम तुरन्त अुसको वह करके दिखला सकें। लेकिन आज यदि सरकार कहे कि लो हम सब मिलें बन्द करते हैं सारे देशको आप खादी पहना दो तो हम यह नहीं कर सकेंगे। अिसलिअे खादी हमको कहां तक ले जा सकती है यह हमें जानना होगा। मैं खुद नहीं कह सकता कि मैं भी यह ठीक-ठीक जानता हूं। लेकिन अितना तो स्पष्ट रूपसे जान गया हूं कि खादी बचनेकी चीज नहीं है पहननेकी ही चीज है। अिसमें खादीकी कार्य-नीति बदलनेकी बात आती है। मेरे मस्तिष्कमें तो आज यह बात चल रही है कि सारे देहातका आज पुनरुत्थान करना है, और अुसमें खादी अेक चीज है—और खासी बड़ी चीज है। बस हो घानी और अन्य अुद्योग भी हैं। अिस दृष्टिसे हम देखें तब फिर हमारे सामने हिन्दुस्तानको निरा लाभ ही-लाभ है। और जब कभी सत्ताके अधिकार हमारे हाथमें आयेंगे तब भी हम डटे रहेंगे पीछे नहीं हटेंगे।

स्वयं पहननेके लिअे कातना

जाजूजी — फिर आगे प्रश्न वस्त्र-स्वावलंबन यानी सिर्फ पहननेके लिअे कातनेका हो। जिसमें करना है यही निश्चय निकालें न?

बापूजी — हाँ यही। परन्तु यह मैं आपको नहीं दे सकता क्योंकि मेरा अिस विषयमें निजी अनुभव नहीं है। मैंने पहले खादी बनानेकी पीछे अुसका अभ्यास किया। अिस प्रकार अपनेको धोखा देता रहा हूँ। मैंने जो लिया सो पक्का लिया अनुभवसे। आज — स्वावलंबन — आगाखां महलमें नहीं आ सका। मैंने मजदूरीके रूपमें पक्का लिया और लोगोंने कहा कि अिसमें स्वराज्य भरा है। लोगोंने मेरा भरोसा किया और मान लिया। आज भी मानते हैं। लेकिन अिस विषयमें अब मुझे शंका पैदा हुई है कि यह अब कहाँ तक चल सकेगा? मुझे भय है कि यदि अिसी तरीकेसे खादीको चलाते रहेंगे तो वह चलनेवाली चीज नहीं।

जाजूजी — असा कोअी चित्र आपकी आंखके सामने है कि शहरोंमें आज जो खादी भंडार चल रहे हैं वे हमेशा चलनेवाले नहीं हैं?

बापूजी — हाँ असा चित्र मेरे सामने है।

जाजूजी — तब हमें अिस बात पर आना होगा कि लोगोंको मूल देकर ही खादी लेनी होगी।

बापूजी — हम कातना सीखे जब हमने देखा कि अिसके बिना काम नहीं चलेगा। लेकिन कताओी हम अधिक नहीं कर पाये। अब हम महसूस करते हैं कि बुननेवाले भी अुसी तरह तैयार करने पड़ेंगे। जो कुछ यहाँ परिवर्तन करने हैं सो हमें बुद्धिसे समझ-बूझकर करने होंगे।

जैसे जीवन मजदूरीके विषयमें हमने किया था कुछ साल तक जमा खर्च करते रहे। तब दिमाग साफ हुआ और हम समझ सके कि यह खाली परमार्थ नहीं है बल्कि कत्तिनोंका शोषण है। तभी हमने मजदूरी बढ़ाओी। मैंने आठ आने देनेको कहा। आप लोगोंने कहा आठ आने नहीं तीन आने। मैंने कहा अच्छा तीन आने ही सही। फिर

तीनसे चार आने हुअे। अिसी तरह अिस नअी चीजकी भी है। आप अिसे स्वीकार कर लें बादमें गांव कातन-करन लाग करें। जितने तीन पन्द्रुओंमें मारनेका कहा। जरूर मारें। हर सूबेमें हमारे केन्द्र हैं। सचालक पड़े हैं। कुछ कार्यकर्ताओंको बुलाअिये और तजवीजें साथ रखिये। हां अितना मैं अवश्य कहूंगा कि कामका सकोच हो जायगा। अिस बातसे मैं नहीं डरूंगा। कोअी नहीं कातेगा तब मैं अकेला कातूंगा। खादीके प्रारम्भकालमें मुझे कहा गया था कि खादीकी धोती होनेवाली नहीं है। मैं कहता था कि मैं टाट या कम्बल ओढ़कर फिरूंगा लेकिन मिलकी धोती नहीं पहनूंगा। अस महादेव अन्दर ही सारा राज्य धोती पैदा कर लें। गंगाबहन मजमूदारने भी धोती भेजी और लिखा कि जितना चाहो बनवा कर भेजूं।

खादीमें स्वराज्य

जाजूजी — खादी स्वराज्यका जो चित्र अिकदरामें बुनकर सामने पर रखता है अुसे हमें बंद करना होगा। स्वराज्यकी बातनका कहना होगा। अिसके फलस्वरूप अेक बार तो हमारा बहुतसा काम बन्द हो जायगा।

बापूजी — आपकी सूचना व्यवहारकी दृष्टिसे है। यह स्वीकार करनेमें मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। लोग तो आज स्वराज्य बन गये हैं। जो करनेका कहोगे और राजा दाने वही करेंगे। परन्तु बिना साथ काम करते रहेंगे तो हम अुनको भी धोखा देंगे और खुदको भी। आज हम अनको राजा बना देते हैं अेक रिश्वतकी भिक्षा हो रही है जैसे पत्थर तुड़वाकर या सड़क बनवाकर दुर्भिक्षके समय दी जाती है। अुसका कोअी स्थायी मूल्य नहीं होता।

जाजूजी — खादी पहननेवालोंकी संख्या बढ़ानेके बजाय स्वयं कातनेका बढ़ाने पहले हम यह जांच लें कि हममें स्वयं कातनेका अनुराग कितना है? मुझे पहला सबसे कार्यकर्ताओंकी ही बात कहूंगा। हमने सघमें नियम बना रखा है कि हरअेक कार्यकर्ताको हर महीने कम-से-कम आठ सौ गुंडी कातना होगा। लेकिन अिसका परिणाम सन्तोषकारक नहीं आया। अनमें कातनेवालोंकी संख्या थोड़ी ही

है। और देहातमें जो कातते हैं सो सिर्फ मजदूरीके लिअे। अपने लिअे तो बहुत ही कम। असी स्थिति है। असी परिस्थितिमें आप सुझाते हैं असा परिवर्तन कहाँ तक सफल होगा यह कहना कठिन है।

बापूजी — अितना तो सभी समझ लें कि खादी केवल रोजी देनेवाला अेक अुद्योग मात्र है अिस खयालको हम छोड़ दें। यदि यह अेक अुद्योग है तो असे फिर व्यापारी ढंगसे चलाना होगा। मिलोंके द्वारा हम अेक-अेक शहरमें अेक लाख या कभी हजार लोगोंको रोजी देते हैं और खादीके जरिये पन्द्रह हजार गाँवोंमें हम करोड़ रुपया गरीबोंकी जेबमें डालते हैं अितना ही फर्क रहा। दोनों अुद्योग ही हुअे। फिर खादीको पहनो और मिलका बहिष्कार करो यह बात ठंडी पड़ जाती है और न अुसमें स्वराज्यका दावा ही रह जाता है। असलमें जो दावा खादीकी कल्पनाके पीछे है वह तो ग्रामोंके अुत्थानका और अुसके जरिये अपने-आप स्वराज्यकी शक्ति जनतामें पैदा करनेका है।

देहातियोंको शक्तिशाली बनाना है

शहरवालोंकी भावनाके बल पर देहातियोंको मदद देते रहना पर्याप्त नहीं है। बल्कि देहातियोंको अुनकी जीवन-समस्याओंका सामना करनेमें शक्तिशाली बना कर आगे बढ़ाना है। यदि मिलोंको हम बढ़ायेंगे तो लोगोंको कपड़ा पूरा मिल जायगा। और यदि मिलों पर सरकारका कब्जा रहा तो कपड़ेके दाम भी शायद कम होंगे और लोगोंका शोषण भी नहीं होगा तथा लोगोंको अुचित मजदूरी भी मिलेगी। परन्तु आज लोगोंको आलस्य रोगसे हटानेका खादी अेक बड़ा साधन है। जनतामें स्वराज्यकी शक्ति पैदा करनेवाली वह चीज है। दूसरी चीजोंको भी वैसी ही बना लेंगे तब ही देहात स्वावलंबी बनेंगे। साबुन जैसी चीजें सज्जी मिट्टीसे घरमें ही बनाकर वे साफ रहेंगे। अुस साबुनमें टाटाके या गोदरेज साबुनके कारखानोंकी खुशबू नहीं होगी, न वैसा सुहावना रंग। परन्तु देहातके लिअे खादीके जितनी ही अुपयोगिता और स्वावलम्बन असमें भरा होगा। सारे

ग्रामोत्थानकी शक्ति रखनेवाला खादीका जो बहुत बड़ा चित्र मन अपनी कल्पनामें अितने दिन रखा था वह अब धुंधला बन रहा है। अितने कार्यकर्ताओंसे मैं बात करता हूं, अुन परसे यही देख रहा हूं कि अुस चित्रको मुझे अपने ही हाथसे मिटाना होगा। मैं सारा मंत्र देनेवाला हूं अिसलिअे मुझे ही यह स्वीकार करना चाहिये। सबकी यही मांग है। हार कर या दुर्बलताके वश होकर मैं यह नहीं करूंगा, बलपूर्वक ही करूंगा। खादीके लिअे मैंने जो दावा किया अुसमें यदि अतिशयोक्ति थी तो मुझे अुसे संसारके सामने दुरुस्त करना ही चाहिये।

जाजूजी — हमारा दावा मुख्यतः यह था कि खादी साल भरमें चन्द महीना तक मजबूरन बेकार रहनेवाले देहातीको कुछ-न-कुछ आमदनी देनेवाला अुद्योग है।

बापूजी — अितना ही कहकर मैं चुप नहीं रहा था। मैंने अुसमें अिस शक्तिका भी आरोपण किया था कि अुसके धागेमें स्वराज्य लानेकी शक्ति है।

जाजूजी — हां, शक्ति जीवनको समृद्ध करनेवाली अुस शक्ति पर पहले कभी अितना जोर नहीं दिया था जितना कि आज आप दे रहे हैं। करीब तीन लाख लोग आज खादीके अुद्योगमें हैं। अुनमें दाना या स्वावलम्बनके अथवा प्यारे-प्यारे गुणोंका विकास जितनी जल्दी अभी नहीं होगा जितना कि आप चाहते हैं। शायद समय लेकर हो। आज गांधीकी बिक्री हम बन्द करें और लोग अपने लिअे कातें यही आप चाहेंगे न?

बापूजी — हां।

जाजूजी — लेकिन बिक्री बन्द करने पर काफी परिमाणमें मजदूरीके लिअे कातना बंद हो जायगा।

बापूजी — हां फिर भी जो कुछ कताअी चालू रहेगी वह सचमुच ही सुतके धागेसे स्वराज्य लानेवाली होगी। क्योंकि वह शक्ति तो अुसमें है ही।

नअी नीतिसे संकोच नहीं — विस्तार

जाजूजी — आज खादीके जरिये करीब तीन लाख लोगोंसे हमारा संपर्क है। अपने लिअे कातनेको कहने पर शायद तीस हजारसे अधिक लोगोंसे यह न रहेगा।

बापूजी — बादमें अुन तीस हजारके शायद तीन करोड़ भी हो सकते हैं। जो भी हो अुसमें कहीं धोखेके लिअे गुंजाअिश नहीं रहेगी। तब हमें देहातियोंकी और कारीगरोंकी खुशामद करके काम कराना नहीं होगा। अुनके जीवनमें हमारा प्रवेश होगा। मनकी बातें कार्यकर्ता देहातियोंको और देहाती लोग कार्यकर्ताओंको सच्चे दिलसे सुनायेंगे। आज तो हम पैसेकी थैली बांधकर जाते हैं और लोगोंसे कहते हैं कि कातो तो चार आना मजदूरी देंगे छह आना देंगे। हमें कत्तिनोंकी मजदूरी तो बढ़ाना है। मैं तो अुन्हें पुरुषोंके जितनी ही मजदूरी दूंगा लेकिन अुन्हें साफ-साफ कह दूंगा कि केवल मजदूरीके लिअे तू कातती है अिसमें मुझे दिलचस्पी नहीं है। मैं हर कत्तिनसे कहूंगा तू अपने लिअे कात। तेरा सूत मैं बुनवा दूंगा। तेरे बच्चोंको मैं शिक्षा दूंगा, अुद्योग सिखाअूंगा। तेरा बजट मुझे बता, मैं तुझे हर तरहसे मदद करूंगा। तेरी मुसीबतें हटाअूंगा। आरम्भसे अगर हम यह करते और असे कार्यकर्ता मिलते तो अब तक हम स्वराज्य लेकर बैठ गये होते। परन्तु जो हुआ अुसका मुझे पश्चात्ताप नहीं है।

हमारी भूल

जाजूजी — असी भावनावाले कार्यकर्ता बहुत संख्यामें मिलेंगे असा आप मानते हैं? मिल जायें तब तो फिर रहा ही क्या?

बापूजी — भूल तो हमारी ही रही। अिस दृष्टिको सामने रखकर काम करनेका और कार्यकर्ता तैयार करनेका काम ही हमने नहीं किया। जल्दबाजी भी काफी की। सोच-समझकर और ध्यानावस्थित होकर काम करते तो मिल भी जाते।

जाजूजी — आपने तो अनेक बार कहा कि अच्छे कार्यकर्ता देहातमें जाकर बैठें।

बापूजी — अिसी बिना पर तो मैंने चरखेको अहिंसाका प्रतीक कहा। यदि हम न कर सकें तो स्वराज्य विषयका हमारा दावा नहीं चलेगा।

जाजूजी — आखिर कार्यकर्ता भी तो आजका गांव-समाज जैसा है अुसीमें से निकलेंगे न?

बापूजी — अगर यही हमारा जवाब हो तो फिर अहिंसाके मारफत स्वराज्य नहीं मिलेगा। यानी मेरी कल्पनाके स्वराज्यके लिअे लोग तैयार नहीं हैं।

अिसलिअे मैं कहूंगा कि यदि मैं अकेला रह गया तब भी मुझे यही काम करना है। चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, तालीमी संघ वगैरा संघवाले यदि साथ दें तो अच्छा ही है। यह भी संभव है कि लोग हमारा साथ न दें। तब यही न साबित होगा कि हममें हिंसा भरी है, हम जिस अहिंसाकी बात करते हैं वह अहिंसा नहीं है, कायरता है?

जाजूजी — यह सब सही है। लेकिन प्रश्न अितना ही है कि अिस पर अमल कैसे हो?

बापूजी — तब हमने जो बड़ा दावा किया है अुसे छोड़ना होगा। वाणीमें सत्यको ही चिपके रहें। बिना संकोच और बिना भय किसीका अपने मनसे समझते हुअे हमको यह कह देना है कि जैसे सब वैसे ही हम भी हैं। फिर यदि स्वराज्य मिला भी तो वह हमारी कोअी विशेषताके कारण मिला अैसा सिद्ध नहीं होगा।

सातवां दिन शनिवार ता० १४-१०-'४४

कार्यकर्ताओंकी शिक्षाका प्रबंध

जाजूजी — अब सारे ग्रामोत्थानके कार्यक्रमको हाथमें लेना होगा और अिसलिअे सुयोग्य कार्यकर्ताओंको जुटाना और तैयार करना होगा। बिक्रीके लिअे खादी पैदा करना पर यह स्थिति अनिष्ट समझी जाय। अब अिस बात पर जोर देना है कि वस्त्र-स्वावलंबनके लिअे खादी पैदा करना है। चाहे अिससे संघके कामका संकोच ही क्यों न हो। अिसका सीधा अर्थ यही कि सूत लेकर ही खादी देना [illegible] नहीं।

और जो सूत आयगा अुसकी बुनाअीका प्रबंध करना। दूसरा प्रश्न यह है कि अिस नीतिका व्यवहारमें कबसे और किस हद तक अमल हो। तुरंत ही यह नियम करें कि बिना पूरा सूत लिये खादी नहीं मिलेगी या यह कि रुपयेमें चौथाअी तिहाअी या आधा हिस्सा सूत लेकर खादी दें और अिस तरह सूतका अनुपात बढ़ाते बढ़ाते निश्चित समयमें सोलह आने तक पहुंच जायं? अिसमें सन्देह नहीं कि यह काम बड़ा ही कठिन है। कार्यकर्ताओंको अिस नीतिके अमलके लिये तैयार करनेमें और लोगोंको समझानेके लिये भी आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा।

बादमें आता है शिक्षाका प्रबंध। कार्यकर्ता तैयार करनेके लिअे हर प्रांतमें विद्यालय खोलने होंगे और अुनके लिअे अभ्यासक्रम बनाने होंगे। अिस कामके लिअे योग्य शिक्षक बहुत ही कम पाये जाते हैं। प्रथम श्रेणीके जो कार्यकर्ता हैं वे अपने-अपने क्षेत्रको ही अपनी साधना भूमि समझकर बैठे हैं। अपना गांव तहसील या जिला ही अुनका क्षेत्र है। आपने भी अिस प्रकारकी वृत्तिको बढ़ावा दिया है। अिन श्रेष्ठ कार्यकर्ताओंमें से कम से कम कुछको अपने-अपने क्षेत्रमें से निकाल कर जब तक हम शिक्षाकेन्द्रोंमें नहीं लगा सकेंगे तब तक यह काम कैसे बनेगा? ग्रामसेवकोंको सच्चे संस्कार और दृष्टि अुनके सिवा कौन दे सकेंगे?

बापूजी — खादीका काम शुरू हुआ सो भी प्रारंभमें अेक ही केन्द्रसे शुरू हुआ था। अिसमें भी वही होगा। आरंभमें यहां जो अेक शिक्षाकेन्द्र खुला है वही चलेगा। यहांसे विशारद तैयार करके हम अुनको अन्य केन्द्रोंमें भेजेंगे। अुनके मातहत वहां और कार्यकर्ता तैयार होंगे। वे जाकर और-और केन्द्र खोलेंगे।

जाजूजी — अिसमें काफी समय लग जायगा। पांच सात दस वर्ष भी लग जायें।

प्रयत्नशील कार्यकर्ता चाहियें

बापूजी — हो सकता है परंतु मेरा खयाल वैसा नहीं है। हम जिन कार्यकर्ताओंको प्रथम लेंगे वे जैसे होंगे जो काफी तैयारीके साथ

आये होंगे यानी अुनको तैयार होकर बाहर जानेमें अधिक समय नहीं लगा। फिर अेक हद तक अुनकी तैयारी हो जानेके बाद हम अुन्हें कहेंगे कि अब जाओ और काम करते-करते ही अनुभवसे अपना ज्ञान बढ़ाओ। अिसलिअे बहुत समय लगनेका डर मुझे नहीं लगता। फिर भी यदि लगे तो भले ही लगे। यदि हमें दीखे कि दूसरा मार्ग नहीं है तो आज जैसा चलता है अुसी पर चलना है। आज अूंचे दर्जेके कार्यकर्ता नहीं मिलते तो न सही। हम यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे फिर जो भी मिल जाय।

जाजूजी — सन् १९२० में जो कार्यकर्ता आये अुन्होंने अपनी योग्यता सिद्ध की। अुसके बाद जितनी बड़ी संख्यामें अच्छी योग्यताके लोग नहीं आये। आये सही, आज भी आते हैं परंतु बहुत कम।

बापूजी — बात यह है कि हमारे काममें काफी अपूर्णता थी और अच्छे-अच्छे लोगोंको आकर्षित करे अैसा कार्यक्रम भी कम था। बुद्धिके विकासके लिअे गुंजाअिश दीख नहीं पड़ती थी और बुद्धिका विकास तो सबको चाहिये ही। अिसी कारणसे अिस काममें बहुतोंको दिलचस्पी नहीं हुअी। अिसके अलावा जो अर्थलाभ अन्य क्षेत्रोंमें दीखता है अुसका यहां अभाव था। लेकिन अर्थलाभसे भी अधिक खटकनेवाली बात तो सच्चे ज्ञानकी न्यूनता थी। अेक प्रकारकी जड़ता ही खादी क्षेत्रके कार्यकर्ताओंमें अुनके देखनेमें आती रही। अिसीसे अुन्हें आकर्षण नहीं हुआ। खादी-कार्यकर्ताओंका वे हँसी मजाक भी करते रहे। लोगोंने यहां तक कहा कि खादीभक्त खादी पहनता है सो भी ढंगसे नहीं पहनता, मैला-कुचैला रहता है और व्यवहारज्ञान-शून्य होता है। कामकी शास्त्रीय जानकारी तथा दूसरोंको अुसे समझानेकी कुशलता और शक्ति यह सब अुसमें देखनेमें नहीं आती थी। कोअी अुसे कहता कि हमें यह समझाओ-बताओ तो वह नहीं समझा सकता था। हम देहातियोंके बीचमें जाकर बसे। हमने देहातियोंको काम दिया। अुन्हें देहातमें ही रोजी मिलनेका प्रबंध किया। लेकिन हमारेमें जो बुद्धिमान थे अुन्होंने काफी संख्यामें देहातियोंमें बसकर काम नहीं किया और जो गये वे किसी जिज्ञासु या अभ्यासु व्यक्तिको अपनी बात समझानेका ढंग नहीं सीखे।

यदि हम ऐसा करें तो अपने विषयमें अिस भांति पारंगत होने कि अर्थशास्त्रियोंको यह कहने कि आप जो जानते हैं वह तो हम जानते ही हैं लेकिन हमको जो ज्ञान है वह आपके पास नहीं है हम वह आपको बता सकते हैं।

नये मूल्योंका निर्माण

जाजूजी — हमारा ज्ञान अधूरा है हमारेमें काफी न्यूनतायें हैं सही तथापि मूल्यमापनकी हमारी कसौटी भी तो न्यारी है।

बापूजी — है सही। लेकिन हममें अितनी योग्यता आनी चाहिये थी कि हम अुनको समझा सकें कि अनका मूल्यमापन सही नहीं है।

जाजूजी — लेकिन नैतिक मूल्यों और भौतिक मूल्योंकी तुलना भी कैसे हो सकती है?

बापूजी — फिर अितना तो कह सकते थे कि यही अुसकी विशेषता है। और जिस तरह अुसका नैतिक मूल्य है। यही बात दुनियाके सामने आप सिद्ध करें।

आज यदि मैं समझ पाया कि अकेली खादी चलनेवाली चीज नहीं है तब मुझे यह बात दुनियाको कहनी पड़ेगी। बस तो सरकारी रिपोर्टमें भी कबूल किया जाता है कि रिलीफके अेक साधनके रूपमें चरखेका स्थान है जैसे पत्थर फोड़ना सड़क बनाना अित्यादिका है। आप भी अितना बता सके कि खादीका स्थान रिलीफके तौर पर हमेशाके लिअे है। वह स्थान तो मिटनेवाला नहीं है। लेकिन हमें जो सिद्ध करना था वह तो अुसके पूरे समूचे अर्थशास्त्रकी अनिवार्यता थी।

स्वावलम्बनकी नीति चलानेमें कितनी दिक्कतें हैं यह भी हम अमल करके देखेंगे। व्यापारी खादी भी कुछ समय तक चालू रह सकती है परंतु संघकी नीति स्वावलम्बनकी ही रहेगी और असी पर कार्यकर्ता अपनी सारी शक्ति केंद्रित करेंगे।

जाजूजी — फिलहाल यह चर्चा यहां समाप्त की जाय।

७५

खादीकी परीक्षा

[अेक भाओने पूछा कि क्या खादी-संबंधी चरखा संघकी नअी नीति असफल नहीं हुअी है?]

गांधीजीने समझाया : चरखा संघकी वर्तमान नीतिको पूरी तरह समझनेके लिअे आपको अुसके कारणोंका खयाल करना होगा। शुरूमें जोर गरीबोंके कष्ट-निवारण पर था। संयोगवश अुसने विशिष्ट वर्गों और जन-साधारणके बीच अेक सजीव कड़ीका रूप ले लिया और अेक राजनैतिक महत्त्व ग्रहण कर लिया। लेकिन जिस तरीकेसे हम और आगे नहीं बढ़ सकते। मसलन, हम मजदूरी और नहीं घटा सकते। खादी अिस बोझको अुठा नहीं सकती। अब तक कताअी और बुनाअीका काम सामान्य लोग ही करते थे। अब भी वे ही करेंगे, परन्तु अपने अुपयोगके लिअे। चरखा संघकी नअी नीति असफल नहीं हुअी। ताजे आंकड़े बताते हैं कि वह धीरे धीरे किन्तु बराबर आगे बढ़ रही है।

कठिनाअियां तो हैं। बुनाअीके कारण गाड़ी अटक जाती है। बुनकरों पर हम काफी काबू नहीं जमा सके। अिसमें भी कसूर मेरा है। यदि मैं आरंभसे यह आग्रह रखा होता कि सब लोग कताअीके साथ बुनाअी भी सीखें तो आज स्थिति दूसरी ही होती। चरखा संघकी चालू पूंजी अिस समय २५ लाख है। अिस आंकड़े तक पहुंचनेमें अुसे पच्चीस वर्ष लगे। अिस कालमें अुसने मुख्यतः भारतके बीस हजार गांवोंमें बिखरे हुअे गरीब कातने और बुननेवाले साढ़े चार लाख लोगोंमें मजदूरीके रूपमें ७ करोड़से अधिक रुपया बांटे। मुझे ऐसा और अुदाहरण मालूम नहीं जहां अितनी थोड़ी पूंजी पर अितने व्यापक क्षेत्रमें अितना अधिक अुत्पादन हुआ हो।

यदि हम यता करते तो अपने विषयमें अिस भांति पारंगत होते कि अर्थशास्त्रियोंको कह सकते कि आप जो जानते हैं वह तो हम जानते ही हैं, लेकिन हमको जो ज्ञान है वह आपके पास नहीं है, हम वह आपको बता सकते हैं।

नये मूल्योंका निर्माण

जाजूजी — हमारा ज्ञान अधूरा है, हमारेमें काफी न्यूनतायें हैं सही, तथापि मूल्यमापनकी हमारी कसौटी भी तो न्यारी है।

बापूजी — है सही। लेकिन हममें अितनी योग्यता आनी चाहिये थी कि हम अुनको समझा सकें कि अुनका मूल्यमापन सही नहीं है।

जाजूजी — लेकिन नैतिक मूल्यों और भौतिक मूल्योंकी तुलना भी कैसे हो सकती है?

बापूजी — फिर अितना तो कह सकते थे कि यही अुसकी विशेषता है। और अिस तरह अुसका नैतिक मूल्य है। यही बात दुनियाके सामने आप सिद्ध करें।

आज यदि मैं समझ पाया कि अकेली खादी चलनेवाली चीज नहीं है तब मुझे यह बात दुनियाको कहनी पड़ेगी। वैसे तो सरकारी रिपोर्टमें भी कबूल किया जाता है कि रिलीफके अेक साधनके रूपमें चरखेका स्थान है, जैसे पत्थर फोड़ना, सड़क बनाना अित्यादिका है। आप भी अितना बता सके कि खादीका स्थान रिलीफके तौर पर हमेशाके लिअे है। वह स्थान तो मिटनेवाला नहीं है। लेकिन हमें जो सिद्ध करना था वह तो असके पूरे समूचे अर्थशास्त्रकी अनिवार्यता थी।

स्वावलम्बनकी नीति चलानेमें कितनी दिक्कतें हैं यह भी हम अमल करके देखेंगे। व्यापारी खादी भी कुछ समय तक चालू रह सकती है परंतु संघकी नीति स्वावलम्बनकी ही रहेगी और अुसी पर कार्यकर्ता अपनी सारी शक्ति केंद्रित करेंगे।

जाजूजी — फिलहाल यह चर्चा यहां समाप्त की जाय।

"यह बात अच्छी तो है मगर अनोखी हरगिज नहीं है। चीनके अिन्डस्को (अुद्योगधंधोंके सहकारी संघ) ने अिससे बेहतर काम कर दिखाया है," अेक मित्रने कहा।

गांधीजीने अुत्तर दिया: "यह न्यायपूर्ण तुलना नहीं है। मैंने अपनी नजरबन्दीमें मिस वेल्सकी वह पुस्तक पढ़ी जिसकी मुझसे सिफारिश की गअी थी। अिंडस्कोकी प्रवृत्तियां चीनकी राष्ट्रीय सरकारके सहारेसे असाधारण परिस्थितियोंमें चलाअी गअी थीं। अिसके अलावा अुसका सारा अुत्पादन युद्धकालीन अुत्पादन था। आपको अपने दृष्टान्तके लिअे चीन तक दूर जानेकी जरूरत नहीं थी। दक्षिण भारतके क्ग-कट भिालका अुदाहरण अधिक अुपयुक्त है। दोनों ही अुदाहरणोंमें क्षेत्र मर्यादित था। लेकिन खादी सारे भारतकी सेवाका प्रयत्न कर रही है।"

"आज हम बेहतर मजदूरी देकर अधिक कारीगरोंको आकर्षित नहीं कर सकते। देशमें मजदूरीका सामान्य स्तर पहले ही बहुत अूंचा हो गया है।"

"हम आकर्षित करना भी नहीं चाहते।"

"आपके कहनेका मतलब यह है कि आप अुनसे अपने ही अुपयोगके लिअे अुत्पत्ति कराना चाहते हैं?"

"हां।"

मित्रने पूछा: "अिस पर अमल कैसे किया जा सकता है?"

गांधीजीने जवाब दिया: "यह मैंने पिछले साल मि० केसी* को समझाया था। मैंने अुनसे कहा था कि मेरी योजनाके अपनानेसे न केवल बंगालकी बल्कि समूचे भारतकी कपड़ेकी समस्याको हल किया जा सकता है। अुस योजनाका सार यह था कि लोगोंको कपड़ा मुहैया करनेके बजाय हमें अुन्हें सिखाना चाहिये कि वे अपने लिअे कपड़ा कैसे बनायें। अिसके लिअे अुन्हें औजार, कच्चा माल आदि आवश्यक साधन दिये जायें। जिस हिस्सेमें अिस योजनाका अमल किया जाय

---

* बंगालके गवर्नर।

वहां अेक नियत अवधिके बाद लोगोंको तैयार कपड़ा देना बन्द कर देना चाहिये। मुझे बताया गया है कि जर्मन पूर्वी अफ्रीकामें प्रथम महायुद्धके दिनोंमें कपड़ेकी कमी दूर होनेतक अपना कपड़ा आप तैयार करनेको राजी करके पूरी की गअी थी। यह सही हो या न हो, *लेकिन अगर भारत सारे मुल्कमें फैली हुअी कताअी और बुनाअीकी* अपनी पुरानी परंपराका और अपने कारीगरोंकी अद्वितीय पटुताका पूरा अुपयोग करे तो वह न केवल अपनी ही कठिनाअी हल कर लेगा, बल्कि कपड़ा तैयार करनेके मामलेमें जिन लोगोंकी स्थिति कम अनुकूल है अुनके लिअे अपनी मिलोंसे कपड़ेका मुक्त करके संसारको भी वर्तमान संकटका सामना करनेमें मदद दे सकता है।'

मित्रने आग्रहपूर्वक कहा, "किन्तु यह तो मानना ही होगा कि कपड़ेकी अितनी तीव्र कमी होने पर भी खादी अुसे पूरा नहीं कर सकी। वह पिछड़ गअी।"

गांधीजीने अुत्तर दिया, "अिसका कारण सरकारी हस्तक्षेप है। अुसने खादी-कार्यकर्ताओंको गिरफ्तार कर लिया, खादीका स्टॉक जब्त किया और खादीकी अुत्पत्ति पर हर प्रकारकी बाधायें लगा दीं।

"कपड़ेकी तंगी बढ़ती जा रही है। अुत्पादनका खर्च पहले ही चोटी पर जा पहुंचा है, फिर भी हम जो मजदूरी दे सकते हैं वह अितनी भी नहीं है कि बेकारों तकको आकर्षित कर सके।"

"ये बेकार हैं कहां?"

"क्या अब आप तो आअी. अन० अ० के नाम ही हैं।"

"मैंने अुनके सामने अेक प्रस्ताव रखा था। लेकिन अुनका आरंभ अुसका अभी तक कोअी अुत्तर नहीं मिला है। आप घोड़ेको हौज तक तो ले जा सकते हैं, परन्तु पानी पीनेको मजबूर नहीं कर सकते।"

"क्या सरकार कोअी योजना नहीं बना सकती?"

"मद्रासमें अैसा किया गया है। अुसकी जांच हो रही है। अूपरसे कोअी चीज नहीं लादी जा सकती। हरअेक वस्तु सीखनी पड़ती है। और जो यह काम करते हैं अुनमें दृढ़ विश्वास और

सवाभाव होना चाहिये। सरकारी फरमानसे काम नहीं चलेगा। सरकार सहायक हो सकती है। जैसा मैंने मि० केसीसे कहा था अगर सारी चीज मुझ पर छोड़ दी जाय और सरकार आवश्यक सुविधायें दे तो मैं अपनी योजनाको कार्यान्वित करनेके लिअ तैयार हूं। वह प्रस्ताव अब भी कायम है।

मित्र बीचमें ही बोले खतरा यह है कि आपकी योजनामें जो कल्पना की गयी है अुसके अनुसार यदि हम किसी जिलेकमें कपड़ा देना बन्द कर दें तो अुसमें वर्तमान असंतोष तीव्र हो सकता है और अुथल-पुथल भी मच सकती है। अिस तत्त्व मौजूद हैं जो किसी भी मौकेका दुरुपयोग करके जनतामें असंतोष भड़कानेको तैयार बैठे हैं। जैसे बम्बअीमें कुछ लोगोंने शराबबन्दीको अेक भयंकर अत्याचार बताया था वैसे ही कपड़ेके प्रतिबंधको भी लोग अत्याचार का नाम दे सकते हैं। हम अिस प्रकारके अुत्पातका विचार कैसे कर सकते हैं या अैसे कैसे निमंत्रण दे सकते हैं? यह अिस प्रश्नका रचनात्मक हल नहीं है। अिसमें जबरदस्तीकी बू आती है।

जबरदस्तीका प्रश्न ही कहां है? गांधीजीने पूछा। स्थिति तो यह है कि सबको देनेके लिअ काफी कपड़ा नहीं है। वितरणके लिअ अुपलब्ध कपड़ेकी मात्रा मांगसे कम होनेके कारण राशनिंग जरूरी हो जाता है। सवाल बुद्धिमत्तापूर्ण वितरणका ही है। कुछ समयके लिअ बाहरसे मालकी आशा नहीं रखी जा सकती। अमरीका और अिंग्लैण्ड अपना वस्त्र-अुत्पादन बढ़ानेकी जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं। परंतु अुस सारे अुत्पादनकी वहां जरूरत है। अगर हम अपने वस्त्र अुद्योगका राष्ट्रीयकरण कर दें और दो पालीके आधार पर काम करें तो शायद कपड़ेकी कमीकी समस्या तो हल हो जाय परंतु जन-साधारणकी दरिद्रताकी समस्या हल नहीं होगी। फिर मैं खादीकी जोरदार वकालत नहीं कर सकूंगा। अिसलिअ नहीं कि खादीके दावेमें तब सचाअी नहीं होगी बल्कि अिसलिअे कि तब मैं किसीको यकीन नहीं करा सकूंगा।

मित्रने कहा मेरा मुद्दा यह नहीं है। सभी सरकारी कार्रवाअियोंमें कुछ न कुछ जबरदस्ती तो होती ही है। जकात संरक्षण आन्तरिक

कर — ये सब गुप्त रूपमें जबरदस्ती ही हैं। यह बुराओी तब बन जाती है जब गलत या बेजा तौर पर अिस्तेमाल की जाय। अगर सरकारी जबरदस्ती द्वारा किसी बुनियादी तौर पर गलत और अस्थिर आर्थिक स्थितिको सहारा देनेकी कोशिश की जाय, तो यह खतरा है कि वह क्रिया किसी दिन चकनाचूर होकर गिर पड़ेगी और चारों तरफ बरबादी फैला देगी। मेरे मनमें यह प्रश्न अुठता है कि कहीं खादी अुत्पत्तिका मौजूदा ढंगका सामान्य अुसी प्रकारका अुदाहरण तो नहीं है और यह कि क्या बदली हुओी परिस्थितिके अनुकूल बननेके लिअे विशुद्ध सिद्धान्तमें व्यावहारिक यथार्थवादिताका पुट लगानेकी जरूरत तो नहीं है? अुदाहरणार्थ कारीगरका अूनी माल अुसके अपने अुपयोगके लिअे नहीं होता। अिससे कारीगरके बाहर बढ़िया मालकी जरूरत पूरी होती है। वह अत्यंत लोकप्रिय है। अब अगर हम यांत्रिक बुनाओी जारी कर दें तो वह माल सब तरहकी स्पर्धाका मुकाबला कर सकता है। परन्तु यह खादीके बुनियादी अुसूलके खिलाफ होगा। मेरे मनमें यह विचार आता रहा है कि क्या दोनोंमें कोअी समझौता नहीं हो सकता? गृह अुद्योगोंको केवल मानव शक्तिसे चलाना अिस यंत्रयुगमें बहुत संभव नहीं मालूम होता। हम आर्थिक धाराओंका रुख बदलनेका प्रयत्न कर सकते हैं, हम अुनके विरुद्ध चलकर सीधी टक्कर नहीं ले सकते। मसलन, अगर हम गृह अुद्योगोंको सस्ती बिजलीकी सहायतासे चला सकें तो वे अपना मूल गुण खोये बिना टिक रह सकेंगे। आखिर तो हमें विकेन्द्रित अुत्पादन चाहिये। हम सिंचाओीकी योजनाओंकी सहायताके लिअे सस्ती जलजात विद्युत शक्तिसे विकासकी योजनायें रख सकते हैं। ६ से १० वर्षकी अवधिमें अुन्हें चालू किया जा सकता है। तब प्रत्येक गांवमें बिजली ले जाना संभव होगा। तो क्या अुन परिस्थितियोंमें हम खादीका काम मौजूदा ढंग पर कर सकेंगे? आम तौर पर अुत्पत्ति और मांग बराबर होना चाहिये। परन्तु खादीको स्थायी आधार पर जमानेके बजाय हम अुसे कृत्रिम प्रतिबंध लगाकर पंगु बना रहे हैं। फल यह हुआ है कि बहुतसा भ्रष्टाचार और बेओीमानी घुस गओी है। खादी भंडारोंका कभी खून बार-बार किया जाता है। अिसके आर्थिक पहलूके अलावा खादीका

अब सास्कृतिक और राजनीतिक महत्व भी बन गया है। लोग अिसे यूनीफार्मके तौर पर अपनानेको अत्सुक है। अलबत्ता अपनी जरूरतका कपड़के लिअे मालिकको तरजीह देना चाहते है। आओ० अन० अ० वाले खादीको यूनीफार्म अपनाना चाहते हैं। परतु नअी नीतिके कारण आज खादी यहा मिलती नही। दभ और अप्रामाणिकताका बोलबाला दीखता है।

गाधीजीने अुत्तर दिया जो बात नही सकते या बातना नही चाहते व मिलका देशी या विदेशी कपडा लें। मै अपनी आखें खोलकर चल रहा हू। खादीके अितिहासमें यह पहला ही अवसर नही है कि मागसे अुत्पत्ति या अुत्पत्तिसे माग बढ गअी हो। हर बार बहादुरीसे काम किया गया और सकट निवारण हो गया। अिस बार भी मुझे किसी भिन्न परिणामकी आशा नहीं है। सिर्फ अितनी ही जरूरत है कि हम श्रद्धा और धीरज तथा ठीक अुपाय करनेका साहस रखें। मै अिस समय यही कर रहा हू। अगर असा करते हुअे खादी मर जाती है तो मुझे वह खतरा अुठानेको भी तैयार रहना चाहिये।

मित्रने प्रत्युत्तर दिया यह तो प्रश्नको टालनेकी बात हुअी। यह चीज लोगोंमें पैठेगी नही। हमें अपनी नीतिको लोगोंकी मागके अनुकूल बनाना होगा।

मै असा नही कर सकता। जब मुझे भूलका पता लग गया तो मुझे अुसे सुधारना ही चाहिये। अिसमें समय लग सकता है। अिसलिअे मैने सुझाया है कि काग्रेसके सविधानमें से खादीकी कलम हटा दी जाय। जब आसाम काग्रेसमें अुसे हटानेका असफल प्रयत्न किया गया था तब मुझे सतोष हुआ था। अब अुसे हटानेको मै प्रोत्साहन दूगा और अुसका स्वागत करूगा। अगर असमें कोअी भीतरी खूबी है तो काग्रेसके हटा देने पर भी खादी जिन्दा रहेगी। अगर खूबी नही है तो अुसका मिट जाना ही योग्य है।

लेकिन अिससे हमारी बुनियादी समस्या हल नही होगी।

मुझे भय है कि मै दलीलोंसे आपको यह बात नही समझा सकूगा। समय ही बतायेगा कि कौन सही था।

मित्रने फिर कहा आपने कहा कि खादीमें सबसे बड़ी रुकावट बुनाओकी है। मिलके सूतका बुननेवाले जुलाहेको आजकल तीन रुपये रोज तक मिल जाते हैं। हाथके सूतको कातने और बुननेवाला जिसमें कम मजदूरी पर काम नहीं करेगा।

गांधीजीने अुत्तर दिया मैं भी नहीं चाहता कि वह करे। अिसीलिअे मैंने हाथके सूतको दुगना करनेकी सिफारिश की है। अगर हम मिलके सूत पर आश्रित रहना चाहें तो अुसका विनाश निश्चित है। मिल-मालिक जितने परोपकारी जीव नहीं हैं कि हाथ-करघेका जुलाहा जब अुनके साथ सफल स्पर्धा करने लगेगा तब भी वे अुसे सूत देते रहेंगे। परन्तु दुबटे हाथ-कते सूतको बुननेवाला जुलाहा अन्तमें मिलके सूतके जुलाहेसे अच्छा रहेगा क्योंकि अुसे साल भर बराबर काम मिलता रहेगा।

मित्रने अपनी बात जारी रखते हुअे कहा वस्त्र-अुद्योगके आधारमें ही क्रान्ति हो गयी है। अब वे कायला हवा और पानीसे कपड़ेके बनावटी ततु तैयार कर रहे हैं। बुनाओके स्थान पर रासायनिक महामनाके रुओके ततुओंको जमाकर कपड़ा तैयार किया जा रहा है। अगर हम यह निश्चित नहीं कर लेंगे कि हमारी खादी-नीतिका कोओी मजबूत व्यावहारिक आधार है और वह किसी समग्र चित्रका अंग है, तो खादी विफल होकर रहेगी।

हो सकता है मगर अुस पर किया गया परिश्रम व्यर्थ नहीं जायगा ' गांधीजीने अुत्तर दिया।

मित्रने कहा कोओी भी अच्छा प्रयत्न कभी व्यर्थ नहीं जाता। परन्तु आपकी खादी-नीतिमें अभी हालमें जो परिवर्तन हुअे हैं वे अनेक सच्चे खादीप्रेमियों और कार्यकर्ताओंको बराबर परेशान कर रहे हैं। अुनकी परेशानीको दूर करना चाहिये। अुनमें से कुछ लोग तो अप्रमाणित खादीको अपनाने तककी बात करते हैं।

गांधीजीने जवाब दिया, 'अुनमें श्रद्धा नहीं है तो परेशानी दूर नहीं होगी।

जब तक खादीकी माग [illegible] तब तक खादीके भाव बढ़ाने पड़ें तो भी अुसे पूरा करना चाहिये।

अिसका अर्थ यह है कि खादी शौकीनोंका शौक पूरा करने वाली फैन्सी चीज हो जायगी। अब विज्ञापन मण्डलको अिस कामके लिअे अपयोग करना अुचित नहीं होगा। हमारा धर्म है कि हमारी खादी-नीतिमें काफी मौलिक दोष हो तो अुसका पता लगाकर अिलाज करें और अैसा करते हुअे यह प्रमाण हो कि खादीकी बुनियाद ही गलत है तो अुसे तिलांजलि दे दी जाय। आज तो खादीकी परीक्षा हो रही है। वह अपने अपने स्वाभाविक बल पर ही अुतीर्ण होगी। और अगर अुसमें वह बल नहीं है तो अुसके बारेमें चिन्ता करना व्यर्थ ही होगा।

अन्तमें मित्रने जोर देकर कहा : मैं अितना ही जानता हूं कि जहां किसी पदार्थकी व्यापक और सच्ची मांग होती है और अुत्पत्ति अुससे कम होती है, वहां आर्थिक सन्तुलनको ठीक करके अुस मांगको पूरा करनेके अुपाय निकाले जा सकते हैं और निकाले जाने चाहिये।

गांधीजीने अुत्तर दिया : मैं आपको खतरेकी चेतावनी ही दे सकता हूं। अेक समय था जब हम कताअीके लिअे मशीनकी बनी हुअी पूनियां काममें लेते थे। या तो हम मिलका सूत भी काममें ले सकते थे, क्योंकि पूनी मिलका सूत नहीं तो और क्या है? अगर हमने अुससे नाता तोड़कर हाथकी बनाअी पूनी न की होती तो खादी अब तक मिट जाती। स्व॰ सर गंगारामने मुझसे कहा था : "आप सिर्फ चरखा छोड़कर हाथ-करघे पर शक्ति केन्द्रित कीजिये तो मैं आपके साथ हूं।" वे अुस बातको नहीं समझ सके जिसे आज हम जानते हैं — यानी यह कि हाथ-करघेके अुद्योगको भयंकर सम्भवतः मिलका सूत घोट रहा है। हाथ-कते सूतमें ही अुसकी मुक्ति है। अगर चरखा चला गया तो हाथ-करघेका भी वही हाल होगा। खादीसे अगर करोड़ोंको अुपयोगी काम नहीं मिले तो मेरी नजरमें खादीकी कोअी कीमत नहीं रह जायगी। अनेक समझौते जो सुझाये गये हैं अैसे हैं जिनसे अुसकी

मौलिक विशेषता ही बाकी नहीं रहती। जब तीस वर्ष पहले मैं मरहूम फजलभाओीसे मिला था तब अुन्होंने भविष्यवाणी की थी कि खादी अन्तमें विफल होकर रहेगी। वे तो चले गये परन्तु खादी अभी तक जिन्दा है। संभव है नवयुग आ गया हो और खादी असमें पुराने जमानेकी बेमेल चीज मालूम होती हो। बात अितनी ही है कि मुझे असा महसूस नहीं होता।'

हरिजन २५-८-४६

७६

खादी-संगठनका विकेन्द्रीकरण

चरखा संघकी पिछली बैठकमें अेक प्रश्न जिसकी चर्चा हुआी, यह था कि चरखा संघकी सत्ताको स्थानीय खादी-संस्थाओंमें बांट दिया जाय। यह सुझाया गया कि प्रत्येक क्षेत्रकी जिवाओीके लिओ खादी नीति तय करनेका काम पूरी तरह स्थानीय संस्थाओं पर छोड़ दिया जाय और वे केन्द्रीय संगठनसे सर्वथा स्वतंत्र हों। गांधीजी आरंभ शक्ति और जिम्मेदारीके अधिकसे अधिक विकेन्द्रीकरणके पक्षमें तो थे लेकिन वे अिस बातके विरुद्ध थे कि खादी-कार्यकर्ताओंकी जगह तालीम न पाये हुअे स्त्री-पुरुषोंकी समितियां बना दी जायं। खादी सेवक संगठनके लिओ होशियार मंत्र जानने और विनयशीलकी जरूरत है जिनमें साथ-साथ व्यावसायिक बुद्धि और सेवाकी भावना भी हो। असमें व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा या सत्ताकी राजनीतिके लिओ कोओी स्थान नहीं है। अभी राजनीति कांग्रेसका मुख्य रोग बन गया है। कांग्रेस संगठनके अिस भ्रष्टाचारको मिटानेके लिओ अुन्होंने सुझाया कि अुसे लोकसेवकोंकी संस्था बन जाना चाहिये। चरखा संघमें लोकतंत्रका तत्त्व दाखिल करना खादीको मार देना है। जिस अर्थमें कांग्रेस लोकतांत्रिक संगठन है अुस अर्थमें चरखा संघ नहीं है। यह असा संगठन है जिसे कांग्रेसने लोकतंत्रके निर्माणके लिओ पैदा किया है।

बैंक आफ़ अिंग्लैण्ड सघात्मक-सहयोगी तरह यह भी आखिर एक व्यापारिक संस्था है। अितनी ही बात है कि अिसका अुद्देश्य लोक-सेवाका है, मुनाफा कमानेका नहीं है। किसी व्यापारिक संस्थाको स्थायी सादिक गाहकको आत्मानिक मनमानी प्रणालीसे नहीं बांधा जा सकता।

आगे चलकर गांधीजीने कहा — इस देहातमें फल जल्दी आते हैं। समझाने-बुझाने और सलाहके सिवा खादी-कार्यकर्ताके लिअ किसी और सत्ताका कोअी अुपयोग नहीं हो सकता। ज्यों ही वह किसी दूसरी सत्ताका अस्त्र ग्रहण करनेका प्रयत्न करेगा, त्यों ही वह खादीको मार देगा।

अन्तमें अेक भाअीने पूछा — खादीको सार्वभौम बनानेके लिअ हमें सबका सहयोग लेनेकी जरूरत तो होगी?

गांधीजीने अुत्तर दिया — चूंकि खादी-कार्यकर्ताओंसे लोगोंकी संपूर्ण सेवक होनेकी आशा रखी जाती है, अिसलिअ यदि अुनमें कुछ भी योग्यता होगी तो वे अपने पक्षमें लोकमत पैदा कर सकेंगे। अिसके लिअ किसी कमेटीकी आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि वह सहायकके बजाय बाधक हो सकती है, जब कि यदि अुनकी सेवासे लोग आकर्षित होंगे तो अुनसे जबरदस्त मदद मिलेगी।

दूसरा प्रश्न यह था — खादीके विकेन्द्रित हो जानेके बाद चरखा संघकी सत्ता क्या होगी?

गांधीजीने तुरंत जवाब दिया — अुस हालतमें संघकी सत्ता केवल नैतिक होगी और अिसलिअ अुसमें अधिक शक्ति होगी। अुसका काम रुपया अथवा सामग्री देना न होकर अेक नैतिक बल अुत्पन्न करके खादीके लिअ मार्ग सरल बनाना होगा। वह खादी-कार्यकर्ताओंको अपना नाम तो अिस्तेमाल करने देगा, मगर अुन पर अपनी अिच्छा थोपनेकी कोशिश नहीं करेगा। अुसकी नैतिक सत्ता किसीको भी, जो अुसकी नीतिको स्वीकार करेगा, अुपलब्ध होगी। अुसकी वर्तमान संपत्ति तक किसी भी अिकाअीको सौंप दी जायगी, जो तैयार होगी और स्वशासनका दावा करना मुनासिब समझेगी। शर्त यह है कि अुसे जो सम्पत्ति सौंपी जाय अुसके सदुपयोगकी वह गारंटी दे और

एक निश्चित समयके बाद असे ऋण देनेका बंधन स्वीकार कर ले। परन्तु संघको निरीक्षणका अधिकार होगा परन्तु वह भी स्वशासन भागी शिक्षार्थियोंकी मर्जी पर होगा।

हरिजन २७-१०-४६

७७

स्वावलम्बन और सहयोग

प्र० — हाथ-कताओके पक्षमें अेक दलील यह दी जाती है कि अससे मनुष्य स्वावलम्बी हो जाता है। क्या जो व्यक्ति स्वावलम्बी है वह दूसरों पर निर्भर रहनेवालेसे समाजकी अधिक और बेहतर सेवा कर सकता है? क्या आपके कहनेका अर्थ यह है कि स्वावलम्बन और समाजसेवाके बीच असा संबंध है कि मनुष्य जितना अधिक स्वावलम्बी होगा अुतना ही अुसकी समाजसेवाकी क्षमता अधिक होगी?

अु० — अिस प्रश्नका संतोषजनक अुत्तर देनेके लिअे हमें अहिंसक दृष्टिकोणको ध्यानमें रखना चाहिये क्योंकि मेरी कल्पनाकी व्यवस्थाकी बुनियाद सत्य और अहिंसा है। हमारा प्रथम कर्तव्य यह है कि हमें समाज पर भार नहीं बनना चाहिये अर्थात् हमें स्वावलम्बी होना चाहिये। अिस दृष्टिबिन्दुसे स्वयं स्वावलम्बन अेक प्रकारकी सेवा है। स्वावलम्बी बन जानेके पश्चात् हम अपना फालतू समय दूसरोंकी सेवामें लगायेंगे। अगर सब स्वावलम्बी बन जायं तो किसीको कष्ट नहीं होगा। असी स्थितिमें किसीकी सेवा करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। परन्तु हम अभी तक अस स्थितिमें नहीं पहुंचे हैं अिसलिअे हमें समाजसेवाका विचार करना पड़ता है। हम पूर्ण स्वावलम्बन प्राप्त करनेमें सफल हो जायं तो भी चूंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है अिसलिअे हमें किसी न किसी रूपमें सेवा स्वीकार करनी होगी। अर्थात् मनुष्य जितना स्वावलम्बी है अुतना ही परस्परावलम्बी है। जब समाजको सुव्यवस्थित रखनेके लिअे परावलम्बनकी आवश्यकता हो जाती है तब वह

परावलम्बन नहीं रह जाता परन्तु सहयोग हो जाता है। सहयोगमें मिठास है। जो सहयोग करते हैं अनमें कोअी सबल या कोअी निर्बल नहीं होता। सब समान होते हैं। परावलम्बनमें लाचारी मालूम होती है। किसी परिवारके लोग जितने परस्परावलम्बी होते हैं अुतने ही स्वावलम्बी होते हैं। मेरा-तेरावाली कोअी भावना नहीं होती। सब सहयोगी होते हैं। अिसी प्रकार जब हम समाज, राष्ट्र या सारी मानव जातिको परिवार मान लेते हैं, तब भी सब मनुष्य सहयोगी बन जाते हैं। यदि हम अस सहयोगका अेक चित्र कल्पना कर सकें, तो हमें पता चलेगा कि निर्जीव यंत्रके सहारेकी जरूरत नहीं पड़ती। यंत्रोंका अधिकसे अधिक अुपयोग करनेके बजाय हम अनका कमसे कम अुपयोग करके काम चला लेंगे और अिसीमें समाजकी सच्ची सुरक्षितता और आत्मरक्षा निहित है।

टि आॅअिंडियालाजी आफ टि चरखा, २०–११–४५
पृ० ८६–८८।

७८
कताअी और खेती

प्र० — आप खेतीसे कताअी पर ज्यादा जोर देते हैं। क्या अिसके पीछे कोअी राजनीतिक कारण है? अथवा यह बात है कि सब लोग खेतीको अुतनी आसानीसे नहीं अपना सकते जितनी कताअीको?

अु० — मेरी नजरमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अिस तरहके अलग अलग विभाग नहीं हैं। जो चीज राजनीतिक है अुसमें सामाजिक और आर्थिक तत्त्व भी हैं। अेकमें दूसरे शामिल हैं भले ही हमें ठीक तरहसे समझनेके लिअे असे विभाग करने पड़ते हों। खेती पर मैंने जोर क्यों नहीं दिया है अिसका अेक कारण यह है कि असके बारेमें मेरा अपना ज्ञान बहुत थोड़ा है। तब मैं अुस विषय पर जोर देकर आपको अुसका ज्ञान कैसे दे सकता हूं? चरखेके बारेमें

यह बात नहीं है। मैंने उसकी काफी जानकारी कर ली है। दूसरा कारण यह है कि मिलोंने आत्मगौरवको नष्ट कर दिया है। रुईका विनाश नहीं हो सकता था। हाँ, उसका रूप ऐसा बदल दिया गया है कि उससे हमारी गुलामी बढ़ गयी। तीसरा कारण यह है कि मशीनमें हाथकी कारीगरीका स्थान बहुत छोटा है। शायद ही कोई और धंधा ऐसा हो जिसमें हाथकी कारीगरी और अंगुलियोंकी कला इतनी महत्त्वपूर्ण हो जितनी खादी बनानेकी भिन्न भिन्न क्रियाओंमें है। चौथा कारण यह है कि किसी सत्ता पहले जमीन पर अधिकार जमाती है और फिर जमीनके जरिये दूसरी चीजों पर अधिकार करती है। इसलिए खादीके सुधारके लिए सरकारकी सहायता बहुत जरूरी है। इन और दूसरे कारणोंसे मैंने हाथ-कताई पर अधिक जोर दिया है।

दि आर्किऑलॉजी ऑफ दि चरखा २९-११-४५, पृ० ८९-१०१

७९

रेशम और रुई

जब खादी करोड़ोंको रोजगार दे सकती है, वहाँ रेशम मुश्किलसे कुछ हजारोंको ही दे सकता है। खादी गरीब अमीर दोनोंकी जरूरतकी चीज है। रेशम थोड़ेसे लोगोंके सिवा किसीकी आवश्यकताकी वस्तु नहीं। ये थोड़ेसे लोग भी कुछ धार्मिक भावनाको धारण करनेके लिए ही कुछ अवसरों पर रेशमी वस्त्रोंका आग्रह रखते हैं। इसलिए जब रेशम और खादीके बीच चुनावका प्रश्न है, तब कुदरती तौर पर जिन लोगोंके दिलमें करोड़ों भूखोंका भलाईकी धर्मी हुआ है वे सब खादीको पसन्द करेंगे। और चरखा संघका ध्येय ही यह चाहता है कि हमेशा सूती खादीको प्रथम स्थान दिया जाय। मैं सूती खादी इसलिए कहता हूँ कि जिन लोगोंने खादीकी यह व्याख्या की है कि वह रुई, रेशम

या अुनका बना हाथ-कता हाथ-बुना कपड़ा है और मनमें गड़बड़ न पैदा हो। यह व्यापक परिभाषा अिसलिअ आवश्यक भी और है कि अूनी और रेशमी हाथ-कते हाथ बुने वस्त्र अुसमें आ जायं और कि वे सूती खादीका स्थान लेनेके बजाय असका पूरक रूपमें अिस्तेमाल किये जायं। अुदाहरणके लिअ जाड़ेमें बहुत लोग अून या रेशमका गरम कपड़ा चाहते हैं।

किन्तु यह बतानेकी जरूरत नहीं है कि अिन पंक्तियोंमें मैंने जिस नीतिका समर्थन किया है अुसमें रेशम कातने और बुननेवालोंकी भलाअीका ध्यान नहीं रखा गया है। अैसा तो मैं विचार भी नहीं कर सकता क्योंकि मैं जानता हूं कि खादी मर गअी तो देशी रेशम अपने-आप मर जायगा। जापानी रेशम और पश्चिमकी नकली रेशम देशी कपड़ेको खतम कर देंगे। खादीकी भावनाने ही काश्मीरके अूनी कपड़ेको और बंगाल-आसामके रेशमको टिके रहनेमें समर्थ बनाया है। चरखा संघकी दूरदर्शी नीति ही सूती खादीको भारी बाधाओंसे बचाकर अून और रेशमके हाथ-कते भी कपड़ेकी अपने-आप रक्षा कर रही है। तीनोंको अेक दूसरेसे स्पर्धा कराकर आप तीनोंको खो देंगे। अंतमें याद रहे कि अगर सूती खादी जिन्दा रहती है परन्तु रेशम मर जाता है तो रेशमके मरनेसे जो लोग बेकार हो जायेंगे वे आसानीसे रुअीकी कताअी और बुनाअी अपना सकते हैं मगर रेशम रुअीका स्थान ले ले तो सूती खादीके मर जानेसे जो करोड़ों लोग रोजगार या अुसके अवसरसे वंचित हो जायेंगे अुन्हें रेशम रोजगार नहीं दे सकता। अिसलिअ मुझे दरिद्रनारायणके सभी प्रेमियोंका यह स्पष्ट कर्तव्य दिखाअी देता है कि जब अुनके सामने चुनाव करनेका प्रश्न आये तब वे हमेशा सूती खादीको तरजीह दें। बारीक सूती खादीको वर्तमान महंगे भावों पर खरीदना अुतने ही बारीक रेशमी कपड़ेको खरीदनेसे अंतमें सस्ता पड़ेगा।

हरिजन ७-११-३६

८०

कीमत सूतके रूपमें चुकाना

प्र० — अगर सूती खादी खरीदनेके लिअ कुछ कीमत सूतके रूपमें देना आवश्यक है तो यही बात ऊनी खादी पर भी क्यों नहीं लागू होनी चाहिये?

उ० — अिस सवालका अेक ही जवाब हो सकता है। ऊनी खादी खादी है अिसलिअ अुसको खरीदनेके लिअ भी सूतकी आवश्यक मात्रा देनेकी शर्त होनी चाहिये।

प्र० — चूँकि कताई रचनात्मक कार्यक्रमका अंग है अिसलिअे तमाम रचनात्मक कार्यकर्ता खादीके बदलेमें सूत देनेसे मुक्त क्यों नहीं होने चाहिये?

उ० — अिस प्रश्नमें कुछ विचार भ्रांति है। खादीकी कीमत अंशतः रुपयेके बजाय कुछ सूत द्वारा चुकानेका कारण खादीको अुसका अुचित स्थान देना और समय पाकर सूतको चालू सिक्का बनाना है। रचनात्मक कार्यकर्ता कताईसे मुक्त नहीं हैं। फिर कोअी मुक्त कैसे हो सकता है? कताअी सबके लिअ आवश्यक यज्ञ है।

हरिजन २८-४-४६

८१

सूत बैंक

सूत बैंककी मेरी कल्पनाका आधार दो विचारों पर है। पहला यह है कि सारा सूत चाहे वह कितना ही हो कैसा भी हो और कहींसे भी आय अेक जगह पर अिकट्ठा किया जाना चाहिये। फिर वहांसे वह जुलाहेके पास असी हालतमें भेजा जाना चाहिये कि वह अुसे अुसी गतिसे बुन सके जिससे वह मिलका सूत बुनता है। अिसके लिअे तमाम सूतका दुबटा करना होगा। जो सूत अिस क्रियासे न गुजरे अुसे वास्तवमें सूत नहीं मानना चाहिये। अिस प्रकार दो तरहके सूत होंगे अेक दुबटा किया हुआ और दूसरा अिकहरा। पहलेकी कीमत अूंची होगी। अलबत्ता अिन मंजिल तक पहुंचनेमें समय लगेगा। अिस बीचमें सूतको अलग करके अिकहरेको दुबटा करना होगा और सूतकेन्द्र पर या जहां भी अनुकूलता हो वहां अुसका कपड़ा बुनवा लेना पड़ेगा।

दूसरी बात याद रखनेकी यह है कि जिस तरह सोना और चांदी टकसालसे सिक्का बनकर निकलते हैं वैसे ही सूत बैंकसे सिर्फ खादी ही निकलनी चाहिये। जब तक असा नहीं होता तब तक हाथ कते सूतके दोष दूर नहीं होंगे और खादीके गुणमें आशातीत सुधार नहीं होगा। खादी-काम जबरदस्तीसे पूरा नहीं हो सकता। खादी-काम कताओंको अिस पवित्र अुद्देश्यके आसानीसे जल्दी और स्वेच्छापूर्वक पूरा होनेके लिअे स्वार्थरहित सच्चे और शास्त्रीय मानसवाले बनना होगा।

असी अुद्देश्यकी प्राप्ति करना चरखा संघका सच्चा ध्येय है।

हरिजन ७-७-४६

खादीके बारेमें सवाद

अेक खादी-कार्यकर्ता लिखते हैं

अेक खादी भंडारके व्यवस्थापक और ग्राहकोंके बीच हुओी हालकी अेक बातचीत नीचे देता हूँ। क्या अैसे लोगोंको खादी बेची जाय?

प्र० — क्या यह सूत आपका काता हुआ है?

अु० — नहीं, ये ८ गुंडियां मैंने १० रुपयेमें खरीदी हैं।

प्र० — दूसरे ग्राहकसे क्या यह सब सूत आप कातते हैं?

अु० — नहीं, यह मेरा लड़कीका काता हुआ है। हम १२ आने गुंडीके हिसाबसे सूत बेचते भी हैं।

प्र० — तीसरे ग्राहकसे आप तब तक खादी नहीं खरीद सकते जब तक आप आवश्यक मात्रामें सूत नहीं तैयार करते।

अु० — कोओी परवाह नहीं। जब तक मैं सूत नहीं जुटा सकता तब तक अप्रमाणित खादी खरीदूँगा।

प्र० — चौथे ग्राहकसे आप खादी क्यों खरीदते हैं?

अु० — क्योंकि अुसे प्राप्त करना आसान है।

प्र० — पांचवें ग्राहकसे आप खादीके नियमित पहननेवाले नहीं हैं। जो खादी आपने खरीदी है अुसका आप क्या करेंगे?

अु० — आजकल खादी फैशनकी चीज मानी जाती है।

प्र० — छठे ग्राहकसे आप स्वयं नहीं कातते तो फिर यह सूत कहांसे आता है?

अु० — मेरे अेक भले मित्र मुझे सदा सूत मुहैया करते रहते हैं।

प्र —सातवें ग्राहकसे आप हमेशा रेशमी या अूनी खादी क्या खरीदते हैं?

अु० —क्योंकि अिसके लिअे मुझे सूत नहीं देना पड़ता।

प्र —आठवेंसे आपने बड़ी मात्रामें खादी खरीदी है। अब सबका आप क्या करेंगे?

अु —वह मेरे लिअे दो तीन वर्ष तक चलेगी। अिसके बाद देखा जायगा कि मुझे और खादी मिल सकता है या नहीं।

ये प्रश्नोत्तर आंखें खोलनेवाले हैं। अगर खादी-संबंधी नअी नीति सही है और खादीके ग्राहक अिस प्रकारके हैं तो अिनसे कांग्रेस संविधानसे खादीकी धारा हटा देनेकी जरूरत साबित होती है। यह अुल्लेखनीय है कि ये प्रश्नोत्तर आठ व्यक्तियोंसे संबंध रखते हैं। चरखा संघको अिनमें से अेककी भी जरूरत पूरी करनेकी आवश्यकता नहीं। चरखा संघ केवल गरीबोंके लिअे है। जो खादी पहनते हैं वे या तो गरीबोंके लिअे या स्वराज्य प्राप्त करनेके लिअे या दोनोंके लिअे पहनते हैं। अुपरोक्त आठ ग्राहकोंको अिनमें से किसीकी भी चिन्ता नहीं है। यदि चरखा संघको खादी जिस आदर्शकी प्रतीक है अुसका औचित्य सिद्ध करना है तो अुसके कार्यकर्ताओंको नअी नीतिके प्रति वफादार बनना चाहिये और बिक्री भण्डारोंके बन्द हो जानेसे भी भयभीत नहीं होना चाहिये। अन्हें भूतकालकी भूलोंको ठीक करनेके लिअे काफी भी परिणाम भुगतनेको तैयार रहना होगा।

अूपरकी बातचीतमें भंडारोंके व्यवस्थापकोंके लिअे भी सावधान रहनेकी चेतावनी है। अुन्हें खादीशास्त्रमें निष्णात बनना चाहिये और धीरज तथा नम्रताके साथ ग्राहकोंको खादीका भीतरी अर्थ सिखानेके लिअे तैयार होना चाहिये। अिसमें समय लग सकता है मगर यह करने लायक काम है। अगर खादीकी शक्तिमें हमारी श्रद्धा हो तो मुख्य काओ शंका नहीं कि हम अकेले रहेंगे और अिससे दूसरोंमें भी

अिस श्रद्धाकी प्रेरणा दे सकेंगे। परंतु यदि स्वयं कार्यकर्ताओंमें श्रद्धा नहीं होगी तो खादीका दावा गिर जायगा।

मैंने यह मान लिया है कि बातचीत सही सही बयान की गअी है।

हरिजन ९–६–'४६

८३

स्वराज्यकी अवमानना

'मैं १२×२० फुटके कमरेमें बम्बअीमें रहनेवाला अेक मध्यम वर्गका आदमी हूं। मेरे स्त्री और अेक बच्चा है। मेरी रसोअी मेरे रहनेके कमरेमें ही होती है। मैंने खादी पहननेका व्रत लिया है और अब तक अुस पर कायम हूं। जबसे यह निश्चय हुआ है कि खादी सूतकी अेक निश्चित मात्रा देने पर ही खरीदी जा सकती है, तबसे मेरे जैसे आदमीके लिअे जो बम्बअीका मशीन-जैसा जीवन व्यतीत कर रहा है, कातनेके लिअे आवश्यक समय निकालना बहुत कठिन हो गया है। फिर भी मैं अपने व्रतके प्रति सच्चा रहनेके लिअे डेढ़ घंटा रोज कातता रहा हूं। अभी अुस दिन मेरे पास पूनियां नहीं रह गअी थीं। अिसलिअे मैं कुछ पूनियां खरीदने खादी भंडार गया। मुझे व्यवस्थापकने कहा कि या तो आप यहां आअिये और पूनियां बनाकर ले जाअिये अथवा वहां धुनाअी करके घर पर पूनियां बना लीजिये। अब मेरे घरमें जगहकी जैसी तंगी है अुसमें न तो घर पर पूनियां बनाना संभव है और न मेरे जैसे मनुष्यके पास भंडार जाकर पूनियां बनाने जितना वक्त है। मैंने कहा, या तो मुझे पूनियां दीजिये, नहीं तो मुझे कताअी छोड़ देनी पड़ेगी। मुझे कहा गया कि आप जो

ठीक समझें कीजिये। मैं अच्छी तरह समझता हू कि मनुष्यको आत्म निभर होना चाहिये और अपनी पूनिया आप बना लेनी चाहिये। परन्तु मुझ लगता है कि बम्बअीमें मेरी जसी स्थिति है असमें मेरे लिअ यह असभव है। हजारोंकी वही हालत है जो मेरी है। मुझ क्या करना चाहिये?

पूनियाकी बिक्री बन्द करके खादी भडारने गरीबोंके साथ बडी कठोरता की है। वे पूनिया बनाकर अुतनी ही आमदनी कर सकते थे जितनी कताअी करके।

अूपरके पत्रका जवाब देना जरूरी है। लेखक कहते हैं कि अुन्हें डेढ घटा रोज कातनेका समय मिल जाता है। जो आदमी अितना प्रतिदिन कातता है वह अपनी खादीकी जरूरतसे ज्यादा सूत जमा कर सकता है। अुनके लिअ भडारसे पूनिया खरीदनेकी अिच्छा करना भूल थी। व्यवस्थापकने अन्हें ठीक अत्तर दिया। जहा कातनेके लिअ जगह है वहा धुनाअी (धनाअीका नया तरीका) या (धुनाअीसे भी सादी) पुनाअीके लिअ भी स्थान है। यदि चरखके लिअ जगह नही है तो तकली है। धनष तकली भी चरखसे कम जगह लेती है। अेक व्यक्तिके रास्तेमें जो कठिनाअिया आती हैं वे सबके रास्तेमें भी आती हैं। स्वराज्यका माग यह है कि अुनसे दबनेके बजाय अुन पर विजय प्राप्त की जाय। आवश्यकता आविष्कारोंकी जननी है।

और फिर खादी भडारोंकी तरफसे दी जानेवाली धनन पूनिया बनाने और कातनेकी सुविधाओंसे लाभ क्यों नही अुठाना चाहिये? पूनिया बनानेके नये तरीकेके लिअ बहुत जगह नही चाहिये और वह कठिन भी नही है।

हरिजन १९–५–४६

खादी-भंडारोंके बारेमें

अिस शीर्षकसे अेक लेख २ जूनकी 'खादी-पत्रिका' में निकला है। चूंकि यह महत्त्वपूर्ण है अिसलिअे अुसे पूराका पूरा यहां दिया जाता है:

हमारा अिरादा हमारे भंडारोंके संचालनमें जल्दी परिवर्तन करनेका है। खादीकी बिक्रीके साथ लगा हुआ सूत देनेकी शर्तके होते हुअे भी बम्बअीके लोगोंने अभी तक कताअीको नहीं अपनाया है। कपड़ेके बदलेमें दिया जानेवाला अधिकांश सूत खरीदा जाता है। पहली जुलाअीसे हम अेक गुंडीके बदलेमें केवल दो रुपयेकी खादी देंगे। नतीजा यह होगा कि खादीकी बिक्री घट जायगी। खादीकी बिक्रीका अेक मुख्य कारण यह है कि मिलके कपड़े पर कण्ट्रोल है। बहुतसे लोग जो आम तौर पर मिलका कपड़ा पहनते हैं अेक तरहसे विवश होकर खादी खरीदते हैं। हम प्रत्येक ग्राहकसे पूछ लेते हैं कि दिया हुआ सूत अुसका अपना या घरवालोंका या घरके नौकरका काता हुआ है। परन्तु हमें दुःखके साथ स्वीकार करना पड़ता है कि अनेक ग्राहक सही बयान देनेके मामलेमें अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते। यह गैर जिम्मेदारीका रवैया खादीके हितमें नहीं है। खादी-अुत्पत्तिका लक्ष्य ग्रामीण भारतका स्वावलम्बन है। अिसलिअे अब अन्य प्रान्त भिन्न भिन्न हमारे भंडारोंको कम खादी देंगे। असलमें खादीकी बिक्री अिस नअे प्रयोगका हमारे आदर्शके साथ मेल ही नहीं बैठता। अिन हालतोंमें हमारे लिअे यह अत्यावश्यक है कि भंडारोंके संचालनमें समय रहते परिवर्तन कर लें। पहली जुलाअीसे हम माटुंगा और दादरकी दो शाखाअें बन्द कर रहे हैं। पिछले तीन महीनेसे माटुंगामें हम खादीकी सब प्रक्रियाओंका प्रशिक्षण दे रहे हैं। दादरमें खादीकी कुछ बिक्री भी होती थी परन्तु ये काम अब बन्द हो जाने चाहिये। गिरगांवके खादी-छात्रालयके कारखानेमें चरखा

साथ अेक प्रशिक्षण-केन्द्र भी चला रहा था। यह केन्द्र भी अब खादी-छात्रालय कारखानेके संरक्षकोंको लौटा दिया जायगा और वे खादीकी सब प्रक्रियाओंका प्रशिक्षण भी देते रहेंगे और कुछ बिक्रीकी भी व्यवस्था करेंगे।

कामको घटानेका नतीजा यह होगा कि पंद्रह कार्यकर्ताओंकी नौकरी छूट जायगी।

जबसे नअी नीति प्रचलित हुअी है गांधीजी कहते रहे हैं कि भंडारोंकी रचना बदलनी चाहिये। अिस नीतिका अनुसरण करनेके लिअे कुछ स्थानों पर हमने धन्धों और कलाओंकी सुविधाओंकी व्यवस्था की परन्तु अिन बाह्य परिवर्तनोंसे वास्तविक परिवर्तन प्रगट नहीं हुआ। हमने महसूस किया कि सबसे ज्यादा जरूरत हमारी दिमागी तब्दीलीकी है। अिससे कार्यकर्ताओंकी परीक्षा और अैसे ही दूसरे सुधार अमलमें आये।

परन्तु अुपरोक्त सारे परिवर्तनोंसे भी हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हो पाया। जब ग्राहक लोग खादीको दूकानकी चीज समझते थे तब भंडार मामूली व्यापारकी दुकानें थे। अब भंडार खादी पहननेवालोंके मानसमें परिवर्तन लाना चाहता है। वह खादी निर्माणकी सब प्रक्रियाओंकी जानकारी देनेवाला केन्द्र बन जाना चाहता है। अिसके लिअे हमें आवश्यक परिवर्तन करने और साथ-साथ बम्बअीके खादी पहननेवालोंके दृष्टिकोणको बदलनेके लिअे अथक भावसे प्रयत्न जारी रखने होंगे। तभी भंडारोंका सच्चा रूप-परिवर्तन होगा। हम बम्बअीके ग्राहकोंसे आशा रखते हैं कि वे हमारी कोशिशमें वफादारीसे हमारा साथ देंगे।

पाठक देखेंगे कि अिस लेखमें जो हेतु प्रगट किया गया है अुसकी सफलता कार्यकर्ताओंकी श्रद्धा बुद्धि और शक्ति पर निर्भर करती है।

हरिजन १४-७-४६

नअी योजनामें खादीके बिक्री भंडार अुठ जायंगे, जिसका अर्थ यह है कि अुन्हें खादीकी सब प्रक्रियायें सिखानेकी पाठशालाओंमें बदल देना चाहिये। अिसलिअे रुआी, चरखे, तकुअे और कताअी, बुनाअी तथा धुनाअीका सारा सरंजाम वहां अवश्य उपलब्ध होना चाहिये। सबसे बड़ी बात यह है कि खादी-कार्यकर्ताको हर वक्त नम्र और सहायक होना चाहिये। यह ऐसा नहीं होगा तो खादीका अन्त हो जायगा। और यदि स्वयं खादी-कार्यकर्ता खादीकी मृत्युके कारण बनेंगे तो यह अेक दुःखकी बात होगी।

जो खादी पहननेवाले नियमित कातते हैं और अपना काता हुआ सूत बुननेके लिअे देते हैं, अुन्हें हक होना चाहिये कि वे नकद पैसा देकर अुतनी खादी खरीद लें, जितनी चरखा संघके नियमानुसार वे अपने अुपरोक्त सूतके कारण खरीद सकते हैं।

हरिजन, १८-८-४६

खादी भंडारोंके बारेमें मुझे कअी शिकायती पत्र मिले हैं। अुनका सार नीचे दिया जाता है:

१. भंडारोंमें खादी अुन्हींको मिलती है, जो संचालकोंके मित्र या जिनका प्रभाव है।

२. भंडारोंमें खादी भरी हो तो भी साधारण ग्राहकको बहुधा यही अुत्तर मिलता है कि खादी नहीं है।

३. कुछ भंडारोंमें सूतकी खादी बुनवानेकी सुविधा नहीं होती, तो कुछमें चरखे और अुनका सरंजाम नहीं मिलता।

४. अैसी हालतमें कअी भंडारोंके खादी-कार्यकर्ता कोअी काम न करने पर भी राजी पाते हैं। कअी बार सूत यह कहकर अस्वीकार कर दिया जाता है कि वह बहुत मोटा है।

यह कहकर कि ये सब शिकायतें झूठी हैं, सन्तोष मान लेना ठीक नहीं होगा। पत्रमें बताया गया आचरण बुद्धिहीन, हृदयहीन और निष्ठाहीन है। किसी भी भंडारमें, खास कर खादी भंडारोंमें ये कोअी त्रुटियां नहीं रहनी चाहिये। खादी-सेवकोंका व्यवहार जैसा बताया

गया है वसा हो तो खादीका आदर कम होगा ? आशा है कि प्रत्यक खादी भडार सबाका नमूना बन जायगा और जिस तरह न कवल स्वय अूचा अ॑गा बल्कि खादीके साथ जो सम्मानका भाव जुडा हुआ है अुसकी भी रक्षा करगा।

हरिजन २९–९–४६

१ प्रत्यक बिक्री भडारमें जिस बातका अितजाम होना चाहिय कि या तो कातनवालका चरखा अुसम कोआ दोष आ गया हो तो सुधार दिया जाय या असके बदलमें अक नया चरखा दिया जाय। दाम कमस कम लिय जाय। साथ ही हरअक कातनवालको अितना ज्ञान करा दना चाहिय कि वह अपन चरखको ठीक कर सके।

२ भडारोको अपन रजिस्टरमें हर खरीदारका नाम और पता दज कर लेना चाहिय।

३ बिकनवाल प्रत्यक चरखके साथ सूचनाओका अक छपा हुआ पर्चा हो कि त्रुटिया कसे और कहा दुरुस्त कराओ जाय।

४ बिकनवाल चरखमें कोआी दोष हो तो कीमत कम कर दी जाय। असी मरम्मत मुफ्त की जाय। अक्सर असा खराब चरखा भडारमें लाया जाय तो अुसके बदलमें नया चरखा द दना बुद्धिमानीका काम होगा।

५ तुनाओ सिखाओ जाय। बनी बनाओ पूनियोकी बिक्री बन्द कर दनी चाहिय। अिसके बजाय कपास बची जाय।

६ जब तक हर घरमें चरखा न चलन लग तब तक भडारोको आया हुआ सूत बनवा दनका अिन्तजाम करना चाहिय।

अिन सब बातोका सार यह है कि खादी भण्डारोको बिक्री भडार नही रहना चाहिय अिसके बजाय अुन्हें खादीके शास्त्र सबको द्वारा चलाय जानवाल कारखान बन जाना चाहिय।

कनु गाधी

श्री मनु गांधीकी सूचनायें अध्ययन करने लायक हैं। हम अेक स्थानमें सामूहिक अुत्पत्ति द्वारा चरखेको सार्वत्रिक नहीं बनाना चाहते। हमारा आदर्श यह है कि जहां कातनेवाले रहते हों अुस स्थानमें चरखा और अुसका तमाम सरंजाम बनाया जाय। जिसीमें चरखेका महत्त्व है। अुसमें कुछ भी खराबी हो जाय तो वह वहाकी वहीं दुरुस्त होनी चाहिये और कातनेवालोंको सिखाना चाहिये कि दुरुस्ती कैसे की जाती है। अुन्हें सिखाना सबका कर्तव्य है। जब तक अैसा न होगा खादी मिलके कपड़ेकी जगह नहीं ले सकेगी।

हरिजन २०-१०-४६

८५
अब भी कातें!

अेक भाओ लिखते हैं :

> मैं और मेरे परिवारके लोग नियमित कातने और खादी पहननेवाले हैं। अब आजादी मिल जानेके बाद भी क्या आप अिस बात पर जोर देते हैं कि हम कातना और खादी पहनना जारी रखें?

यह अेक अजीब सवाल है। पर बहुत लोगोंकी यही हालत है। स्पष्ट है कि अैसे व्यक्तियोंने चरखे और खादीको केवल यांत्रिक रूपमें और स्वतंत्रता प्राप्तिके अेक साधनके तौर पर अपनाया था। ये भाओ भूल जाते हैं कि स्वतंत्रता केवल विदेशी जुअेका हट जाना ही नहीं है, यद्यपि यह सही है कि वह पहली आवश्यक चीज थी। खादी अहिंसाके आधार पर खड़ी अेक जीवन-पद्धतिको प्रगट करती थी और करती है। सही हो या गलत, मेरी यह राय है कि खादी और अहिंसाके करीब करीब पर्याय हो जानेसे यह साबित होता है कि अिन तमाम वर्षोंमें हमने खादीके मुख्य गुणोंको अच्छी तरह नहीं समझा

था। अिसीलिअ अभी दिशाओंमें हम भाअी भाअीकी लड़ाअी और अराजकताका दुखद दृश्य देख रहे हैं। मुझे कोअी शंका नहीं कि कातना और खादीका बुनना पहलेसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है यदि हमें असी आजादी लेनी है जिसे भारतकी ग्रामीण जनता अंतःस्फूर्तिसे महसूस करे। यही अिस धरती पर अीश्वरका राज्य या रामराज्य कहा जायगा। खादीके द्वारा हम मनुष्य पर शक्ति द्वारा संचालित यंत्रोंका आधिपत्य स्थापित करनेके बजाय यंत्रों पर मानवकी प्रभुता स्थापित करनेकी कोशिश कर रहे हैं। खादीके द्वारा हम श्रम पर पूंजीकी घृष्ट विजयके स्थान पर पूंजीको श्रमके अधीन बनानेका प्रयत्न कर रहे हैं। अिसलिअ यदि भारतमें पिछले तीस सालमें की गअी कोशिश प्रतिगामी कदम नहीं था तो हाथ-कताअी और अुसके साथ लगी हुअी सब बातोंको पहलेसे कहीं ज्यादा आग्रह और ज्यादा बुद्धिके साथ आगे बढ़ाना चाहिये।

हरिजन २१-१२-४७

८६

कांग्रेस कैसे मदद दे सकती है

आम कांग्रेसी अपने पड़ोसियोंमें खादीका संदेश फैलानेके लिअे रस्मके तौर पर नहीं परन्तु आदतन् खुद खादी पहनें, खुद कातें और जब कभी कहा जाय खादी-कार्यकर्ताओंको सहायता दें।

हरिजन १०-१२-३८

प्रत्येक कांग्रेस-कार्यालयको देहातोंके संगठनके लिअे कताओी-बुनाओीकी अेक आदर्श प्रयोगशाला और शिक्षण संस्था बन जाना चाहिये। और जैसा मैंने सुझाया है खादी वह केन्द्र बिन्दु है जिसके चारों तरफ दूसरे ग्राम-अुद्योगोंको घूमना और संगठित होना चाहिये। तब कांग्रेसजनोंको पता चलेगा कि अिस प्रकारकी सेवामें कितनी जबरदस्त संभावनाअें हैं। देहातके शीघ्र और सफल संगठनके मार्गमें मुख्यतः मानसिक आलस्य ही बाधक है। मेरा कहना है कि अगर भारतको अहिंसात्मक ढंग पर विकास करना है तो अुसे अनेक वस्तुओंको विकेन्द्रित करना होगा। केन्द्रीकरणको काफी बलके बिना न कायम रखा जा सकता है और न अुसकी रक्षा की जा सकती है। सादे घरोंकी जहां चोरी जानेको कुछ होता ही नहीं, पुलिसकी जरूरत नहीं होती; अमीरोंके महलोंको डकैतीसे बचानेके लिअे मजबूत पहरे रखने पड़ते हैं। यही बात बड़े बड़े कारखानोंकी है। ग्रामीण ढंगसे संगठित भारतको जल, थल और हवाओी सेनासे सुसज्जित शहरी ढंगके भारतकी अपेक्षा विदेशी हमलेका कम खतरा होगा।

अब अगर यह मान लिया जाय कि कांग्रेसजनोंने चरखेके अर्थ और गूढ़ार्थ समझ लिये हैं, तो वे अेक क्षणका भी विलम्ब किये बिना अपने आपको अिस सेवाके योग्य बनानेके काममें लग जायेंगे। यह

भी मान लिया जाय कि व नौसिखुअ ह। तो व कुछ कपास — जो अुनके गाव ताञ्के या जिलमें पैदा हुआी हो — जटा लेंग। अुन्हें जिस हाथस या अधिकसे अधिक सलाअीकी मददसे पटरी पर ओट लना चाहिय। व बिनौल रख लें और जब काफी हो जाय तो बच द अथवा अुनके अपन मवशी हा तो अुनक लिअ काममें ल लें। व हाथकी धनकीसे रुअी धुन जिसमें लगभग कुछ भी खच नही होता। व स्वय अुसे बना सकत ह। अिस धुनी हुअी रुअीकी पूनिया बना लनी चाहिय। अिनको तकली पर काता जाय। अिन प्रक्रियाओ पर खासा काबू पानके बाद व अधिक तज प्रक्रियाओंको हाथमें ल सकत ह। खादीका अुपयोग करनके विषयमें भी व स्वय अपना और अपन घरवालोका व्यवहार ठीक कर लें। व अपनी दनिक प्रगतिका सही सही हिसाब रखें और सूतका गणित सीख लें।

कांग्रस कमटिया चरखा सघकी स्थानीय शाखाकी मददसे अपन कार्यालयोकी पुनव्यवस्था करके अुन्हें कताअी-बुनाअीके केन्द्र बना लें। म काग्रसजनोको चतावनी दता हू कि व अपना सूत बुननके लिअ दूर दूरके केन्द्रोंमें भजनकी घातक भूल न करें। खादीके अथशास्त्रका तकाजा है कि कपासकी खतीसे लगाकर खादी तयार करन और असे बचन तककी सारी प्रक्रियाअें जहा तक हा सके असी गाव या केन्द्रमें की जानी चाहिय। मसलन पजाबमें सूत कातकर बम्बअीमें असे बुनवाना और अिस प्रकार तयार की गअी खादीको मलाबारमें बचना अनुचित है। अगर कांग्रसजन और कांग्रस कमटिया खादीकाय आरम्भ करत समय अिस साद नियम पर ध्यान देंगी तो अुन्हें कायकी कठिनाअीसे घबरानकी जरूरत नही होगी। अगर अुन्हें स्वय अपन जिलमें सफलता मिल गअी तो कोअी कारण नही कि दूसर २४९ जिल सफल तापूवक सगठित क्या नही किय जा सकत। यदि दहातका अिकाअी माना जाय तो भी यह तक लागू होता है। यह स्वीकार करना पडगा कि अभी तक अिस ढगसे सगठित किया हुआ अक भी गाव हमार पास नहीं है। अवश्य ही सेवाग्राम असा गाव नही है यद्यपि यह माना जाता है कि म वहा रहता हू। किन्तु मरी असफलतास अस

किसी कार्यकर्ताको निराश नहीं होना चाहिये, जो अपने सुन्दर गांवके संगठनको अपना अेकमात्र कार्य बना ले।

हरिजन, ३०-१२-३९

८७

खादी और ग्राम-अुद्योग

कअी लोगोंने हालमें मुझसे शिकायत की है कि वे असे आदमियोंको जानते हैं जो खादी तो काममें लेते हैं, मगर और कोअी ग्रामीण वस्तुअें अिस्तेमाल नहीं करते। अुनका कहना यह है कि अनेक कांग्रेसजन खादी अिसलिअे पहनते हैं कि विधानके अनुसार यह जरूरी है। परन्तु अुसमें विश्वास न होनेके कारण जहां तक अुपयोगकी दूसरी वस्तुओंका सम्बन्ध है वे कभी अपनी सुविधाके सिवा और किसी बातका विचार नहीं करते। अिसे मैं शब्दका पालन और भावनाकी हत्या कहता हूं। और जहां भावनाकी हत्या होती है वहां शब्दका अुतना ही अुपयोग है जितना अुस शरीरका जिसमें से प्राण निकल गये हैं। मैंने अक्सर कहा है कि खादी केन्द्रीय सूर्य है और दूसरे ग्राम-अुद्योग ग्रहोंकी तरह अुसके चारों ओर घूमते हैं। अुनका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। अिसी तरह खादी भी दूसरे अुद्योगोंके बिना नहीं जी सकती। वे पूरी तरह परस्परावलम्बी हैं। सच तो यह है कि हमें गांववाला भारत या शहरोंवाला भारत — अिन दोमें से अेकका चुनाव कर लेना है। गांव तबसे हैं जबसे भारत देश है। शहरोंको विदेशी आधिपत्यने पैदा किया है। आज तो शहरोंका बोलबाला है और वे गांवोंको अिस तरह चूस रहे हैं कि गांव जर्जर होकर नष्ट होते जा रहे हैं। मेरी खादी-मनोवृत्ति मुझे बताती है कि जब यह आधिपत्य नहीं रहेगा तब शहरोंको गांवोंकी मातहती करनी होगी। गांवोंका शोषण स्वयं अेक संगठित हिंसा है। अगर हम चाहते हैं कि

स्वराज्यका निर्माण अहिंसाके आधार पर हो तो हमें गांवोंको अनका अुचित स्थान देना पड़ेगा। यह हम कभी नहीं कर सकेंगे यदि हम देशी या विदेशी शहरी कारखानोंमें तयार हुअी चीजोंके बजाय ग्राम-अुद्योगकी वस्तुओंका अुपयोग करके ग्राम अुद्योगोंका पुनरुद्धार नहीं करेंगे। शायद अब यह स्पष्ट हो गया होगा कि मैं खादी और अहिंसाका अर्थ क्या बताता हूं। खादी मुख्य ग्राम-अुद्योग है। खादीको मार दीजिये तो देहात और अुनके साथ अहिंसा अपने आप मर जायगी। अिसे मैं आंकड़ोंसे साबित नहीं कर सकता। अिसका प्रमाण हमारी आंखोंके सामने है।

हरिजन २०–१–'४

खादी ग्राम सौर मण्डलका सूर्य है। ग्रह व विभिन्न अुद्योग हैं जो खादीसे मिलनेवाली गरमी और पोषणके बदलमें खादीको सहारा दे सकते हैं। अुसके बिना दूसरे अुद्योगोंका विकास नहीं हो सकता। परन्तु मेरे पिछले दौरेमें मुझे पता लगा कि दूसरे अुद्योगोंके पुनरुद्धारके बिना खादी आगे प्रगति नहीं कर सकती। देहात अपने अवकाशके समयका सदुपयोग कर सकें अिसके लिअे ग्राम-जीवनको हर जगह पर स्पर्श करना होगा।

हरिजन १६–११–३४

८८

कताओ-मताधिकार

रामचन्द्रन्‌ने कताओ-मताधिकारकी चर्चा की। अुनकी समझमें नहीं आता था कि कांग्रेस अपने सदस्योंको कातनेके लिअे कैसे मजबूर कर सकती है। हमारा तरीका समझानेका ही होना चाहिये, जबरदस्ती करनेका नहीं।

गांधीजीने अिस तर्कका आनन्द लेते हुअे अुत्तर दिया: "अच्छा, तो मैं आपसे पूछता हूं, क्या कांग्रेसको यह कहनेका कोअी हक है कि अुसके सदस्य शराब नहीं पियेंगे? क्या यह भी व्यक्तिकी स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध होगा? अगर कांग्रेस शराब न पीनेका आदेश देनेका अपना हक काममें लेती है तो कोअी आपत्ति नहीं होगी। क्यों? अिसलिअे कि मद्यपानकी बुराअियां प्रगट हैं। तो मैं कहता हूं कि अिस समय भारतमें जब करोड़ों लोग भूखके द्वार पर खड़े हैं और घोर दुःखमें डूबे हुअे हैं, "तब" विदेशी कपड़ा बाहरसे मंगाना मद्यपानसे कहीं ज्यादा बड़ी बुराअी है। अुड़ीसाके करोड़ों भूखोंका विचार कीजिये। जब मैं वहां गया था तब मैंने अकाल-पीड़ितोंको देखा था। अेक दयालु व्यवस्थापककी कृपासे जो अेक अनाथालय चला रहे थे, मैंने अुनके बच्चोंको भी देखा। वे डलिया, टोकरियां आदि बना रहे थे और तेजस्वी, तन्दुरुस्त तथा प्रसन्न दिखाअी देते थे। वहां कताअी नहीं थी, क्योंकि अुस समय अिन दूसरी चीजोंका रिवाज बहुत था। परन्तु अुनके चेहरों पर हर्षपूर्ण कार्यकी चमक थी। किन्तु जब मैं अकाल-पीड़ितोंके पास पहुंचा तब मैंने क्या देखा? वे केवल अस्थि-पंजर रह गये थे और मौतका अिन्तजार कर रहे थे। वे अुस समय अैसी हालतमें अिसलिअे थे कि वे किसी भी अवस्थामें काम करना नहीं चाहते थे। अुनके काम करनेसे अिनकार करने पर आप अुन्हें गोलीसे मार देनेकी धमकी देते तो भी मुझे विश्वास है कि कोअी प्रामाणिक कार्य करनेके बजाय वे गोलीसे मरना ज्यादा पसन्द करते। कामके प्रति यह अरुचि खुद

गरीबीसे भी ज्यादा बड़ी बुराई है। आप किसी गरीबीसे कुछ काम ले सकते हैं। शराबीमें कुछ दिल बाकी होता है। असमें वृद्धि होती है। लेकिन काम करनेसे जिनकार करनेवाले ये भूखे लोग निरे जानवर-से बन गये थे। अब जिनके जैसे लोगोंसे काम करानेकी समस्या हम कैसे हल कर सकते हैं? मुझे कताओको सार्वत्रिक बनानेके अतिरिक्त कोओ रास्ता दिखाओ नहीं देता। भारतमें लाया हुआ अेक अेक गज विदेशी कपड़ा भूखा मरते गरीबोंके मुंहसे छीना हुआ रोटीका टुकड़ा है। अगर मेरी तरह आप भी समयकी सर्वोपरि आवश्यकताको यानी भारतके करोड़ों भूखोंको हमेशा और प्रसन्नतासे अपनी रोजी कमानेका मौका देनेकी आवश्यकताको पहचान लें तो आपको कताओ मताधिकार पर अेतराज न होगा। मैं कांग्रेसको असे स्त्री-पुरुषोंकी जमात मानता हूं जो कताओकी परम आवश्यकताको स्वीकार करते हैं। तो असे अपनी सदस्यताकी प्रामाणिकताको पक्का करनेके लिअे प्रत्येक सदस्यके लिअे कातना अनिवार्य क्यों नहीं कर देना चाहिये? और आप समझाने बुझानेकी बात करते हैं! असिसे अच्छा समझाना-बुझाना क्या हो सकता है कि कांग्रेसका प्रत्येक सदस्य हर महीने अेक निश्चित मात्रामें सूत नियमित रूपमें कातता हो? कांग्रेसके सदस्योंके लिअे यह बात ओमानदारीकी कैसे होगी कि वे लोगोंसे तो कातनेको कहें और खुद न कातें?

रामचन्द्रन्ने बड़ी गंभीरतासे अुत्तर दिया: परन्तु जो लोग कातते नहीं अुन्हें आप कांग्रेससे बाहर कैसे रख सकते हैं? संभव है वे दूसरी तरहसे देशकी मूल्यवान सेवा कर रहे हों।

गांधीजीने पूछा: क्यों नहीं? सम्पत्ति-मताधिकारका क्या कारण है? किसी मनुष्यको सदस्य बननेके लिअे चार आने देना क्यों जरूरी है? और अुम्रको अेक आवश्यक योग्यता क्यों माना जाता है? क्या अिदगार्ड आठ वर्षके वायोलिन विशारदको मताधिकार होगा? जॉन स्टुअर्ट मिल सात वर्षकी आयुमें ग्रीक और लैटिन भाषाओंमें कितना ही प्रवीण रहा हो परन्तु अुस आयुमें असे मताधिकार नहीं था। अिन असाधारण प्रतिभाशालियोंको अुससे वंचित क्यों रखा गया?

बात यह है कि किसी भी मताधिकार प्रणालीमें कुछ मनुष्योंको तो वंचित रहना ही पड़ेगा।

यंग अिंडिया, २०-११-२४

८९

खादी खरीदनेके लिअे सूतकी शर्त

प्र० — आपने कांग्रेससे तय किया कि अमुक मनुष्य खादीको अपनायें और फिर आपने ही चरखा संघकी खादीके लिअे निश्चित मात्रामें सूत देनेका नियम जारी किया। कांग्रेसजनोंको चरखा संघ द्वारा प्रमाणित खादीके सिवा और कोअी खादी अिस्तेमाल करनेकी मनाही है और अब सूतकी निश्चित मात्रा दिये बिना संघसे खादी नहीं मिल सकती। क्या यह जबरदस्ती नहीं है?

अु० — यह सच है कि कांग्रेसने खादीको अपनाया, चरखा संघने सूत देनेकी शर्त लगाअी और जो खादी चरखा संघ द्वारा प्रमाणित न हो वह कांग्रेसजनोंके लिअे निषिद्ध है। खादीके मूल्यके अंशके रूपमें सूतकी अेक निश्चित मात्रा देनी पड़ती है। यह सब सच है। परन्तु मुझे अिसमें कोअी दोष नहीं दिखाअी देता।

जबरदस्ती अुसी कार्रवाअीको कहा जा सकता है जिसमें किसी विशेष बातके न करनेकी कोअी सजा हो। सजाकी रूप कुछ भी हो, यह अलग बात है। अगर मैं खादीकी कीमत मांगूं और सूत न दूं तो यह जबरदस्ती नहीं है। अिसी तरह किसी संस्थामें सदस्यताके लिअे कोअी न कोअी शर्त तो रखी ही होती है। यह भी जबरदस्ती नहीं कि अुन शर्तोंमें आगे चलकर कोअी परिवर्तन कर लिया जाय। अप्रमाणित खादीका मामला भी वैसा ही है। अगर हम अप्रमाणित खादी लेने लगें तो अुसकी शुद्धताकी क्या गारंटी और अिसकी क्या गारंटी कि कातनेवालोंको अुचित मजदूरी दी गअी है या नहीं?

समय और अनुभवके साथ साथ नियमों और अपनियमोंमें फरबदल करने पड़ते हैं। विचारणीय प्रश्न यही है कि परिवर्तनसे उद्देश्यकी पूर्ति होती है या नहीं वह सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तके अनुसार है या नहीं और वह स्वार्थपूर्ण हेतुसे प्रेरित है या परोपकार-बुद्धिसे। अिन सब सवालोंके जवाबसे जाहिर हो जायगा कि यह परिवर्तन मूल उद्देश्यकी पूर्तिके लिअ ही था और जबरदस्तीका सवाल ही नहीं उठता। अगर मैं अपने मान्य कथनमें भूल या और कोअी प्रमाद मानता हूँ तो मुझे धन्यवाद मिलना चाहिये।

हम थोड़ा गहरा विचार करें। हम मानते हैं कि खादी अुन्हींके लिअ है जिनका विश्वास है कि अहिंसक स्वराज्य खादीको सार्वत्रिक बनानेसे स्थापित हो सकता है। लोगोंकी बड़ी संख्या थोड़े समयके लिअ भी कातने लगे तो अससे स्वराज्य लेनेमें मदद मिलेगी। अिसलिअे हम मजदूरीसे न कातकर स्वयं अपनी अिच्छासे कातते हैं। अेक और लाभ यह है कि कताअीके द्वारा हम सीधे गरीबोंके संपर्कमें आते हैं।

अिसलिअे मेरी नजरमें यह सर्वथा स्पष्ट है कि सूतके रूपमें खादीके मूल्यका अेक हिस्सा मांगनेमें कोअी जबरदस्ती नहीं है।

दि आॅल-अिंडिया लीग आफ दि चरखा सितंबर १९४५ पृ० ८३-८५

९०

प्रश्नोत्तर

प्र० — चुनावके लिअे खड़े होनेवाले सब अुम्मीदवारोंके लिअे कांग्रेस संविधानने जिसे लाजिमी बनाया है कि वे आदतन् हाथ-कती हाथ-बुनी खादीके पहननेवाले हों। क्या अिसका यह अर्थ नहीं है कि वे वही खादी अिस्तेमाल कर सकते हैं जो चरखा संघ द्वारा प्रमाणित हो?

अ० — मेरी रायमें अिसका और कोअी अर्थ हो ही नहीं सकता।

प्र० — क्या अप्रमाणित खादीका व्यापारी किसी कांग्रेस कमेटीका पदाधिकारी हो सकता है?

अु० — मेरी समझमें नहीं आता कि अप्रमाणित खादीका व्यापारी कांग्रेसजन भी कैसे हो सकता है, किसी कांग्रेस कमेटीमें पदाधिकारी होनेका अुम्मीदवार बननेकी बात तो छोड़ ही दीजिये।

प्र० — आप कहते हैं कि अप्रमाणित खादीका व्यापारी पदाधिकारी तो क्या कांग्रेसजन भी नहीं हो सकता। परन्तु अुन लोगोंके लिअे आप क्या कहेंगे जो कांग्रेसके पदाधिकारी हैं और मिलका तथा विदेशी कपड़ा तक बेचते हैं?

अ० — दूसरे प्रश्नका मेरा अुत्तर तीसरे प्रश्नमें बताये गये व्यक्तियोंके लिअे भी अुतना ही सही है। अिन्हीं कारणोंसे मैंने संबंधित धाराओं कांग्रेस संविधानमें से निकाल देनेकी सिफारिश की है। अनुभवने हमें सिखाया है कि हम अिन नियमों पर चलनेमें असमर्थ हैं।

हरिजन १९-५-४६

९१

कांग्रेस और कताओी

अक कांग्रेसजन लिखते हैं

आप शायद अिससे सहमत होंगे कि बहुत प्रचारके बावजूद भी कताओी-बुनाओीको जनताने अस हद तक नहीं अपनाया है जहां तक अपनाना चाहिये था। मेरा खयाल है कि अगर प्रत्येक कांग्रेस कमेटी — कमसे कम बड़े शहरोंकी — अिस कामके लिअ जनताके शिक्षणकी कक्षा खोल दे तो जबरदस्त लाभ हो सकता है। बहुत लोग — खासकर गरीब — कताओीको अिसलिअ नहीं अपनाते कि वे कातना और बुनना नहीं जानते। वे नहीं जानते कि काम करनेकी सहूलियत और ज्यादा सूत निकालनेके लिअ किस ढंगका चरखा चाहिये, असको ठीक तरहसे कैसे चलाया जाता है और अिस प्रकार तैयार हुअ सूतको कैसे बेचा जाय अथवा असका क्या अपयोग किया जाय अित्यादि। अगर ठीक प्रचारके बाद सप्ताहमें अक या दो बार कुछ असी कक्षायें चलायी जायें और लोगोंको यह कला प्रत्यक्ष प्रदर्शन द्वारा सिखाओी जाय तो काफी सुधार हो जाय। कमसे कम यह प्रयोग कांग्रेसके आजमाने लायक जरूर है। अगर नियमित कक्षाअें न भी चलाओी जायें परन्तु अिस कलाके विशारद समूह बनाकर दौरा करें और प्रत्येक नगरमें जनताको असका प्रदर्शन दिखायें और शिक्षण दें तो भी काफी हद तक अद्देश्यकी पूर्ति हो सकती है।

लेखकके कथनमें काफी सार है। अगर तमाम कांग्रेस कार्यालय खादी तैयार करने तक रूओीकी और बादकी सब प्रक्रियाओं सहित कताओीकी कला सिखानेवाली संस्थाअें बन जायें तो बिलकुल स्पष्ट है कि देहातोंका कायापलट हो जायगा। ये पंक्तियां पत्रलेखकके अद्गार हुअे मुद्दे पर जोर देनेके लिअ लिखी गओी हैं।

हरिजन १८-८-४६

९२

विदेशी वस्त्रका निषेध

जब स्वराज्य मिल जायगा तब अुसकी सरकार सबसे पहले जो काम करेगी अुनमें विदेशी कपड़ेका निषेध भी अेक होना चाहिये।

यंग अिंडिया १९-३-३१

९३

खादीको लोकप्रिय कैसे बनायें ?

मंत्रीगण कांग्रेसी हैं। वे आसपासकी परिस्थितिसे प्रेरणा लेते हैं। अगर अुन्हें खादीमें सच्ची श्रद्धा हो तो वे अुसे लोकप्रिय बनानेके लिअे बहुत कुछ कर सकते हैं।

मैं बताअूँ कि कांग्रेसी मंत्री और खास सभी मंत्री अिस सबंधमें क्या कर सकते हैं और अुन्हें क्या करना चाहिये।

अेक मंत्री असा हो सकता है जिसका अेकमात्र काम खादी और ग्राम-अुद्योगोंकी देखभाल करना हो। अतः अिस कामके लिअे अेक अलग विभाग होना चाहिये। दूसरे विभाग अुसे सहयोग देंगे। मसलन् कृषि विभाग कपासकी पैदावारके विकेन्द्रीकरणकी अेक योजना बनायेगा, गांवके अुपयोगके लिअे कपासकी पैदावारके अनुकूल भूमिकी पैमाअिश करेगा और पता लगायेगा कि अमुक प्रान्तके लिअे कितनी कपासकी जरूरत होगी। वह वितरणके लिअे अनुकूल केन्द्रोंमें कपास जमा करके भी रखेगा। भंडार विभाग प्रान्तमें अुपलब्ध खादी खरीदेगा और अपनी जरूरतके कपड़ेके लिअे मांग पेश करेगा। अुद्योग विज्ञानसे सम्बन्धित विभाग अपनी बुद्धिका अुपयोग करके बेहतर चरखे और हाथकी कताअीके अन्य औजार निकालेगा। ये सारे विभाग चरखा

संघ और ग्रामोद्योग संघके साथ सम्पर्क रखेंगे और अुन्हें अिस कामका निष्णात मान कर अुनका अुपयोग करेंगे।

माल-मंत्री मिलके अुत्पादनसे खादीकी रक्षा करनेके साधन खोज निकालेगा।

हरिजन १०–१२–३८

९४

खादी द्वारा अकाल निवारण और शिक्षा

खादीके लिअ यह दावा किया गया है कि अुसके कमसे कम तीन निश्चित काम हैं। वह भारतके करोड़ों अधभूखों और अधबेकारोंको असे पैमाने पर सहायक धंधा देती है जिसकी बराबरी और कोअी धंधा नहीं कर सकता। कमसे कम हानिकी संभावनाके साथ वह अकालके क्षेत्रोंमें काम देती है और प्रारंभिक स्थितिमें भारतके लड़के-लड़कियोंके लिअ वह शिक्षाका अुत्तम माध्यम है। परन्तु अकालके काम या प्रारंभिक शिक्षाके माध्यमके रूपमें खादीकी सफलताकी अेक निश्चित शर्त है। अकालके अिलाकोंमें और पाठशालाओंमें तैयार हुअी खादीका क्या किया जाय? अगर खादी बेची नहीं जा सकती तो वह अुतनी ही निकम्मी है जितने अकालके समय भारतके अनेक भागोंमें फोड़े जानेवाले पत्थर होते हैं। अिस पत्रमें मैंने अनेक बार सुझाया है कि पिछली दो भागोंमें अुत्पन्न की गअी सारी खादी राज्यको ले लेनी चाहिये। यह काम चरखा संघके मारफत बहुत आसानीसे किया जा सकता है अगर राज्य घाटेकी वैसे ही गारंटी दे जैसे वह आजकल रेलवेके मुनाफेकी और कअी अन्य बातोंकी देता है। मूल्यकी दृष्टिसे खादी मिलके कपड़ेसे बेशक महंगी है। अिसलिअ अुसकी बिक्री देशभक्तों और परोपकारियोंमें ही होती है। परन्तु जिनके पास अतिरिक्त पैसा नहीं है वे आसानीसे देशभक्ति अथवा परोपकारसे प्रेरित नहीं होंगे। वे सस्तेसे सस्ते बाजारमें जायेंगे। अिसलिअ यह

राज्यका काम है कि वह असे माल पर पाबन्दी या भारी कर लगाये जो अुस मालसे स्पर्धा करता हो जो आम लोगोंकी भलाओके लिअे बिकना चाहिये। मेरे खयालसे यह सिद्ध हुआ माना जा सकता है कि खादी अस मालमें आ जाती है।

हरिजन १९-८-३९

अगर प्रांतीय सरकारें मदद न करें तो (कतिनाकी मजदूरीके रूपमें) तीन आनेका स्तर भी कायम नहीं रखा जा सकता। वे कानून और शासन दोनों तरहके प्रयत्नोंसे अैसा कर सकती हैं। यह वे तभी करेंगी जब वे चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ और हिन्दुस्तानी तालीमी संघको अपनी ही निष्णात स्वेच्छापूर्ण और अवैतनिक संस्थाअें मानकर अुनसे काम लेंगी। मैं अुनके सामने यह संभावना पेश करता हूँ कि वे मूक ग्रामीणोंको फुरसतके समय काम देकर अुनकी जेबोंमें कभी लाख रुपये डाल देंगी। लेकिन अगर देहातकी बनी चीजें चलें नहीं तो कोभी प्रगति नहीं की जा सकती।

हरिजन, २६-८-३९

९५

जुलाहोंकी सहायता

मेरी हमेशा यह राय रही है कि जो जुलाहे विदेशी या देशी मिलका सूत अिस्तेमाल करते हैं अुन्हें मदद देना रुपये और प्रयत्नकी बरबादी है। अनुभवसे यह खयाल बदला नहीं है। वह अिसलिअे भी नहीं बदल जाता कि कुछ प्रान्तोंमें कांग्रेसका राज्य है। मेरा यह विचार अिसलिअे है कि मिलका सूत बुननेवालेका मिट जाना केवल समयका प्रश्न है। जैसी परिस्थिति है अुसमें अिसके सिवा कुछ हो ही नहीं सकता। जुलाहोंकी अेकमात्र आशा अिसमें निहित है कि हाथ कताओ फिरसे सब जगह जारी की जाय। हाथ-कताओ और हाथ बुनाओ परस्परावलम्बी हैं हाथ-बुनाओ और मिल-कताओ हरगिज अेक

९७

मन्त्रियोंका कर्तव्य

यह प्रश्न अुचित ही है कि अब जब सत्ता कांग्रेसी मन्त्रियोंके हाथमें आ गयी है तब वे खादी और अन्य देहाती अुद्योगोंके लिअे क्या करेंगे। मैं प्रश्नको व्यापक बना कर भारतकी सारी प्रान्तीय सरकारों पर लागू करना चाहूंगा। दरिद्रता सभी प्रान्तोंमें अेकसी है और जन साधारणकी दृष्टिसे कष्ट निवारणके अुपाय भी सामान्य हैं। चरखा संघ और ग्रामोद्योग संघ दोनोंका यही अनुभव है। यह सुझाव दिया गया है कि अिस कामके लिअे अेक अलग मंत्री होना चाहिये, क्योंकि ठीक संगठनके लिअे असे मंत्रीका अुसमें सारा समय लग जायगा। मुझे यह सुझाव देते हुअे डर लगता है, क्योंकि हमने अंग्रेजी पैमाने पर खर्च करना अभी तक नहीं छोड़ा है। मंत्री अलग मुकरर किया जाय या न किया जाय, अवश्य ही अेक अलग विभाग अिस कामके लिअे जरूरी है। भोजन और वस्त्रकी कमीके अिस कालमें यह विभाग बड़ीसे बड़ी सहायता कर सकता है। चरखा संघ और ग्रामोद्योग संघके मारफत मन्त्रियोंको विशेषज्ञ तो अुपलब्ध हो ही जायंगे। अिस समय कमसे कम पूंजी और समय लगा कर भारतको खादीका कपड़ा पहना देना संभव है। प्रत्येक प्रान्तीय सरकारको अपने देहातियोंसे यह कहना होगा कि अुन्हें अपने अुपयोगके लिअे अपनी खादी आप तैयार करनी है। अिसमें स्थानीय अुत्पत्ति और वितरणकी बात अपने आप आ जाती है। और निःसन्देह कमसे कम कुछ माल शहरोंके लिअे बच रहेगा, जिससे स्थानीय मिलों पर भी दबाव घट जायगा। फिर तो मिलें संसारके दूसरे भागोंमें कपड़ेकी कमी पूरी करनेमें भाग ले सकेंगी।

यह परिणाम कैसे लाया जा सकता है?

सरकारको देहातियोंको सूचना दे देनी चाहिये कि अुनसे अेक निश्चित तारीखके भीतर अपने गांवोंकी जरूरतका खद्दर तैयार कर लेनेकी आशा रखी जायगी। अुस तारीखके बाद अुन्हें कपड़ा मुहैया नहीं किया जायगा। सरकार अपनी तरफसे देहातियोंको जहां जरूरत

होगा। लागत कीमत पर कपास या कपासका बीज देगी और माल तैयार करनेके औजार भी लागत कीमत पर देगी, जो पांच या अधिक वर्षोंमें आसान किस्तोंमें वसूल की जा सकती है। जहां आवश्यकता होगी सरकार अुन्हें शिक्षक देगी और खादीका बचा हुआ माल खरीद लेनेका वचन देगी। शर्त यह होगी कि संबंधित ग्रामवासी अपनी कपड़ेकी जरूरत अपने ही तैयार किये हुअे मालसे पूरी करेंगे। जिससे कपड़ेकी कमी चुपचाप और बहुत थोड़े व्ययसे तुरन्त दूर हो जायगी।

हरिजन २८-४-४६

९८

कपड़ेकी कमी

श्री मनु सूबेदार खादी और दूसरे ग्राम-अुद्योगोंमें दिलचस्पी लेते हैं। अुन्होंने कुछ समय हुआ मेरे पास अेक नोट भेजा था। परन्तु मैंने अुसे प्रकाशित करनेमें देर की, क्योंकि मैं चाहता था कि हो सके तो हरिजन में छापनेके बनिस्बत अुसका कोओ अधिक कारगर अुपयोग करूं। मगर मुझे वह सूझा नहीं। अिसलिअे अब अुसे प्रकाशित किया जा रहा है — न सिर्फ प्रांतीय सरकारोंके अुपयोगके लिअे ही परन्तु खानगी व्यक्तियों और संस्थाओंके अुपयोगके लिअे भी भले क्षेत्र कितना ही सीमित क्यों न हो।

श्री सूबेदारकी योजना यह है

प्रत्येक गांवको सामूहिक रूपमें अेक गांठ रूओीकी दी जाय। गांवके लोग अुस कपास पर सूत तैयार करें। यह सूत या तो तानेके लिअे इकट्ठा किया जाय या बानेके लिअे या दोनों काममें लिया जाय और कपड़ा बनाया जाय।

अेक गांठसे लगभग २४०० गज (या सूतके नम्बरके अनुसार १८०० गज) कपड़ा तैयार होगा।

अगर चरखों और तकलियोंकी जरूरत हो तो वे राज्य द्वारा दिये जायं। (अिनको तैयार करनेका काम जगह जगह संगठित किया जाय।)

कपड़ा जब तैयार हो जाय तब फी आदमीके हिस्सेके आधार पर गांवके लोगोंको मिलना चाहिये।

'जिन गांवोंमें अनाज अिकट्ठा करना जरूरी हो तो जहां किसानोंके पास फालतू अनाज होना माना जाय वहां कपड़ा अनाजके बदलेमें दिया जाय। जहां यह स्थिति न हो वहां ग्रामवासियोंको रुअीकी गांठकी कीमत चुकाने लायक पैसा जमा करना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें रुअीकी कीमतके बदलेमें अुन्हें कपड़ा मिल जायगा। (शुरूमें यह रुअी सरकार पेशगी देगी।)

'अिससे जहां कपड़ेकी कमीमें राहत मिलेगी वहां फालतू रुअी खप जायगी और अिससे कपास बोनेवालेको मदद मिलेगी।

चूंकि ग्राम-पंचायतोंको रुअीकी गांठ लेकर अससे कपड़ा बनाने तकके सारे कामका प्रबंध करना होगा, अिसलिये हरअेक गांवमें

(१) ग्राम-पंचायत मजबूत हो जायगी।

(२) लोग मिलजुलकर काम करना सीखेंगे।

(३) छोटे-बड़े सब मेहनत करनेमें हिस्सा लेंगे।

(४) दलालके लिये कोअी स्थान नहीं रहेगा।

'अगर शुरूमें बम्बअी प्रान्तके २० हजार या दो हजार गांवोंमें भी यह प्रयोग किया जाय तो ६ सप्ताहोंमें परिणाम देखा जा सकेगा।

सरकारको प्रति गांठ २२५ रुपयेके हिसाबसे रुअीके लिअे रुपया रोकना पड़ेगा। अिसमें से बहुतसा रुपया अनाज या नकदके रूपमें लौट आयेगा। परन्तु अिससे स्वावलम्बनकी अेक अैसी चीज शुरू हो जायगी जो गांववाले खुद कर सकते हैं।

सहायता वहां भी देनी पड सकती है जहां करघे न मिल सकते हों या जहां तैयार हुआ सूत ताना और बाना बनानेके लिअे निरुपयोगी हो। परन्तु यह तो कामको संगठित करनेकी तफसीलकी बात हुअी। हरअेक जिलेमें जिस आदमीको यह काम सौंपा गया होगा वह अिन प्रश्नोंके बारेमें सोचेगा और अुन्हें हल करेगा।

'किसी गांवमें अेक गांठकी कीमत जीम लेने पर सरकार वहां नअी गांठ भेज दे।'

मैं अितना और कह दूं कि मेरे सुझावसे यह योजना थोडी भिन्न है। मेरी रायमें मूल सुझाव शायद अिससे ज्यादा अच्छा है। परन्तु मैं श्री सूबेदारके नोटको अधिक महत्त्व देता हूं क्योंकि अुन्होंने हिसाब लगाकर आंकडे निकाले हैं, रुअीकी अेक गांठसे कार्यारंभ करनेका सुझाव दिया है और खास तौर पर मुझसे स्वतंत्र रूपमें अेक अर्थशास्त्रीकी हैसियतसे विचार करके अपनी योजना तैयार की है। किसी भी मानव-योजनामें दोष ढूंढ निकालना आसान है। हमारा काम यह है कि अगर हमें दोष दूर करना आता हो तो अुन्हें दूर करें या जिन दोषोंको हम जानते तो हैं परन्तु दुरुस्त नहीं कर सकते अुनके रहते हुअे भी शुरुआत कर दें। पूर्णताके लिअे हम प्रतीक्षा करते रहें तो कोअी सुधार संभव नहीं है।

हरिजन ८-८-४६

यदि मैं मंत्री होता

पिछले २८ अप्रैलके अंकमें छपे मेरे नोटकी तरफ मैं पाठकोंका ध्यान दिलाता हूँ।* अुस समय मैंने जो विचार प्रगट किये थे अुनमें कोई तबदीली नहीं हुई है। अेक बातमें कुछ गलतफहमी पैदा हुई है। कुछ भाअियोंको अुस नोटमें जबरदस्ती दिखाई दी है। मुझे अिस अस्पष्टताके लिअ खेद है। अुसमें मैंने अिस प्रश्नका अुत्तर दिया था कि आम लोगोंकी प्रतिनिधि सरकारें चाहें तो क्या कर सकती हैं। मैंने मान लिया था — मेरा ख्याल है यह मान्यता ठीक थी — कि अिन सरकारोंके फरमानोंको कोई जोर जबरदस्ती नहीं मानेगा। कारण किसी सच्ची प्रतिनिधि-सरकारके प्रत्येक कार्यमें जिन निर्वाचकोंका वह प्रतिनिधि है अुनकी अनुमति मान ली जायगी। निर्वाचकोंका अर्थ होगा सारी जनता, चाहे अुनका नाम निर्वाचक सूचीमें हो या न हो। अिस पृष्ठभूमिको ख्यालमें रखकर मैंने लिखा था कि सरकार ग्रामवासियोंको सूचना दे दे कि अेक निश्चित तारीखके बाद ग्रामवासियोंको मिलका कपड़ा नहीं दिया जायगा ताकि वे अपनी ही तैयार की हुई खादी पहन सकें।

पिछले २८ अप्रैलके मेरे लेखका कुछ भी अर्थ हो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि संबंधित लोगोंके स्वेच्छापूर्ण सहयोगके बिना अपनाई हुई खादी संबंधी कोई भी योजना बेकार होगी और वह अुस खादीको मार डालेगी जिसे हम स्वराज्य हासिल करनेका जरिया बनाना चाहते हैं। फिर तो खादीके बारेमें लोगोंका यह ताना सही होगा कि खादी हमें मध्यकालीन गुलामी और अज्ञानकी ओर ले जाती है। परन्तु मेरा विचार अिससे विपरीत रहा है। जहाँ जबरन् अपनाई गई खादी गुलामीका निशाना है वहाँ बुद्धिपूर्वक और स्वेच्छासे तैयार की हुई खादी जो मुख्यतः अपने ही अुपयोगके लिअ हो

---

* अुल्लिखित नोट प्रकरण ९७ में दिया गया है।

हमारी आजादीकी निशानी है। स्वतंत्रता कुछ नहीं है अगर वह सर्वांगीण स्वावलम्बन नहीं है। अगर खादी आजाद आदमीके अपने हक और कर्तव्यकी निशानी न होती तो कमसे कम मुझे असमें कोओी दिलचस्पी न रहती।

मित्रभावसे टीका करनेवाले अेक भाओी पूछते हैं कि क्या अिस प्रकार तैयार की गअी खादी साथ ही बिक्रीके लिअे भी बरती जा सकती है? मेरा अुत्तर यह है कि यदि बिक्री असका गौण अुपयोग हो तो असा किया जा सकता है, लेकिन अगर बिक्री ही असका अकमात्र या खास लक्ष्य हो तो हरगिज नहीं। हमने बिक्रीके लिअे खादी पैदा करके अपना काम शुरू किया असका कारण यह था कि असके बारेमें तब हम दूर तक सोच नहीं पाये थे और यह भी कि अस समय असकी जरूरत थी। अनुभव अेक महान शिक्षक है। असने हमें अनेक बातें सिखाअी हैं। अनमें से अेक बड़ी बात यह है कि खादीका प्राथमिक अुपयोग अपने लिअे असका व्यवहार करना है। परन्तु यह भी अन्तिम बात नहीं है। खैर मुझे कल्पनाके अिस मनोहर क्षेत्रको छोड़कर शीर्षकमें पूछे गये प्रश्नका निश्चित अुत्तर देना चाहिये।

तमाम शासन-कार्यके केन्द्रके रूपमें देहातके पुनरुद्धारकी जिम्मेदारी सम्हालनेवाले मंत्रीकी हैसियतसे मेरा पहला काम यह होगा कि स्थायी राजकर्मचारियोंमें से अिस कामके लिअे अीमानदार और निष्ठावान आदमी ढूंढ निकालूं। मैं अनमें से अुत्तम लोगोंकी चरखा संघ और ग्रामोद्योग संघसे जो कार्यक्रम बनाये हुअे हैं अनके बारेमें देहाती दस्तकारियोंको अधिकसे अधिक प्रोत्साहन देनेके लिअे अेक योजना पेश करूंगा। मैं यह शर्त रखूंगा कि देहातियों पर कोओी जबरदस्ती नहीं की जायगी। अुन्हें दूसरोंकी बेगार करनेके लिअे मजबूर नहीं किया जायगा। और अुन्हें अपनी मदद आप करना तथा भोजन, वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुओंके अुत्पादनके लिअे अपनी ही मेहनत और कारीगरी पर भरोसा करना सिखाया जायगा। अिस प्रकार योजनाको व्यापक बनाना होगा। अिसलिअे मैं अपने पहले आदमीको यह आदेश दूंगा कि वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघका

कर रहे हैं। अिसके सिवा सहायता मांगना जितना आसान है अुतना प्राप्त करना नहीं है। अधिकसे अधिक बचत करने और गांवको थोड़ा ज्यादा काम देनेके लिअ ओटाअी और धुनाअीकी प्रारंभिक प्रक्रियायें वहां और जहां तक हो सके हरअेक परिवारमें होनी चाहिये। सूतकी बनाअी भी गांवमें होनी चाहिये। बुनाअीका काम कताअीकी तरह हरअेक व्यक्ति नहीं करेगा बल्कि वह अेक-दो परिवारोंको सौंप दिया जायगा। अिससे अुन्हें पूरे समयका काम मिल जायगा और वे अिस कलाके विशेषज्ञ बन सकेंगे। अुस कामकी मजदूरी पदार्थोंके रूपमें और अच्छा तो यह है कि सूतके रूपमें दी जाय। घरके कते मोटे सूतसे ग्रामीण जुलाहों द्वारा गढ़ा और देहातमें काम आनेवाली पट्टियां दरियें तैयार करायी जा सकती हैं। जब हमारे सामने ये संभावनायें हैं तो अेक असे अुद्योगकी अुपेक्षा या तिरस्कार करना बहुत कठिन है जो सारी ग्रामीण आबादीको कपड़ा देनेकी क्षमता रखता है और दो जुलाहा परिवारों और अेक बढ़अी परिवारको हर गांवमें अुसकी अपनी सीमाके भीतर ही पूरा काम दे सकता है।

जहां जहां बुनाअीके साथ हाथ-कताअी सफलतापूर्वक जारी की जाय वहां बेगार जैसे अुबानेवाले कुछ कामको कम करनेका विचार जरूर करना चाहिये ताकि कताअी और अुसके साथके कामके लिअे अधिक समय और शक्ति बची रहे। अुदाहरणके लिअे आटा पीसनेमें स्त्रियोंका बहुत वक्त लग जाता है। यह काम बस्तीकी अेक ओरसे चलनेवाली गांवभरकी सामान्य चक्कीसे कराया जा सकता है जैसा कि मि. ब्रेनके प्रयत्नसे पंजाबके गुड़गांव जिलेमें सफलतापूर्वक किया जाता है। समग्ररूपमें गांवके लिअे गांवमें ही कपड़ा बना लेनेसे ग्रामीण जीवनमें बहुत सुधार हो सकता है जिसके लिअे सम्प्रति धनाभावके कारण बहुत कम गुंजाअिश है। समय पाकर संभव है चरखेमें अधिक सुधार होनेसे स्वयं कताअीमें लगनेवाला समय भी कम हो जाय। यह अुद्योग राष्ट्रीय बन जायगा तो वह सुधार अवश्य

होगा। मौजूदा चरखेसे अेक तार निकलता है। अुसके बजाय कोअी असी तरकीब की जाय कि अेक ही चरखे पर दो या तीन तार साथ-साथ निकलने लगें तो भी कताअीका समय कम हो जायगा। यदि कताअी-आन्दोलनका वर्तमान हाथ-करघा बुनकरोंको सूत मुहैया करनेका अन्तिम लक्ष्य सिद्ध करना है तो अुस दृष्टिसे भी सूत और अुत्पादनकी गतिमें सुधार आवश्यक है। जिन परिस्थितियों लोगोंके रास्तेमें अेक बड़ी रुकावट यह है कि मिलोंको सूतका अेकाधिकार प्राप्त होनेके कारण वे अुन्हें बड़े अूँचे दामों पर सूत बेचती हैं ताकि वे खुद मिलका बना कपड़ा सस्ते भावों पर बेच सकें। अगर चरखा प्रचारको सफल होना है, तो अुसे कस्बोंकी अपेक्षा देहातमें अधिक जोर और पूरे संगठनके साथ चलाना चाहिये। शहरी लोगोंका समर्थन समय समय पर अुत्साह दिलाकर कायम रखना पड़ता है परन्तु गांवोंके लिअे तो यह आत्मरक्षाका प्रश्न है। यद्यपि शुरूमें लोगोंकी निरक्षरता और अुदासीनताके कारण देहातमें काम कठिन होगा लेकिन ज्यों ही अेक बार अुसकी संभावनाअें अनुभव कर ली जायगी अुसकी जड़ वहां ज्यादा गहरी जमेगी। किन्तु सफलताको पक्की करने और असफलतासे बचनेके लिअे प्रचार-कार्य अनाड़ी अुत्साहियों द्वारा नहीं परन्तु अैसे व्यक्तियों द्वारा होना चाहिये जिन्होंने हाथ-कताअीकी कला सीखी हो। अिसमें प्रवीणता प्राप्त करनेके लिअे दो महीनेसे अधिक नहीं लगते होंगे। अिसके अलावा यदि कुछ नवयुवकोंको भी लगभग तीनसे छह महीनेकी शिक्षा दे दी जाय और सारा पैसा करने और अुसकी रक्षा करनेके तरीके सिखा दिये जाय तो वे वहां नियाकी दुगुनी सेवा कर सकेंगे।

अगर हाथ-कताअी और बुनाअी दोनों साथ साथ भारतीय ग्रामोंमें जारी की जाय तो अिससे विशाल सामाजिक और आर्थिक लाभ हो सकते हैं। भारतमें कपड़ेकी प्रति व्यक्ति औसत खपतका अन्दाज सालाना १५ गज लगाया गया है।

देहातियोंके लिअे प्रति व्यक्ति १३ गजकी हा खपत मान लें और १९२१ की जनगणनाके अनुसार देहाती आबादीको अट्ठाओीस करोड अस्सी लाख समझ लें तो अनके लिअे कुल कपडा दो अरब अठासी करोड गज चाहिये। अगर व्यापक और व्यवस्थित प्रचार-कार्य द्वारा ग्रामवासियोंको अपना कपडा आप तैयार करनेको प्रोत्साहित किया जाय तो सारा रुपया जो वे अिसके लिअे देते हैं गांवोंमें रह जायगा। खादीके कपडेकी कीमत कमसे कम चार आने गज मान लें तो देहातोंकी प्रति वर्ष बहत्तर करोड रुपयेकी बचत होगी। अिसके अतिरिक्त बाजारसे कपडा खरीदनेके लिअे अुन्हें जो नकद रुपया चुकाना पडता है अुसका भी विचार करना चाहिये। वह कीमत ६ से ८ आने गजसे कम नहीं होगी। नीचेवाले आंकडोंको मान लें तो घरेलू अुत्पत्तिसे होनेवाली अतिरिक्त बचत दो आने गजके हिसाबसे छत्तीस करोड रुपये सालाना और होगी। अिस प्रकार बहुत सावधानीके साथ कमसे कम आंकडोंके आधार पर हिसाब लगायें तो भी प्रतिवर्ष गांवोंमें अेक अरब रुपयेसे ज्यादा रह जायगा। और यदि अिसका अेक हिस्सा भी ग्रामोत्थानके कामके लिअे अुपलब्ध कर लिया जाय जैसा कि अवश्य होगा तो शिक्षा सफाअी दवा-दारू और पशुओं तथा खेतीके सुधारसे सम्बन्धित ग्राम जीवनकी परिस्थिति बहुत जल्द सुधारी जा सकती है।

अिसके अलावा अिस बातका खयाल कीजिये कि अिस सुधारसे अितने अधिक लोगोंकी क्रयशक्तिमें जो महान वृद्धि होगी अुससे अुन बडे अुद्योगोंके लिअे जो देशमें शुरू किये जा रहे हैं कितना बडा बाजार खुल जायगा। माल तैयार करनेसे भी बाजार तैयार करनेका काम अधिक कठिन और अधिक महत्त्वपूर्ण है। देशमें बाजारके अभावमें कारखानोंकी श्रेणीके कअी अुद्योग बिना प्रयोगके यों ही पडे रहे हैं। अुन्हें विदेशी बाजारमें बहुत कम गुंजाअिशकी आशा हो सकती है क्योंकि विदेशी बाजारों पर औद्योगिक दृष्टिसे आगे बढे हुअे देशोंने

पहले ही धक्का कर रखा है। पिछड़े हुअे मुल्कोंमें भी अुनकी असली सम्भावनाओंका भान तेजीसे बढ़ रहा है। अिसलिअे हमारी औद्योगिक अुन्नतिके लिअे भीतरी बाजारका निर्माण बड़े महत्वकी बात है। सीधे-सादे चरखेमें यह सम्भावना मौजूद है। और अिसलिअे असे नगण्य नहीं मानना चाहिये।

रावबहादुरजीको शायद मालूम होगा कि चरखा संघ अुनके सुझाये हुअे स्वावलम्बी आधार पर देहातमें हाथ-कताओका संगठन करने पर अपना सारा ध्यान लगा रहा है। मैं विद्यार्थियों और शहरवालोंके अुदाहरणोंकी तरफ अुनका ध्यान दिलाता हूँ। साथ ही शहरोंकी भी अुपेक्षा नहीं की जा सकती। शहरी जीवनकी गांवों पर आजकल अितनी प्रभुता है कि अगर शहर वालोंका अुदाहरण अुपस्थित न करें तो ग्रामवासियोंको अपनी ही भलाओ और अपनी ही जरूरतके लिअे भी कातनेको राजी करना कठिन हो जाता है। कांग्रेसका सदस्य

शहरोंसे ही उठाना पड़ेगा। अिसलिअे जिस सुधारकी आवश्यकता रावबहादुरजीने अितने जचनेवाले ढंगसे साबित कर दी है, अुसे राष्ट्रव्यापी बनानेके लिअे शहरोंमें खादीका वातावरण जमनेकी नितान्त आवश्यकता है।

यंग अिंडिया ७-३-२९

१०४

मिलके सूतसे हाथ बुनाओ

मदुरामें सौराष्ट्रियोंके अभिनन्दनका अुत्तर देते हुअे गांधीजीने कहा :

आपने मुझसे अनुरोध किया है कि विदेशी सूत या मिलके सूतके द्वारा भी हाथ-बुनाओीको प्रोत्साहन दिया जाय, क्योंकि जैसा अपने अभिनन्दन-पत्रमें आपने कहा है, अिस समय हाथका सूत जितना चाहिये अुतना और जैसा बारीक चाहिये वैसा बारीक नहीं मिलता। अब अेक साथी जुलाहेकी हैसियतसे मैं आपको बताअूंगा कि मैं आपकी सिफारिशका समर्थन क्यों नहीं कर सकता। अगर मैं आपकी सिफारिशका समर्थन करूं तो मैं यह सिद्ध कर सकता हूं और आपको समझा सकता हूं कि वह आपके लिअे भी बुरा होगा और जो वर्ग मेरे ध्यानमें है और आपके भी ध्यानमें होना चाहिये, अुस वर्गके लिअे भी बुरा होगा। आप तो बड़े समझदार और तीव्र बुद्धिवाले व्यापारी हैं। आपको समझना चाहिये कि प्रत्येक जुलाहा, जो विदेशी या भारतीय मिलोंके द्वारा दिये हुअे सूतको बुनता है, अपने-आपको मिलोंके हाथमें और अुनकी दया पर छोड़ देता है। जुलाहोंकी हैसियतसे आपको अनुभव करना चाहिये कि जिस हाथ-बुनाओी पर अब तक आजकल आपका नियंत्रण है, वह भविष्यमें ज्यों ही संसारकी या भारतकी मिलें वे नमूने बुनने लग जायंगी, जो आजकल केवल आप ही बुनते हैं, त्यों ही आपके हाथोंसे निकल

जायगी। अगर आपको यह बात पहलेसे मालूम नहीं है तो मैं बता देता हूँ कि जिन नमूनों पर अिस समय आपका अेकाधिकार है अुन्हें बुननेके लिअे संसारके भिन्न भिन्न भागोंमें मिल-मालिक प्रयोग कर रहे हैं। यह मिल मालिकों या मिल-अुद्योगका कसूर नहीं है कि मिल-अुद्योग दिन दिन अुन अेकाधिकारोंको छीन कर अिस व्यापारको अपने ही हाथोंमें लेनेकी कोशिश कर रहा है। असलमें अिन बड़े अुद्योगपतियोंका अुद्देश्य और लक्ष्य ही यह है कि अपने यंत्रोंमें सतत सुधार करें और संसारकी दस्तकारियों पर बराबर आक्रमण करते रहें। वास्तवमें अुनकी हस्तीकी शर्त ही यह है कि आपके हाथोंसे अिस व्यापारको छीन लेनेका प्रयत्न करें। अगर जुलाहे मेरी शिक्षाको ग्रहण नहीं करेंगे तो जो हाल कताअीके अुद्योगका हुआ है वही निश्चित रूपसे हाथ-बुनाअीके अुद्योगका होगा।

अिसका यह अर्थ नहीं है कि आप आजसे ही मिलका सूत बुनना छोड़ दें। आपको मेरी तरफसे प्रोत्साहनकी जरूरत नहीं है। परन्तु मैं आपको यह सुझानेका साहस करता हूँ कि मैं अत्यन्त नम्रतापूर्वक जिस आन्दोलनका नेतृत्व कर रहा हूँ अुसके साथ मिलके सूतकी बुनाअीका मिलानके लिअे आप मुझसे न कहें तो अिसमें आपका भला है। और अिस आन्दोलनका समर्थन करनेमें भी आपकी अुतनी ही भलाअी है। क्योंकि अगर यह स्थिर, सफल और अचल हो जाता है तो आप सबको सम्मानपूर्ण आजीविका मिल जायगी।

यंग अिंडिया, १३-१०-'२७

अेक भाअी जो किसी समय चरखेके भक्त थे सो कहते हैं :

हाथ-बुनाअीके बजाय मशीनकी बुनाअी जारी कीजिये। प्रत्येक तालुकेमें अेक बुनाअी मिल खड़ी कीजिये। सूतका राष्ट्रीयकरण कर दीजिये। देशभक्त लोग ही मिलोंको चलायें, लाभके लिअे नहीं परन्तु देशप्रेमके खातिर। सूतको केवल स्थानीय जुलाहोंमें बाँटिये। बने हुअे कपड़ेको अपने अपने तालुकोंमें सीमित कर देना चाहिये। अिस प्रकार आप समय

और भाड़का अपव्यय बचायेंगे। अुसमें जरा ही तालुकेका संगठन कीजियेगा तो आप देखेंगे कि आपने कितनी बड़ी सेवा की है।

अगर हरअेक तालुकेमें अेक अेक कताअी मिल लगाअी जाय तो परिणाम यह होगा कि थोड़ेसे लोग जनताका शोषण राष्ट्रीय पैमाने पर करेंगे। तालुका मिलमें सबको काम नहीं दिया जा सकता। अिसके सिवा हमें दो हजारसे अधिक तालुकोंके लिअे आवश्यक मशीनें बाहरसे मंगानी पड़ेंगी। और मिलें चलाने और प्रबंध करनेके लिअे विशेषज्ञोंको तालीम देनी होगी। चरखोंकी तरह मिलें बातकी बातमें खड़ी नहीं की जा सकतीं। चरखेकी असफलता पर किसीको दुःख नहीं होता। तालुका मिलके असफल होने पर तालुकेके लोगोंमें हाहाकार मच जायगा। मेरी रायमें अुपरोक्त भाअीका किया हुआ प्रस्ताव बिल्कुल गलत है। परंतु मैंने सुझाव दिया है कि अगर अुनको अपनी योजनामें श्रद्धा हो तो खुद अुसे आजमाना चाहिये। मुझे तो अपनी छोटीसी नाव ही चलाते रहना चाहिये क्योंकि मुझे और कोअी चीज आकर्षित नहीं करती।

यंग अिंडिया २६-६-२४

१०५

हाथ करघेकी समस्या

हमें हाथ-करघोंको हाथके सूतका अुपयोग करनेके लिअे राजी कर सकना चाहिये। लेकिन आज हममें अैसा करनेका सामर्थ्य नहीं है। हमारे चरखेका सूत न तो काफी मजबूत है और न वह अभी काफी मात्रामें तैयार ही होता है। जब तक हम अैसा हाथका सूत तैयार नहीं करेंगे जो बल और समानतामें मिलके सूतका मुकाबला कर सके तब तक हाथ-करघेका जुलाहा अुसे नहीं छुअेगा। और अिसके लिअे अुसके पास अुचित कारण हैं। प्रथम तो कमजोर और असमान सूत काममें लेनेसे अेक निश्चित समयमें तैयार होनेवाले कपड़ेकी मात्रा घट जाती है और अिसलिअे जुलाहेकी कमानेकी शक्ति

पर असर पड़ता है। दूसरे हाथ-करघेके जुलाहेको जिस समय अूँचे दरजेके अुत्पादनका विशेष अभ्यास हो गया है जब कि हमारा हाथके कते सूतका अुत्पादन बहुत ही थोड़ा है और वह भी अधिकतर आरम्भमें ही होता है। अिस कठिनाअीका हल खादीशास्त्रकी पूरी प्रवीणतामें है। और भी कुछ समस्याअें हैं जिन्हें हल करने पर ही हम हाथ-करघेके प्रश्नको निपटा सकते हैं। सिर्फ अितनी बात ध्यानमें रखी जाय कि अिस समस्याको हल करनेसे ही खादीको सर्वव्यापी बनानेका सपना पूरा होगा।

हरिजन १७-४-३७

यह कथन कि हाथ-करघा अुद्योगने मिलकी स्पर्धाका मुकाबला किया है केवल आंशिक रूपमें सही है। पच्चीस वर्ष पहले जितने हाथ-करघेके जुलाहे थे अुनसे आधे भी आज नहीं हैं। अेक समय था जब चरखा राष्ट्रकी जरूरतका सारा सूत कात देता था और हाथ-करघा तमाम जरूरी कपड़ा बुन देता था। जब मिलें स्थापित हुअीं तो चरखा लगभग मर गया। अिसका सीधा-सा कारण यह था कि अुसमें बहुत कम आमदनी होती थी और वह कभी पूरे समयका धंधा नहीं था। परन्तु करघेने डट कर अुनका मुकाबला किया। अिसके कअी कारणोंमें मुख्य कारण यह था कि वह स्वयं अेक पूरे समयका धंधा था और अुससे जुलाहेका किसी तरह गुजारा हो जाता था। जब कताअी मिलें आअीं तो जुलाहेने सूतके लिअे अुनका आश्रय लिया। अुसने अिस परिवर्तनका स्वागत भी किया क्योंकि अुसे अधिक समानता और कमखर्च सूत मिलने लगा। अुसे यह पता नहीं था कि अगर किसी कारणवश मिलें अुसे सूत न दे सकीं तो वह पूरी तरह लाचार हो जायगा। देहाती कत्तिन अपने सूतकी मनमानी कीमत लगा लेती थी मगर मिल-मालिक लेने लगा। धीरे धीरे जो जुलाहा सीधी-सादी खादी बुनता था वह मिलकी स्पर्धामें नहीं टिक सका और मर गया। और पिछले कुछ वर्षोंसे बढ़िया कपड़ेका जुलाहा भी बुनाअीमें गिरावटका दबाव महसूस कर रहा है। जनताकी रुचि धीरे धीरे किन्तु निश्चित

रूपमें बदल रही है। अगर मिलें देहाती जुलाहेके बुने हुए नमूनोंकी ठीक ठीक नकल नहीं कर सकती तो वे जमा अब भी कर रही हैं नये नमूने तैयार कर सकती हैं और योग्य विज्ञापन द्वारा ग्राहकोंको आकर्षित कर सकती हैं। असलिए ग्राहकोंके अभावमें अुडीसाके कभी हजार जुलाहे बेकार हो गये हैं। असा ही पुकार मेरे कानों पर अुस दिन अहमदनगरसे आयी जो अक मजबूत बनाअी-केन्द्र है। अुन सबको मेरी सलाह यह थी कि यदि ये जुलाहा परिवार अपने घरोंमें केवल धुनाअी और कताअी शुरू कर दें तो वे मिलके सूतसे सर्वथा स्वतन्त्र हो सकते हैं और अुन्हें चरखा संघकी अचूक सहायता भी मिल सकती है। संभव है कि जुलाहे कुछ समय कताअीमें लगानेके कारण अतना न कमा सकें जितना पहले कमा लेते थे। परन्तु अब चरखा संघकी नअी नीतिके अनुसार बुनकरोंको कातनेवालोंको अक आना प्रति घंटा देनेका लक्ष्य है और डेढ़ पैसा फी घंटा दिया भी जा रहा है, असलिए जुलाहेको अपनी आयकी कमी शायद ही महसूस हो। और हर हालतमें भूखों मरनेकी स्थितिसे तो घटी हुअी आमदनी अवश्य ही बेहतर है।

याद रहे कि जुलाहेको अपने परिवारमें कताअी और धुनाअी जारी करनेमें बहुत ही थोड़ी पूंजी लगानी पड़ेगी। चरखा तो अुसके पास पहलेसे है ही। बेशक अुसमें कुछ सुधारकी जरूरत होगी। अुसे कुछ आने खर्च करने और धनकी भर लेनी होगी।

हरिजन २-८-३८

१०६

कार्यकर्ता बुनाअी सीखें

खादी-आन्दोलनको शुरू हुअे अब २१ वर्षसे अधिक हो गये। फिर भी मैं देखता हूँ कि अेक तरफ तो हमारा सूत बुननेके लिअे जुलाहोंकी कमी है और दूसरी तरफ देशमें लाखों जुलाहे हैं जो हाथका सूत बुननेके लिअे राजी नहीं किये जा सकते हैं। हमें देखना चाहिये कि अिस विरोधी स्थितिके लिअे हमारा कोअी दोष है क्या। अिसकी कुंजी यह है कि खादी-कार्यकर्ता प्रायश्चित्तके रूपमें बुनाअीकी प्रक्रियामें सीखें। खादी-कार्यकर्ताओंमें से ही हमें अपने अुत्तम कातनेवाले मिले हैं। अुन्हींके कारण कताअीमें प्रगति संभव हुअी है। अिसी प्रकार हमें खादी-कार्यकर्ताओंसे बुनाअी भी करानी चाहिये थी। बुनाअीकी कला सीख लेने पर ही हम अुन कठिनाअियोंको पूरी तरह समझ सकेंगे जो जुलाहोंको हाथका सूत बुननेमें पेश आती हैं और अुनके अुपायोंका पता लगा सकेंगे। जब हम अपनी भूलका प्रायश्चित्त करेंगे तब हाथका सूत अितना सुधर जायगा कि मिलके सूतसे अच्छी तरह मुकाबला कर सके। शायद आज हम मिलके सूतके बराबर मजबूत सूत न कात सकें। फिर भी दोनोंका फर्क अितना नहीं रहेगा जितना अभी है और जुलाहोंको हाथके सूतसे जितनी अरुचि अिस समय है अुतनी नहीं रहेगी।

दि आअिडियॉलॉजी आफ दि चरखा, पृ० ७४ अक्तूबर १९४१

प्रेमपूर्वक तथा धीरज और शान्तिके साथ चरखा संघके कार्यकर्ताओंको चाहिये कि वे जुलाहोंकी कठिनाअियोंको समझने और अुन्हें दूर करनेके अुपाय सोचनेकी कोशिश करें। आचार्य विनोबाने अेक अुपाय बताया है अर्थात् कुकड़ियोंका सूत अुतारते समय ही असे दुहरा कर लिया जाय। अगर यह परिपाटी सब जगह चल पड़े तो बुनाअीके लिअे बिनबटा हाथका सूत मिलेगा ही नहीं। अनुभवसे यह पाया गया है कि अिस तरह बटा हुआ हाथका सूत मिलके सूतसे अधिक नहीं

तो उसके बराबर बनने लायक तो हमेशा होता रहा है। अपनी पिछली कदसे छूटनेके बाद में अधिकसे अधिक जोरके साथ घोषणा कर रहा हूं कि कार्यकर्त्ताओंने जैसे कताओकी कलामें प्रवीणता प्राप्त कर ली वैसे ही वे बुनाओकी कलामें भी प्रवीणता प्राप्त कर लें। अगर वे खुद कताओको न अपनाते तो कातनेवालोंकी बहुतसी मुश्किलें हल न कर पाते। अब उन्हें बुनाओकी कला सीखकर और परिश्रम पूर्वक अुसका अभ्यास करके अपनी पिछली गफलतकी जो भूल अनजाने ही की गओ हो क्षतिपूर्ति करनी होगी। तभी वे अुन कठिनाअियोंको समझेंगे जो हाथका सूत बुननेमें जुलाहोंको अनुभव होती हैं और तभी वे अुन्हें हल कर सकेंगे।

हरिजन ३१–३–४६

१०७

जबरदस्ती नहीं

अेक सदस्यने सुझाया कि जुलाहों पर अेक निश्चित मात्रामें हाथका सूत बुननेकी शर्त लगानी चाहिये और वे अुसे न करें तो अुन्हें मिलके सूतका कोटा न दिया जाय। गांधीजीने अुत्तर दिया कि किसी भी प्रकारकी जबरदस्तीसे खादीके विरुद्ध अरुचि ही पैदा होगी। फिर वह आजादीकी वर्दी नहीं रहेगी। वायुमंडलमें स्वाधीनताकी भावना व्याप्त हो रही है। हो सकता है कि जुलाहे जबरदस्तीको माननेसे अिनकार कर दें।

जाजूजीने दलील दी: भोजन-वस्त्र आदि सभी चीजों पर नियंत्रण है। जुलाहोंके मामलेमें नियंत्रण क्यों नहीं किया जा सकता?

गांधीजीने जवाब दिया: मुझे यह विचार पसंद नहीं है। हम कातनेवालोंके मामलेमें जबरदस्तीसे काम नहीं लेते। हम जुलाहोंके लिअे भी अुसे अिस्तेमाल नहीं कर सकते। हमें कठिनाओकी जड़में पहुंचना चाहिये। हमारी प्रारंभिक भूल यह हुआी कि हमने कताओको

तो अपना लिया परन्तु बुनाओकी अुपेक्षा की। अगर हम कताओके साथ बुनाओको भी सार्वत्रिक कर देते तो ये सब कठिनाअियां पैदा न होतीं। अब अुपाय यह है कि सूतमें जिस तरह सुधार किया जाय जिससे जुलाहोंको बुननेमें कमसे कम मदिक्कत हो। हमें जुलाहोंको तब द्वारा समझाना चाहिये कि मिलके सूत पर निर्भर रहनेसे अन्तमें अुनका धंधा मारा जायगा। मिल-मालिक परोपकारी नहीं हैं। ज्यों ही हाथ-करघेके जुलाहे मिलके कपड़ेकी स्पर्धाको सीधा मारने आ जायेंगे त्यों ही मिल-मालिक अुनके गलेका फन्दा कस देंगे।

अगर चरखेमें हमारा विश्वास है तो हमें अिन अस्थायी बाधाओंसे घबड़ाये बिना आगे बढ़ना होगा। समय पाकर हाथका सूत बुननेवाले हाथ-करघोंकी संख्या बढ़ेगी। हमें अपनी जरूरतके लिअे जितना कपड़ा चाहिये अुसे पैदा करनेके लिअे हमारे देशमें काफी कारीगर और देशी कुशलता मौजूद है।

जाजूजी अिसका अर्थ यह है कि काम पहलेकी तरह ही चींटीकी चालसे चलेगा। और थोड़े समयमें चार लाख आदमियोंको वस्त्र-स्वावलम्बी बनानेकी हमारी योजना सफल नहीं होगी।

गांधीजी नहीं होगी तो पाप हमारा होगा।

जाजूजी अंतिम अर्थमें यह ठीक है। परन्तु परिस्थितियोंका भी विचार करना पड़ता है।

गांधीजी विपरीत परिस्थिति पर विजय प्राप्त करना मनुष्यका विशेषाधिकार है। क्या जिस युगमें हम रह रहे हैं अुसका सारा प्रकृतिको जीतना नहीं है? अगर केवल परिस्थितिका ही महत्त्व होता तो जर्मनी और जापान युद्धमें विजयी होते। अिस मामलेमें हमें अंग्रेज जातिसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। वह हार स्वीकार करना तो जानती ही नहीं। हमें अपने जीवनमें तपश्चर्या और प्रायश्चित्तकी आदत डालनी चाहिये। कोओ अैसी वस्तु नहीं जिसे तपश्चर्यासे प्राप्त न किया जा सके।

हरिजन २-१-४६

सूची